THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

-The TFIC Team.

SRI JAIN SIDHANT BHAWAN GRANTHAWALI

VOL.--1

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

भाग–१

जैन-सिद्धान्त-भवन-ग्रंथावली

(देव कुमार जैन प्राच्य ग्रन्थागार, जैन सिद्धान्त भवन, आरा की सस्कृत, प्राकृत,
अपभ्रंश एव हिन्दी की हस्तलिखित पाण्डुलिपियो की विस्तृत सूची)

भाग-१

प्रस्तवन

डा० गोकुलचन्द्र जैन

अध्यक्ष, प्राकृत एव जैनागम विभाग, सपूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय,
वाराणसी

सपादन .

ऋषभचन्द्र जैन फौजदार, दर्शनाचार्य

शोधाधिकारी, देवकुमार जैन प्राच्य शोध सस्थान, आरा
(विहार)

सकलन

विनय कुमार सिन्हा, M A (प्राकृत)

शत्रुघन प्रसाद, B A

गुप्तेश्वर तिवारी, आचार्य

भारतीय श्रुति-दर्शन केन्द्र
जयपुर

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

(भाग–१)

प्रथम संस्करण १९८७

मूल्य—१३५)

प्रकाशक

श्री देवकुमार जैन प्राच्य ग्रन्थागार

श्री जैन सिद्धान्त भवन

आरा (बिहार)–८०२३०१

मुद्रक

शाहाबाद प्रेस

महादेवा रोड, आरा

आवरण शिल्प

क्रिएटिव आर्ट ग्रुप

दिल्ली

SRI JAINA SIDHANTA BHAWAN GRANTHAWALI (Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa, Hindi mss Published by Sri D K. Jain Oriental Library, Sri Jain Sidhanta Bhawan, Arrah (Bihar) India.

First Edition - 1987 Price Rs 135/-

Jaina Siddhant Bhawana Granthavali

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramśa & Hindi Manuscripts

of

Sri Devakumar Jain Oriental Library, Arrah

Vol.-1

Introduction .
Dr Gokulchandra Jain
Head of the department of Prakrit & Jainagama.
Sampurnananda Sanskrit Vishvavidyalaya, Varanasi

Editor ;
Rishabhachandra Jain Fouzdar,
Research Officer
Devakumar Jain Oriental Research Institute, Arrah (Bihar)

Compilation :
Vinay Kumar Sinha, M.A.
Strughan Prasad, B. A.
Gupteshwar Tiwari

भारतीय श्रुति-दर्शन केन्द्र
जयपुर

Sri Jaina Siddhant Bhawan
PUBLICATION
Bhagwan Mahavir Marg, Arrah-802301

Foreword

Bihar has played a great role in the history of Jainism. Last Tirthankar, Mahavira, who gave a great fillip to the Jain religion, was born here and spread his massage of peace and ahimsa. It is from the land of Bihar that the fountain of Jainism spread its influence to the different parts of India in ancient period. And in the modern age the Jain Siddhanta Bhavan at Arrah in Bhojpur district has kept the torch of of Jainism burning. It occupies a unique place among the modern Jain institutions of culture. This institution was established to promote historical research and advancement of knowledge particularly Jain learning

There is a collection of thousands of manuscripts, rare books, pictures and palm-leaf manuscripts, in Shri Devakumar Jain Oriental Library Arrah attached to the said institution Some of the manuscripts contain rare Jain paintings These manuscripts are very valuable for the study of the creed as well as the socio-economic life of ancient India

The present work "Sri Jain Siddhanta Bhavan Granthavali" being the Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṁsa and Hindi Manuscripts is being prepared in six volumes Each volume contains two parts First parts consists of the list of manuscripts preserved in the institution with some basic informations such as accession number, title of the work, name of the author, scripts, language, size, date etc Part second which is named as Parisista (Appendix) contains more details about the manuscripts recorded in the first part.

The author has taken great pains in preparing the present Catologue and deserves congratulations for the commendable job, This work will no doubt remain for long time a ready book of reference to scholars of ancient Indian Culture particularly Jainism

(Naseem Akhtar)
Director, Museums
Bihar Patna.

February 29, 1988
Vikas Bhavan, Patna

प्रकाशकीय नम्र निवेदन

'जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली' का प्रथम भाग प्रकाशित होते देख मुझे अपार हर्ष हो रहा है। लगभग पाँच वर्ष पहले से इस सपने को साकार करने का प्रयत्न चल रहा था। अब यह महत्वपूर्ण कार्य प्रारम्भ हो गया है। एक पचवर्षीय योजना के रूप मे इसके छ भाग प्रकाशित करने मे सफलता मिलेगी ऐसी पूरी आशा है।

'जैन सिद्धात भवन ग्रन्थावली' का यह पहला भाग जैन सिद्धान्त भवन, आरा के ग्रन्थागार मे सग्रहीत सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रश, कन्नड एव हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थो की विस्तृत सूची है। इसमे लगभग एक हजार ग्रन्थो का विवरण है। हर भाग मे इसका विभाजन दो खण्डो मे किया गया है। पहले खण्ड मे अग्रेजी (रोमन) मे ग्यारह शीर्षको द्वारा पाडुलिपियो के आकार, पृष्ठ सख्या आदि की जानकारी दी गई है। 'भवन' के ग्रथागार मे लगभग छह हजार हस्तलिखित कागज एव ताडपत्र के ग्रथो का सग्रह है। इनमे अनेक ऐसे भी ग्रन्थ है जो दुर्लभ तथा अद्यावधि अप्रकाशित है। अप्रकाशित ग्रन्थो को सम्पादित कराकर प्रकाशित करने की भी योजना आरम्भ हो गई है। वर्तमान मे जैन सिद्धात भवन, आरा मे उपलब्ध 'राम यशोरसायन रास (सचित्र जैन रामायण) का प्रकाशन हो रहा है जो शीघ्र ही पाठको के हाथ मे होगा। इसमे २१३ दुर्लभ चित्र हैं।

'जैन सिद्धात भवन ग्रन्थावली' के कार्य को प्रारम्भ कराने मे काफी कठिनाइयो का सामना करना पडा लेकिन श्रीजी और माँ सरस्वती की असीम कृपा से सभी सयोग जुडते गए जिससे मै यह ऐतिहासिक एव महत्व पूर्ण कार्य आरम्भ कराने मे सफल हुआ हूँ। भविष्य मे भी अपने सभी सहयोगियो से यही अपेक्षा रखता हूँ कि हमें उनका सहयोग हमेशा प्राप्त होता रहेगा।

ग्रन्थावली एव रामयशोरसायन रास के प्रकाशन के सबसे बडे प्रेरणा-श्रोत आदरणीय पिता जी श्री सुबोध कुमार जैन के सहयोग एव मार्गदर्शन को कभी विस्मृत नही किया जा सकता। अपने कार्यकर्त्ताओ की टीम के साथ उनसे विचार विमर्श करना तथा सबकी राय से निर्णय लेना उनका ऐसा तरीका रहा है जिसके कारण सभी एकजुट होकर कार्य मे लगे हैं।

बिहार सरकार एव भारत सरकार के शिक्षा विभाग एवं सस्कृति विभाग ने इस प्रकाशन को अपनी स्वीकृति एव आर्थिक सहयोग प्रदान कर एक बहुत ही महत्वपूर्ण कदम उठाया है जिसके लिये हम निदेशक राष्ट्रीय अभिलेखागार, दिल्ली, निदेशक पुरातत्व एव निदेशक सग्रहालय बिहार सरकार तथा भारत सरकार के सभी सबधित

अधिकारियो के कृतज्ञ है और उनसे अपेक्षा रखेगे कि भवन के अन्य अप्रकाशित हस्त-लिखित ग्रथो के प्रकाशन मे उनका सहयोग देश की सास्कृतिक धरोहर की सुरक्षा हेतु भविष्य मे भी हमे प्राप्त होगा ।

डा० गोकुलचन्द जैन, अध्यक्ष, प्राकृत एव जैनागम विभाग, सपूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने ग्रन्थावली की विद्वतापूर्ण प्रस्तावना आगल भाषा मे लिखी है । बिहार म्यूजियम के विद्वान एव कर्मठ निर्देशक श्री नसीम अख्तर साहब ने समय निकालकर इस पुस्तक की भूमिका लिखी है । डा० राजाराम जैन, अध्यक्ष, सस्कृत-प्राकृत विभाग, जैन कालेज, आरा तथा मानद निदेशक श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोधसस्थान, आरा ने आवश्यकता पडने पर हमे इस प्रकाशन के सम्बन्ध मे बरावर महत्वपूर्ण मार्ग दर्शन दिया है । हम तीनोही जाने माने विद्वानो का आभार मानते है ।

श्री ऋषभ चन्द्र जैन 'फौजदार' जैनदर्शनाचार्य परिश्रम और लगन से ग्रन्थावली का सपादन कर रहे हैं । श्री ऋषभ जी हमारे सस्थान मे मानद शोधा-कारी के रूप मे भी कार्यरत है । ग्रन्थावली के दोनो खण्डो के सकलन के सपूर्ण कार्य यानी अंग्रेजी भाषा मे एक हजार ग्रथो की ग्यारह कालमो मे विस्तृत सूची तथा प्राकृत एव सस्कृत आदि भाषाओ मे परिशिष्ट के रूप मे सभी ग्रथो के आरम्भ की तथा अत के पदो का और उनके कोलाफोन के भी विस्तृत विवरण देने जैसा कठिन कार्य श्री विनय कुमार सिन्हा, एम० ए० और श्री शत्रुघ्न प्रसाद सिन्हा, बी० ए० ने बहुत परिश्रम करके योग्यता पूर्वक किया है । डा० दिवाकर ठाकुर और श्री मदनमोहन प्रसाद वर्मा ने पुस्तक के अत मे 'वर्ण-क्रम के आधार पर ग्रन्थकारो एव टीकाकारो की नामावली और उनके ग्रन्थो की क्रम सख्या का सकलन तैयार किया है ।

श्री जिनेश कुमार जैन, पुस्तकालय-अधिक्षक, श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा का सहयोग भी सराहनीय है जिनके अथक परिश्रम से ग्रन्थो का रखरखाव होता है । प्रेस मैनेजर श्री मुकेश कुमार वर्मा भी अपना भार उत्साह पूर्वक सभाल रहे हैं । इनके अतिरिक्त जिन अन्य लोगो से भी मुझे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग मिला है उन सभी का हृदय से अभारी हूँ ।

अजय कुमार जैन
मत्री
श्री देवकुमार जैन ओरिएन्टल लाईब्रेरी

देवाश्रम,
आरा

ABBREVIATION

V S.	—	Vikrama Samvata
D	—	Devanāgarī
Stk	—	Sanskrit
Pkt	—	Prakrit
Apb,	—	Apabhraṁśa
C	—	Complete
Inc	—	Incomplete

Catg of Skt Ms – Catalogue of Sanskrit manuscripts in Mysore and coorg by Lewis Rice M. R A. S,, Mysore Government Press, Bangalore, 1884.

Catg of Skt & Pkt Ms – Catalogue of Sankrit & Prakrit manuscripts in the Central Provinces & Berar by Rai Bahadur Hiralal B A Nagpur, 1926.

(१) आ० सू० — आमेर सूची—डा० कस्तूरचन्द, कासलीवाल।

(२) जि० र० को० — जिनरत्नकोष –डा० वेलणकर, भण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट, पूना।

(३) जै० ग्र० प्र० स० — जैन ग्रन्थ प्रशस्ति सग्रह—प० जुगलकिशोर मुख्तार।

(४) दि० जि० ग्र० र० — दिल्ली जिन ग्रन्थ रत्नावली—श्री कुन्दनलाल जैन भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।

(५) प्र० जै० सा० — प्रकाशित जैन साहित्य—बा० पन्नालाल अग्रवाल।

(६) प्र० स० — प्रशस्ति सग्रह—डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल।

(७) भ० स० — भट्टारक सम्प्रदाय –विद्याधर जोहरापुरकर।

(८) रा० सू० — राजस्थान के शास्त्र भडारो की सूची—डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल, दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी, जयपुर (राजस्थान)।

समर्पण

देवाश्रम परिवार में

पंडित-प्रवर बाबू प्रभुदास जी,

राजर्षि बाबू देवकुमार जी,

ब्र० पं० चन्दा माँश्री,

और

बाबू निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार जी

यशस्वी तथा गुणीजन हुए है।

उन सभी की पावन

स्मृति को यह

श्री जैन सिद्धांत भवन ग्रन्थावली

सादर समर्पित है।

देवाश्रम आरा —सुबोधकुमार जैन

१४-३-८७

INTRODUCTION

I have great pleasure in introducing *Śrī Jaina Siddhānta Bhavan Granthāvali* – a descriptive Catalogue of 997 Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa and Hindi Manuscripts preserved in Shri Deva Kumar Jain Oriental Library, popularly known as Jaina Sidhānta Bhavan, Arrah. The actual number of MSS exceeds even one thousand as some of them are numbered as *a* and *b* Being the first volume, it marks the beginning of a series of the Catalogues to be prepared and published by the Library.

The Catalogue, devided into two parts, covers about 500 pages and each part numbered separately In the first part, descriptions of the MSS have been given while the second part contains the Text of the opening and closing portions of MSS along with the Colophon The catalogue has been prepared strictly according to the scientific methodology developed during recent years and approved by the scholars as well as Government of India The description of the MSS has been recorded into eleven columns viz 1 Serial number, 2 Library accession or collection number, 3 Titleof the work, 4 Name of the author, 5 Name of the commentator 6 Material, 7 Script and language, 8 Size and number of folio, lines per page and letters per line. 9. Extent, 10 Condition and age, 11. Additional particulars These details provide adequate informations about the MSS For instance thirteen MSS of *Dravyasaṁgraha* have been recorded (S Nos 213 to 224) It is a well known tiny treatise in Prakrit verses by Nemicanda Siddhānti and has had attracted attention of Sanskrit ond other commentators Each Ms preserved in the Bhavana's Library has been given an independent accession number Its justification could be observed in the details provided

From the details one finds that first four MSS (213 to 215/2) contain bare Prakrit text All are paper, written in *Devanāgarī* Script, their language being natured in poetry Each Ms has different size and number of folios Lines per page and letters per line are also different All are complete and in good condition Only one Ms (216) is a Hindi verson in poetry by some unknown

writer and is incomplete Two MSS (218, 222) are with exposition in *Bhāṣā* (Hindi) prose and poetry by Dyānatarāya and three are in Bhāsā poetry by Bhagavatidas. Ms No 223 dated 1721 v s, is with Sanskrit commentary in Prose Ms No. 229 is a *Bhāṣā vacanikā* by Jayacanda These details could be seen at a glance as they are presented scientifically.

The Manuscripts recorded in the present volume have been broadly classified into following eleven heads : –

1	Purāna, Carita, Kathā	1 to 155
2	Dharma, Darśana, Ācāra	156 to 453
3	Nyāyaśāstra	454 to 480
4	Vyākarana	481 to 492
5	Kośa	493 to 501
6	Rasa. chanda, Alankāra & Kāvya	502 to 531
7	Jyotiṣa	532 to 550
8	Mantra. Karmakānda	551 to 588
9	Āyurveda	589 to 600
10	Stotra	601 to 800
11	Pūjā, Pātha-vidhāna	801 to 997

The details have been presented in Roman scripts in Hindi Alphabetic order The classification is of general nature and help a common reader for consultation of the Catalogue. However, critical observations may deduct some MSS which do not fall under any of these eleven categories (see MSS 295, 511, 512).

The Second Part of the volume is entitled as *Pariśiṣṭa* or Appendix This part furnishes more details regarding the MSS recorded in the first part Along with the text of the opening and closing portions of each Ms, colophons have been presented in *Devanāgari* script The text is presented as it is found in the MSS and the readers should not be confused or disheartened even if the text is currupt. The cross references of more than ten other works deserve special mention Only a well read and informed scholar could make such a difficult task possible with his high industry and love of labour-

From the details presented in the Second part we get some very interesting as well as importnt informations. A few of them are noted below :—

(1) Some Mss belong to quite a different category and do not come under the heads, they have been enumerated, such as *Navaratnaparīkṣā* (295) which deals with Gemeology. The opening & closing text as well as the colophon clearly mention that it is a *Ratna Śāstra* by Buddhabhatt. Similarly, *Nītivākyāmṛtam* (511. 512) is the famous work on Polity by Somadeva Suri (10th cent.). *Trepanakriyākośa*(498, 499) is not a work on Lexicon. It deals with rituals and hence falls under *Ācāraśāstra* These observations are intended to impress upon the consultant of the catalogue that he should not by pass merely by looking over the caption alone but should see thoroughly the details given in the Second part of the catalogue which may reveal valuable informations for him

(2) Some of the MSS of *Āptamīmāṁsā* contain *Āptamīmāṁsālaṅkṛti* of Vidyānanda (455) *Āptamīmāṁsāvṛtti* of Vasunandi (456) and *Āptamīmāṁsābhāṣya* of Akalaṅka (457). These three famous commentaries are popularly known as *Aṣṭasahasrī* *Aṣṭaśatī* and *Devāgamavṛtti* Though these works have once been published, yet these can be utilised for critical editions

(3) In the colophon of some of the MSS the parential MSS have been mentioned and the name of the copyist, its date and place where they have been copied, have been given These informations are of manifold importance. For instance the information regarding parential Ms is very important If the editor feels necessary to consult the original Ms for his satisfaction of the readings of the text, he can get an opportunity for the same It is of particular importance if the Ms has been written into different scripts then that of the original one Many Sanskrit, Prakrit and Apabhramsa works are preserved on palm leaves in *Kannada* scripts. When these are rendered into *Devanāgarī* scripts there are every possibility of slips, difference in readings and so on It is not essential that the copyist should be well acquainted with all its languages and subject matter of each Ms The difference of alphabets in different languages is obvious Thus the reference of parential Ms is of great importance (373)

(4) The references of places and the copyists further authenticate the MSS Some of the MSS have been copied in Karnataka at Moodbidri and other places from the palm leaf MSS written in *Kannada* scripts (7, 318, 373) whereas some in Northen India, in Rajasthan, Uttar Pradesh, Bihar, Madhya Pradesh and Delhi

5) It is also noteworthy that copying work was done at Jaina Siddhanta Bhavana Airah itself MSS were borrowed from different collections & copying work was conducted in the supervision of learned Scholars.

(6) The study of colophon reveals many more important references of *Saṁghs Ganas, Gacchas, Bhaṭṭārakas* and presentation of *Śāstras* by pious men and women to ascetics copying the Ms for personal study—*svādhyāya*, and getting the work prepared for his son or relative etc Such references denote the continuity of religious practice of *śāstradāna* which occupy a very high position in the code of conduct of a Jaina household,

(7) The copying work of MSS was done not only by paid professionals but also by devout *śrāvakas* and desciples of *Bhaṭṭārakas* or other ascetics

(8) In most of the MSS counting of alphabets, words, *ślokas*, or *gāthās* have been given as *granthaparimāna* at the end of the MSS This reference is very important from the point of the extent of the Text Many times the author himself indicates the *granthaparimāna* Even the prose works are counted in the form of ślokas (32 alphabets each) The *Āptamīmāṁsā Bhāṣya* of Akalaṅka is more popularly known as *Aṣṭaśatī* and *Āptamīmāṁsālnkṛti* of Vidyānanda is famous as *Aṣṭasahaśrī* Both works are the commentaries on the *Āptamimāṁṣā* (in verse) of Samanta Bhadra in Sanskrit prose, Vidyānanda himself says about his work :—

"*Śrotavy – aṣtasahasrī śrutaiḥ kimanyaih sahasrasamkhyānaih* "

Counting in the form of ślokas seems a later development When the teachings of Vardhamāna Mahāvīra were reduced to writing counting was done in the form of *Padas* For instance the *Āyāramga* is said to contain eighteen thousand *Padas*

" *āyāraṁgamaṭṭhāraha—pada - sahassehi* "

(Dhavalā p 100)

Such references are more useful for critical study of the text.

(9) Some references given in the colophons shed light on some points of socio-cultural importance as well The copying work was done by Brāhmins, Vaiśyas, Agarawālas, Khandelāwāls, Kāyasthas and others There had been some professionally trained persons with very good hand writing who were entrusted with the work of copying the MSS The remuneration of writing was decided per hundred words For the purpose of the counting generally the copyist used to put a particular mark (I) invariably without punctuation In the end of some of the MSS even the sum paid, is mentioned Though it has neither been recorded in the present catalogue nor was required, but for those who want to study the MSS these informations may be important

The study of Colophons alone can be an independent and important subject of research

From the above details it is clear that both the parts of the present volume supplement each other. Thus, the *Jaina Siddhānta Bhavana Granthāvalī* is a highly useful reference work which undoubtedly contributes to the advancement of oriental learning With the publication of this volume the Bhavana has revived one of its important activities which had been started in the first decade of the present Centuty

Shri Jaina Siddhant'Bhavan, Arrah, established in the beginning of the present century had soon become famous for its threefold activities viz 1) procuring and preserving rare and more ancient MSS, 2) publication of important texts with its english translation in the series of Sacred Books of the Jaina's and 3) bringing out a bilingual research journal *Jaina Siddhānta Bhāskara* and *Jaina Antiquary*. Under the first scheme, many palm leaf MSS have been procured from South India, particularly from Karnataka, and paper MSS from Northern India However the copying work was done on the spot if the Ms was not lent by the owner or otherwise was not transferable The earliest Śauraseni Prakrit *Siddhānta Śāstra Saṭkhaṇḍāgama*

with its famous commentaries *Davalā*, *Jayadavalā*, and *Mahādavlā* was copied from the only surviving palm leaf Ms in old *Kannada* scripts, preserved in the *Siddhānta Basadi* of Moodbidri.

Bhavan's Collection became known all over the world within ten years of establishment. In the year 1913, an exhibition of Bhavan's collection was organised at Varanasi by its sister institution on the occasion of Three Day Ninth Annual Function of *Śrī Syād-vāda Mahāvidyālava* A galaxy of persons from India and abroad who participated in the function greatly appreciated the collection. Mention may specially be made of Pt. Gopal Das Baraiya, Lala Bhagavan Din, Pt. Arjunlal Sethi, Suraj Bhan Vakil, Dr. Satish Chandra Vidyabhusan, Prof Heraman Jacobi of Germany, Prof Jems from United States of America, Ajit Prasad Jain, and Brahmachari Shital Prasad A similar exhibition was organised in Calcutta in 1915 Among the visitors mention may be made of Sir Asutosh Mukherjee, Shri Aurvind Nath Tegore, Sir John woodruf and Sarat Chandra Ghosal

The other activity of the publication of *Biblothica Jainica—The Sacred Books of the Jainas* began with the publication of *Dravya Samgiaha* as Volume I (1917) with Introduction, English translation and Notes etc In this series important ancient Prakrit texts like *Samayasāra*, *Gommatasāra*, *Ātmānuśāsana* and *Purusārtha Siddhyupāya* were published Alongwith the Sacred Book Series books in English on Jaina tenets by eminent scholars were also published *Jaina Siddhānta Bhāskara* and *Jaina Antiquary*, a bilingual Research Journal was published with the objectiveto bring into light recent researches and findings in the field of Jainalogical learning

Thanks to the foresight of the founders that they could conceive of an Institution which became a prestigious heritage of the country in general and of the Jainas in particular. The palm leaf MSS in *Kannada* scripts or rendered into *Devanāgarī* on paper are valuable assets of the collection It is undoubtedly accepted that a manu-scipt is more valuable than an icon or Architectural set-up An icon may be restalled and similarly an Architectural set-up can be re-built, but if even a piece of any Ms is lost, it is lost for ever It is how plenty of ancient works have been lost It is why the followers of Jainism paid a thoughtful consideration to preserve

the MSS which is included in their religious practice A Jaina Shrine, particularly the temple was essentially attached with a *Śāstra-Bhandāra*, because the *Jina*. *Jinavāni* and *Jinaguru* were considered the objects of worship. Almost all the Jaina temples are invariably accompanied with the *Śāstra-Bhandāras* During the time of some of the Mughal emperors like Mahmud Gaznai (1025 A D) and Aurangzeb (1661-1669 A.D) when the temples were destroyed, a new awakening for preservation of the temples and *Śāstra* started and much interior places were choosen for the purpose A new sect of the Bhattārakas and Caityavāsīs emerged among the Jaina ascetics who undertook with enthusiasm the activity of building up the *Śāstra Bhandāras* As a result, many MSS collections came up all over India The collections of Sravanabelagola, Moodbidri and Humach in Karnataka, Patan in Gujrat, Nagaur, Ajmer, Jaipur in Rajasthan, Kolhapur in Maharastra, Agra in Uttar Pradesh and Delhi are well known. A good number of copies of important MSS were prepared and sent to different *Śāstra Bhandāras* One can imagine how the copies of a works composed in South India could travel to North and West. And likewise works composed in North-West reached the Southern coast of India. A great number of Sanskrit, Prakrit and Apabhramsa works were rendered into Kannada, Tamil and Malayalee Scripts and were transcribed on the Palm Leaf It is a historical fact that the religious enthusiasm was so high that Shāntammā, a pious Jaina lady, got prepared one thousand copies of *Śāntipurāna* and distributed them among religious people. At a time when there were no printing facilities such efforts deserved to be considered of great significance.

The above efforts saved hundreds thousands MSS But along with the development of these new sects these social institutions became almost private properties This resulted into two unwanted developments viz 1) lack of preservation in many cases and 2) hardship in accessiblity Due to these two reasons the MSS remained locked for a long period for safety, and consequently the valuable treasure remained unknown to scholars. The story of the *Siddhānta Śāstra Satkhandāgama* is now well known. It is only one example

With the new awakening in the middle or last quarter of the Nineteenth Century some enlightened Jaina householders came out

with a strong desire to accept the challenge of the age and started establishing independent MSS libraries. This continued during the first quarter of 20th century- In such Institution, Eelak Pannalal Sarasvati Bhavan at Vyar, Jhalara Patan and Ujjain, and Shri Jaina Siddhanta Bhawan at Arrah stand at the top. More significant part of these collections had been their availability to the scholars all over the world. Almost all the eminent Joinologis' of the present century studing the MSS, have utilized the collection of Sri Jaina Siddhanta Bhawan. It had been my proud privilege and pleasure that I too have used Bhavan's MSS for almost all my critical editions of the works I edited

During last few decades catalogues of some of the MSS collections, in Government as well as in private institutions, have been published Through these catalogues the MSS have become known to the world of Scholars who may utilise them for their study.

In the series of the publications of catalogues relating to Jainalogy, *Jinaratnakośa* by Velankar deserves special mention It is quite a different type of reference work relating to MSS Bharatiya Janapitha, Kashi published in Hindi in Devanagari script the *Kanndaprāntiya Tādapatriya Grantha* Süchi in 1948 recording descriptions of 3538 Palm leaf MSS. The catalogues of the MSS of Rajasthan prepared by Dr. Kastoor Chand Kashiwal and published in five volumes by Shri Digambar Jaina Atisaya Ksetra Shri Mahaviraji, Jaipur also deserve mention. L. D Institute of Indology, Ahmedabad have published catalogue in several volumes. Among the publication of new catalogues mention may be made of *Dilli Jina-Grantha-Ratnāvālī* published by Bharatiya Jnanpith, New Delhi and the catalogue of *Nāgaura Jaina Śāstra-Bhandāra* published by Rajasthan University.

In the above range of catalogues, the present volume of *Śrī Jaina Siddhānta Bhavana Granthāvalī* is a valuable addition As already started this is the beginning of the publication of catalogues of the MSS preserved in Sri Jain Siddhant Bhavan now Shri Deva Kumar Jain Oriental Library, Arrah It is likely to cover eight volumes each covering about 1000 MSS I am well aware that preparation and publication of such works require high industrious zeal, great

passions and continued endeavour of a team of scholars with keen insight besides the large sum required for such publications

It is not the place to go into many more details regarding the importance of the MSS and contribution of Bhavan's collection, but I will be failing in my duty if I do not record the contribution of the founder Sriman Devakumarji and his worthy successors I sincerely thank Shriman Babu Subodh Kumar Jain, Honorary Secretary of Shri Jain Siddhant Bhavan, who is carrying forward the activities of the Institute with great enthusiasm. Shri Risabh Chandra Jain deserves my whole hearted appreciation for preparing, editing and seeing through the press the Catalogue with fullest sincerity, ability and insight His associates also deserve applause for their due assistance I also thank my esteem friend Dr Rajaram Jain, who is a guiding force as the Honorary Director of the Institute.

In the end I sincerely wish to see other volumes published as early as possible

Dr. Gokul Chandra Jain
Head of Department of Prakrit
and Jainãgam, Sampurnanand
Sãnskrit Vishvavidyalay,
VARANASI

सम्पादकीय

श्री देवकुमार जैन ओरिएण्टल लायब्रेरी तथा श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा 'सेन्ट्रल जैन ओरिएन्टल लायब्रेरी' के नाम से देश-विदेश मे विख्यात है। यह ग्रन्थागार आरा नगर के प्रमुख भगवान महावीर मार्ग (जेल रोड) पर स्थित है। वर्तमान मे इसके मुख्य द्वार के ऊपर सरस्वती जी की भव्य एव विशाल प्रतिमा है। अन्दर बहुत वडा मगमरमर का हॉल है, जिसमे सोलह हजार छपे हुए तथा लगभग छह हजार हस्तलिखित कागज एव ताडपत्र के ग्रन्थो का सग्रह है। जैन सिद्धान्त भवन के ही तत्वावधान मे श्री शान्तिनाथ जैन मन्दिर पर 'श्री निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार जैन कला दीर्घा' है। इस कला दीर्घा मे शताधिक दुर्लभ हस्तनिर्मित चित्र, ऐतिहासिक सिक्के एव अन्य पुरातत्व सामग्री प्रदर्शित है। यही ८४ वर्ष पूर्व एक महत्वपूर्ण सभा मे श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा का उद्घाटन (जन्म) हुआ था।

सन् १९०३ मे भट्टारक हर्षकीर्ति जी महाराज सम्मेद शिखर की यात्रा से लौटते समय आरा पधारे। आते ही उन्होने स्थानीय जैन पचायत की एक सभा मे बाबू देवकुमार जी द्वारा सगृहीत उनके पितामह प० प्रभुदास जी के ग्रन्थ सग्रह के दर्शन किये तथा उन्हे स्वतन्त्र ग्रन्थागार स्थापित करने की प्रेरणा दी। बाबू देवकुमार जी धर्म एव सस्कृति के प्रेमी थे, उन्होने तत्काल श्री जैन सिद्धान्त भवन की स्थापना वही कर दी। भट्टारक जी ने अपना ग्रन्थसग्रह भी जैन सिद्धान्त भवन को भेट कर दिया।

जैन सिद्धान्त भवन के सवर्द्धन के निमित्त बाबू देवकुमार जी ने श्रवणबेलगोला के यशस्वी भट्टारक नेमिसागर जी के साथ सन् १९०६ मे दक्षिण भारत की यात्रा प्रारम्भ की, जिसमे विभिन्न नगरो एव गावो मे सभाओ का आयोजन करके जैन सस्कृति की सुरक्षा एव समृद्धि का महत्व बताया। उसी समय अनेक गावो और नगरो से हस्तलिखित कागज एव ताडपत्र के ग्रन्थ सिद्धान्त भवन के लिए प्राप्त हुए तथा स्थानो पर शास्त्रभडारो को व्यवस्थित भी किया गया। इस प्रकार कठिन परिश्रम एव निरन्तर प्रयत्न करके बा० देवकुमार जी ने अपने ग्रन्थकोश को समुन्नत किया। उस समय यात्राएँ पैदल या बैलगाडियो पर हुआ करती थी। किन्तु काल की गति को कौन जानता है? १९०८ ई० मे ३१ वर्ष की अल्पायु मे ही बाबू देवकुमार जी स्वर्गीय हो गये, जिसमे जैन समाज के साथ-साथ सिद्धात भन के कार्य-कलाप भी प्रभावित हुए। तत्पश्चात् उनके साले बाबू करोडीचन्द्र ने भवन का कार्य सभाला और उन्होने भी दक्षिण भारत तथा अन्य प्रान्तो की यात्रा करके हस्तलिखित ग्रन्थो का सग्रह कर सेवा कार्य किया। उनके उपरान्त आरा के एक और यशस्वी धर्मप्रेमी कुमार देवेन्द्र

)

ने भवन की उन्नति हेतु कलकत्ता और वनारस मे वडे पैमाने पर जैन प्रदर्शिनियो और सभाओ का आयोजन किया। भवन के वैभव सम्पन्न सग्रह को देखकर डा० हर्मन जैकोवी, श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि जगत् प्रसिद्ध विद्वान प्रभावित हुए तथा उन्होने वावू देवकुमार की स्मृति मे प्रशस्तियाँ लिखी एव भवन की सुरक्षा एव समृद्धि की प्रेरणाएँ दी।

सन् १९१९ मे स्व० वावू देवकुमार जी के पुत्र वावू निर्मलकुमार जी भवन के मत्री निर्वाचित हुए। मत्री पद का भार ग्रहण करते ही निर्मलकुमार जी ने भवन के कार्य-कलापो मे गति भर दी। १९२४ मई मे जैन सिद्धात भवन के लिए स्वतन्त्र भवन का निर्माण कार्य आरम्भ करके एक वर्ष मे भव्य एव विशाल भवन तैयार करा दिया। तत्पश्चात् धार्मिक अनुष्ठान के साथ सन् १९२६ मे श्रुतपञ्चमी पर्व के दिन श्री जैन सिद्धात भवन ग्रन्थागार को नये भवन मे प्रतिष्ठापित कर दिया। उन्होने अपने कार्यकाल मे ग्रन्थागार मे प्रचुर मात्रा मे हस्तलिखित तथा मुद्रित गथो का सग्रह किया।

जैन सिद्धात भवन आरा मे प्राचीन ग्रथो की प्रतिलिपि करने के लिए लेखक (प्रतिलिपिकार) रहते थे, जो अनुपलब्ध ग्रन्थो को वाहर के ग्रन्थागारो से मगाकर प्रतिलिपि करते थे तथा अपने सग्रह मे रखते थे। यहाँ नये ग्रन्थो की प्रतिलिपि के अतिरिक्त अपने सग्रह के जीर्ण-शीर्ण ग्रन्थो की प्रतिलिपि का भी कार्य होता था। इसका पुष्ट प्रमाण ग्रन्थो मे प्राप्त प्रशस्तियाँ हैं। जैन सिद्धान्त भवन, आरा से अनेक ग्रन्थ प्रतिलिपि कराकर सरस्वती भवन बम्बई एव इन्दौर भेजे गये हैं।

सन् १९४६ मे वावू निर्मलकुमार जैन के लघुभ्राता चक्रेश्वरकुमार जैन भवन के मत्री चुने गये। ग्यारह वर्षो तक उन्होने पूरे मनोयोग से भवन की सेवा की। पश्चात् सन् १९५७ से वावू सुबोधकुमार जैन को मत्री पद का भार दिया गया, जिसे वे अभी तक पूरी लगन एव जिम्मेदारी के साथ निर्वाह रहे हैं। वावू सुवोधकुमार जैन, भवन के चतुर्मुखी विकास के लिए दृढप्रतिज्ञ है। इनके कार्यकाल मे भवन के क्रिया-कलापो मे कई नये अध्याय जुड गये हैं, जिनसे वावू सुबोधकुमार जैन का व्यक्तित्व एव कृतित्व दोनो उभर-कर सामने आये है।

जैन सिद्धात भवन, आरा के अन्तर्गत जैन सिद्धात भास्कर एव जैना एण्टीक्वायरी शोध पत्रिका का प्रकाशन सन १९१३ से हो रहा है। पत्रिका द्वैभाषयिक, हिन्दी-अग्रेजी तथा षाण्मासिक है। पत्रिका मे जैनविद्या सम्बन्धी ऐतिहासिक एव पुरातात्विक सामग्री के अतिरिक्त अन्य अनेक विधाओ के लेख प्रकाशित होते है। शोध-पत्रिका अपनी उच्चकोटि की सामग्री के लिए देश-देशान्तर मे सुविख्यात है। इसके अक जून अर दिसम्बर मे प्रकट होते हैं।

जैन सिद्धात भवन, आरा का एक विभाग श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोध सस्थान है। इसमे प्राकृत एव जैनविद्या की विभिन्न विधाओं पर शोधार्थी शोधकार्य करते हैं। संस्थान मे शोध सामग्री प्रचुर मात्रा मे भरी पडी है। सस्थान सन् १९७२ से मगध विश्व विद्यालय, बोधगया द्वारा मान्यता प्राप्त है। वर्तमान मे इसके मानद निदेशक, डा० राजाराम जैन, अध्यक्ष, प्राकृत–सस्कृत विभाग, हरप्रसाद दास जैन कालेज, (मगध विश्व विद्यालय) आरा है। इस समय सस्थान के सहयोग से १५ शोधार्थी शोधकार्य कर रहे हैं तथा अनेक पी० एच० डी० की उपाधियां प्राप्त कर चुके है।

इस सस्था द्वारा अब तक अनेक महत्वपूर्ण पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं। इस समय छह भागो मे भवन के हस्तलिखित ग्रन्थो की विस्तृत सूची श्री जैन सिद्धात भवन ग्रन्थावली तथा सचित्र जैन रामायण (रामयशोरसायनरास–मुनि केशराजकृत) का प्रकाशन कार्य चल रहा है।

'जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली' का पहला भाग पाठको के हाथ मे है। इसमे जैन सिद्धात भवन, आरा मे सरक्षित ९९७ सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रश एव हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थो की विस्तृत सूची है। वास्तव मे यह सख्या एक हजार से अधिक है। यह सूची दो खण्डो मे विभक्त है तथा दोनो खण्डो की पृष्ठ सख्या भी पृथक्–पृथक् है। प्रथम खण्ड मे पाण्डुलिपियो का विवरण तथा दूसरे खण्ड मे प्रत्येक ग्रन्थ का प्रारभिक अश, अन्तिम अश एव प्रशस्तियाँ दी गई है। सूची मे ग्रन्थो का वैज्ञानिक ढग से विवरण प्रस्तुत किया गया है। यह विवरण निम्न ग्यारह शीर्षको मे है --(१) क्रम-सख्या (२) ग्रन्थ सख्या (३) ग्रन्थ का नाम (४) लेखक का नाम (५) टीकाकार का नाम (६) कागज या ताडपत्र (७) लिपि और भाषा (८) आकार सेमी० मे, पत्रसख्या, प्रत्येक पत्र की पक्ति सख्या एव प्रत्येक पक्ति की अक्षर सख्या (९) पूर्ण-अपूर्ण (१०) स्थिति तथा समय (११) विशेष जानकारी यदि कोई है। यह सभी विवरण रोमन लिपि मे दिया गया है।

१	पुराण, चरित, कथा	१ से १५५
२	धर्म दर्शन, आचार	१५६ से ४५३
३	न्यायशास्त्र	४५४ से ४८०
४	व्याकरण	४८१ से ४९२
५	कोष	४९३ से ५०१
६.	रस, छन्द, अलकार और काव्य	५०२ से ५३१
७	ज्योतिष	५३२ से ५४९

८	मन्त्र, कर्मकाण्ड	५५० से ५८८
९	आयुर्वेद	५८९ से ६००,
१०	स्तोत्र	६०१ से ८००
११	पूजा–पाठ–विधान	८०१ से ९९७,

अन्तिम शीर्षक के अन्त मे आठ ग्रन्थ ऐसे हैं, जिन्हे विविध-विषय के रूप मे रखा गया है। यह विषय विभाजन सामान्य कोटि का है, क्योकि सभी ग्रन्थो का विषय निर्धारित करने हेतु उसका आद्योपान्त सूक्ष्म परीक्षण आवश्यक है।

ग्रन्थावली का दूसरा खण्ड 'परिशिष्ट' नाम से अभिहित है। इसका यह खण्ड बहुत ही महत्वपूर्ण है। प्रशस्तियो मे अनेक महत्वपूर्ण तथ्य लिपिबद्ध हैं। अनेक काफी प्राचीन पाण्डुलिपियाँ भी हैं,जिनका समय प्रथम खण्ड मे दिया गया है। प्रशस्तियो के अध्ययन से विभिन्न सघो, गणो, गच्छो तथा भट्टारको के सन्दर्भ सामने आये है। यह ग्रन्थ कुछ लोग अपने स्वाध्याय के लिए लिखवाते थे तथा कुछ लोग शास्त्रदान के लिए। ग्रन्थ श्रावको, साधुओ तथा भट्टारको द्वारा लिखवाये गये है। पाण्डुलिपियो का लेखन भारत के विभिन्न देशो (वर्तमान राज्यो मे) हुआ है। जैन सिद्धान्त भवन, आरा मे भी पर्याप्त लेखन कार्य हुआ है। जो पाण्डुलिपियाँ अन्य सग्रहो से स्थानान्तरित नही की जा सकती थी, उनकी प्रतिलिपियाँ वही से कराकर मगाई गई है। अधिकाश पाण्डुलिपियो मे पूरे ग्रन्थ की श्लोक सख्या या गाथा सख्या भी दी हुई है, जिससे पूरे ग्रन्थ का परिमाण भी निश्चित हो जाता है। इस ग्रन्थावली का यह खण्ड एक ऐसा दस्तावेज है, जिससे अनेक नवीन सूचनाएँ दृष्टिगोचर हुई है।

क्र० १०३/१ मे उल्लिखित 'राम-यशोरसायनरास' सचित्र ग्रन्थ है। इसके कर्त्ता श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय के केशराज मुनि है। कर्ता ने रचना मे स्वय के लिए ऋषि, ऋषिराज, ऋषिराय, मुनि, मुनीन्द्र, पडितराज आदि विशेषण प्रयुक्त किये हैं। ग्रन्थकी कुल पत्रसख्या २२४ है, जिसमे से वर्तमान मे १३१ पत्र उपलब्ध है। इन पत्रो मे २१३ रगीन चित्र है। चित्र राजपूत शैली के है। यह रचना राजस्थानी हिन्दी मे है तथा आचार्य हेमचन्द्र रचित 'त्रिषष्ठिशलाकापुरुषचरित' की रामकथा पर आधारित है। इसका प्रकाशन देवकुमार जैन प्राच्य शोध सस्थान से किया जा रहा है। क्र० २२३ द्रव्यसग्रह टीका (अवचूरि) है, जो अद्यावधि अप्रकाशित है। टीका सक्षिप्त एव सरल सस्कृत भाषा मे है। किन्तु पाण्डुलिपि मे टीकाकार के नाम, समयादि का उल्लेख नही है।

परिशिष्ट तैयार करने मे 'यादृश पुस्तक दृष्ट्वा तादृश लिखित मया' का अक्षरश: पालन किया गया है। अनुसन्धित्सुओ की सुविधा के लिए विभिन्न हस्तलिखित ग्रन्थो की सूचियो के क्रास सन्दर्भ दिये गये है, जिनमे राजस्थान के शास्त्र भडारो की सूची भाग–१ से ५, जिनरत्नकोष, आमेर सूची, दिल्ली जिन ग्रन्थ रत्नावली, कैटलॉग आफ सस्कृत मैन्युस्क्रिप्टस्, कैटलॉग आफ सस्कृत एण्ड प्राकृत मैन्युस्क्रिप्टस् प्रमुख है।

'इन्ट्रोडक्शन' मे डॉ० गोकुलचन्द्र जी जैन, अध्यक्ष प्राकृत एव जैनागम विभाग, सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने ग्रन्थावली के पूरे परिचय के साथ उसका महत्त्व भी स्पष्ट किया है। तथा अनेक मौकों पर उनका मार्गदर्शन भी मिलता रहा है, जिसके लिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। सस्थान के निदेशक के रूप मे डॉ० राजाराम जैन के मार्गदर्शन के लिए उनका भी आभारी हूँ। श्री बाबू सुबोधकुमार जी जैन तथा श्री अजयकुमार जी जैन का तो निरन्तर ही मार्गदर्शन तथा निर्देशन रहा है। यही दोनो व्यक्ति प्रेरणा स्रोत भी रहे, अत उनके प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ। अपने ग्रन्थागार सहयोगी श्री जिनेशकुमार जैन तथा प्रेस सहयोगी श्री मुकेशकुमार वर्मा का भी आभारी हूँ, जिन्होने समय-असमय कार्य पूरा करने मे निरन्तर मदद की। इनके अतिरिक्त जिन अन्य व्यक्तियो मे परोक्ष-अपरोक्ष रूप मे सहयोग मिला है, उन सबका हृदय से आभार मानते हुए आशा करता हूँ कि भविष्य मे भी हमे उनका सहयोग मिलता रहेगा।

–ऋषभचन्द्र जैन फौजदार
शोधाधिकारी,
देवकुमार जैन प्राच्य शोध सस्थान
आरा (बिहार)

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

SHRI DEVAKUMAR JAIN ORIENTAL LIBRARY.

JAIN SIDDHANT BHAVAN, ARRAH (BIHAR)

S. No.	Library accession or Collection No. if any	Title of work	Name of Author	Name of Commentator
1	2	3	4	5
1	Kha/38/1	Ādipurāṇa	Jinasenācārya	—
2	Jha/4	Ādipurāṇa	Jinasenācārya	—
3	Kha/14	Ādipurāṇa	Jinasenācārya	—
4	Kha/5	Ādipurāna	Jinasenācārya	—
5	Ga/105	Ādipurāna	—	—
6	Jha/138/1	Ādipurāṇa Tippaṇa	—	—
7	Jha/138/2	Ādinātha purāṇa	Hastimalla ?	—
8	Ga/44	Ādipurāna Vacanikā	—	—
9	Kha/69	Ādinātha Purāṇa	Sakalakriti	—
10	Kha/282	Ārādhnā-Kathā Kośa	Brahma-Nemidatta	—
11	Kha/155	Ārādhanā-Kathā Kośa	Brahmanemidatta	—

Mat. or Subt.	Script	Size in cms. No. of folios or leaves lines per page & No. of letters per line	Extent	Condition and age	Additional Particulars
6	7	8	9	10	11
P	D,Skt Poetry	31 4×16 2 258 15 52	C	Old 1904 V S	Published
P	D,Skt Poetry	30 7×15 6 367 10 52	C	Old 1851 V S	Copied Uderāma. Published
P	D,Skt Poetry	35 5×15 4 305 15 53	C	Good 1773 V. S	Published,
P	D,Skt. Poetry	37×16 305 13 56	C	Old 1735 V S	12000 Slokas. Published.
P.	D,H Poetry	43 8×16 9 688 11 52	C	Good 1889 V S	Copied by Jugarāja.
P	D,Skt, Prose	34 4×21 3 123 15 45	C	Good	
P	D,Skt Poetry	22 1×17 5 95 10 18	C	Good 1943 A. D.	Copied by Lokanātha Sastri, Unpublished.
P.	D, H. Prose	35 8×17 9 544 14 48	C	Good 1961 V. S	
P	D,Skt Poetry	29 8×19 2 177 12 53	C	Good 1797 V. S.	Published 5500 Slokas. Copied by Gulajārilāla.
P	D;Skt Poetry	32 5×16 5 196.14.48	C	Old 1848 V. S.	Published.
P	D,Skt. Poetry	28 8×11.6 244.10.47	C	Good 1807 V. S.	Published.

1	2	3	4	5
12	Ga/21/2	Ārādhanā Sāra		—
13	Kha/147/2	Bhadrabāhu-Caritra	Ācārya Ratnanandi	—
14	Kha/115	Bhadrabāhu-Caritra	Ācārya Ratnanandi	—
15	Jha/98	Bhagavatpurāṇa	Kesavasena	—
16	Ga/68	Bhaktāmara Kathā	Vinodīlāla	—
17	Ga/7	Bhaktāmara Kathā	Vinodīlāla	—
18	Ga/132	Bhaktāmara Kathā	Vinodīlāla	—
19	Kha/195	Candraprabha Caritra	Vīranandin	—
20	Ga/170	CandraPrabha Purāṇa	Pt Th thirāma ?	—
21	N[illegible] 2/49	Caturvimsati Jina Bhavāvali		—
22	Ga 129	Cārudatta-Caritra	Bhārāmala	—
23	[illegible]	[illegible]-Caritra	Bhagavatī Dāsa	—

6	7	8	9	10	11
P.	D,H. Poetry	37 1×23 1 46 18 66	C	Good	Published by Manikachandra Series
P.	D,Skt Poetry	29 2×12 5 28 9 50	C	Old	Published
P	D,Skt. Poetry	22 2×14 4 57 8 24	C	Good	Published copied by Nílakanthā Dāsa.
P.	D,Skt poetry	35 3×16 5 98 11 54	C	Good 1698 V S	Coped by Uddhava Josí, Unpublished
P	D,H Poetry	33 4×21 2 138 17.37	C	Good 1939 V S	
P.	D,H. Poetry	30 6×19 2 214 12 35	C	Good 1954 V S	Baladevadatta Pandita seems to be copiei
P.	D,H Poetry	33 4×15 4 183 12 40	C	Good 1954 V S	Slokas No 5400, Copied by Cunimālí
P.	D,Skt Poetry	34 1×21 5 306 20 26	C	Good 1761 Saka Samavata	Written on registei size paper Copied by Pand ta cārukírti. Published
P	D,H Poetry	32 4×17 4 180 13 38	C	Good 1978 V S	
P	D,Skt Poetry	19.4×15 5 3 13.14	C	Good	Unpublished
P.	D,H. Poetry	35 2×16 1 69 10.37	C	Good 1960 V. S.	Copied by Guljārí Lāla.
P.	D;H. Poetry	25.8×17 9 15.15 35	C	Good 1958 V. S	

1	2	3	4	5
24	Ga/167	Cetana-Caritra Nātaka		—
25	Ga/33	Darśana-Kathā	Bhārāmalla	—
26	Ga/85/1	Daśrana-Kathā	Bhārāmalla	—
27	Kha/176/4	Daśalākṣaní-Kathā	Śrutasāgara	—
28	Nga/6/11	Daśa-lākṣaní Kathā	Bhairondāsa	—
29	Ga/41/2	Dāna-Kathā	Bhārāmalla	—
30	Kha/12	Dhrma-Śarmābhyubaya	Mahākavi Haricandra	—
31	Jha/103	Dharma-Śarmábhyudaya Satíka	Mahākavi Haricandra	Yaśa-Kírti
32	Kha/188/5	Dhanya-Kumāra Caritra	Brahamanemidatta	—
33	Ga/9	Dhanyakumāra-Caritra	Brahmanemidatta	—
34	Ga/38	Dhanya-Kumāra-Caritra		—
35	Nga/2/6	Dudhārasa Dvādasí Kathā	Prabhūdasā	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	18 9×15 9 13 11 20	C	Good	
P,	D, H Poetry	26 9×17 5 34 13 30	C	Good 1961 V S	
P	D, H Poetry	26 3×17 9 40 12 29	C	Good 1940 V S	
	D,Skt Poety	24 4×11 3 3 11 44	C	Good	
P	D, H Poetry	22 8×18 1 6 17 18	C	Good 1751 V S,	
P	D, H. Poetry	27 8 ×18 5 23 14 35	C	Good 1962 V S	Copied by Pandit RāmaNāth
P	D,Skt Poetry	29 4×13 7 158 9 45	C	Good 1889 V S.	Published Good hand
P	D,Skt Poetry Prose	35 5×16 1 170 12 54	C	Good 1990 V S	Copied by Rośanalāla.
P	D,Skt Poetry	23 1 ×9 8 27 8 36	Inc	Old	Published Last pages are missing
P	D, H Poetry	36.6×21 4 19.17 65	C	Old 1932 V S	
P	D, H. Poet ry	26 6×17 3 44.13 35	C	Good	
P.	D; H Poetry	17 8×13.5 12 10 21	C	Old 1918 V. S	

1	2	3	4	5
36	Ga/158	Gajasingh Gunamālā Caritra	Khemacandra	—
37	Ga/176	Gajasingh Guṇamālā Caritra	Khemacandra	—
38	Kha/160/1	Hanumāna-Caritra	Brahmajita	—
39	Kha/11	Hanumāna Caritra	Brahmajita	—
40	Kha/198	Hanumāna Caritra	Brahmajita	—
41	Jha/64	Hanumāna Caritra	Brahmajita	—
42	Ga/83	Hanumāna Caritra	Ananta-Kīrti	—
43	Ga/102	Hanumāna Caritra	Ananta-Kīrti	—
44	Jha/83	Harivaṁśa Purāṇa	Raidhū	—
45	Jha/63	Harivaṁśa Purāṇa	Jasakīrti	—
46	Jha/87	Harivaṁśa Purāṇa	Brahma Jinadāsa	—
47	Kha/2	Harivaṁśa Purāṇa	Jinasenācārya	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H, Prose	21.3×15 6 36 11 26	C	Good	Durgāprasada seems to b copier.
P.	D,Skt Prose	35 3×16 3 35 10 52	C	Good 1987 V. S	
P	D,Skt Poetry	35 5×16 6 24.13 46	C	Good 1993 V S	Unpub Slokas No 995 copieda by Rośanalāla Ja n
P	D, H Prose	26 7×16 8 56 15 30	C	Good 1918 V S	
P.	D,Skt Prose Poētry	28 3×17 7 46 27 26	C	Good 1972 V S.	Published.
P.	D,Abb Poetry	35 5×17 4 93 12 52	C	Cood 1976 V S	It is also called—Ádipurāṇa 4000 Gāthās Copied by Rajadhara Lal Jain.
P	D,Skt Prose	29 8×14 6 6 10 47	Inc	Old	It is also called Nandiśvarās tāhnikā kathā or Siddhaca' rakathā Unpublished O l page No -14 to 19th availa..
P	D, H Poetry	26 5×17 6 10 13 38	C	Good 1962 V. S	
P	D, H Poetry	15.5×16 1 39 12.20	C	Old 1895 V S.	
P.	D,Skt/H Poetry Prose	27 6×18 2 37.13.33	C	Old	
P	D,Skt. Poetry	35.1×16 1 104.13.50	C	Good 1990 V. S.	Copied by Rosanalāla in Arrah
P.	D,Skt. Poetry	22 8×1.38 133.15.33	C	Old	First page is m s n.. L.s Page is Damaged.

1	2	3	4	5
71	Kha/ 111	Nemi-Purāna	Brahma Nemidatta	—
72	Ga/ 4	Nemi-Purāna		—
73	Nga/ 1/7/1	Neminātha Ristā	Hemarāja	—
74	Kha/ 146/2	Neminirvāna-Kāvya	Vagbhatta	—
75	Jha/ 130	Neminirvāna Kvāya Panjikā	Bhattāraka Jnana-bhūṣana	—
76	Ga/ 41/1	Niṣi Bhojana Kathā	Bhārāmalla	—
77	Ga/ 99/3	Niṣi Bhojana Kathā	Bhārāmalla	—
78	Kha/ 179/3	Nirdoṣa Saptamí Kathā		—
79	Kha/ 266	Padma Carita tippana	Candramuni	—
80	Kha/ 1	Padma-Purāna	Ravisenācārya	—
81	Kha/ 107	Padma-Purāna	Ravisenācārya	—
82	Ga/ 147	Padma-Purāna		—

6	7	8	9	10	11
P	D,Skt. Poetry	22 6×14 8 84.13.37	Inc	Old 1665 V. S.	Published. From page No 2 to 43 are missing in beginning and last pages are also missing.
P.	D, H. Prose Poetry	35 5×18 1 145 14 46	C	Good 1962 V. S	
P	D, H Poetry	20 4×13 8 11 12 11	C	Good	First page is missing.
P,	D, Skt Poetry	31 3×15 4 45 11 38	C	Old 1727 V S	Published.
P.	D, Skt Prose	35 5×17 3 48 15 45	C	Good	
P	D, H Poetry	27 6×17 4 20 13 44	C	Good 1962 V. S	Published.
P.	D, H Poetry	32 6×16 9 13 11 37	C	Good 1955 V S	Published. Copied by DurgāLala.
P	D,Hindi Poetry	25 5×11 7 6 6 33	C	Good	Published.
P	D,Skt Prose	35 4×17 5 34 12.55	C	Good 1894 V. S.	
P	D,Skt Poetry	40×19 - 487 13 46	C	Good 1885 V. S	Published Copied by Brahanana Gour Tiwary
P	D,Skt Poetry	25×11 65 9 44	Inc	Old	Published First 17 pages and last pages are missing
P	D, H Prose	32 2×15 8 311 12 47	Inc	Good 1890 V. S.	First 301 Pages are missing Raghunath Sharma s[illegible] to be copier.

1	2	3	4	5
83	Ga/69	Padma Purāna Vacanikā	—	—
84	Ga/8	Padma-Purāna Vacanikā	Daulata-āna	—
85	Ga/116	Padma-Purāna Bhāsā	Daulata-Rāma	—
86	Kha/3	Pāndava-Pu āna	Subhacandra Bhattāraka	—
87	Ga/40	Pāndava-Purāna	Bulā' i dāsa	—
88	Jha/129	Pārśva Pu āna	Raidhū	—
89	Jha/79	Pārśva Purāna	Sakalakīrti	—
90	Kha/108	Pārśva-Purāna	Sakalakīrti	—
91	Ga/30/2	Pārśva-Purāna	Bhūdharadāsa	—
92	Ga/131	Pārśva-Purāna	Bhūdhara 'āsa	—
93	Kha/8	Pradyumna-Carita	Somakīrti-Sūri	—
94	Kha/9	Pradyumna-Car	Somakīrti Sūri	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H. Poetry	25 3 ×11 2 108 13 44	C	Old 1788 V S	
P	D H Poetry	33 4×20 8 87 13.43	C	Good 1984 V S	
P	D Skt Poetry	27 8×12 4 85 14 86	C	Old	Published
P	D, Skt Poetry	31 2×15 4 81 11 45	Inc	Old	Published 9th'10th & 11th Sargas are missing
P	D,Skt Poetry	29 2×17 9 67 13 48	C	recent 1978 V S	It is also called Añjani Caritra
P	D,Skt Poetry	33 5×20 7 67.12 40	C	Good	Copied by Bhujawala Prasāda Jaini.
P.	D H, Poetry	28 9×15 4 54 11 35	C	Good 1901 V. S	
P.	D H. Poetry	32.2×20 1 43 13.35	C	Good 1955 V S.	
P	D, Apb Poetry	34 3×21 1 10 213.50	Inc	Good 1987 V. S	Copied by Pt, Śivadayāla Caubay.
P	D, Apb Poetry	33 9×21 5 121 12 45	C	Good	Unpublished,
P,	D,Skt, Poetry	33 4×20 7 201.14 42	C	Good 1988	Unpublished Copied by Pt, Śivadayāla Caubay,
P.	D,Skt Poetry	35 5×16 435 10 32	C	Good	Published,

1	2	3	4	5
48	Ga/2	Harivaṁśa Purāna Vacanikā	Daulata Rāma	
49	Ga/117	Harivaṁśa-Purāna		—
50	Kha/126	Jambūswāmī-Caritra	Brahma Jinadāsa	—
51	Jha/94	Jambūswāmī Caritra	Sakala-Kīrti	—
52	Jha/114	Jambūswāmī Caritra	Rājamalla	—
53	Ga/62	Jambūswāmī-Kathā	Jinadāsa	—
54	Kha/27	Jayakumāra Caritra	Brahma Kāmarāja	—
55	Ga/60	Jinadatta-Carita Vacanikā	PannāLāla	—
56	Jha/121	Jinendra Māhātmya Purāna	Bhattārak ndra Bhūṣana	—
57	Kha/166/2	Jinamukhāvalokana Kathā	Sakalakīrti	—
58	Ga/39	Jīvandhara Caritra	Nathamal Vila	—
59	Kha/116/1	Kathāvalī		—

6	7	8	9	10	11
P	D, H, Prose Poetry	33 2×17 3 512 12 54	C	Good 1884 V. S.	21,000 Anustup Chhandas are in the ms.
P	D, H Poetry	26 2×11 5 128 12 44	Inc	Old	
P	D,Skt, Poetry	29 ? ×18 7 83 12.42	C	Good 1608 V. S.	published, Copied by Gulajārī Lāla Śarmā
P	D,Skt, Poetry	27 8×12 5 117 10 32	C	Good 1664 V S	Capied by saha Rāmānkena, It is same to Last one.
P	D,Skt, Potiy	35 1×16,4 69 12 51	C	Good 1992 V S	Copied by Raśana Lāla.
P	D, H, Poetiy	31 5×14 3 28 9.37	C	Good 1883 A D.	Copied by Duragāprasāda Jaini.
P	D,Skt Poetry	26 9×11 5 86 11 40	C	Old 1842 V. S.	It is also called Jayapurāna.
P.	D, H, Prose	32 1×12 1 113 7 38	C	Old 1931 V S	
P.	D,Skt, Poetry	45.8×22 1 776 16 60	C	Good 1992 V S	Copied by Raśanalāla Jain Unpub. Slockas No, 76000 Vesten two and one book
P	D,Skt, Poetry	25 2×11 7 14 12 52	C	Old 1932 V. S	Copied by Pt Paramānanda.
P.	D; H, Poetiy	27 9×18 2 106,14,45	C	Good 1961	
P	D,Skt, Poetry	24 8×11.2 103.10 42	Inc	Old 1679 V. S	Copied by Brahmbeni Dāsa.

1	2	3	4	5
60	Ga/110/4	Kudeva Caritra		—
61/1	Jha/85	Madanaparājaya	Jinadeva	—
61/2	Jha/132	Mahipāla Caritra	Cāritra-Bhūṣana Muni	—
62	Ga/171	Mahipāla Caritra	Nathamala	—
63	Kha/183	Maithalī Kalyāna Nātaka	Hastimalla Kavi	—
64	Kha/264	Megheśvara Caritra	Mahā Kavi Raidhū	—
65	Kha/62/3	Nandīśvara Vrata-Kathā	Śubhacandrācārya	—
66	Ga/85/2 (Kha)	Nemi Candrikā		—
67	Ga/85/2 (Ka)	Nemiāntha Candrikā	Munnālāla	—
68	Ga/165	Neminatha Caritra	Vikrama Kavi	—
69	Jha/111	Nemipurāna	Brahma Nemidatta	—
70	Jha/C6	Nemi-Purāna	Brahma Nemidatta	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Prose	34 8×15 8 749 11 43	C	Good 1953 V S	Colour panting by commentator on the wooden cover.
P	D, H Poetry	32 8×17 2 327 17 51	C	Good 1845 V. S	
P	D, H Poetry	34 3×19 6 1246 12 45	C	Old	
P	D,Skt Poetry	32 5×17 6 143 14 58	C	Good 1820 V S	Publisheed copied by Pandit Māyā Rāma
P	D, H Poetry	26 7×17 7 195 13 37	Inc	Good	Last pages are missing
P,	D, Apb Poetry	35 5×16 7 38 13 52	C	Good 1993 V S	
P	D,Skt Poetry	32 8×17 8 96 11,83	C	Good	
P.	D,Skt poetry	24 3×15 2 179 10 32	C	Old 1891 V S	Published
P.	D, H Poetry	33 5×16 1 55 14 53	C	Good 1856 V S	Copied by Rāmasukhadāsa
P	D, H Poetry	33 1×20 3 80 12 45	C	Good 1953 V S	Copied by cunnimāti
P.	D,Skt Poetry	28 5×13 6 241 9 45	C	Good 1943 V S	Published Natwarlāla Sharmā copied it
P,	D,Skt Poetry	27 7×14 4 271 10 33	C	Old 1777 V S	Published. Capied by Sri Rai Singh

1	2	3	4	5
95	Kha/167	Pradyumncaaritra	Somakirti Sūri	—
96	Kha/147/1	Pradyumncaaritra	Somakirti Sūri	—
97	Ga/133	Puṇyāśrava Kathā	Dai latarāma	—
98	Jha/11	Puṇyśārava Kathā	—	—
99	Jha/82	Panyāśrava kathā Koṣa	Bhāvasingh	—
100	Ga/90	Panyāśrava kathā Koṣa	Bhāvasimha	—
101	Jha/107	Purāṇasāra Saṁgraha	Dāmanandi	—
102	Jha/12	Pūjyapāda Caritra	Padmarāja Kavi	—
103/1	Ga/155	Rāmayaśorasāyana Rāsa	Keṣarāja Ṛṣi	—
103/2	Nga/6/10	Ratnatraya Kathā	—	—
104	Nga/5/6	Ratnatrayavrata Pūjā Kathā	Jinendrasena	—
105	Nga/6/8	Ravivrata Kathā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D,Skt Poetry	24 7×11.3 151 15 40	C	Old 1752 V S.	Published
P	D;Skt Poetry	30 2×14 1 126 13 46	C	Old 1769 V. S	Published
P	D H Prose Poetry	32 5×19 6 178 14 34	C	Good 1874 V. S.	
P	D H. Prose/ Poetry	27 2×14 6 50 13.36	Inc	Good	Last pages are missing.
P	D, H Poetry	31 1×12 5 347 10 43	C	Good	
P	D, H, Poetry	35 6×21 3 167 16 47	C	Good 1962 V S	Copied by Pandita Sita Ram Sastri.
P	D,Skt Poetry	34.9×16 3 55 13 50	C	Good 1990 V S	Copied by Rośanalal. Jain It, also called caturviṁśatipurāna.
P	D; K. Poetry	33 5×17 2 105.10 44	C	Good 1932	
P	D; H, Poetry	25 5×11,00 224.15.44	Inc	Good	Ninty three pages are missing
P.	D; H. Poetry	22.8×18 1 4 17.20	C	Good	
P.	D,Skt H Poetry	21 2×16 9 15.17.20	C	Good	
	D, H Poetry	22 8+18.1 2.17 19	C	Good	

1	2	3	4	5
106	Nga/1/6/2	Ravivrata Kathā	Bhānukriti	—
107	Jha/109	Rājāvali Kathā	Devacandra	—
108	Ga/168	Rāmapamāropama Purāṇa		—
109	Kha/257	Rāma Purāṇa	Somasena	—
110	Jha/35/7	Roh ṇí Kathā	Hemarāja	—
111	Kha/185/2	Rotatījavrata Kathā	Jainendra Kishora	—
112	Ga/72	Rotatījavrata Kathā	Jainendra Kishora	—
113	Jha/104	Ṛṣabha Purāṇa	Sakalakīrti	—
114	Ga/98/1	Samyaktva Kaumudí	Jodharāja Godíkā	—
115	Ga/98/2	Samyaktva Kaumudí	,,	—
116	Ga/130	Samyaktva Kaumudí	,,	—
117	Ga8/39/	Samyaktava Kaumudí	,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	18 2×13 8 3 16 18	C	Good	
P	D,K. Prose	34 6×16 5 298 10 50	C	Good	
P	D,H Poetry	26 2×14 2 40 11 34	C	Good	
P	D,Skt Poetry	32 7×17 9 246 11 48	C	Good 1986 V S	It is also called padma-purāna.
P	D,H poetry	16 1×16 1 9 13 19	C	Good	
P	D,H Poetry	23 0×14 0 17 6 38	C	Good 1950 V S	
P	D,H Poetry	23 2×14 1 10 8 21	C	Good	
P	D,Skt. Poetry	30 5×14 3 167 13 43	C	Old	It is also called Ṛṣabha-deva-caritra unPublished
P.	D,H Poetry	28 3×13 9 69 11 32	C	Good.	
P	D,H Poetry	28 1×16 3 93 10 33	C	Good 1913 V S	Slokas 1700
P	D,Skt Poetry	30 1×14.8 32 13 24	Inc	Good	
P	D H Poetry	38 2×20 8 35 14 53	C	Good 1970 V. S.	Copied by Bhelirāma.

1	2	3	4	5
118	Ga/136/1	Samyaktva-Kaumudí	Jodharāja Godíkā	—
119	Nga/5/3	Saṅkata caturthí Kathā	Devendrabhūṣana	—
120	Nga/1/2/4	Saṅkata catuthí Kathā	Devendrabhūṣana	—
121	Ga/161	Saptavyasana carıtra	Bhārāmalla	—
122	Jha/95/1	Saptavyasana Kathā	Somakírtı	—
123	Jha/95/2	Saptavyasana Kathā	Somakírtı	—
124	Jha/96	Śayyādāna Vaṅka Cūlí Kathā		—
125	Kha/66	Śāntınāthā Purāna	Sakalakírtı	—
126	Ga/45	Śāntınāthā Purāna	Sevārāma	—
127	Ga/43	Śāntınāthā Purāna	Sevārāma	—
128	Ga/41/3	Śílakathā	Bhārāmalla	—
129	Ga/101/2	Śílakathā	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	29.8×18 8 46.16.34	C	Good	
P	D, H. Poetry	20.1×17.3 4 11 26	C	Good	
P	D; H Poetry	17 8×13 5 5 10.18	C	Good	
P	D, H Poetry	32 2×18 5 95 13 45	C	Good 1977 V S	
P	D,Skt Poety	29 8×13 5 163.10 20	C	Good 1829 V S	
P	D, H Poetry	38.3×25 5 163 26 20	C	Good 1626 V S	
P	D, Skt Poetry	20 2 ×11 3 5 18.61	C	Good	5672 Ślokas; Published Copied by Guljāri Lāla Sharmā
P.	D,Skt Poetry	30 0×19 0 172 12.47	C	Old 1621 V S	
P	D, H Poetry	32 5×18 6 189.17 36	C	Old	Damaged.
P	D, H. Poetry	31 6×16 5 247.12.42	C	Good. 1943 V. S.	
P	D, H Poetry	27 6×16.7 24.14.36	Inc	Good	24, 25 and Last pages are missing.
P	D; H Poetry	33 1×18 5 27.12.41	C	Old	

1	2	3	4	5
130	Ga/99/2	Śīlakathā	Bhārāmalla	—
131	Ga/101/1	Śīlakathā	„	—
132	Ga/138/2	Śīlakathā	„	—
133	Ga/91	Śrenikacaritra	Śubhacandra	—
134	Jha/125	Śrenikacaritra	Śubhacandra	—
135	Jha/128	Śrenikacaritra	Jayamitra	—
136	Kha/96	Śrenikacaritra	Jayamitra	—
137	Ga/82	Śrenikapurāna	Vijayakīrti	—
138	Ga/150	Srīpālacaritra	—	—
139	Kha/88	Śrīpālacāritra	Brahmanemidatta D/o Bhattāraka Mallibhūṣana.	—
140	Ga/16/1	Śrīpālacaritra	—	—
141	Ga/16	Śrīpālacaritra	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	33 1×16 8 31 11 33	C	Good 1905 V S	
P	D, H Poetry	33 1×14 1 39 10 36	C	Good	
P	D, H Poetry	25 2×16 1 49 10 24	C	Old	
P	D, H. Poetry	35 3×20 3 93.16 57	C	Good 1962 V S	Copied by Pt Sitārāma
P	D, Skt Poetry	35 1×16 3 64 13 48	C	Good 1993 V S	
P	D,Apb, Poetry	35 6×16 5 35 13 51	C	Good 1993 V S	This another title of Vardhamānakāvya unpublished Copied by Rośanalāla Jain
P	D,Apb Poetry	25 8×11 5 75 13 37	C	Old	Unpublished
P	D, H Poetry	28 8×16 7 116.11 32	C	Good 1929 V. S	
P	D, H. Poetry	30 5×14 3 175 9 28	C	Good 1895 V S	Hariprasad seems to be copier Author's name is not mantioned.
P.	D,Skt Poetry	35.2×15 3 51.11 57	C	Old 1837 V. S.	Unpublished.
P.	D; H. Poetry	30 1×14 8 154.10.35	Inc.	Good	Last pages are missing
P	D, H. Poetry	34.5×16 7 112 12 42	C	Old 1891 V. S.	First and Third pages are missing.

1	2	3	4	5
142	Kha/252	Śrīpurāna	Hastimalla	—
143	Kha/150/1	Śruta-Pañcamī-Vrata Kathā [Bhaviṣyadatta Caritra]	Padmasundara	—
144/1	Kha/127/1	Sudarśana Caritra	Sakalakīrti	—
144/2	Kha/73/2	Sudarśana Setha Kathā		—
145	Nga/1/2/5	Sugandhadaśamī Kathā	Jnānasāgara	—
146	Jha/87	Sukośala Caritra	Raidhū	—
147	Kha/6	Uttara Purāna	Gunabhadrācārya	—
148	Ga/11	Uttara Purāna		—
149	Kha/157/1	Vardhamāna Caritra	Sakalakīrti	—
150	Ga/46	Vardhamāna Purāṇa	Khuśācanda	—
151	Ga/57	Viṣṇu kumāra Kathā	Vinodī Lāla	—
152	Kha/77	Vratakathā Kośa	Śrutasāgara	—

6	7	8	9	10	11
P	D,Skt - Poetry	33 5×20 7 38 13 39	C	Good	Unpublished
P	D,Skt, Poetry	31 3×12 4 42 11 56	C	Old 1800 V S	Last page is damaged
P	D,Skt Poetry	27 3×18 1 42.12 40	C	Old 1737 Saka-Samvita	900 Ślokas published,
P.	D,Skt Poetry	22 5×16 5 4 3 26	C	Good	
P	D, H Poetry	17 8×13 5 6 10 18	C	Good	
P	D,Apb. Poetry	33 7×19 5 17 16 49	C	Good 1987 V S	Unpublished
P	D,Skt Poetry	32 5×14 6 309 12 46	C	Good 1300 V S	Published contains 20,000 ślokas
P	D, H Poetry	32 6×16 5 262 12 46	C	Good	First page is missing
P	D,Skt Poetry	26 5×12.8 122 10 42	C	Old 1886 V S	Published It is also called varddhamānapurāna
P	D, H Poetry	33 3×17 1 92 12 45	C	Good 1884 V S. Śaka 1749	
P	D, H Poetry	28 3×14 7 27 7 25	C	Good 1947 V. S	
P.	D.Skt. Poetry	29 5×13 5 71.14 47	C	Good 1937 V S	

1	2	3	4	5
153	Kha/92	Yaśodhara carıtra	Vāsavasena	—
154	Jha/93	Yaśodhara carıtra	..	—
155	Kha/82	Yaśodhara carıtra	Vādırājasūri	—
156	Kha/133	Adhyātma kalpa druma	Munı Sundarsūrı	—
157	Ga/86	Adhyātma Bārakharı	—	—
158	Ga/163	Anyamatasāra	Venıcandra	—
159	Jha/6	Arthaprakāśıkā Tıkā	—	—
160	Ga/49/1	Aṣṭapāhuda Vacanıkā	Kundakanda	Jayacanda
161	Ga/49/1	,, ,,	,,	,,
162	Kha/101	Ācārasāra	Vıranandı	—
163	Nga/2/23	Ālāpapaddhatı	Devasena	—
164	Kha/173/4	Ālāpapaddhatı	,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D,Skt. Poetry	27.4 x 12 5 44 9 14	C	Old 1732 V. S.	
P	D,Skt Poetry	26 6 x 11.3 28 12.48	Inc	Old 1501 V, S	Page No 4 and 5 are missing
P.	D;Skt Poetry	29 7 x 15 4 23.10 38	C	Good 2440 Vira S	Uppublished
P	D,Skt, Poetry	26 3 x 11 2 24 11.53	C	Old 1800 V S	Published
P	D; H Poetry	24.1 x 17 2 42 21 19	C	Old	First two pages are missing
P	D, H, Poetry/ Prose	28 3 x 11 1 67.6.43	C	Old 1936 V S	
P.	D, H Poetry	29 1 x 20 4 51 14 35	Inc	Good	It is commentary on Tattvārthasūtra Last pages are missing
P.	D, H, Prose	34 8 x 21 3 194 13 38	C	Good	
P	D, H Poetry	35 7 x 21 3 156 14 44	C	Good 1946 V S	Copied by Gangārāma
P	D;Skt, Poetry	20 8 x 11 2 72 10 38	C	Old 1932 Śaka Sṁ	
P.	D,Skt Prose	19 4 x 15 5 18 13.15	C	Good	Published.
P.	D,Skt, Prose	27 2 x 17 5 8 13 35	C	Old 1949 V. S.	It is also called Nayacakra.

1	2	3	4	5
165	Nga/2/31	Ārādhanāsāra mūla	Devasena	—
166	Ga/151/1	Ārādhanāsāra	Pannalāla	—
167	Kha/275	Ārādhanāsāra	Ravicandra	—
168	Kha/177/12	Āṣāḍha Bhūti caupāí	Āṣādha Bhūti Muni	—
169	Ga/86/2	Ātmabodha-Nāmamālā	—	—
170	Jha/113	Ātmatattva-Parikṣana	Devarājarāja	—
171	Jha/112	Ātmānusāi	—	—
172	Kha/145/2	Ātmānuśāsana	Gunabhadra D/o Jinasena	—
173	Kha/105/3	Ātmānuśāsana	Gunabhadra	—
174	Ga/145/2	Ātmānuśāsana tīkā	Gunabhadra	—
175	Kha/165/7	Āvśyakavidhi Sūtra	—	—
176	Ga/108	Banārasí-Vilāsa	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Pkt Poetry	19 4×15 5 13 13.16	C	Good	Published
P	D,Pkt/H Prose/ Poetry	32 3×12 5 45 7 35	C	Good 1931 V S	
P.	D,Skt Po try	20 4×17 4 46 12 23	C	Good 1944 A D.	Contains 247 Slokas Copied by N Chandra Rajendra
P.	D, H Poetry	24 6×11 1 12 13 36	C	Old 1767 V S	
P	D, H Poetry	24 1×17 2 32 21 16	C	Good	
P.	D, Skt Prose	35 2×16 5 14 8 32	C	Good	
P	D,Skt Poetry	35 2×16 2 2 8.34	C	Good	
P	D,Skt poetry	31 8×14 1 33 9 44	C	Old 1940 V S	Published
P	D,Skt Poetry	29 5×15 5 20 9 52	C	Good	
P	D,Skt/H Prose/ Poetry	28 5×14 7 156 10 36	C	Old 1858 V S	
P	D,Pkt Poetry	25 8×10 8 7 7 59	C	Old 1642 V S	
P.	D, H Poetry	23 9×15 8 109 19 20	Inc	Old	Opening and closing pages are missing

1	2	3	4	5
177	Ga/1	Bhagavai Ārādhanā	Śivācārya (Śivakoṭi)	Sadāsukha case
178	Ga/111/1	Bāīsa Parīṣaha	—	—
179	Kha/215	Bhavyakaṇṭhābharana pañjikā	Arhaddāsa	—
180	Kha/216	Bhavyānanda Śāstra	Pāndeya Bhūpati	—
181	Kha/199	Bhāvasamgraha	Śrutamuni	—
182	Kha/124	Bhāvasamgraha	Vāmadeva	—
183	Kha/189	Bhāvanāsara Samgraha	Cāmunda Rāya	—
184	Kha/136/1	Brahmacaryāṣṭaka	Padmanandi	—
185	Ga/6	Brahma-Vilāsa	Bhagawati-Dasa	—
186	Ga/95	"	"	—
187	Ga/110/3	Bramhā Brama-Nirūpana	—	—
188	[illegible]	Buddhi-Prakāśa	Dipacanda	—

6	7	8	9	10	11
P	D,Pkt/H Prose/ Poetry	35 5×18 1 410 13 54	C	Good	
P	D, H Poetry	20 7×16 6 08 11 28	C	Old 1749 V S	
P	D,Skt Poetry	16 9×15 3 23 11 27	C	Good 2451 Vira S	Copied by Nemirāja.
P.	D, Skt Poetry	16 3×15 2 12 11 30	C	Good 2451 Vira S	Copied by Nemirāja and Sketched of Bahubali on frist page
P	D,Pkt Poetry	29 8×19 6 19 9 35	C	Good	It is also called Bhāvatribhaṅgī
P	D,Skt Poetry	28 4×11 5 48 8 40	C	Old 1900 V S	Published
P	D, Skt Poetry	26 3 ×10 6 69 10 57	C	Old 1598 V S	It is also called cāritrasāra.
P,	D,Skt Prose/ Poetry	34 5×20 6 111 15 52	C	Good 1939 V S	Copied by Suganachanda.
P	D, H Poetry	31 8×14 3 129 9 48	C	Good 1755 V S	
P	D, H Prose	37 6×19 9 198 12 37	C	Good 1954 V S	
P	D, H Poetry	20 7×16 1 16 14 15	C	Good	
P.	D, H Poetry	31 8×19 1 99 14 50	C	Good 1978 V. S	Copied by Pt Dubay Rūpanārayana

1	2	3	4	5
189	Ga/172	Buddhi-Vilāsa	Bakhatarāma	—
190	Ga/106/7	Candraśataka	—	—
191	Kha/175/1	Carcā Nāmāvali	—	—
192	Ga/135/3	Carcāśataka Vacanikā	Dyānatarāya	—
193	Ga/48/1	,, ,,	,,	—
194	Ga/48/2	,, ,,	,,	—
195	Ga/146	Carcā Saṁgraha	—	—
196	Ga/152/1	Carcā Samādhāna	Bhūdharadāsa	—
197	Ga/13	,, ,,	Durgālāla	—
198	Ga/135	Carcāsāgara Vacanikā	Swarūpa	—
199	Ga/67	Caritrasāra Vacanikā	—	—
200	Ga/121	,, ,,	Cāmuṇḍarāya	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	32 3×17 5 68 13 46	C	Old 1982 V S	
P	D, H Poetry	23 9×16 8 10 25 26	C	Old	
P	D, H Poetry	26 1×16 8 49 12 28	C	Old 1942 V S	Copied by Pt Chobey Mathurā Prasāda.
P	D, H Prose	31 8×16 1 83 10 40	C	Good 1914 V. S	Copied by Nandarāma.
P	D, H Prose Poetry	25 1×14 3 41 10 26	Inc	Old	Last pages are missing.
P	D, H, Prose Poetry	33 3×21 7 91 16 23	C	Good 1929 V S	
P	D, H Prose/ Poetry	32 8×15 8 353 12 35	C	Good 1854 V. S	Fatecanda sanghai seems to be copier
P	D, H Prose/ Poetry	27·9×12 9 80 13 37	C	Old	
P	D, H, Poetry	27 7×16 2 133 10 32	C	Good 1959 V S	
P	D, H Prose/ Poetry	29 2×19 2 242 19 32	C	Good	
P	D, H Poetry	27 5×19 6 103 14 26	Inc.	Good	Last pages are missing.
P	D, H Prose	30 3×15·8 212 9 36	,,	Good	Last pages are missing.

1	2	3	4	5
201	Kha/177/1	Caubisa ṭhāṇā	—	—
202	Kha/210 (K)	Caubisagaṇagāthā	—	—
203	Kha/177/9	Caudasaguṇa Niyam	—	—
204	Ga/80/4	Caudaha Guṇasthāna	—	—
205	Kha/188/1	Causaraṇa Painna	—	—
206	Ga/86/3	Cālagaṇa	—	—
207	Kha/171/3	Chahadhālā	Doulatarāma	—
208	Kha/170/4	Chiyālisa doṣa rahita āhāra Śuddhi	—	—
209	Kha/161/1	Darśanasāra	Devasena	—
210	Ga/32	Darśanasāra Vacanikā	—	—
211	Ga/164	Dasalakṣaṇa Dharma	Sumati Bhadra ?	Sadāsukadāsa
212	Kha/214	Dānaśāsana	Vāsupujya	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Pkt Poetry	30 4×15 3 18 11 39	C	Old 1725 V S	
P	D,Pkt/H Prose/ Poetry	26 8×15 8 24 14 30	C	Good 1967 V S	Capied by Karam canda Rāmaji
P	D, H Prose	26 6×11 ? 1 10 35	C	Good 1810 V S	Only on page is available
P	D, H Prose	23 2×15 3 57 22 22	C	Old 1890 V S	
P	D, Pkt Poetry	25 2×10 8 11 14 28	C	Old 1682 V S	
P	D, H Poetry	24 1×17 2 13 18 19	C	Good	
P	D, H Poetry	20 6×17 8 11 12 29	C	Good 1950 V S	
P	D, H Poetry	27 3×17 6 2 12 27	C	Old	
P	D,Pkt Poetry	26 6×13 1 4 10 44	C	Old 1886 V. S	Published.
P	D, H Prose	33 1×15 1 105 11 58	C	Good 1923 V S.	
P.	D, H Prose	22 8×15 1 42 12 30	C	Good 1978 V. S	
P	D, Skt Poetry	34 8×14 5 59 10 55	C	Good	

1	2	3	4	5
213	Nga/2/21	Dravyasaṁgraha	Nemicandra	—
214	Kha/173/1	,,	.	—
215/1	Nga/6/19	,,	,,	—
215/2	Kha/73/1	,,	,,	—
216	Ga/111/5	,,	,,	—
217	Ga/111/3	,,	,,	—
18	Ga/79/2	,,	,,	Dyanāta Rāya
219	Ga/134/7	,,	,,	Bhagavatī Dāsa
220	Jha/50	,,	,,	,,
221	Jha/30	,,	,,	Bhagavatī āsa
222	Jha/25/1	,,	,,	Dyānata rāya
223	Kha/165/2	Dravyasaṁgraha saṭika	,,	—

(Dharma, Darśana, Ācāra.)

6	7	8	9	10	11
P.	D,Pkt Poetry	19.4×5 5 6 13 15	C	Good	
P	D,Pkt, Poetry	27 2×17 6 6 8 42	C	Old 1948 V S	Published copied by Munindra Kirti
P	D,Pkt Poetry	22 8×18 1 6 13 16	C	Old 1273 Sana	
P	D,Pkt Poetry	16 7×12 8 12 10 13	C	Good	published
P	D, H Poetry	21 2×15 8 10 15 18	Inc	Old	Last pages are missing.
P	D,Pkt/H Poetry	21 3×16 7 18 16 15	C	Old	
P.	D,Pkt /H Prose/ Poetry	25 3×16 2 30 11 27	C	Good 1962 V S	
P	D, H Poetry	30 3×16 3 10 14 40	C	Good 1731 V. S	
P	P,Pkt /H Poetry	21 2×16,7 15 15 20	C	Old	
P	D, H Poetry	18 2×10 8 33 7 23	C	Good 1731 V. S	
P	D, H Poetry	22 9×15 4 9 23 19	C	Good	
P.	D,Pkt/ Skt Prose	24 8×11 3 24 10 50		Old 1721 V. S	Unpublished.

1	2	3	4	5
224	Ga/65	Dravyasaṁgraha Vacanikā	Nemicandra	Jayacanda
225	Kha/125	Dharma Parīkṣâ	Amitagati D/o Mādhavasena	—
226	Kha/102	,,	Amitagati	—
227	Ga/24	,,	Manoharadāsa	—
228	Ga/25	,,	,,	—
229	Ga/71	,,	,,	—
230	Jha/65	Dharma Ratnākara	Jayasena	—
231	Kha/157	,,	,,	—
232	Ga/113	Dharm Ratnodhyota	Jagamohandāsa	—
233	Ga/100	,,	,,	—
234	Ga/159	Dharmrasāyana	Padmanandi Muni	Devīdāsa
235	Kha/45	,,	,, ,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry Prose	28 1×20 5 39 14 33	C	Good	First page is missing
P	D,Skt Poetry	27 2×13 4 110 9 34	C	Old 1681 V S	Published
P.	D,Skt Poetry	25 8×11 4 72 11 41	C	Old 1776 V S	Published
P	D, H Poetry	33 6×14 6 174 8 36	C	Good	Contains 3300 chandās
P	D, H Poetry	30 5×15 1 130 12 28	C	Old	Copied by Dharmadāsa
P	D, H, Poetry	23 4×12 6 242 9 20	C	Good 1860 V S	
P	D,Skt Poetry	33 7×20 8 80 12 43	C	Good 1985 V S	Published
P	D,Skt, Poetry	26 4×12 5 144 9 46	C	Old 1910 V S	Published From page 69th to 84rth are missing
P.	D, H Poetry	28 3×14 3 232 9 21		Good 1945 V S	Published
P	D, H Poetry	27 5×16 3 164 12 21	C	Good 1948 V S	Published, Copied by Nilakanthadāsa
P	D,Pkt/H Poetry	33 1×16 5 19 14 42	C	Good	Published
P	D,Pkt/H Poetry	30 6×16 5 18 5 45		Old	

1	2	3	4	5
236	Ga/153	Dharma Vilāsa	Dyānataraya	—
237	Ga/14	"	"	—
238	Ga/112/1	"	"	—
239	Kha/188/3	Dharmopadeśa Kāvya Tīkā	Lakṣmīvallabha	—
240	Jha/40/1	Dhālagana	—	—
241	Jha/35/6	"	—	—
242	Kha/19/2	Gommatasāra (Jīvakānda)	Nemicandra D/o Abhayanandi	—
243	Kha/274	Gommatasāra-Vṛtti (Jīvakānda)	Nemicandra	—
244	Ga/128/1	Gommatasāra (Jīvakānda)	Todaramala	—
245	Ga/128/2	Gommatasāra (Karmakānd)	Nemicanda	—
246	Nga/2/22	"	"	—
247	Kha/173/2	"	"	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, H Prose	27 8×13 1 249 11 36	C	Good	
P.	D, H Poetry	33 1×19 3 166 14 48	C	Good 1941 V S	
P	D, H Poetry	21 9×15 5 165 18 17	C	Good	
P	D,Skt Prose	24 3×10 6 28 17 71	C	Old	With svopajña vrtti.
P	D, H Poetry	15 4×11 9 14 10 20	C	Good	It is collected in a Gutakā
P	D, H Poetry	16 1×16 1 10 14 20	C	Good	
P.	D,Pkt Poetry	34×16 8 48 14 65	C	Old	Published
P	D,Skt / Pkt Prose/ poetry	34 5×12 9 218 12 60	C	Good	Published
P	D, H Prose	46 5×22 5 635 16 72	C	Good 1848 V S	
P	D,Pkt Poetry	32 2×18 9 14 7 35	C	Good	
P.	D,Pkt Poetry	19 4×15 5 22 13 16	Inc	Good	
P.	D, Pkt Poetry	27 2×17 5 9 11.38	Inc	Old	Last pages are missing

1	2	3	4	5
248	Jha/3	Gommatasāra (Karmakānda)	Nemicandra	Hemarāja
249	Kha/134/4	,,	,,	,,
250	Kha/192	Gotrapravara nirnaya	—	—
251	Ga/106/5	Gunasthāna carcā	—	—
252	Ga/174	Guropadeśa Śrāvakācāra	Dalūrāma	—
253	Ga/34	Guru Śiṣya Bodha	—	—
254	Kha/227/1	Hitopadeśa	—	—
255	Jha/90	Indranandisaṅhitā	Indranandi	—
256	Ga/93/4	Iṣṭopadeśa	Pūjyapāda	Dharma-dāsa
257	Ga/151/3	Jala Gālani	Megha kīrti	—
258	Jha/97	Jambūdvipa-prajnapti Vyākhyāna	Padmanandi	—
259	Kha/259	Jainācāra	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D,Pkt/H Prose/ Poetry	31.2×15 7 41 15 48	Inc	Good 1888 V S	
P	D, H Prose	31 9×16 6 60 12 40	C	Cood 1845 V S	
P	D,Skt Prose	34 1×21 5 4 21 29	C	Good	Written on register size paper
P	D, H Prose	23 9×16 8 36 25 26	C	Old 1736 V S	
P	D, H Poetry	32 4×17 5 183 12 40	C	Good 1982 V S	Copied by Pt Bacculāl Coubay.
P	D, H Prose	27 1×16 6 130 8 23	Inc	Old	129 Page is missing.
P	D, Skt Poetry	35 2×16 3 4 11 56	C	Good 1987 V S	Copied by Batuka Prasāda
P,	D,Pkt Poetry	35 2×21 6 23 11 52	C	Good 1987	
P	D, H Prose/ Poetry	27 7×17 1 4 11 32	Inc	Good	
P	D, H Poetry	26 2×12 2 3 13 29	C	Old	Meghakirti seems to be Auther and copier
P	D,Skt Prose	35 3×16 4 21 11 52	C	Good 1979 V S.	Copied by Batuka Prasad
P.	D, H Poetry	21 2×16 8 109 12 32	C	Good	

1	2	3	4	5
260	Kha/225	Jinasamhitā	Eakasandhi Bhattāraka	—
261	Kha/127/2	Jivasamāsa	—	—
262	Ga/127	Jñānasūryodaya Nātaka	Vādicandra Sūri	Bhāga-canda
263	Ga/52	Jñānasūryodaya Nātaka Vacanikā	,,	,,
264	Ga/78	Jñāna Sūryodaya Nātaka Vacanikā	,,	,,
265	Ga/87	,, ,,	,,	,
266	Kha/164	Jñānārnava	Śubhacandra	—
267	Kha/71	,,	,,	—
268	Ga/58/2	,,	,	—
269	Ga/58/1	,,	Vimalagani	—
270	Kha/163/3-4	Jñānārnava Tikā (Tatvatraya Prākaśini)	—	—
271	Kha/276	Karma Prakrti	Abhayacandra Siddhānta Cakravartí	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Prose	35 8×21 3 44 13 54	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry	24 4×15 2 2 10 32	Inc	Old	Only last two pages are available
P	D,Skt /H Prose/ Poetry	27 4×12 8 62 10 38	C	Good 1961 V S	Copied by Sitārama Śāstri
P.	D,Skt /H Prose/ Poetry	32 7×21 8 49 15 38	C	Good 1945 V S	
P	P, H Poetry	21 2×11 3 109 8 29	C	Good 1869 V S	
P	D, H, Poetry	43 5×26 8 56 24 34	C	Good 1946 V S	
P	D, Skt Poetry	27 1×11 4 105 11 38	C	Old 1521 V S	Published
P	D, Skt Poetry	30 0×16 5 85 14 43	C	Old 1780 V S	Published
P	D, Skt Poetry	32 2×16 3 245 14 42	C	Old 1870 V S	Published
P	D, H Poetry	29 5×13 4 111 10 40	C	Good 1869 V S Sakes 1734	Copied by Shivalala
P	D, Skt Prose	25 4×11 6 10 10 36	C	Old	
P	D, Skt Prose	20 4×17 4 42 12 29	C	Good 1944 A D	Copied by N Chandra Rajendra.

1	2	3	4	5
272	Kha/109	Karmprakrti grantha	Nemicandrācārya	—
273	Jha/43	Karmavipāka	—	—
274	Jha/58	Kaṣāyajaya Bhāvanā	Kanakakirti	—
275	Kha/139	Kārtikeyānuprekṣā Satika	Swāmi Kārtikeya	Subhacandra
276	Kha/142	„ „	„ „	„
276	Kha/85	„ „	„ „	—
277	Ga/17	Kārtikeyānuprekṣā Vacanikā	Jayacandra	—
278	Kha/163/1	Kriyākalāpa-tikā	Prabhācandra	—
279	Ga/56	Kriyākalāpa Bhāṣā	—	—
280	Jha/7 Kha	Laghu Tattvārtha	—	—
281	Nga/7 Ga/11	„ „	—	—
282	Ga/157/9	Loka-Varnana	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Pkt octry	27 7×15 2 10 12 34	C	Old 1669 V S	
P	D, Pkt Poetry	26 2×13 1 50 6 27	C	Good 1966 V S	
P	D, Skt Poetry	21 1×17 3 9 7 21	C	Good 1926 A D	Published in Jaina Siddhanta Bhaskara, Arrah
P	D, Pkt / Skt Poetry	31 8×15 0 200 13 46	C	Old	Published
P	D, Skt Poetry	32 7×16 2 228 13 43	C	Good 1858 V S	Published Copied by Khemchandra
P	D, Pkt Skt Poetry	25 5×16 4 56 12 42	C	Good 1890 V S	Published
P	D, H Poetry	35 1×17 8 189 10 33	C	Good 1914 V S	
P	D, Skt Prose	26 9×11 8 102 13 52	C	Old 1570 V S	
P	D, H Poetry	29 6×13 8 109 12 34	C	Good 1940 V S	
P	D, Skt Prose	28 3×14 2 2 9 27	C	Good	It is also named Arhatpravacana
P	D, Skt Prose	21 1×13 3 2 18 12	C	Good	It is also named Arhatpravacana
P	D Pkt /H Prose/ Poetry	16 6×11 1 22 7 13	Inc	Good	Last pages are missing

6	7	8	9	10	11
P.	D,Pkt / Skt Poetry	32.2×20 6 70 13 43	C	Good	Copied by Muni Sarvanandi.
P	D,Pkt,/H. Poetry	23 8×16 3 26.16 17	C	Old 1887 V S	
P.	D, H. Poetry	33 4×13 8 88.8 39	C	Good 1935 V S	It is writen on thin paper
P.	D; H Poetry	22 3×13 8 260 20.24	C	Old 1871 V S	
P.	D, H Poetry	25 5×16 4 335.14 14	C	Old	Totel No of chhanda's 1353.
P.	D; H Prose	35 2×20 6 172 15 48	C	Good	
P.	D; H. Prose	34 5×17 8 239 12 36	C	Good	
P	D, H. Prose	30 9×16 8 9 13 43	C	Good 1944 V. S	Siyārām seems to be copier.
P	D,Skt /H. Poetry/ Prose	19 9×15.4 27 12 16	C	Old 1918 V S	First two pages are missing.
P.	D, Pkt. Poetry	20 7×16 7 108 11 30	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	35 7×21 2 61 19 66	C	Old	published
P.	D; Skt Poetry	31 6×14 3 156 12 39	C	Old 1874 V S	Published copied by Dayachandra

1	2	3	4	5
295	Kha/211	Navaratna Parīkṣā	Buddha-Bhatta	—
296	Ga/119	Nayacakra Satika	Hemarāja	—
297	Kha/201	Nitisāra (Samaya Bhūṣana)	Indranandi	—
298	Kha/105/1	Nitisāra	”	—
299	Kha/34	Nyāyakumuda candrodaya	Prabhācandra	—
300	Kha/21	Padmanandi Pañcaviṁśatikā	Padmanandi	—
301	Kha/30	”	”	—
302	Kha/160/3	Pañcamithyātva Varnana	—	—
303	Ga/70	Pañcāsitakāya Bhāṣā	—	—
304	Jha/18	”	Kundakunda	Hemai
305	Kha/265	Pañca Saṁgraha	—	—
306	Jha/119	Paramārthopadeśa	Jñānabhūṣana	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry Prose	21 1×11 5 25 8 31	C	Recent 1925 V S	
P	D, H Prose	25 6×13 4 18 9 43	C	Good 1956 V S	
P	D,Skt Poetry	29 8×19 4 9 7 36	C	Good	Published Samaya Bhūṣana is written as title of this work in last line
P	D, Skt Poetry	29 5×15 5 6 9 40	C	Good	Published
P	D, Skt Prose	32 2×20 1 333 16 54	C	Good	
P	D, Skt, Poetry	32 ×16 5 59 10 60	C	Old	
P	D,Skt Poetry	24 ×12 5 198 5 30	C	Old 1839 V S	First page rottan.
P	D,Skt, Poetry	28 0×11 9 14 11 40	C	Good 1803 V S.	Unpublished
P.	D, H Prose	27 1×11 8 225 9 36	Inc	Old	First two and closing pages missing
P.	D,Pkt/H Poetry/ Prose	24 1×15 1 88 18 17	Inc	Old	Total pages are damaged
P	D, Pkt Poetry	35 5×17 4 73 12 47	C	Good 1527 V S	
P.	D, Skt Poetry	35 3×16 4 8 13 53		Good 1992 V S	Unpublished

1	2	3	4	5
307	Kha/170/3	Paramātma Prakāśa	Yogindradeva	—
308	Ga/29	Paramātma Prakāśa Vacanikā	Doulata Rāma	—
309	Ga/81	„ „	—	—
310	Jha/57	Parasamaya-grantha	—	—
311	Ga/175	Praśnamālā bhāṣā	—	—
312	Kha/227/2	Prabodhasāra	Yaśah kirti	Brahma-deva
313	Kha/67	Praśnottaropāsakācāra	Bhattāraka Sakalakirti	—
314	Kha/158	„	„	—
315	Ga/31	Praśnottara Śrāvakācāra	Bulākidāsa	—
316	Kha/165/6	Pratikramana Sūtra	—	—
317	Kha/246	Pravacana Parikṣā	Nemicandra	—
318	Kha/279	Pravacana-Praveśa	Bhattākalanka	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Apb Poetry	29 4×16 5 30 14 49	C	Old 1829 V S.	Published
P	D, H Prose	31 5×16 3 224 11 37	C	Good 1861 V S	
P	D, H Prose	27 9×16 3 47 9 25	C	Good	
P	D,Skt Poetry	21 1×16 9 20 12 17	C	Good	
P	D, H Prose	32 5×17 6 34 12 38	C	Good	
P	D, Skt Poetry	35 2×16 3 2 11 60	C	Good	Published
P.	D, Skt Poetry	30,2×19 5 108 12 47	C	Good 1875 V S	Published 3300 Ślokas, copied by Guljārīlāla
P	D, Skt poetry	28 3×11 8 155 10 38	Inc	Old	Published Last pages are missing
P	D, H Poetry	32 1×16 3 77 13 56	C	Good 1821 V S	
P	D,Pkt Prose/ Poetry	26 7×11 4 4 11 43	C	Old	
P	D,Skt Prose/ Poetry	—	—	—	—
P.	D, Skt Poetry	20 9×11 4 8 8 27	C	Good 1925 A D	Copied by Nemi Raja

1	2	3	4	5
319	Kha/152	Pravacanasāra Vrtti	Kundakunda	Amrtacandra Sūri
320	Ga/35	Pravacana-Sāra	,,	Vrndāvana
321	Kha/285	Prāyaşcitta	Akalanka	—
322	Ga/134 Ka/7	Punya Paccisī	Bhagavatīdāsa	—
323	Ga/73	Puruşārtha-Siddhupāya	Amrtacandra	Todaramala
324	Ga/54	,, ,,	,,	,
325	Kha/141/3	Ratnakaranda-Śrāvakācāra Mūla	Samantabhadra	—
326	Ga/89	Ratna-karanda Śrāvakācāra Vcanikā	,,	—
327	Ga/50	,, ,,	,,	Camparāma Sahāya
328	Kha/59	Ratnakaranda Vişamapada	Samantabhadrācārya	—
329	Nga/2/36	Ratnamālā	Śivakoti	—
330	Kha/200/1	,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Prose	28 2×14 1 116 11 45	C	Old 1705 V S	Published,
P	D, H Poetry	28 8×18 3 171 12 29	C	Good 1966 V S	Pu hed
P	D, Skt Poetry	22 2×17 1 19.7 25	C	Good 1976 V S	Copied by Pt Mūlacandra It is also called Śravakācāra, published,
P	D; H Poetry	30 3×16 3 4 14 45	C	Good 1733 V S	
P	D, H Prose	23 6×12 9 181 9 24	C	Good 1927 V S	
P	D, H, Poetry	28 1×16 2 200 9'26	C	Good 1947 V S	Copied by Haracanda Rāya
P	D, Skt. Poetry	33 4×15 6 8 10 46	C	Old	Publish
P	D, H Prose/ Poetry	34 5×25 3 325 17.42	C	Old 1929 V. S	
P	D, H Prose/ Poetry	33 1×20 2 128 16 45	C	Good 1951 V S	
P	D, Skt Prose	35 5×15 1 15 11 41	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	19 4×15 5 7 13 16	C	Good	Published by MD. G Series, Bombay
P.	D, Skt. Poetry	29 8×19 4 6.8 37	C	Good	Published by MDG Series No 21, Bombay

1	2	3	4	5
331	Kha/43	Rājavārtika	Akalaṅka	—
332	Ga/106/6	Rūpacandra-Śataka	Rūpacandra	—
333	Nga/2/37	Sadbodha-Candrodaya	Padmanandi	—
334	Jha/59	,, ,,	,,	—
335	Nga/2/38	Sajjanacitta-Vallabha	Malliṣena	—
336	Jha/17	,, ,,	,,	Haragulāla
337	Nga/2/33	Saṁbodha-Pañcāstikā	Gautamaswāmi	—
338	Jha/120	Saṁbodha pañcāsikā Satika	,,	—
339	Kha/151	Samayasāra (Ātmakhyāti Tika)	Kundakunda	Amrtaca-ndra Sūri
340	Kha/130	,, ,,	,,	Aṁrtacan-drācārya
341	Kha/28	Samayasāra Satika	,,	Amrtaca-ndra Sūri
342	Ga/106/2	Samayasāra Nātaka	—	Banārasi-dāsa

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Prose	29 3×19 8 576 13 45	C	Good	Publıshed by B J Delhı
P	D, H Poetry	23 9×16 8 3 25 30	C	Old'	
P	D, Skt Poetry	19 4×15 5 7 13 14	C	Good	Unpublıshed,
P	D, Skt Poetry	21 2×17 1 10 7 20	C	Good	Unpublıshed
P	D, Skt Poetry	19 4×15 5 6 13 15	C	Good	Publıshed
P	D,Skt /H Poetry/ Prose	24 5×17 4 25.14 30	C	Good 1953 V S	
P..	D, Pkt Poetry	19 4×15 5 6 13 15	C	Good	
P	D, Pkt Skt Poetry/ Prose	35 4×16 3 7 13 52	C	Good 1992 V S.	Copıed by Rośanalāla
P	D,Pkt / Skt Poetry/ Prose	29 4×13 5 165 10 52	C	Old	Publıshed by Dıgambar Jaın Grantha Bhandar Serıes, Kāśı
P.	D, Pkt Skt Poetry	27 8×11 8 124 11 56	C	Old 1900 V. S	Publıshed
P	D,Pkt / Skt Poetry/ Prose	25 9×11 5 194 9 46	Inc	Old	Publıshed last pages are mıssıng
P	D, H. Poetry	23 9×16 8 45 26 29	C	Old 1735 V S	

1	2	3	4	5
343	Ga/107	Samayasāra Nātaka	Banārasidāsa	—
344	a /80/1	,, ,,	,,	—
345	Ga/115	,, ,,	,,	—
346	Ga/126	,, ,, Sārtha	,,	—
347	Ga/152/5	,, ,,	,,	—
348	Ga/111/4	,, ,,	,,	—
349	Ga/30/1	,, ,,	,,	—
350	Ga/149	,, ,,	,,	—
351	Ga/152/4	,, ,,	,,	—
352	Kha/35	Samyakatva Kaumudi	—	—
353	Ga/59/1	Samādhi-Marana	Bakasa Rāma	—
354	Jha/2	Samādhi-Tantra	Kundakundācārya	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H. Poetry	23.6×15 8 87 23 24	C	Old	
P	D, H Poetry	23 2×15 3 75 21 22	C	Old 1890 V S	
P.	D, H Poetry	22 8×13 5 122 14 20	C	Old 1745 V. S.	
P.	D Poetry	27 9×13 6 200 14 36	C	Good	
P	D, H Poetry	26 3×11 1 88 10 35	C	Old	Last pages are missing
P	D, H Poetry	20.4×16 5 110 11 27	C	Good 1886 A D	Copied by Durga Prasad.
P	D, H Poetry	32 5×16 2 54 12 48	C	Old 1862 V S	
P,	D, H Poetry	29 1×13 8 75 11 38	C	Old 1725 V S	
P	D, H Poetry	22 5×12 3 108 10 31	C	Old 1876 V S	Copied by Nityānand Brahman. 1st page is missing
P	D, Skt Poetry	29 4×20 2 105 12 33	C	Good	
P.	D, H Prose	28 5×12 8 15 10 48	C	Good 1862 V S.	
P.	D,Skt/H. Prose/ Poetry	31 3×15 7 107 13 51	C	Good 1874 V. S	Copied by Raghunātha Sharma

1	2	3	4	5
355	Ga/53	Samâdhi-tañtra Satika	—	—
356	Kha/26	Samâdhi- tañtra	—	—
57	Ga/64/1	Samādhi-tañtra Vacanikā	Mānikacañd	—
358	Kha/46/1	Samâdhi-Śataka	Pūjyapâda	—
359	Ga/134/2	Sammeda-Śikhara Mâhâtmya	Lālacanda	—
360	Kha/194	Saptapañcâsadaśtravikā	—	—
361	Kha/106	Satvatribhangi	—	—
362	Jha/135	Satyaśāsana Parikṣhā	Vidyânandi	—
363	Kha/57	„ „	„	—
364	Kha/161/3	Sāgāradharmâmrita (Svopajna tika)	Āśādhara	—
365	Nga/2/3	Sâmâyika	—	—
366	Nga/7/11 Kha/	„	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt H Poetry	32 1×14 4 152 13 3		Old 1788 V S	
P	D, Skt Poetry	26 3×12 7 26 8 27	C	Old 1848 V S	
P	D, H Poetry Prose	32 2×12 3 31 7 40	C	Good 1938 V S	
P	D, Skt Poetry	25 4×10 8 14 4 42	C	Old 1814 V S	Published. It is also called samādhi tantra
P.	D, H. Poetry	32 2×17 5 34 13 43	C	Good 1933 V S	Copied by Gulalcand Slokas No 1260
P	D, Skt, Prose/ Poetry	34 1×21 5 65.21.30	C	Good	Written on register size paper
P	D, Pkt Poetry	34 ×14 4 11.12.48	C	Good	Copied by Rangnātha Bhattāraka.
P	D, Skt, Prose	20 8×16 8 78.20 25	C	Good	Published
P.	D, Skt Prose	34 6×14 2 29 12.53	C	Good	Published
P	D, Skt Poetry	25 6×12 7 154 12 40	C	Old 1900 V S	Published by M D G. Bombay.
P	D, Pkt Prose/ Poetry	19 4×15 5 22 13 14	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	21 1×13 3 1.18.14	C	Good	

1	2	3	4	5
367	Nga/7/9	Sāmāyika	—	—
368	Nga/2/17	,,	—	—
369	Ga/22	,, Vacanikā	Jayacanda	—
370	Ga/76	,, ,	,,	—
371	Kha/150/3	Śāsna Prabhāvanā	Vasunandi	—
372	Kha/53	Śāstrasāra Samuccaya	—	,,
373	Kha/110	Sidhāntāgama Praśasti	—	—
374	Kha/81	Siddhāntasāra	Jinendra ?	—
375	Kha/46/3	,,	Sakalakirti Bhaṭṭārka	—
376	Kha/40/3	Siddhāntasāra Dipaka	,,	—
377	Kha/280	Siddhiviniṣcaya Tikā	Ananta-Virya	—
378	Kha/170/1	Ślokavārttika	Vidyanandi	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt/ H Poetry Prose	21 1×16 2 5 16 13	C	Old	
P	D, H Prose	19 4×15 5 3 12 15	C	Good	
P	D, H Poetry	27 4×14 6 38 12 35	C	Good 1870 V S	
P	D, H Poetry	21 4×11 3 94 6 23	C	Good	
P.	D,Skt Prose	30 8×12 2 31 11 79	C	Old	Unpublished
P	D, Skt Poetry	38 2×20 6 144 14 36	Inc	Old 1968 V S	Last pages are missing.
P	D, Pkt Poetry	23,2×17 5 11 12 27	C	Good 1912 A D	Copied by Tātyā Nemināth Pāngal.
P	D, Pkt poetry	29 6×15 3 6 10 35	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	32 8×17 1 148 13 44	C	Old 1830 V S	Unpublished
P	D,Skt Poetry	31 ×20 2 103 13 48	Inc	Old	Opening and closing are missing
P.	D,Skt. Prose/ Poetry	34 6×21 7 76 14 46	C	Good	It is first prastāwa (chap ter) only
P.	D, Skt Prose/ Poetry	28 3×18 7 62 14 70	Inc	Good	Published, Last pages are missing

1	2	3	4	5
379	Nga/2/2	Śrāvaka Pratikramana	—	—
380	Jha/118	Śrāvakācāra	Guna-Bhūṣana	—
381	Kha/203	,,	Pūjyapāda	—
382	Ga/28	,,	—	—
383	Ga/63	,,	—	—
384	Kha/160/5	Śrutaskandha	Brahma Hemacandra	—
385	Kha/41	Śrutasāgari Tikā	Śrutasāgara Sūri	—
386	Ga/92/2	Sudriṣṭi Taraṅgini	—	—
387	Ga/92/1	,, ,,	—	—
388	Jha/115	Sukhbodha-Tikā	Yogadeva	—
389	Ga/47	Svaswarūpa Swānubhava Sūcaka (Sacitra)	Dharmadāsa	—
390	Ga/93/1	Svarūpa-Swānubhava Samyaka Jhāna (Sacitra)	,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Pkt Prose Poetry	19 4×15 5 17 13 14	C	Good	
P	D, Skt Poetry	33 8×16 4 8 13 55	C	Good 1992 V. S.	Unpublished.
P	D, Skt Poetry	22 7×17 3 18 8 35	C	Good 1976 V S	
P	D, H Prose	29 8×13 8 219 10 37	C	Good 1888 V S	Copied by Pt Shivalal
P.	D, H Prose Poetry	28 6×11 7 136 11 60	C	Old 1858 V S	
P	D; Pkt, Poetry	27 8×12 3 8 12 44	C	Good	Published, by M D G Bombay
P.	D, Skt Prose	35 2×20 173 15 58	C	Old	Tatvārtha Sūtra's commentary
P.	D, H Prose	34 2×17 8 522 13 41	C	Good 1961 V S	First page is missing Page No 301 to 329 are extra
P	D, H Prose/ Poetry	35 6×21 2 94 13 36	Inc	Old	
P	D, Skt Prose	35 2×16 3 69 12 44	C	Good 1992 V. S	It is commentary of the Tatvārtha sūtra, (of Umāswāmi) First two pages are missing
P	D, H Prose	34 3×21 4 16 13 47	C	Old 1946 V S	Unpublished
P	D, H. Prose	33 1×18 5 14 12 39	Inc	Old 1946 V. S.	Last pages are missing

1	2	3	4	5
391	Jha/60	Svarūpa Sambodhana	Akalaṅka	—
392	Kha/52	Tatvaratna Pradīpa	Dharmakīrti	—
393	Nga/2/32	Tattvasāra	Devasena	—
394	Ga/111/2	,, Bhāṣā	—	—
395	Ga/61	,, Vacanikā	Pannā Lāla	—
396	Kha/181	Tattvānuśāsana	—	—
397	Jha/7 (Ka)	Tatvārthasāra	Amṛtacandra Sūri	—
398	Jha/29	,,	,,	—
399	Kha/141/1	,,	,,	—
400	Kha/149	Tatvārtha Sūtra (with Śrutasāgarī Tīkā)	Umāsvāmi	Śrutasāgara Sūri
401	Kha/186/2	Tatvārtha Sūtra Mūla	,,	—
402	Kha/112/2	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	21 2×17 1 5 6 20	C	Good	
P	D,Skt Prose	38 1×20 3 272 13 41	C	Old 1970 V S	
P	D, Pkt Poetry	19 4×15 5 8 13 14	C	ood	Published
P	D, H Poetry	20 2×16 3 9 9 23	C	Good	
P	D, H Prose	32 3×12 3 35 7 38	C	Good 1938 V S	
P.	D, Skt Poetry	29 7×15 3 15 10 38	C	Good	Copied by Keśava Śharmā
P.	D, Skt Poetry	28 3×14 2 47 10 33	C	Good	Published by Sanātana Jaina Granthamālā, Bombay
P	D, Skt Poetry	20 1×13 9 72 8 20	C	Good	Published copied by Balāmokundalāla
P	D, Skt Poetry	33 6×15.3 31 10 43	C	Old 1553 V S	Published 724 Ślokas.
P.	D, Skt Prose	28 3×13 6 205 16 60	C	Old 1770 V S	
P	D, Skt. Poetry	23 1×13 9 19 8 28	C	Old 1946 V S	published First page is missing
P	D, Skt Prose	19 8×15'5 17 12 23	C	Old	Published copied by Pandit Kisancanda Savāi

1	2	3	4	5
403	Nga/7/2	Tatvārtha Sūtra	Umāsvāmi	—
404	Nga/7/3	,, ,,	,,	—
405	Nga/7/6	,, ,, Vacanikā	—	—
406	Nga/7/4	,, ,,	Umāsvāmi	—
407	Nga/6/3	,, ,,	,,	—
408	Nga/1/2	,, ,, (Mūla)	,,	—
409	Jha/31/6	,, ,,	,,	—
410	Ga/138/1	,, ,,	,,	—
411	Ga/120	,, ,, Tippana	—	—
412	Jha/62	,, Vrtti	Bhāskara Nandi	—
413	Ga/173	,, Bodha	Budhajana	—
414	Ga/10	,, Sūtra Tikā	Umāswāmi	Pānde Jaivanta

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Prose	20 4×16 5 15 14 18	Inc	Old	Page No 1 and 2 are missing
P	D, Skt Prose	21 1×16 9 14 15 15	C	Good 19?5 V S	
P.	D,Skt /H Prose/ Poetry	23 1×18 5 40 17 15	Inc	Good	
P	D, Skt Prose	21 1×16 7 14 14 15	C	Old 1955 V S	
P	D, Skt. Prose	22 8×18 1 11 17 19	C	Good	
P	D, Skt Prose	17 8×13 5 17 10 21	C	Good 1908 V S	
P	D, Skt Prose	18 2×11 8 18 9 24	C	Good	
P,	D, H Prose	26 7×15 9 92 14 38	C	Good	Last page is missing
P	D, H Prose	28 8×13 4 122 8 30	C	Good 1910 V S	
P	D, Skt Prose	33 8×21 8 154 19 30	C	Good	
P	D, H Poetry	32 4×17 4 93 12 45	C	Good 1982 V S	Copied by Pt Coubey Laxmi Narayana
P.	D,Skt/H Prose	27 1×14 1 154 13 37	C	Good 1904 V S.	

1	2	3	4	5
415	Ga/27	Tatvārthasūtra Vacanikā	Daulat Rāma	—
416	Ga/139	Tatvārthsūtra Tīkā	Cetana	—
417	Kha/135/1	Tatvārthādhigama-Sūtra	Umāswāmi	—
418	Kha/51	Tatvārtharājavārtika	Akalankadeva	—
419	Ga/157/10	Traikālika dravya	—	—
420	Kha/260	Trailokya Prajnapti	Pt Medhāvi D/o Jinacandra	,,
421	Kha/261	,, ,,	,,	—
422	Kha/84	Tribhangi	Kanakanandi	—
423	Jha/126	Tribhangisāra Tikā	Nemicandra	Somadeva
424	Kha/19/3	Trilokasāra	Nemicandrācārya D/o Abhayanandi	—
425	Kha/39	,, Sacitra	,,	—
426	Jha/22	,, Bhāṣā	Todaramala	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, H Prose	31 5×13 2 136.7.32	C	Old 1925 V. S	
P.	D, H Prose/ Poetry	32 6×17.5 953 15 58	C	Good 1970 V. S.	Copied by Sita Rām Śastri Commentry on Tatvārth Sūtra of Umā-Svāmi.
P.	D, Skt Prose	35 7×21 2 60 15 45	C	Good 1919 V S	Published. Copied by Pandit Śivacandra.
P.	D, Skt Prose	38 5×20 4 290 14 57	Inc	Old 1968 Śaka Saṁvata	Published Copied by Ranganath Bhatt First 67 Pages are missing
P	D,Skt /H Poetry/ Prose	21 1×16 5 1 20.18	Inc	Good	
P	D, Pkt Poetry	35 4×16 4 248 11 58	C	Recent 1988 V S.	Copied by Sri Batuka Prasād
P	D; Pkt Poetry	29.6×15 6 33 8 24	Inc	Good	Name of Auther not mentioned in ms
P	D, Pkt Poetry	29 6×15 2 73 9 44	C	Good	It is also called Vistarasatva tribhaṅgi
P.	D,Pkt Skt Poetry Prose	35 1×16 3 66 13 50	C	Good 1994 V S	
P	D, Pkt Poetry	35 5×17 2 57 9 41	C	Old	Published 1010 Gāthās
P	D, Pkt Poetry	33 6×21 63 23 44	C	Good	
P.	D; H Prose	23.4×12 6 126 12 41	Inc	Good	First 300 Pages are missing

1	2	3	4	5
427	Ga/148/2	Trilokasāra	Malla Ji	—
428	Ga/79/1	,,	—	—
9	Ga/99/1	,, Bhāṣā	—	—
430	Kha/235	Trivarnacāra	Brahma-Sūri	—
431	Kha/83	,,	,,	—
432	Kha/24	,,	Somaṣena Bhattār-aka D/o Guṇbhadra	—
433	Kha/122	,,	Jinasenacārya	—
434	Kha/144	,,	,,	—
435	Kha/25	,,	,,	—
436	Ga/125	,, Vacanika	Somasenā	—
437	Kha/[illegible]9	Trivarna-Śaucācāra	Padmarāja	—
43[illegible]	Jha/10[illegible]	Upadeśa-Ratna-mālā	Sāha Thākura Singh	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Prose	26 2×13 8 67 9 32	C	Good	
P	D, H Prose	25 2×15 9 41 11 29	Inc	Good	Last pages are missing
P.	D, H Prose	32 4×15 2 34 11 47	C	Good 1866 V S	Copied by Bhūpatiram Tiwari
P.	D, Skt Prose	30 5×17 4 56 12 51	C	Good 2451 Vir S	Copied by Nemiraja
P	D, Skt Poetry	29 6×15 4 84 10 37	C	Good 2440 Vir S	
P	D, Skt. Poetry	28 4×13 7 175 9 38	C	Old 1759 V S	
P	D, Skt Poetry	38 1×20.4 159 13 58	C	Old 1970 V S	Published Copied by Gulazarilala Sharma
P.	D, Skt Poetry.	35 4×13 8 442 7 43	C	Good 1919 V S	Published
P	D, Skt Poetry	28 2×13 2 145 16 54	C	Good 1959 V S	
P.	D,H /Skt Prose/ Poetry	38 3×20 6 160 16 51	C	Good 1959 V S	Total No. of Slokas 3100
P.	D, Skt Poetry	34.3×14.4 55 11 48	C	Old	
P	D, Pkt, Prose	31 1×17.2 210 14 42	C	Good 1990 V S	It is also called Mahapurana Kalikā Unpublished.

1	2	3	4	5
439	Kha/129	Upadeśaratnamāla	Sakalabhūṣana D/o Śubhacandra	—
440	Kha/200/2	„	„	—
441	Jha/100	Vairāgyasāra Satika	Suprabhācārya	—
442	Ga/26	Vasunandiśravakācāra Vacanikā	Vasunandi	—
443	Ga/118	„ „	„	—
444	Ga/141	„ „	„	—
445	Kha/141/2	Vidagdhamukhamandana	Dharmadāsa	—
446	Jha/88	Viśvatattva-Prakāśa	Bhāvasena Traividyadeva	—
447	Kha/187/1	Vivāda Matakhandana	—	—
448	Kha/187/2	„ „	—	—
449	Kha/128	Viveka Bilāsa	Jinadatta	—
450	Kha/88/2	Vṛhada dikṣa Vidhi	Fatelāl Pandita	—

6	7	8	9	10	11
P	, Skt/ Poetry	29 8×12 7 119 12 46	C	Old	Unpublished
P	D, Skt octry	29 6×19 1 121 12 48	C	Good 1970 V S	Copied by Gulajārilāla 3600 Ślokas
P	D,Apb Poetry	24 1×19 5 11 15 33	C	Good 1989 V S	
P	D, H Poetry	30 3×13 5 400 11 48	C	Good	
P	D, H Poetry	30 8×20 2 470 13 37	C	Old 1907 V S	
P.	D, H Poetry	37 1×18 5 192 13 40	Inc	Old	Last fourteen pages are damaged
P.	D, Skt Poetry	31 6×15 6 12 15 50	C	Old	Contains 480 Ślokas Published , A work on Buddism
P.	D, Skt Prose	35 3×16 4 90 11 54	Inc	Good 1988 V S	
P.	D, Skt Poetry	20 6×10 9 12 8 24	C	Old	
P.	D,Skt Poetry	20 6×10 8 11 8 37	C	Old	
P.	D,Skt Poetry	26 7×12 8 49 11 50	C	Old 1900 V S	Published by Saraswati Granthamālā Agra.
P.	D, Skt Prose	33.2×19 1 60 12 60	C	Good	

1	2	3	4	5
451	Jha/99	Yogasāra	Gurudāsa	—
452	Kha/49	„	„	—
453	Jha/123	„ Satika (Nyāyaśāstra)	Yogindradeva	—
454	Kha/112/3	Āptamimāmasā	Samantabhadra	—
455	Kha/94	„	„	—
456	Kha/137	„ Vrtti	„	—
457	Kha/150/4	„ Bhāṣya	„	Akalanka deva
458	Kha/36	Āptaparikṣā	Vidyānandi	—
459	Kha/93	„	„	—
460	Jha/34/6	Devāgama Stotra	Samanta Bhadra	—
461	Nga/7/5	„ „	„	—
462	Ga/64/2	„ Vacanikā	Jayacanda	—

(Nyāyaśāstra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	23 8 × 19 4 6 15 31	C	Good 1989 V S.	
P.	D, Skt Poetry	22 5 × 11 5 20 9 28	C	Old 1950 V S	
P.	D, Apb H Prose Poetry	35 1 × 21 6 10 20 45	C	Good 1992 V S.	
P.	D, Skt. Poetry	19 4 × 15 5 10 13.18	C	Good	Published Written on copy size paper.
P.	D, Skt Prose	29 4 × 12 8 93 10 57	Inc	Old 1842 V. S.	Capied by Mahātmā Sitarama First 2oo pages are missing. published.
P.	D, Skt, Prose/ Poetry	38 6 × 19 2 149 10 48	Inc	Old	Published, Last pages are missing.
P.	D, Skt Poetry	30 2 × 11 8 34 12 52	C	Old 1605 V. S	Published.
P	D, Skt Prose	32 4 × 18 5 67 14 48	C	Good	Published.
P	D, Skt Prose	26 2 × 14.2 136 9 41	C	Old 1962 V S	Published.
P.	D, Skt Poetry	25 1 × 16 1 11 11 32	C	Old	
P	D, Skt Poetry	22 1 × 16 9 9 15 16	C	Old	
P.	D, H Prose/ Poetry	33 1 × 13 3 68 9 56	C	Good 1898 V S.	

1	2	3	4	5
463	Ga/114	Devāgamastotra Vacanika	—	—
464	Kha/86	Nyāyadīpikā	Abhinava Dharma-bhūṣana	—
465	Kha/156/3	„	„	—
466	Kha/196	Nyāyamani Dipikā	Battāraka Ajitasena	—
467	Kha/48	Nyāyaviniścaya Vivarana	—	—
468	Ga/134/1	Parīkṣāmukha Vacanikā	Jayacanda Chavarā	—
469	Ga/12	„	„ „	—
470	Kha/193	Pramāna Lakṣana	—	—
471	Kha/262	„ Mīmāṁsā	Śrutamuni ?	—
472	Kha/55	„ Prameya	—	—
473	Jha/116	„ „ Kalikā	Narendrasena	—
474	Kha/7	„ Kamalamārtanda	Prabhācandrā	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	30 1×14 8 111 9 30	C	Old	
P	D,Skt Prose	31 4×13 3 50 8 45	C	Old 1910 V S	Published.
P	D, Skt Prose	29 4×13 6 28 11 60	C	Old	Published.
P	D, Skt Prose	32 0×16 0 196 13.38	C	Good 1980 V S	Copied by Rājakumar Jain
P	D, Skt Poetry	33 5×20 7 450 16 60	C	Old 1832 Śaka Saṁvata	Copied by Raṅganātha Sāstri.
P	D, H Prose	32 5×17 6 119 12 44	C	Good 1927 V S	
P.	D, H Poetry/ Prose	32 1×18 5 99 14 40	C	Good 1962 V S	
P	D, Skt Prose	34 1×21 5 34 21 27	C	Good	Written of register size paper.
P	D, Skt Prose	35 4×16,3 35 12 72	C	Good 1987 V. S	
P.	D, Skt Prose	29 8×15 6 20 10 41	C	Good	
P.	D, Skt Prose	35.1×19 3 10.12 49	C	Good 1991 V S	Published.
P.	D, Skt. Prose	27 8×15 6 440 11 53	C	Old 1896 V S.	Published

1	2	3	4	5
475	Kha/33	Prameyakamalamārtanda	Prabhācandra	—
476	Kha/230	Prameyakanṭhikā	Śāntivarni	—
477	Kha/63	Prameyaratnamālā	Anantavīrya	—
478	Kha/60	,,	,,	—
479	Kha/221	Prameyaratnamālā-Arthaprakāśikā	Paṇḍitācārya Cārukīrti	—
480	Kha/208	Ṣaddarśana-Pramāna-Prameyānupraveśa	Śubhacandra	,
481	Kha/90	Cintāmani Vṛtti	Śākatāyana	Yakṣavarmācārya
482	Kha/58	Dhātupātha	—	—
483	Kha/104	Hemacandra Kosa	Hemacandra	—
484	Kha/121	Jainendra Vyākarana Mahāvṛtti	Devanandi	Abhayanandi
485	Kha/18	,, ,,	Abhayanandi	—
486/1	Jha/22	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D; Skt Prose	37 0×20 5 249 15 51	C	Good 1896 V S	Published
P	D, Skt Prose	20 8×17 1 38 11 27	C	Good	Published
P	D, Skt Prose	25 2×16 1 68 11 38	C	Old 1963 V S	Published
P.	D, Skt Prose	30 4×17 2 330 9 40	C	Good	Published Copied by Lakṣamana Bhatta
P	D, Skt Poetry/ Prose	21 4×17 1 249 11 22	C	Good	It is commentry on Prameyaratnamālā of Laghu Anantavirya
P	D, Skt Prose	21 1×11 5 24 8 33	C	Good	Page No 17 & 18 are left blank
P	D, Skt Prose	29 8×15 5 339 11 49	C	Good 1832 Śaka Samavata	
P,	D, Skt Prose	34 5×14 2 19 8 49	C	Old	
P	D, Skt Prose	26 5×10 8 53 17 67	Inc	Old 1910 V S	First three pages are missing
P	D, Skt Prose	35·4×18 3 380 13 58	C	Old 1907 V S	Published
P.	D, Skt Prose	31 2×13 4 43 8 30	C	Good	Published
P.	D, Skt Prose	29 2×15 4 94 12 48	Inc	Old 1879 V. S	Published. First 383 pages are missing

1	2	3	4	5
486/2	Jha/78	Kātantra Vistāra	Vardhamāna	—
487	Jha/19	pañcasandhi Vyākarana	—	—
488	Jha/61	Prākrita Vyākarana	Śrutasāgara	—
489	Kha/228	Rūpasiddhi ,,	Dayāpāla	—
490	Jha/8	Saraswati Prakriyā	—	—
491	Jha/20/2	Siddhānta Candrikā	Rāmacandrāsrama	—
492	Jha/20/1	Taddhita Prakriyā	—	—
493	Jha/24	Dhananjaya Koṣa	Dhananjaya	—
494	Ga/106/1	Nāmamālā	Devidāsa	—
495	Kha/132	Śāradiyākhya Nāmamālā	Harṣakirti	—
496	Kha/185/1	,, ,,	,,	—
497	Jha/67	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt. Prose	31 1×17 4 250 12 46	C	Good 1928 A D	
P	D, Skt H Prose	24 1×15 2 21 17 37	C	Old	
P	D, Skt Prose	21 1×11 4 152 6 20	Inc	Good	It has only two Chapaters
P	D, Skt Prose	34 1×21 1 143 21 30	C	Good	Written on Register size paper
P	D, Skt Poetry	27.5×12 4 83 9.38	C	Old 1809 V S	Copied by Hemarāja First 3 pages are missing
P	D, Pkt Prose	24 1×10 6 69 13 48	C	Old	Dhanaji seems to be copier
P	D, Skt Prose	24 1×10·6 60 9 31	Inc	Old	First Two pages are missing
P	D, Skt Poetry	23 4×15 3 14 20 18	C	Good	It is also called Nāmamālā of Dhananjaya
P	D, H Poetry	24.7×16 3 16 11 29	C	Good 1873 V S	
P	D, Skt Poetry	30 2×13 8 25 12 37	C	Old 1828 V S	
P	D, Skt Poetry	24 3×14 2 26 12 40	C	Good 1918 V S	
P.	D, Skt Poetry	32 8×17 6 23 11 37	C	Good 1985 V S	

1	2	3	4	5
498	Ga/15	Trepanakriyākośa	Kisana Singh	—
499	Ga/160	„	„	—
500	Ga/86/4	Urvaśi Nāmamālā	Śiromani	—
501	Kha/31	Viśwalocanakośa	Pandit Sridharsena	—
502	Kha/20	Alankāra Saṁgraha	Amrtānanda Yogi	—
503	Kha/212	„ „	„ „	—
504	Nga/1/3/1	Bārahamāsā	Budhasāgara	—
505	Kha/209	Candronmilana	—	—
506	Jha/108/1	„ Satika	—	—
507	Jha/108/2	„ „	—	—
508	Jha/25/6	Dohavali	—	—
509	Ga/106/8	Futakara Kavitta	Trilokacanda	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, H Poetry	32 8×17 3 77 13 40	C	Old 1960 V S	
P.	D; H Poetry	23 9×17 3 122 18 22	C	Good	
P.	D, H Poetry	24 5×13.3 27 16 13	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	28 5×13 0 103 11 40	C	Good 1961 V S	
P.	D, Skt Poetry	34.0×14.4 32 15.48	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	21 1×11 6 104 8 21	C	Good 1925 V. S.	
P.	D; H Poetry	16 9×12 7 4 11 10	C	Good	
P.	D, Skt, Poetry	20 9×11.4 32 8 26	C	Good	
P.	D, Skt/H Prose/ Poetry	32 5×17.5 73 20 21	C	Good 1990 V.S	Total No. of Slockas 337.
P.	D;H./Skt Prose/ Poetry	31 1×20 2 56 31.16	C	Good	
P.	D; H Poetry	22 9×15 4 4 17.15	C	Good	
P.	D, H Poetry	23 9×16 8 1 23.27	C	Old	

1	2	3	4	5
510	Ga/80/7	Futakara Kavitta	Trilokacand	—
511	Kha/162	Nitivākyâmrta	Somadavâ Sūri	—
512	Kha/56	”	”	—
513	Kha/200	Ratnamañjūṣā	—	—
514	Kha/22	Rāghava Pāndaviyam Satika	Dhañjaya Kavi	Nemicandra
515	Jha/101	Śrñgāra Mañjari	Ajitasenadeva	—
516	Kha/231	Śrngārârnavacandrikâ	Vijayavarni	—
517	Kha/219	Śrutabotha	Ajitasena	—
518	Jha/12	”	Kālidāsa	—
519	Nga/1/2/1	Śrutapañcamirâṣā		—
520	Jha/92/1	Subhadrâ Nātikā	Hastimalla	—
521	Kha/171/5	Subhâṣita Muktāvali	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, H Poetry	23 2×15 3 2 22 22	C	Old 1890 V S	
P	D, Skt Prose/ Poetry	28 6×13 6 75 8 35	Inc	Old 1910 V. S	Published 66 to 74 pages are missing
P	D, Skt Poetry/ Prose	34 5×14 5 137 8 42	C	Good	
P	D, Skt Poetry	21 1×16 8 95 15 26	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	35 0×16 6 253 12 63	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	23 6×19.3 6 15 34	C	Good 1989 V .S	
P	D, Skt Poetry	21 2×16 9 109 11 24	C	Good	Copied by Vijayacandra Jaina
P.	D, Skt Poetry	21 1×16 8 6 13 21	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	27 1×10 1 4 8 42	C	Good	
P	D, H Poetry	17 8×13 5 6 10 25	C	Old	
P.	D, Skt / Pkt Prose	32 7×17 7 38 12 36	C	Good 2458 VIR S	Copied by Śaśi
P.	D, Skt Poetry	20 5×16 5 25 12 24	C	Good	

1	2	3	4	5
522	Kha/29	Subhāṣita Ratnasaṁdoha	Amitagati	—
523	Kha/99	„ „	„	—
524	Kha/160/2	Subhāṣitāvali	—	—
525	Kha/187/3	„	—	—
526	Kha/156/1	Subhāṣitaratnāvali	Sakalakīrti	—
527	Kha/176/6	Sūkti Muktāvali	Somaprabha.	—
528	Kha/176/7	„ „	„	—
529	Kha/19/1	„ „	„	—
530	Kha/163/6	„ „	„	—
531	Kha/136/2	Sindūra Prakarna (Mūla)	„	—
532	Ga/157/7	Akṣarakevali Śakuna	—	—
533	Jha/136	„ Praśnaśāstra	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	29.4×12 8 76 9 47	C	Good	
P	D; Skt Poetry	26 4×11 8 83.9 46	Inc	Old 1784 V S	First eleven pages are badly rotten published.
P	D, Skt. Poetry	27 6×11 7 34 8 41	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	21.3×13 2 30 19 19	Inc	Old	Last pages are missing Written on coloured paper
P	D, Skt Poetry	28.8×13 2 22 11 47	C	Old 1836 V S	Unpublished.
P	D; Skt, Poetry	26 2×11 3 27 11 44	Inc	Old	First & last pages are missing
P	D, Skt Poetry	25 4×10 5 20 10.40	Inc	Old	Last pages are missing.
P	D, Skt Poetry	33.5×14 8 25 5.35	C	Good	Published.
P	D, Skt Poetry	24 6×12 1 10 9 55	C	Old 1813 V S	
P	D, Skt Poetry	34 2×20 5 26 6 30	C	Old 1947 V S.	Copied by Paramananda. Published.
P	D; Skt Poetry	17 6×10 1 4 8 22	C	O'd	Page No 2 si missing
P	D, Skt. Poetry	20 5×17 4 7 10 17	C	Good 1943 A D.	

1	2	3	4	5
534	Kha/188/4	Ariṣṭādhyāya	—	—
535	Jha/16/5	Dwādasa-Bhāvafala	—	—
536	Jha/137/2	Gaṇitaprakarana	Śrīdharācārya ?	—
537	Jha/105	Jnānatilaka Satīka	—	Bhattavosari
538	Jha/137/1	Jyotirjnāna Vidhi	Srīdharācārya	—
539	Kha/239	Jānapradīpikā	—	—
540	Kha/272	Kewala Jnāna Praśna Cūdāmani	Samantabhadrā	—
541	Kha/213	Kevalajnānahorā	Candrasena Sūri	—
542	Kha/174/3	Nimittasāśtra ṭikā	Bhadrabāhu	—
543	Kha/174/2	Mahānimittaśāśtra	,,	—
544	Kha/179	,, ,,	,,	—
545	Kha/174/4	Nimittaśāstra ṭikā	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt Poetry	23 8×10 6 27 6 28	C	Good	Copied by Pt Rāmacanda
P	D, Skt Prose	24 3×16 1 5 15 15	C	Good	
P.	D, Skt Prose/ Poetry	20 5×17 5 13 10 18	Inc	Good 1944 V S	It seems to be part of Jyotirmānavidhi
P.	D, Skt / Pkt Prose/ Poet y	21 6×17 2 74 18 21	C	Good 1990 V. S.	Commentry with test
P	D, Skt Prose	20 4×17 5 18 10 20	C	Good 1944 A D	
P	D, Skt Poetry	17 3×15.5 19 15 38	C	Good	Copied by Nemirājā
P	D, Skt Prose	21 8×17 6 23 11 33	C	Good	Ccpied by Devakumāra Jain.
P,	D, Skt Poetry	34 2×21 4 376 22 21	C	Good	Written on register size paper
P	D, Skt Poetry	28 4×13 2 17 12 36	C	Good	Author's name not mentioned in the Ms
P	D, Skt / Pkt Poetry	26 8×15 7 76 11 40	C	Good	Unpublished
P	D, Skt. Poetry	21 5×14 4 79 19 22	C	Old 1877 V. S.	
P	D; Pkt Poetry	25 2×13 9 18 14 36	Inc	Good	Author's name not mentioned in the Ms

1	2	3	4	5
546	Kha/165/4	Satpañcāśikā Sūtra	—	—
547	Kha/218	Sāmudrika Śāstra	—	—
548	Jha/110	Vratatithinirnaya	Siṁhanandi	—
549	Jha/16/4	Yātrā Muhūrta	—	—
550/1	Jha/34/20	Ākāsagāmini Vidyā Vidhi	—	—
550/2	Jha/131	Aṁbikā Kalpa	Śubhacandra	—
551	Jha/71	Bālagraha Cikitsā	Malliṣena	—
552	Jha/72	,, ,	Rāvana	—
553	Jha/70	,, Śānti	Pūjyapāda	—
554	Ga/157/1	Bālaka Mundana Vidhi	—	—
555	Nga/7/18	Bhaktāmarastotra Ṛddhi Mañtra	Gautamasvāmi ?	—
556	Nga/7/17	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	24 8×11 3 3 13 52	C	Old	
P	D;Skt Poetry	16 8×15 3 10 11 27	C	Good	
P	D, Skt Poetry	35 1×16 3 11 12 52	C	Good 1991 V S	Contains slokas 401.
P	D, Skt Prose	24 3×16 1 3 15 14	C	Old	It has eleven cārts.
P	D, H Prose	25 1×16 1 2 11 36	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	35 6×17 2 18 15 50	C	Good 1994 V S	
P.	D, Skt Prose	34 8×19 5 6 19 53	C	Good	
P.	D; Skt Prose	34 8×19 5 2 19 51	Inc	Good	
P.	D, Skt Poetry	34 8×19,5 8 18 46	C	Good	
P	D, Skt / H Prose/ Poetry	20.1×15 5 3 1 13	C	Good	
P	D, Skt / H. Prose/ Poetry	21 1×16 4 22 14 16	C	Good	
P.	D,Skt./H Prose/ Poetry	21 1×16 9 21 15 16	C	Good 1950 V. S.	

1	2	3	4	5
557	Jha/26/1	Bhūmi Śuddikarana Mantra	—	—
558	Jha/34/3-4	Bija Mantra	—	—
559	Kha/217	Bijakoṣa	—	—
560	Jha/79	Brahmavidyā vidhi	—	—
561	Jha/34/12	Candraprabhamantra	—	—
562	Jha/34/27	Caubisa Tirthankara Mantra	—	—
563	Jha/34/18	Caubisa Śāsanadavi Mantra	—	—
564	Kha/245	Ganadharavalayakalpa	—	—
565	Jha/36/6	Ghantākarna	—	—
566	Jha/74	„ Kalpa	—	—
567	Ga/144	„ vṛddhi kalpa	—	—
568	Kha/177/11	„ „	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	22 4×16 8 4 23 18	Inc	Good	
P	D, Skt H Poetry	25 1×16 1 2 11 32	C	Good	
P	D, Skt Poetry	16 9×15 2 21 11 29	C	Good	
P	D, Skt Prose/ poetry	20 8×16 7 34 11 20	C	Good	
P	D; Skt Prose	25 1×16 1 1 11 32	C	Good	
P	D, Skt Prose	25 1×16 1 1 11 33	C	Good	
P	D, Skt Prose	25 1×16 1 2 11 30	C	Good	
P	D, Skt Poetry	17 1×15 1 10 14 42	C	Good	
P	D, Skt Poetry	19 7×14 9 2 11 20	C	Good	
P	D,H /Skt Prose	32 8×17 6 6 11 38	C	Good 1985 V S	
P	D,Skt /H Poetry/ Prose	33 3×16 3 5 13 40	C	Old 1903 V S	Rughan Prasād Agrawāla seems to be copier
P.	D, Skt /H- Prose/ Poetry	27 2×12 3 5 12 55	C	Old	

1	2	3	4	5
569	Kha/177/8	Hāthājorī Kalpa	—	—
570	Jha/34/17	Iaṣṭadevatārādhana Mantra	—	—
571	Nga/2/4	Jainasandhyā	—	—
572	Ga/166	Jainavivāha vidhi	—	—
573	Jha/133	Jinasaṁhitā	Māghanandi	—
574	Nga/7/7	Karmadahana Mantra	—	—
575	Jha/34/15	Kalikunda Mantra	—	—
576	Kha/177/6	Mantra Yantra	—	—
577	Kha/177/4	Namokāragaṇa Vidhi	—	—
578	Kha/118	„ Mantra	—	—
579	Jha/46	Padmāvatī Kavaca	—	—
580	Jha/16/1	Pañcaparameṣṭhī Mantra	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Prose	26 8 × 11.7 1 15 48	C	Old	
P	D, Skt Prose	25 1 × 16 1 2 11 32	C	Good	
P	D, Skt. Prose	19 4 × 15 5 2 13 15	C	Good	
P	D,Skt /H Poetry	22 2 × 19 6 13 17 25	C	Good 1978 V S	
P	D, Skt Prose	32 3 × 17 7 75 10 31	C	Good 1995 V. S	It is also called Māghanandi Saṁhitā.
P	D, Skt Prose	20 9 × 16 9 6 16 19	C	Good 1965 V S	
P	D, Skt Prose	25 1 × 16 1 1 11 30	C	Good	
P	D, H. Prose	25 5 × 10 8 4 10 38	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	25 6 × 11 8 1 10 46	C	Old	
P	D, Pkt/ Skt / Poetry	16 6 × 10 8 56 8 22	C	Good	
P	D; Skt Poetry	17 4 × 11 5 35 7 18	C	Good	
P.	D, Skt, Poetry	24 3 × 16 1 4 21 20	Inc	Old	

1	2	3	4	5
581	Kha/223	Pañcanamaskāra Cakra	—	—
582	Jha/13/4	Pīthikā Mantra	—	—
583	Kha/237	Sarasvatīkalpa	Malayakīrti	—
584	Jha/34/19	Śāntinātha Mantra	—	—
585	Jha/16/3	Siddhabhagavāna ke guna	—	—
586	Kha/177/5	Solahacāli	—	—
587	Kha/177/7	Vivāha Vidhi	—	—
588	Kha/258	Yantra Mantra Saṁgraha	—	—
589	Kha/255	Akalankasaṁhitā (Sāra Saṁgraha)	Vijayanapādhyāya	—
590	Kha/54	Ārogya Cintāmani	Pandita Dāmodara	—
591	Kha/224	Kalyānakāraka	Ugrādityācārya	—
592	Kha/206	Madanakāmaratna	Pūjyapāda ?	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt Prose	35 7×20 2 56 14 56	C	Old	
P.	D, Skt Prose	24 5×16 5 4 21 16	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	17 1×15 3 7 14 37	C	Good	
P	D, Skt Prose	25 1×16 1 1 11 30	C	Good	
P	D, Skt Prose	24 3×16 1 2 18 18	Inc	Old	
P	D, H Poetry	27 9×10 8 1 13 48	C	Old	Only one page available
P	D, Skt Prose	25.6×10 9 5 8 50	Inc	Old	Last pages are missing
P.	D, Skt Prose	21 1×16 9 145 10 31	C	Good	
P	D, Skt Prose	30 3×16 6 238 12 51	C	Good	
P	D, Skt Prose	38 5×20 5 40 13 54	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	34 1×21 2 155 23 27	C	Good	Copied by Śaṅkaranārāyana Śarmā written on register size paper.
P.	D, Skt Poetry	34 1×21 1 32 23 14	C	Good	It is written on register size paper

1	2	3	4	5
593	Kha/205	Nidānamuktāvali	Pūjyapāda ?	—
594	Jha/77	Rasasāra Saṁgraha	—	—
595	Kha/226	Vaidyakasāra Saṁgraha	Harṣakīrti	—
596	Kha/103	,, ,,	,,	—
597	Kha/236	Vaidya Vidhāna	Pūjyapāda	—
598	Kha/114	Vidyā Vinodanam	Akalanka	—
599	Kha/134	Yoga Cintāmaṇi	Harṣakīrti	—
600	Jha/69	,, ,,	,,	—
601	Nga/2/9	Ācārya Bhakti	—	—
602	Nga/2/28	Aṅkagarbhaṣaḍāracakra	Devanandi	—
603	Kha/113	Aṣṭa Gāyatrī Tīkā	—	—
604	Kha/227/5	Ātmatattvāṣṭaka	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt. Poetry	34.1 x21 1 3 22 22	C	Good	It is written on regester size paper.
P.	D, Skt Poetry	33 8 x20.5 40 16 40	Inc	Good	
P.	D, Skt Poetry	33 8 x21 2 84 23 24	C	Good	
P.	D; Skt Prose	27 5 x12 7 128 14 48	C	Old 1840 V S.	
P.	D, Skt Prose/ Poetry	17 1 x15 3 54 12 31	C	Good 1926 V S	Copied by Nemirāja
P.	D; Skt, Poetry/ Prose	22 8 x16 8 34 9 11	C	Old	Copied by T. N. Pangal.
P.	D, Skt Poetry	25 6 x 10 2 139 8 48	C	Old 1896 V S.	
P.	D,Skt Prose	32 8 x17 1 115 11 46	C	Good 1985 V S	
P.	D; Pkt / Skt. Poetry	19 4 x15 5 4 13 16	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	19 4 x15 5 4 13 14	C	Good	Unpublished.
P.	D, Skt Poetry	21 2 x16 6 19 11.27	C	Good 1962 V S	
P.	D, Skt Poetry	35 2 x16 3 1 9 62	C	Good	Copied by Batuka Prasada.

1	2	3	4	5
605	Kha/227/4	Ātmatattvāṣṭaka	—	—
606	Nga/13	Ātmajnāna Prakarana Stotra	Padmasūri	—
607	Kha/123	Bhaktāmara Stotra	Mānatungācārya	—
608	Kha/170/5	,, ,,	,,	—
609	Kha/178(K)	,, ,,	,,	—
610	Kha/165/13	,, ,,	,,	—
611	Jha/31/1	,, ,,	,,	—
612	Jha/28/1	,, ,,	,,	—
613	Jha/34/24	,, ,,	,,	—
614	Jha/40/2	,, ,,	,,	Hemarāja
615	Jha/35/1	,, ,,	,,	—
616	Nga/6/1	,, ,,	,,	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt. Poetry	35.2 × 16.3 1 11 57	C	Good	Copied by Bajula Prasada
P	D Skt Poetry	19.4 × 15.5 7 12 14	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	33.5 × 21.3 74 4 18	C	Old 2440 Vir.S	Published written in bold letters
P.	D, Skt Poetry	27.5 × 12.9 6 11 44	C	Old 1842 V. S	Published
P	D, Skt Poetry	20.8 × 16.3 13 18 17	C	Good 1947 V. S	Published.
P	D, Skt Poetry	25.2 × 10.4 4 8 57	C	Old 1763 V. S	Published

1	2	3	4	5
617	Jha/52	Bhaktāmarastotra Satika	Mānatunga	—
618	Ga/157/1 (K)	,,	,,	—
619	Nga/7/8	,,	,,	—
620	Ga/110/1	,, Tikā	Hemarāja	—
621	Kha/117/1	,, Mantra	Mānatunga	—
622	Kha/117/2	,, Ṛddhi Mantra	,,	—
623	Kha/119/1	,, ,,	,,	—
624	Kha/283	,, ,,	,,	—
625	Jha/34/16	,, Mantra	,,	—
626	Kha/284	,, Ṛddhimantra	,,	—
627	Kha/170/2	,, ,,	,,	—
628	Kha/177/14	,, ,,		—

6	7	8	9	10	11
P	D,Skt /H Prose/ Poetry	17 5×10 9 40 8 24	C	Good 1971 V S	
P	D, Skt Poetry	10 5×7 2 25 6 10	C	Old	
P	D, Skt Poetry	23 9×10 9 9 7 23	C	Old	
P	D, H Poetry	21 1×15 8 29 16 19	C	Good 1919 V S.	
P	D, Skt Poetry	15 8×11 2 49 10 27	C	Old 1967 V S	Published, copied by Pandit Sitārāma Śastri
P	D, Skt Poetry/ Prose	17 4×13 5 48 10 24	C	Old 1930 V S	Copied by Nilakantha Dāsa.
P	D, Skt Poetry	16 8×14 5 47 9 20	C	Old 1930 V S	Published, copied by Nilakantha Dāsa
P,	D, Skt Poetry	20 5×16 3 48 13 17	C	Good	Published
P	D, Skt Prose	25 1×16 1 2 11 30	C	Good	
P	D, Skt / Poetry	24 1×15 5 49 10 44	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 7×18.4 7 11 42	C	Good 1966 V S.	Published, copied by Munindrakirti
P	D, Skt Prose	22 6×10 4 10 10 30	Inc	Old	First twenty pages & last pages are missing.

1	2	3	4	5
629	Ga/106/3	Bhaktāmara tika	Hemarāja	—
630	Kha/87/1	,, ,,	Mānatunga	Brahma-Rāyamalla
631	Kha/170/6	Bhaktâmarastotra tika	,,	Hemarāja
632	Ga/134/5	,, ,, Vacanikā	Jayacanda	—
633	Ga/80/2	,, ,, Sārtha	Mānatuṅga	Hemarāja
634	Jha/33	,, ,, Maṇatra	—	—
635	Jha/36/3	Bhairavāṣṭaka	—	—
636	Nga/7/14	,, Stotra	—	—
637	Kha/119/2	Bhairava Padmâvati Kalpa	Malliṣenācārya D/o Jinaṣena	Bandhu-sena
638	Jha/127	,, ,,	,,	Candra-śekhara Śastri
639	Nga/3/2	Bhajana Saṁgraha	—	—
640	Kha/172/2	Bhakti Saṁgraha tika	—	Sivacan-dra

6	7	8	9	10	11
P	D,H /Skt Poetry/ Prose	23 9×16 8 14 25 26	C	Old	
P	D, Skt Poetry	29 6×13 4 26 14 53	C	Good	
P	D, Skt Poetry	26 8×13 8 17 14 44	C	Good 1908 V S	Published
P	D, Skt Prose	31 2×17 1 24 14 36	C	Good 1944 V S	
P	D,H /Skt Prose/ Poetry	23 2×15 3 22 22 21	C	Old 1890 V S	
P	D,Skt /H Poetry	16 5×11 8 17 12 14	Inc	Good	Oponing & Closing are missing
P	D, Skt Poetry	19 7×14 9 2 11 25	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 8×16 3 3 9 16	C	Good	
P	D, Skt Poetry/ Prose	17 3×14 6 52 13 33	Inc	Old 1956 V S	Published Firt nine pagest aremissing Copied by Nilakantha Dāsa
P	D,Skt/H Prose, Poetry	35 1×16 3 73 13 47	C	Good 1993 V. S	
P	D, H Poetry	20 6×16 5 5 12 14	C	Good	
P	D, Skt, Prose/ Poetry	28 1×18 2 72 13 29	C	Good 1948 V. S	

1	2	3	4	5
641	Ga/152/2	Bhāṣāpada Saṁgraha	Kuṅdana	—
642	Kha/171/2(K)	Bhūpāla Caturviṁśatikā Mūla	Bhūpāla Kavi	—
643	Kha/178/5	Bhūpāla Stotra	„	—
644	Kha/138/3	„ „ tīkā	„	—
645	Kha/227/3	Bhāvanāṣṭaka	—	—
646	Jha/31/2	Candraprabha Stotra	—	—
647	Kha/190/2	Candraprabha Śāsana Devi Stotra	—	—
648	Nga/2/48	Caturviśmati Jina Stotra	—	—
649	Nga/2/40	„	—	—
650	Kha/131	„ „ Stuti	Māghanandi	—
651	Nga/2/8	Cāritra Bhakti	—	—
652	Jha/34/9	Caubisa Tirthaṅkara Stotra	Devanandi	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	27 4×12 1 11 16 50	C	Old	
P	D, Skt Poetry	25 4×16 9 4 12 24	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	20 8×16 6 9 16 20	C	Good 1947 V S	Published
P	D, Skt Poetry	31 7×16 8 13 11 36	C	Old	
P	D, Skt Poetry	35 2×16 3 1 9 64	C	Good	Copied by Baṭuka Prasāda.
P	D, Skt, Prose	18 2×11 8 3 10 22	C	Old 1852 V. S	
P	D, H Poetry	17 2×10 2 6 7 26	C	Old	
P	D, Skt Poetry	19 4×15 5 1 13 14	C	Good	
P	D, Skt Poetry	19 4×15 5 2 13 15	C	Good	
P	D; Skt Poetry	29 5×13 3 5 14 54	C	Old	
P.	D, Pkt / Skt Poetry	19 4×15 5 4 12 15	C	Good	
P	D, Skt Poetry	25 1×16 1 3 11 30	C	Good	

1	2	3	4	5
653	Nga/8/5	Cintāmani Aṣṭaka	Bhaṭṭāraka Mahicandra	—
654	Kha/173/3(G)	„ Stotra	—	—
655	Jha/31/7	„ Pārśvanātha Stotra	—	—
656	Kha/253	Daśabhktyādi Mahāśāstra	Vardhamāna Muni	—
657	Kha/150/2	Devī Stavana	—	—
658	Jha/35/4	Ekibhāva Stotra	Vādirāja Sūri	—
659	Kha/171/2 (Kh)	„ „ Mūla	„ „	—
660	Kha/178 (Gha)	„ „	„ „	—
661	Kha/172/2(K)	„ „	„ „	—
662	Nga/6/7	„ „	„	—
663	Kha/138/2	„ „ Satika	Vādirāja Sūri	—
664	Nga/2/41	Gautamasvāmi Stotra	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt. Poetry	22 1×18 1 1 13.27	C	Good	
P.	D, H Poetry	27 2×17 6 1 14 34	C	Old	
P	D, Skt Poctry	18 2×11 8 36 10 23	C	Good 1853 V. S.	
P	D, Skt Poetry	20 8×16 7 132 10 28	C	Good	
P	D, Skt Poetry	38 9×12 2 4 9 39	G	Old	
P	D, Skt Poetry	16 1×16 1 5 13 20	C	Good	
P	D, Skt Poetry	25 4×16 9 4 12 25	C	Good	Published
P	D,Skt /H Poetry	20 8×16 6 8 13 20	C	Good 1947 V. S.	Published.
P	D, Skt Poetry	28 1×18 2 10 12 39	C	Good	Published.
p.	D, Skt Poetry	22 8×18 1 3 17 22	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	31 5×16 5 14 10.32	C	Old	Published.
P.	D, Skt. Poetry	19 4×15 5 2.13 15	C	Good	

1	2	3	4	5
665	Kha/227/10	Gitavitarāga	Cārūkirti	—
666	Kha/227/6	Gommatāṣṭaka	—	—
667	Ga/152/3	Gurudeva Ki Vinti	—	—
668	Ga/77/1	Jinacaityastava	Campārāma	—
669	Nga/7/12(Kha)	Jinadarśanāṣṭaka	—	—
670	Jha/39	Jinendra Darśana Pātha	—	—
671	Nga/2/52	Jinendrastotra	—	—
672	Nga/5/4	Jinavāni Stuti	Haridāsa Pyārā	—
673	Nga/2/34	Jinaguna Stavana	—	—
674	Kha/227/7	Jinagunasampatti	—	—
675	Jha/34/21	Jina Stotra	Ravişanācārya	—
676	Kha/190/1	Jinapañjara Stotra	Devapravācārya	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	35 2×16.3 17 11 56	C	Good 1930 A. D	Copied by Batuka Prasāda.
P.	D, Skt Poetry	35 2×16 3 1 9 58	C	Good	Copied by Batuka Prasāda
P	D, H Poetry	26 1×12 4 7 7 26	C	Old	
P	D, H. Poetry	22 6×9 6 11 7 20	C	Old 1883 V. S	
P	D; Skt Poetry	21 1×13 3 1 18 13	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	16 3×12 4 5 10 13	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	19 4×15 5 2 13 13	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 7×17 1 3 11 20	C	Good 1963 V S	
P	D, Skt Poetry	19 4×15 5 3 13 14	C	Gocd	
P.	D, Skt Poetry	35 2×16 3 2 11 60	C	Good	Copied by Batuka Prasāda
P.	D, Skt Poetry	25 1×16 1 3 11 33	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	17 8×10 4 7.7 24	C	Old	

1	2	3	4	5
677	Ga/157/12 (Kha)	Jinapañjara Stotra		—
678	Jha/31/4	,,		—
679	Kha/175/10	Jvālāmālini Stotra		—
680	Jha/34/13	,, Devi Stuti		—
681	Jha/81	Jvālini Kalpa	Indranandi	—
682	Kha/161/5	Kalyānamandira Stotra	Kumudacandrācārya	—
683	Nga/6/2	,, ,,	,,	—
684	Kha/161/8	,, ,,	,,	—
685	Kha/165/12	,, ,,	,,	—
686	Kha/170/7	,, ,,	,,	—
687	Kha/165/8	,, ,,	,,	—
688	Kha/172/2	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	10 5×7 2 8 6 10	Inc	Old	Last pages are missing
P	D,Skt Poetry	18 2×11.8 2 10 20	C	Good	
P	D, Skt Prose	23 7×10 9 3 8 35	C	Good	
P	D, Skt Prose	25 1×16 1 3 11 32	C	Good	
P	D, Skt Poetry/ Prose	20 6×16 6 39 11 20	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	24 1×12 7 4 14 40	C	Old	Published
P	D, Skt Peotry	22 8×18 3 4 17 19	C	Old	
P	D, Skt Poetry	25 6×11 2 4 10 35	C	Old 1931 V S	Copied by Keshava Sāgara. Published
P	D, Skt Poetry	26 2×10.8 2 13 45	C	Old	Published pages are sotten.
P	D, Skt Poetry	25 8×12 8 5 20 57	C	Old 1887 V S	Published.
P	D, Skt. Poetry	24 6×11 2 2 16 50	C	Old	Published
P.	D, Skt Poetry/ Prose	28 1×18 2 14 12 36	C	Good	Published

1	2	3	4	5
689	Kha/178 (Kh)	Kalyānamandira Stotra	Kumudacandra	—
690	Jha/35/2	,, ,,	Kumudacandra	—
691	Jha/40/3	,, ,,		Banārasidāsa
692	Jha/28/2	,, ,,	-	—
693	Jha/31/3	,, ,,	,,	—
694	Jha/28/3	,, Bhāṣā	—	—
695	Kha/106/4	, Vacanikā	—	—
696	Ga/80/3	,, Sārtha	Kumudacandra	—
697	Nga/2/2/3	Kṣamāvāni Ārati	—	—
698	Jha/34/2	Kṣetrapāla Stuti	—	—
699	Kha/161/7	Kāṣṭhā Saṁgha Gurvāvali	—	—
700	Jha/40/4	Laghu Sahasranāma	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	20 8×16 3 11 13 2	C	Good 1947 V. S.	Published,
P.	D; Skt Poetry	16 1×16 1 6 13 20	C	Good	
P.	D,Skt /H Poetry	15 4×11 9 21 9 20	C	Good	
P.	D, Skt Poet y	20 5×15 8 6 17 15	C	Good	
P	D, Skt Poetry	18 2×11 8 6 10 23	C	Good	
P.	D, H Poetry	20 5×15 8 1 17 15	Inc	Good	Last pages are missing.
P	D, H Poetiy/ Prose	23 9×16 8 12 25 25	C	Old	
P,	D,Skt /H Poetry/ Prose	23 2×15 3 19 22 22	C	Old 1890 V S	
P	D, H Poetry	17 8×13 5 4 10 22	C	Good	
P	D, H Poetry	25 2×16 1 1 14 28	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	26 4×12 8 3 14 39	C	Old	Published
P.	D,Skt /H Poetry	15 4×11 9 5 9 18	C	Good	

1	2	3	4	5
701	Nga/7/10	Laghusahasranāma Stotra	—	—
702	Jha/34/26	Lakṣhmi Ārādhana Vidhi	—	—
703	Nga/2/15	Mahālakṣmi Stotra	—	—
704	Nga/7/16	,, ,,	—	—
705	Jha/36/1	Mangalāṣṭaka	—	—
706	Nga/4/2	Maṅgala Ārati	Dyānatarāya	—
707	Ga/157/6	Maṇibhadrāṣṭaka	—	—
708	Nga/2/12	Nandiśvara Bhakti	—	—
709	Kha/173/3(K)	Namokāra Stotra	—	—
710	Nga/2/53	Navakāra-Bhāvanā Stotra	—	—
711	Nga/2/14	Nemijina Stotra	Raghunātha	—
712	Kha/202	Nijātmāṣṭaka	Yogindradeva	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	22 1×14 7 2 12 26	C	Good	
P	D,H /Skt. Prose	25 1×16 1 1 11 33	C	Good	
P	D, Skt Poetry	19 4×15 5 2 12 15	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 3×14 7 2 14 11	C	Good	
P	D, Skt Poetry	19 7×14 9 2 11 24	C	Good	
P	D, Skt Poetry	21 5×17 9 1 10 28	C	Good 1951 V. S	
P	D, Skt Poetry	15 6×13 3 3 10 16	C	Old	
P	D, Skt / Pkt Poetry	19 4×15 5 10 13 14	C	Good	
P	D, Skt Poetry	27 2×17 5 1 13 35	C	Old	
P	D, Skt Poetry	19 4×15 5 3 13 16	C	Good 1954 V. S	
P	D, Skt Poetry	19 4×15 5 1 12 14	C	Good	
P	D, Pkt, Poetry	29 7×19 3 3 8 39	C	Good	

1	2	3	4	5
713	Nga/2/29	Nirvānakānda	—	—
714	Nga/6/5	,,	—	—
715	Nga/6/6	,,	—	—
716	Kha/177/10 (K)	,,	Bhaiyā Bhagavati Dāsa	—
717	Nga/2/10	Niravāna Bhakti	—	—
718	Kha/112/6	Padmāvati Kavaca	—	—
719	Kha/40/2	,, Kalpa	Mallisena Sūri	—
720	Kha/153/2	,, Vrhat Kalpa	—	—
721	Jha/34/1	Padmāmātā Stuti	—	—
722	Kha/75/1	Padmāvati Stotra	—	—
723	Kha/267	,, ,,	—	—
724	Nga/7/13 (K)	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt. Poetry	19 4×15 5 4 13 14	C	Good	
P	D, Pkt Poetry	22 8×18 1 2 17 20	C	Old	
P	D, H Poetry	22 8×18 1 2 17 22	C	Old 1943 V S	
P	D, H Poetry	24 1×12 8 1 14 30	C	Good 1871 V S	
P	D, Skt / Pkt Poetry	19 9×15 5 8 13 16	G	Good	
P.	D, Skt Poetry	19 4×15 5 11 14 12	C	Old	
P	D, Skt Poetry	32 5×19 7 24 13 35	C	Old 1884 V. S.	
P	D,Skt Poetry	27 4×12 6 2 16 55	C	Old	
P	D, H Poetry	25 2×16 1 3 11 25	C	Old	
P	D, Skt Poetry	29 6×13 5 3 14 61	C	Old	
P	D, Skt Poetry	21 6×17 5 10 13 30	C	Good	
P,	D, Skt Poetry	20 9×16 5 5 17 17	C	Good	

1	2	3	4	5
725	Jha/36/5	Padmāvati Stotra		—
726	Jha/34/11	,, ,,		—
727	Jha/34/10	,, Sahasranâma		—
728	Jha/40/6	Paramânanda Stotra		—
729	Nga/7/11(K)	,, ,,		—
730	Kha/227/9	,, Caturviṁśatikā		—
731	Nga/2/47	Pārśvajina Stavana		—
732	Nga/2/50	Pārśvanātha ,,		—
733	Nga/2/39	Pārśvanātha Stotra		—
734	Kha/105/2	,, ,,	Vidyananda Swāmi	—
735	Kha/62/1	,, ,, Saṭīka	Padmaprabhadeva	—
736	Jha/34/7	,, ,,		—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	19 7×14 9 6 11 21	C	Good	
P	D,Skt Poetry	25 1×16 1 8 11 30	C	Good	
P	D, Skt Poetry	25 1×16 1 9 11 30	C	Good	
P	D, Skt Poetry	14 5×11 7 3 9 20	Inc	Good	Last pages are missing
P	D, Skt Poetry	21.1×13 3 2 18 14	C	Good	
P	D; Skt Poetry	35 2×16 3 2 11 58	C	Good	Copied by Batuka Prasāda
P	D, Skt Peotry	19 4×15 5 3 13 15	C	Good	
P	D, Pkt Poetry	19 4×15 5 3 13 16	C	Good	
P	D, Skt Poetry	19 4×15,5 4 13 16	C	Good	
P	D, Skt Poetry	29 5×15 5 4 9 49	C	Good	
P.	D, Skt Poetry/ Prose	30 7×16 0 3 14 52	C	Good	Published.
P	D, Skt Poetry	25 1×16 1 4 11 30	C	Good	

1	2	3	4	5
737	Nga/6/16	Pārsvanātha Stotra	Padmaprabhadeva	—
738	Kha/119/3	Pañcastotra Satīka	—	—
739	Ga/143	Pañcāśikā Śikṣā	Dyānatarāya	—
740	Kha/171/6	Pañcapadāmnāya	—	—
741	Kha/165/14	Prabhāvatī Kalpa	—	—
742	Nga/2/35	Prārthanā Stotra	—	—
743	Kha/165/1	Rakta Padmāvatī Kalpa	—	—
744	Nga/2/20	Ṛṣabha Stavana	—	—
745	Kha/112/5	Ṛṣimandala Stotra	—	—
746	Nga/7/1	„ „	—	—
747	Jha/34/19	„ „	—	—
748	Nga/2/26	Trikāla Jaina Sañdhyā Vañdana	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P	D; Skt Poetry	22 8×18 1 1 17.21	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	19.2×12 2 184.11.45	C	Old 1967 V. S.	Copied by Pandit Sitārāma Śāstri.
P	D, H Poetry	34 4×16.1 57 10 45	C	Good 1947 V S.	It is a calection of Bhajan,
P	D, Skt Poetry	18 3×16 2 8 11 22	C	Old	
P	D, Skt Prose	24 5×10 4 1 17 70	C	Old	
P	D, Skt Poetry	19 4×15 5 1 13 15	C	Good	
P.	D, Skt. Prose	24 9×10 8 10 11 38	Inc	Old 1738 V S.	First page missing. Copied by Soubhāgya Samudra. D/o Jina Samudra Sūri.
P,	D, Skt Poetry	19 4×15 5 2 12 14	C	Good	
P	D, Skt Poetry/ Prose	19 4×15 5 19 14 14	C	Old	Written on copy size paper.
P	D, Skt Poetry	20 4×16 5 13 21 14	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry	25 1×16 1 9 11 33	C	Good	
P.	D, Skt Prose	19 4×15 5 4 13 14	C	Good	

1	2	3	4	5
749	Kha/243	Sahasranāmārādhanā	Devendrakīrti	—
750	Kha/153/1	„ Stotra Ṭīkā	Jinasenācārya	Śrutasāgara
751	Jha/35/5	„ „	—	—
752	Jha/75	„ Ṭīkā	Śrutasāgara	—
753	Kha/161/2	„ „	Pt. Āśādhara	Amarakīrti
754	Ga/134/7(Kh)	Sata Aṣṭotarī Stotra	Bhagavatīdāsa	—
755	Kha/188/2	Śakra Stavana	Siddhasenācārya	—
756	Nga/2/27	Sattarisaya „	—	—
757	Nga/2/51	Sammedāṣṭaka	Jagadbhūṣana	—
758	Kha/97	Samavasarana Stotra	Samantabhadra	—
759	Ga/148/3	Saṅkataharana Vinati	—	—
760	Kha/177/13	Śāntināthа Ārati	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	17 2×15 4 60 14 37	C	Good 1926 V S	Copied by Nemirājā.
P	D, Skt Poetry	29 5×12 5 114 12 54	C	Old 1775 V S	Copied by Gaṅgārāma Published.
P	D, Skt Poetry	16 1×16 1 9 13 19	Inc	Good	
P	D, Skt Prose	32 8×17 5 127 11 38	C	Good 1985 V S	Page No 68 to 78 are missing
P	D, Skt. Prose/ Poetry	25 8×13 2 61 14 52	C	Old 1897 V S	
P	D, H Poetry	30 3×16 3 10 14 43	C	Good	
P	D, Skt Prose	25 3×11 0 3 9 41	Inc	Old 1774 V S	
P.	D, Skt Poetry	19 4×15 5 2 13 15	C	Good	
P	D, Skt Poetry	19 4×15 5 3 13 14	C	Good	
P	D, Skt Poetry	16 5×10 5 56 8 29	C	Old	
P.	D, H Poetry	24 4×12 9 2 15 40	C	Good	
P	D, H Poetry	22 3×11 4 1 12 29	C	Old	Only one page is available.

1	2	3	4	5
661	Jha/36/2	Śāntināthа Stora	Gunabhadrācārya	—
762	Nga/2/44	„ Stavana	—	—
763	Nga/2/19	„ „	—	—
764	Jha/34/23	„ „	—	—
765	Jha/80	Sarasvatī Kalpa	Malliṣena Sūri	—
766	Jha/34/8	„ Stotra	—	—
767	Kha/176/2	, ,	—	—
768	Kha/173/3 (Kha)	„ „	—	—
769	Kha/161/6	„ „	—	—
770	Nga/2/6	Siddhbhakti	—	—
771	Nga/7/15	Siddhipriya Stotra Tikā	Bhavyānanda	—
772	Jha/34/22	Siddhaparameṣṭhi Stavana	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	19 7×14 9 1 11 20	C	Good	
P	D, Skt Poetry	19 4×15 5 1 13 14	C	Good	
P	D, Skt Poetry	19 4×15 5 2 12 14	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	25 1×16 1 2 11 32	C	Good	
P	D, Skt Poetry	20 6×16 7 9 11.22	C	Good	
P	D, Skt, Poetry	25 1×16 1 2 11.32	C	Good	
P	D, Skt Poetry	23 9×13 5 2 9 28	C	Old	
P	D, Skt Poetry	27 2×17 5 1 14 36	C	Old	
P	D, Skt Poetry	25 1×12 1 1 11 32	Inc	Old	Only first page available.
P	D, Skt / Pkt Poetry	19 4×15 5 5 13 15	C	Good	
P.	D, Skt Prose/ Poetry	20 9×16 3 17 16 12	C	Old	The Ms is demaged.
P	D, Skt. Poetry	25 1×16 1 2 11.33	C	Good	

1	2	3	4	5
773	Nga/2/7	Śrutabhakti	—	—
774	Kha/50	Stotra Saṁgraha	—	—
775	Kha/165/11	Stotrāvali	—	—
776	Kha/165/5	„	—	—
777	Kha/120	Stotra Saṁgraha Guṭakā	—	—
778	Kha/286	„ „	—	—
779	Jha/73	„ „	—	—
780	Nga/2/46	„	Bhattāraka Jina-candradeva	—
781	Kha/227/8	Suprabhāta Stotra	—	—
782	Jha/34/5	Svayaṁbhū Stotra	Samantabhadra	—
783	Jha/40/5	„ „	„	—
784	Kha/16	„ „ Satika	„	Prabhāca ndrācārya

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt./ Pkt Poetry	19 4×15.5 7.13 15	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	19 4×10 2 49 7 36	C	Old 1950 V. S.	
P.	D, Skt Poetry	24 5×11 1 6 20 45	Inc	Old	First page is missing.
P	D; Skt Poetry	26 3×10 8 11 13 52	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry	13 5×7 3 272 5 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	19.6×12 3 535 16 19	C	Old	
P	D, Skt Prose/ Poetry	32 8×17 5 72 11 39	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	19 4×15 5 2 13 15	C	Good	
P	D, Skt Poetry	35 2×16 3 2 11 55	C	Good	Copied by Baṭuka Prasāda.
P	D, Skt Poetry	25 1×16 1 14 11 32	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	15 4×11 9 5 9 16	C	Good	
P	D, Pkt, Poetry/ Prose	29 7×13 5 79 9 38	C	Good 1919 V. S	Published.

1	2	3	4	5
785	Kha/161/4	Vịṣāpahāra Stotra	Dhanañajaya	—
786	Jha/35/3	,, ,,	,,	—
787	Nga/7/19	,, ,,	,,	—
788	Nga/7/12 (K)	,, ,,	,,	—
789	Nga/6/4	,, ,,	,,	—
790	Kha/185/3	,, ,, ṭikā	,,	Nāgacandra
791	Kha/178/51	,, ,,	,,	—
792	Ga/59/2	,, ,,	,,	Akhairāja
793	Kha/165/9	,, ,,	,,	—
794	Kha/171/2(G)	,, ,, Mūla	,,	—
795	Ga/157/8	Vinati Saṃgraha	—	—
796	Jha/31/9	,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt. Poetry	24.1×12 7 3 13 40	C	Old	Published.
P	D, Skt Poetry	16.1×16 1 5 13 18	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	26 8×11 2 4 9 34	C	Good	
P	D, Skt Poetry	21 1×13 3 4 18 12	C	Good	
P	D, Skt Poetry	22 8×18 1 3 17 18	G	Good	
P	D, Skt. Poetry/ Prose	21 6×12 2 10 16 39	C	Old	
P	D,H /Skt Poetry	20 8×16 6 8 18 20	C	Good 1947 V. S.	Published
P	D,Skt /H Prose/ Poetry	29 5×13 5 12 14 48	C	Good	Published
P	D, Skt Poetry	26 1×10 5 5 7 32	C	Old 1672 V. S	Published
P	D, Skt Poetry	25 4×16 9 5 12 24	C	Good	Published.
P	D, H Poetry	15 4×14 6 23 12 18	C	Good	1st page is missing.
P.	D, H Poetry	18 2×11 8 1 10 22	C	Good 1852 V .S	

1	2	3	4	5
797	Nga/2/16	Vitarāga Stotra	—	—
798	Jha/28/6	Vṛhat Sahasranāma	—	—
799	Nga/2/45	Yamakāṣṭaka Stotra	Bhaṭṭāraka Amarakīrti	—
800	Nga/2/11	Yogabhakti	—	—
801	Nga/5/5	Abhiṣekapātha	—	—
802	Nga/6/17	„ Samaya Kā Pada	—	—
803	Jha/15	Akṛtrima Caityālaya Pūjā	—	—
804	Jha/34/25	Anantavrata Vidhi	—	—
805	Kha/76	Anantavratodyāpana Pūjā	Gunacandra	—
806	Kha/191/7 (Kha)	Aṅkuraropana Vidhi	—	—
807	Jha/49/3	Arhaddeva Vṛhad Śānti Vidhāna	—	—
808	Kha/143/2	Arhaddeva Śāntikābhiṣeka Vidhi	Jinasenācārya	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt. Prose	19.4×15.5 [illegible] 12 14	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	20.2×15.5 2.15.20	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry	[illegible]	C	Good	
P	D, Pkt Skt. Poetry	19.4×11.0 [illegible]	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	[illegible]	C	Good 1965 V. S.	
P	D, Skt Poetry	22.8×15.1 1 17.23	C	Good	
[illegible]	D, Skt Prose	24.6×16.2 72 22.16	C	Old	
P.	Prose	25.1×16.1 2 1[illegible] 32	C	Good	
P	D; Skt Poetry	29.6×13.4 18 14 54	C	Old	
P.	D, Skt. Prose	27.5×19.7 15 16 30	C	Old	
P.	D,Skt H./ Poetry	20.8×16.2 50 14.16	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	31.4×14.2 90.10.39	C	Old 1800 V. S.	

1	2	3	4	5
809	Kha/177/10 (Kha)	Aṣṭaprakārı Pūjā Vıdhāna	—	—
810	Kha/171/4	Atíta Caturvımśatı Pūjā	—	—
811	Nga/8/9	Bārası Caubısi Pūjā Vā Uāddyāpana	Bhaṭṭāraka Śubhacandra	—
812	Nga/2/30	Bhāvanā Battısi	—	—
813	Nga/6/15	Bısa Bhagavāna Pūjā	—	—
814	Kha/250	Vrhatsıddhacakra Pātha	—	—
815	Kha/75/2	„ „ Vıdhāna	—	—
816	Kha/176/5	Vrhatśāntı Pātha	—	—
817	Ga/80/6	Candraśataka	—	—
818	Jha/13/7	Caıtyālaya Pratıṣthā Vıdhi	—	—
819	Nga/5/8	Caturvımśati Pūjā	—	—
820	Kha/78/2	„ Tirthankara Pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	[illegible]	C	Good [illegible] V. S.	
P	D, Skt H [illegible]	[illegible]	C	Good [illegible] V. S.	
P	D, Skt Prose Poetry	[illegible]	C	Good [illegible] V. S.	
P.	D, Skt Hin Poetry	[illegible]	C	Good	
P	D, Skt H Poetry	[illegible]	C	Good	
P	D, Skt Poetry	[illegible]	C	Old [illegible] V. S.	Copied by Sītārāma
P.	D. Skt Prose/ Poetry	[illegible] 6×16.2 41 9 42	C	Good	
P.	D. Skt Prose/ Poetry	21.6×10.6 4 10.43	C	Good	
P	D. H Poetry	23.2×15.3 15 22 22	C	Old 1890 V. S.	Copied by Nandalāla Pāṇḍey.
P	D; Skt. Poetry/ Prose	24.5×12.5 7.21.16	C	Good	
P	D; H Poetry	19.9×18.6 4.13.21	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	33.0×14.4 32 12.46	C	Good 1892 V. S.	

1	2	3	4	5
821	Nga/6/1	...vimśati Jinapūjā	Dyānatarāya	—
822	Ga/55/1	Caubīsī Pūjā	Manaranga	—
823	Ga/145/1	„ „	Vrñdāvana	—
824	Ga/93/2	Caubīsa Tīrthankara Pūjā	„	—
825	Ga/94/1	Caubīsī Pūjā	„	—
826	Jha/26/2	Cintāmani Parśvanātha Pūjā	—	—
827	Jha/16/6	„ „	—	—
828	Jha/16/8	„ „	—	—
829	Nga/8/4	„ „	—	—
830	Ga/103/1	Daśalākṣanika Udyāpana	—	—
831/1	Nga/8/7	„ „	—	—
831/2	Kha/73/3	„ Vratodyāpana	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. H Poetry	[illegible] 13.35.19	C	Good	
P.	D. H Poetry	22.9×10.[illegible] [illegible]	C	Good 19[illegible] V. S.	
P.	D. H Poetry	[illegible]	C	Good	
P.	D. H Poetry	[illegible]	Inc.	Old	
P.	D. Skt Poetry	[illegible]	[illegible]	Good [illegible]	
P.	D. Skt Poetry	[illegible] 24.20.24	C	Good	
P.	D. Skt Poetry	24.[illegible] [illegible].21.1[illegible]	Inc.	Old	
P.	D. Skt Poetry	24.3×16.1 [illegible] 19.17	C	Old	
P.	D. Skt Poetry	22.1×18.1 10.13.28	C	Good	
P.	D. Skt Poetry	34.7×20.4 09.15.42	C	Good	
P.	D. Skt Poetry	22.1×18.1 17.13.25	C	Good	
P.	D. Skt Poetry	26.5×16.5 22.11.28	C	Good 1955 V. S.	

1	2	3	4	5
832	Ga/103/7	Daśalakṣana Pūjā	Dyānatarāya	—
833	Ga/103/5	„ „	—	—
834	Nga/4/5	„ „	—	—
835	Nga/6/12	„ „	Dyānatarāya	—
836	Kha/72/3	Darśana Sāmāyika Pāṭha Samgraha	—	—
837	Jha/25/2	Devapūjā	Dyānatarāya	—
838	Jha/37	„ „	—	—
839	Jha/28/4	„ „	—	—
840	Nga/9/1	„ Pūjana	—	—
841	Nga/6/13	„ Śāstra-Gurupūjā	—	—
842	Kha/175/2	Devapūjā (Abhiṣeka Vidhi)	—	—
843	Nga/9/2	Dharmacakra Pāṭha	Yaśonandi Sūri	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, H. Poetry	34.7×20.4 3.15.[illegible]	C	Good	Published.
P.	D, Skt./ Prk. Poetry	31.7×20.4 4.15.45	C	Good	
P.	D, Skt./H. Poetry	[illegible] 1[illegible].10.22	C	[illegible] [illegible] V. S.	
P.	D, Apbh./H. Poetry	[illegible] 11.17.1[illegible]	C	G[illegible]	
P.	D, Skt. Poetry	[illegible]×17.2 4[illegible].14.1[illegible]	Inc	Old	Last pages are missing.
[illegible]	D, H. Poetry	22.9×12.1 3.1[illegible].[illegible]		Good	
P.	D, Skt. Poetry	15.4×13.5 25.10.14	C	Old	First page is missing
P.	D, Prk. Poetry	20.1×15.8 10.13.17	Inc	Good	
P.	D, Skt./ H Prose/ Poetry	25.6×20.6 40.10.18	C	Good	
P.	D; Apb./ Skt./H Poetry	22.8×18.1 10.17.19	C	Good	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	27.2×14.1 13.16.38	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	25.5×20.3 48.14.16	C	Good 1962 V. S.	

1	2	3	4	5
844	Jha/16/2	Dharmacakra Pāṭha	—	—
845	Jha/131/8	„ Pūjā	—	—
846	Jha/13/1	Ganadharavalaya Pūjā	—	—
847	Nga/8/1	„ „	—	—
848	Ga/110/2	Grahaśānti „	—	—
849	Ga/157/2	Homa Vidhāna	Daulatarāma	—
850	Jha/26/5	„ „	Āśādhara	—
851	Kha/145/1	Indradhvaja Pūjā	Bhattāraka Viśvabhūṣana	—
852	Kha/44	„ „	„	—
853	Jha/27	„ „	„	—
854	Nga/6/18	Janmakalyānaka Abhiṣeka Jayamālā	—	—
855	Jha/36/4	Jāpa-Vidhi	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	[illegible]	Inc.	[illegible]	
P	D, Skt Poetry	[illegible]	C	Good	
P	D, Skt Poetry	[illegible]	C	Good	
P	D, Skt Poetry [illegible]	[illegible]	C	Good	
P	D, H Poetry	[illegible]	Inc.	[illegible]	
P	D, Skt H Prose, Poetry	[illegible]	C	Good [illegible] V. S.	[illegible] seems to be [illegible]
P	D, Skt Poetry	22 [illegible]	C	Good	
P.	D, Skt, Poetry	32.6 × 14.[illegible] 111.11.36	C	Good 1910 V. S.	
P	D, Skt Poetry	29.2 × 19.5 147.12.32	C	Good 1951 V. S.	Unpublished.
P.	D, Skt Poetry	21.8 × 14.8 103.21.18	C	Good	
P.	D; H Poetry	22.8 × 18.1 2.17.22	C	Good	
P.	D; Skt, Poetry	19.7 × 14.9 1.11.21	C	Good	

1	2	3	4	5
856	Nga/2/42	Jinapañcakalyāṇaka Jayamālā	—	—
857	Kha/204	Jinendrakalyāṇābhyudaya (Vidyānuvādāṅga)	—	—
858	Kha/207	Jinayajna Fhalodaya	Kalyāṇakīrtimuni	—
859	Nga/44	Jinapratimā Sthāpana Prabandha	Śrībrahma	—
860	Kha/163/5	Jinapurandara Vratodyāpana	—	—
861	Jha/16/7	Kalikuṇḍa Pārsvanātha Pūjā	—	—
862	Jha/26/3	Kalikundala Pūjā	—	—
863	Kha/244	Kalikuṇḍārādhanā Vidhāna	—	—
864	Kha/278	Karmadahana Pātha Bhāṣā	—	—
865	Ga/37	Karmadahana Pūjā	—	—
866	Kha/74/1	,, ,,	Bhaṭṭāraka Śubhacandra	—
867	Kha/72/2	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt Poetry	19 4×15 5 2 13 14	C	Good	
P	D, Skt Poetry	34 8×14 4 131 9 53	C	Good	
P	D, Skt Poetry	31 5×18 7 86 15 47	C	Good 2451 Vir S	
P	D, Skt Prose/ Poetry	31 8×14 2 48 12 37	C	Good	
P	D, Skt Poetry	25 9×12 1 9 10 55	G	Old 1932 V S	Unpublished. Copied by Rāmagopāla.
P	D, Skt Poetry	24 3×16 1 5 20 16	C	Old	
P	D, Skt Poetry	22 4×16 8 3 20 24	C	Good	
P	D, Skt Poetry	17 1×15 4 13 12 33	C	Good	
P	D, Skt Poetry	21 9×17 9 7 19 26	Inc	Good	
p	D, H Poetry	27 1×17 5 22 24 16	C	Good 1951 V. S	
P	D, Skt Poetry	29 6×15 2 34 11 45	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	26 5×17 4 10 12 33	C	Good	Published.

1	2	3	4	5
868	Kha,37/1	Karmadahana Pūjā	Bhattāraka Śubhacandra	—
869	Kha/168	,, ,,	,,	—
870	Jha/48	,, ,,	—	—
871	Nga/8/2	,, ,,	Vādıcandra Sūri	—
872	Kha/186/1	Kṣetrapāla ,,	—	—
873	Kha/185/4	Laghusāmāyıka Pātha	—	—
874	Kha/232	Mahābhışeka Vıdhāna	Śrutasāgara Sūri	—
875	Nga/2/43	Mahāvira Jayamālā	—	—
876	Kha/140/3	Mandıra Pratışthā Vıdhāna	—	—
877	Kha/242	Mrtyuñjayārādhanā Vıdhāna	—	—
878	Ga/148/1	Mūlasamgha Kāṣṭhāsamghı	—	—
879	Ga/18/2	Nandīśwara Vıdhāna	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	35 0×18 3 11 13 53	C	Old	Published.
P.	D, Skt Poetry	24 8×10 6 16 11.46	Inc	Old	Pages disarranged & missing.
P.	D, Skt Poetry	19 3×18 1 19 15 22	C	Good	
P	D, Skt Poetry	22 1×18 1 15 13 26	C	Good	
P	D, Skt Poetry	23 2×13 6 9 11 34	C	Old 1836 V S	Copied by Cainsukhaaji
P	D, Pkt / Skt Prose/ Poetry	16 4×11 2 8 12 24	C	Old	
P	D, Skt Poetry	30 5×17 4 40 12 50	C	Good	
P	D, Skt Poetry	19 4×15 5 2 13.16	C	Good	
P	D, Skt Poetry	30 4×16.6 38 13 52	Inc	Old	
P	D, Skt Poetry	17 1×15 4 7 12 37	C	Good 1926 V S	Copied by Nemirâjâ
P	D,Skt./H Poetry	30 3×16 5 16 11 33	Inc	Old	Last pages are missing.
P	D, H Poetry	33 3×21 1 16 12 41	C	Good	

1	2	3	4	5
880	Ga/18/1	Nandīswara Vidhāna	Takacanda	—
881	Nga/2/54	Navagraha Ariṣṭa Nivāraka Pūjā	—	—
882	Nga/1/4/1	Navakāra Paccisi	Vinodilāla	—
883	Kha/191/1(K)	Nāndimangala Vidhāna	—	—
884	Kha/234	,, ,,	—	—
885	Jha/32	Nityaniyama Pūjā	—	—
886	Kha/70/2	,, ,,	—	—
887	Nga/4/4	Nityaniyama Pūjā Saṁgraha	—	—
888	Ga/94/2	Nirvāna Pūjā	—	—
889	Nga/4/3	Pañcamaṅgala	Rūpacanda	—
890	Kha/87/2	Pañcami Vratodyāpana	—	—
891	Nga/5/1	Pañcamerū Pūjā	Dyānatarāya	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	31 6×17 3 15 13 48	C	Good 1951 V. S	
P.	D,Skt /H Poetry	19 2×15 1 6 13 14	C	Good	
P	D, H Poetry	17 5×13 5 12 13 9	C	Good 1913 V S	First page is missing
P	D, Skt Prose	27 5×19 7 20 16 30	C	Old	
P	D, Skt Prose	30 5×17 4 55 11 50	C	Good	
P	D Skt ,H Poetry	17 8×14 3 24 14 18	C	Good	
P	D, Skt Poetry	25 4×19 2 9 20 19	Inc	Old	First page damaged & last pages are missing.
P,	D, Skt / H Poetry	21 5×17 9 32 10 24	C	Good	
P	D, H Poetry	36 3×13 3 5 9 35	C	Good 1965 V S.	
P	D; H Poetry	21 5×17 9 8 10 28	C	Good 1951 V. S.	
P	D, Skt Poetry	29 6×13 4 4 14 56	C	Old	
P	D Skt /H Poetry	18 3×14 5 14 15 17	C	Good	

1	2	3	4	5
892	Kha/95	Pañcaparameṣṭhī Pūjā	—	—
893	Kha/74/2	,, ,,	Yaśonandi	—
894	Ga/103/2	,, ,,	—	—
895	Ga/66	,, Vidhāna	—	—
896	Kha/112/4	,, Pāṭha	Yaśonandi	—
897	Kha/40/1	Pañcakalyāṇaka Pūjā	—	—
898	Jha/23/3	,, ,,	—	—
899	Kha/62/2	,, ,,	—	—
900	Ga/103/1	,, ,,	Bakhtāvara	—
901	Nga/1/1	,, ,,	—	—
902	Kha/112/1	,, Pāṭha	—	—
903	Kha/112/7	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	27 5×13 5 43 9.38	C	Old	
P	D, Skt Poetry	29 8×15 1 67 13 44	Inc	Old	First 33 pages are missing.
P	D, H Poetry	34 7×20 4 18 15 51	C	Good 1937 V S.	Copied by Jamunadas
P	D, H Poetry	24 5×22 3 129 15 24	C	Old	Copied by Paṅdit Hirā Lāla.
P	D; Skt Poetry	19 4×15 5 134 10 31	C	Old 1800 Saka-samvat	Published Written on copy size paper with black & red ink pages are bordered with fine printing
P	D, Skt Poetry	33 0×15 5 21 9 45	C	Old	Unpublished
P	D, Skt Poetry	23 2×19 6 21 17 23	C	Good 1953	
P	D, Skt Poetry/ Prose	29 6×14 8 9 11 37	Inc	Old	First 19 pages & last pages are missing
P	D, H Poetry	34 7×20 4 13 15 50	C	Good	
P	D, Skt Poetry	15 5×11 8 23 12 25	C	Good 1879 V S	
P	D, Skt Prose/ Poetry	19 8×15 5 75 12 28	C	Old 1936 V S	Written with red& black ink Pages are boardered with fine printiag Last three pages are const of fine manadls sketches
P.	D; Skt Poetry	19 4×15 5 47 17 20	Inc	Old	First two pages and last pages are missing.

1	2	3	4	5
904	Nga/5/2	Pañcakalyānaka Pāṭha	—	—
905	Kha/184	Pañcakalyānakādi Mandala	—	—
906	Nga/3/1	Padmāvati Pūjā	Haridāsa	—
907	Nga/7/13 (Kha)	Padmāvatidevi „	—	—
908	Jha/26/4	„ Pūjana	—	—
909	Nga/8/3	Palyavidhān Pūjā	—	—
910	Jha/55	Pratiṣṭhākalpa	Akalaṅkadeva	—
911	Kha/222	„ „ Tippana (Jina Saṁhitā)	Kumudacandra	—
912	Jha/86	Pratiṣṭhā Pātha	Jayasenācārya	—
913	Jha/42	„ „	—	—
914	Jha/54	Pratiṣṭhā Sāroddhāra	Bramhasūri	—
915	ha/140/2	Pratiṣṭhāsāra Saṁgraha	Vasunandi Saiddhāntika	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	21 1×16 4 37 11 24	C	Good	
P	— —	22 3×18 3 30 0 0	C	Old	It is skeches of thirty mandalas
P	D, Skt Poetry	20 6×16 5 162 11 18	C	Good 1955 V. S.	
P	D, Skt Poetry	20 9×16 5 2 17 18	C	Good	
P	D, H Poetry	22 4×16 8 3 14 16	C	Good	
P	D, H, Poetry	22 1×18 1 8 13 30		Good	
P	D, Skt Poetry	21 2×16 8 80 14 36	C	Good 1926 V S	Copied by Nemirājā.
P	D, Skt prose	34 8×14 5 39 10 69	C	Good 2451 Saka S	,, ,,
P	D, Skt Poetry	31 7×19 8 80 13 30	C	Good	
P	D, Skt Prose	24 8×12 8 34 11 32	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	21 1×16 8 112 14 00	C	Good 2452 Vir S	Copied by Nemirāja.
P.	D, Skt Poetry	27 4×16 3 33 14 51	C	Old 1949 V S	Pt Paramanand.

1	2	3	4	5
916	Kha/247	Pratiṣṭhā Vidhāna	Hastimalla	—
917	Kha/176/1	„ Vidhi	—	—
918	Gaa/157/3	Prākrtanhavana	—	—
919	Kha/156/2	Punyāhavācana	—	—
920	Kha/98,1	„	—	—
921	Jha/9/1	Puṣpānjali Pūjâ	—	—
922	Kha/169	Pūjā Saṁgraha	—	—
923	Ga/103/6	Ratnatraya Pūjâ	Narendrasena	—
924	Jha/23/1	„ „	Jinendrasena	—
925	Jha/51	„ „	„	—
926	Nga/6/9	„ „	Dyānatarāya	—
927	Ga/103/8	„ „	„	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	17 1×15 1 19 11 34	C	Good	
P	D, Skt Prose	27 1×15 4 34 11 32	C	Old 1909 V. S	Written on coloured thin paper.
P	D, Pkt Poetry	17 5×15 5 3 13 27	C	Good	
P	D, Skt. Poetry	27 4×13 6 6 11 43	C	Old	
P	D, Stk Poetry	21 5×12 2 11 9 29	C	Old 1866 V. S	
P	D, Skt. Poetry	27 2×12 4 6 13 50	C	Good	
P	D, Skt / Pkt./H Poetry	24 9×21 4 88 26 48	C	Good 1947 V. S	
P	D, Skt Poetry	34 7×20 4 7 15 46	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	23 2×19 5 12 18 23	C	Good	
P	D, Skt Poetry	21 2×16 2 16 17 21	C	Good	
P	D, H Poetry	22 8×18 1 5 17 23	C	Good	
P	D, H, Poetry	34 7×20 4 3 15 46	C	Good	Published.

1	2	3	4	5
928	Kha/263	Ratnatraya Pujā Udyapana	Visvabhuṣana S/o Viśālakirti	—
929	Ga/103/4	„ „	—	—
930	Kha/91	„ „	—	—
931	Kha/98/2	„ Jayamāla	—	—
932	Kha/165/3	„ „	—	—
933	Ga/93/3	Ṛṣimaṇḍala Pūjā	Jawāhara Lāla	—
934	Jha/49/2	„ „	„	—
935	Jha/31/5	„ „	—	—
936	Ga/80/5	Rūpacandra Śataka	Rūpacandra	—
937	Jha/13/3	Sakalikarana Vidhāna	—	—
938	Kha/143/3	„ „	—	—
939	Jha/45	Samavasarana Pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	24 6 x 19 8 33 15 40	C	Good	This work is presented to Jain Sidhant Bhavan by Buchchulāla Jain in 1987 V S
P	D, Skt/ Pkt Poetry	34 7 x 20 4 19 15 52	C	Good	
P	D, Skt Poetry	30 4 x 14 2 8 14 57	C	Old	
P	D, Pkt Poetry	29 1 x 13 4 4 7 43	C	Good	
P	D, Skt Poetry	25 6 x 11 8 3 6 35	C	Old	
P	D, H Poetry	32 3 x 16 8 12 13 51	C	Good 1901 V S	
P	D, H Poetry	20 8 x 16 2 33 14 16	C	Good 1960 V S.	Durgālāl seems to ba copier.
P	D, Skt Poetry	18 2 x 11 8 19 10 22	C	Good	
P	D, H Poetry	23 2 x 15 3 4 22 22	C	Old 1890 V S	It is written only Doha Chhanda
P	D, Skt Poetry	24 5 x 16 5 2 23 17	C	Good	
P	D, Skt Poetry	31 5 x 14 4 9 11 47	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	32 6 x 18 1 25 14 52	C	Good	

1	2	3	4	5
940	Kha/79	Samavasarana Pātha (Samavaśruti-Pūjā)	Bhattaraka Kamalakirti	—
941	Ga/36	Sammedaśikhara Māhātmya	Lālacandra	—
942	Ga/151/2	Sammedasikhara Pūjā	Jawāhara	—
943	Jha/38/2	,, ,, ,,	—	—
944	Nga/1/5/1	Sarasvati Pūjā	Sadāsukha	—
945	Ga/77/2	,, ,,	Sadāsukha Dāsa	—
946	Jha/13/2	Saptarṣi ,,	Viśvabhūṣana	—
947	Nga/4/1	,, ,,	Bhattāraka Viśvabhūṣana	—
948	Jha/23/2	,, ,,	Visva Bhūṣana	—
949	Kha/148	Satcaturtha Jenārccana	—	—
950	Kha/70/3	Ṣannavati Kṣetrapāla Pūjā	Sri Viśvasena	—
951	Kha/37/2	Sārdhadvayadvipā Pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	27.5×13 6 38 11 49	C	Old	
P	D, H. Poetry	29 8×18 3 45 12 40	C	Good 1937 V. S	
P	D, H Poetry	28 8×12 4 15 9 39	C	Old	
P	D, Skt Poetry	14 3×13 2 12 10 15	C	Old	
P	P, H Poetry	17 5×14 4 27 11 20	C	Good 1921 V S.	
P	D, H Poetry	24 5×10 6 25 8 33	C	Good 1962 V S	
P.	D, Skt Poetry	24 5×16 5 8 21 18	C	Good	Unpublished.
P	D, Skt Poetry	21 2×15 1 12 9 25	C	Good 1951 V. S	
P	D, Skt Poetry	23 3×19,4 8 18 21	C	Good 1956 V S	
P	D, Skt Poetry	28 1×15 2 95 12 33	C	Good 1935 V. S	Unpublished
P.	D, Skt Poetry	29 5×19 0 17 22 21	C	Good 1955 V. S.	
P.	D, Skt Poetry	35 5×19 1 93 14 54	C	Old	

1	2	3	4	5
952	Jha/1	Sārdhadvaya dwipasth Jinapūjā	—	—
953	Kha/32	Sāmāyika Paṭha	Bahumuni	—
954	Kha/80/1	Śāntyāṣṭaka Tikā	—	—
955	Jha/13/6	Śāntimantrābhiśeka	—	—
956	Kha/210/Kha	Śānti Pāṭha	—	—
957	Ga/55/2	,, Vidhān	Śwarūpacand	—
958	Kha/233	,, ,,	—	—
959	Kha/72/1	Śāntidhārā Pāṭha	—	—
960	Nga/6/14	Siddhapūjā	—	—
961	Jha/38/1	,,	—	—
962	Kha/160/4	Sidhacakra	Devendrakirti	—
963	Ga/51	Śikharamāhātmya	Lālacanda	—

6	7	8	9	10	11
P	D, Skt Poetry	31 3×15 6 106 12 40	C	Good 1868 V S	Śivalāla seems to be copier.
P.	D, Skt Poetry	31 0×12 6 16 9 38	C	Old 1836 V S	Unpublished
P.	D, Skt Poetry	26 8×14 3 34 10 43	Inc	Old 2440 Bir S	Last pages are missing.
P	D, Skt /H Prose	24 5×12 5 17 21 14	Inc	Good	
P	D; Skt Poetry	26 8×15 8 7 8 30	Inc	Good 2438 Vir S.	Copied by Dharamcand.
P	D, H Poetry	28 5×12 9 43 9 36	C	Good	
P	D, Skt. Prose	30 5×17 4 17 12 48		Good	
P,	D, Skt Prose	28 0×17 0 6 9 31	C	Good 1947 V S	
P	D; Skt Poetry	22 8×18 1 3 17 25	C	Good	
P	D, H Poetry	14 3×13 2 7 10 13	C	Old	
P	D, Skt. Poetry	28 4×10 8 16 9 41	Inc	Good	Last pages are missing.
P.	D, H Poetry	30 1×19 1 49 12 34	C	Good 1955 V. S.	

1	2	3	4	5
964	Kha/140/1	Siṁhāsana Pratiṣṭhā	—	—
965	Kha/172/3	Solahakārana Jayamālā	—	—
966	Nga/8/6	,, Udyāpana	—	—
967	Nga/5/7	Sudarśana Pūjā	Śikharacandra	—
968	Jha/28,5	,, ,,	—	—
969	Kha/98/3	Śrutaskandha Vidhāna	—	—
970	Jha/9/2	,, Pūjā	—	—
971	Jha/13/5	Swasti Vidhāna	—	—
972	Nga/2/1	Svādhyāya Pātha	—	—
973	Ga/20	Terahadwipa Vidhāna	—	—
974	Jha/14	Tisacaubisi Patha	—	—
975	Nga/8/8	Tisacaturviṁśati Pūjā	Śubhacandra	—

6	7	8	9	10	11
P	D; Skt. Poetry	30 4×17 1 11 13 36	C	Old	Copied by Pt Paramananda
P.	D, Pkt Poetry	27.2×18 2 17 6 29	C	Old 1952 V S.	Copied by Gobinda Singh Varmā
P.	D, Skt Poetry	22 1×18.1 28 13.30	C	Good	
P.	D, H Poetry	21.2×16 6 4 14 18	C	Good 1950 V. S	
P	D; H Poetry	20.2×15 8 5.10.24	C	Good 1950 V S.	
P.	D; Skt. Poetry	29.5×13 4 7 14 51	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	27 2×12 4 17 8 28	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	24 5×16 5 9 22 15	C	Good	
P.	D, Skt / Pkt. Poetry	19 4×15 5 4 13 14	C	Good	
P	D, H. Poetry	37 5×19 8 183 12.41	Inc	Good	First page & last pages are missing
P.	D, Skt. Poetry	24 4×15 2 73 18 15	C	Good	
P.	D, Skt Poetry	22 1×18 1 49 13.26	C	Good 1774 V S.	

1	2	3	4	5
976	Ga/137	Tīsa Caubīsī Pūjā	—	—
977	Kha/78/1	Trikāla-Caturviṁśati Pūjā	—	—
978	Ga/19	Trilokasāra ,,	Paṇḍit Mahācandra	—
979	Ga/3	,, Vidhāna	Jawāhara Lāla	—
980	Kha/241	Vajrapañjarādhanā Vidhāna	—	—
981	Ga/112/2	Vāsupujya Pūjā	—	—
982	Kha/240	Vāstupūjā Vidhāna	—	—
983	Ga/157/11	Vidyamāna Caturviṁśati Jinapūjā	—	—
984	Ga/157/5	Viṁśati Vidyamāna Jinapūjā	—	—
985	Kha/171/1	,, ,,	Śikharacandra	—
986	Kha/238	Vimānaśudhi Vidhāna	—	—
987	Jha/84	Vratodyotana	Abhradeva	—

6	7	8	9	10	11
P	D, H Poetry	28 3×17 9 136 13 35	C	Good 1913 V. S	
P.	D. Pkt Poetry	29 6×15 2 13 11 37	C	Good	
P.	D; H Poetry	42 8×21.3 148 13 33	C	Good 1954 V. S	
P.	D; H Poetry	36.1×20.5 227 15 44	C	Good 1964 V S	
P.	D; Skt Poetry	17 3×15 5 6.12.37	C	Good	Copied by N. N. Rāya.
P.	D, H, Poetry	20 9×16 5 5 13 15	C	Old	
P.	D, Skt Poetry	17.1×15 2 9 12 32	C	Good	Copied by Nemirājā.
P	D, Skt poetry	12 7×00 0 29 9 18	Inc	Old	1 to 5 Pages are missing.
P.	D, Skt / Pkt Poetry	18 2×11 9 6 12 19	C	Old	
P	D, H. Poetry	27 9×17 5 60 15 13	C	Old 1941 V S	
P.	D, Skt Poetry	17 1×15 3 9 12.30	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	35 3×16.2 22 9 54	C	Good 1987 V S.	

1	2	3	4	5
988	Jha/49/9	Vrihadnhavana	—	—
989	Kha/154	Vrhacchānti Pāṭha	Dharmadeva	—
990	Jha/122	Bimbanirmāna Vidhi	—	—
991	Jha/25/4	Caubisa Dandaka	—	—
992	Jha/56	Dvijavadana Capeta	—	—
993	Jha/92/2	Lokānuyoga	Jinasenācārya	—
994	Kha/177/2	Maṅdala Cintāmani	—	—
995	Jha/117	Munivaṅśābhyudaya	Cidānaṅda Kavi	—
996	Jha/102	Trailokya Pradipa	Indravāmadeva	—
997	Ga/88	Yaṅtra dwārā vividha carcā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D, Skt. Poetry	20 8×16 2 14 14 16	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	29 6×13 3 27 14.49	C	Good 1937 V S	
P.	D; Skt./ H. Prose/ Poetry	21.6×17.5 20 13.30	C	Good 1992 V. S.	
P.	D; H. Prose	22 9×15 4 7 18 15	C	Good	
P.	D, Skt Prose/ Poetry	20 9×18 9 28 16 22	Inc	Good	Last pages are missing.
P.	D, Skt. Poetry	35.2×16.3 81 11 49	C	Good 1989 V. S	
P.	D, H.	00.0×00 0 1 00.00	C	Old	It is a sketch of cintāmani prepared by Munilāla.
P.	D; K Poetry	33 8×16 3 40 10 45	C	Good	
P.	D, Skt. Poetry	35.4×16 3 82 11 55	C	Good 1990 V. S.	
P.	D, H. Prose	36.4×28.8 68.25.40	C	Good	Unpublished.

परिशिष्ट

(पुराण, चरित, कथा)

१. आदिपुराण

Opening : श्रीमते सकलज्ञानसाम्राज्यपदमीयुषे ।
धर्मचक्रभृते भर्त्रे नमः संसारभीमुषे ॥

Closing : यो नाभेस्तनयोऽपि विश्वविदुषां पूज्यः स्वयम्भूरिति
त्यक्ताशेषपरिग्रहोऽपि सुधियां स्वामीति यः शब्द्यते ।
मध्यस्थोऽपि विनेयसत्वसमितेरेकोपकारीमतो
निर्दानोऽपि बुधैरुपास्यचरणो यः सोऽस्तु वः शान्तये ॥

Colophon : इत्यार्षे भगवज्जिनसेनाचार्यप्रणीते त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण-संग्रहे प्रथमतीर्थंकर चक्रधरपुराणं परिसमाप्तम् । सप्तचत्वारिंशत्तिमं पर्व ।

पुस्तक आदिपुराणजी कर भट्टारक राजेन्द्रकीर्ति जी को दिया लखनऊ मे ठाकुरदास की पत्नी ललितपरसाद की बेटी ने मिति माघ वदी स० १६०५ के साल मे ।

द्रष्टव्य—प्र० जै० सा०, पृ० १०२ ।
जि० र० को०, पृ० २६ ।
आमेर भंडार के ग्रंथ, पृ० ११ ।
रा० सू०, पृ० २६ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १ ।
Catg. of Sk. & Pkt Ms., page-624

२. आदिपुराण

Opening : देखें, क्र० १ ।

Closing : देखे, क्र० १ ।

Colophon : इत्यार्षे भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीते त्रिषष्टिलक्षणमहापुराणे

प्रथमतीर्थंकरप्रथमचक्रधरकेवलज्ञाने निर्वाणादिवर्णन नाम महापुराण समाप्तम ॥४७॥ समाप्तोऽय श्री आदित्यपुराणग्रथ । अथ श्रीसंवत्सरे नृपति श्रीविक्रमादित्यराज्ञ सम्वत् १८५१ चैत्रमासे शुक्लपक्षे सप्तम्या तिथौ रविवासरे पट्टनपुरनगरे लिखितमिद महापुराण उदेरामब्राह्मणेन । ॥ शुभम् ॥

३. आदिपुराण

Opening . देखें, क्र० १ ।

Closing : देखे, क्र० १ ।

Colophon · इत्यार्षे भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीते त्रिषष्टिलक्षणमहापुराणे प्रथमतीर्थंकर प्रथमचक्रधर केवलज्ञान निर्वाणादिवर्णनोनाम महापुराण समाप्तम् । समाप्तोऽय श्रीआदिपुराणग्रथ । अथश्रीसवत्सरे नृपतिश्री विक्रमादित्यराज्ञ सवत् १७७३ आषाढे मासे शुक्लपक्षे चतुर्थी तिथौ-भौमवासरे पाटलिपुरेनगरे लिख्यतमात्मने ब्रह्मचारिणा सानदेन ॥

४. आदिपुराण

Opening देखे, क्र० १ ।

Closing . देखे, क्र० १ ।

Colophon इत्यार्षे भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीते त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण-सग्रहे प्रथमतीर्थंकरचक्रधरनिर्वाणगमणपुराण परिसमाप्ति सप्तचत्वारिंश-तम पर्व ॥४७॥

रुद्रेदुनाभिता सख्याप्रवाच्यासुमनीषिभि ।
ज्ञेयमादिपुराणाद्धिगणित सुसमीहितम् ॥
श्री हरिकृष्णसरोजराजराजितपद्पकज ।
सेवतमधुकरसुभटवचनमत्रिततनुअकज ।
यह पुरण लिख्यौ पुराणातिन शुभ शुभ कीरति के पगनकौ ।
जगमगतु जगमनिजसुअटलशिष्यसुगिरधर परसरामकै कथनकौ ।
शुभ भव सुमगलम् श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ॥

५. आदिपुराण

Opening प्रणमि सकल सिद्धनिकू, प्रणमि सकल जिनराय ।
प्रणमि सकल सिद्धान्तकू, नमि गणधर के पाय ॥

Closing : श्रीमत आदि पुराणके, श्लोक भाषा अनुमान।
तेईस सु सहस्र है, बुधजन करहु बखान॥

Colophon : मासे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे द्वितीया बृहस्पति संवत् १८६ पुस्तक लिखितं पेमकर्णतस्यात्मपुत्र श्यातालाल तस्य पुत्र गुणराज अपने पठनार्थ हेतु लिखी ।

६. आदिपुराण टिप्पण

Opening : ॐ नमो वक्रग्रीवाचार्याय श्रीकुन्दकुन्दस्वामिने । अपागण्यवरेण्य-नतत्नपुण्यनक्रवर्तिनीर्थकरपुण्यमहिमावष्टम्भसम्भूतपञ्चकल्याणाञ्चित '' ।

Closing : ' स्वपरार्थनिर्द्दि स्वपरार्थज्ञानं सम्यग्ज्ञानमित्यर्थः । वृषभ श्रेष्ठ ।

Colophon : इति प्रथमचक्रधरपुराण मन्त्रवस्वाभ्यित्तम पर्वपरिसमाप्तम् ।

विशेष : अन्तिम एक पत्र में अंक संदृष्टि दी गई है ।

देखें—जि० र० को०, पृ० २७ ।

७. आदिनाथ पुराण

Opening : देखें, क्र० १ ।

Closing : श्रीपुराणमाम्नायमाम्नात हस्तिमल्लिना ।
तदप्ष्ट सर्वशास्त्राब्धेरखण्डं धार्यतामुम् ॥

Colophon : इति दशमं पर्व ।

श्रीमदखिलप्राणिगणकल्याणकारकमिद वृषभनाथपुराण श्रीवीरवाणीविलास—जैनसिद्धान्तभवनस्य कर्णाटकलिपिविभूषित—जीर्ण-प्राचीन ताडपत्रग्रथाद्यथामति वेणुपुरनिवासिना लोकनाथशास्त्रिणा उद्धृत-मिति भद्र भूयात् । महावीर शक २४६६ भाद्रपदकृष्णपक्षाष्टमी ता० २१-६-४३ ।

विशेष इसमे केवल दस ही पर्व हैं । जबकि प्रारभ और अन्तिम जिनसेन के आदिपुराण की भांति ही है । इसमें कर्त्ता का नाम हस्तिमल्ल लिखा है ?

८ आदिपुराण वचनिका

Opening देखें, क्र० ५ ।

Closing . विश्वभर विश्वनाथ चक्रनाथ का पिता सो तुम भव्यजीव-निकू सातके अर्थिहोहु ।

Colophon : इत्यार्षे भगवद्गुणभद्राचार्य लक्षणमहापुराणे प्रथमतीर्थंकर प्रथमचक्रधरपुराणसप्तचत्वारिंसतम पर्व पूर्ण भया । ,,, इति श्री आदिनाथ पुराण भाषा सपूर्ण । शुभ भवतु । मिती चैत्रवदी ११ सवत् १९६१ मु० चन्द्रापुरी मध्ये ।

९. आदिनाथ पुराण

Opening : श्रीमत त्रिगन्नाथमादितीर्थंकर परम् ॥
फणीद्रेद्रनरेद्राच्यँ वदेनतगुणार्णवम् ॥१॥

Closing : अष्टाविंशाधिका शोपट् चत्वारिंशच्छनप्रमा ॥
अस्याद्यर्हच्चरित्रस्य स्यु. श्लोका पडिता वृधै ॥

Colophon : इति श्री वृषभनाथचरित्रे भट्टारक श्री सकलकीर्तिविरचिते वृषभनाथनिर्वाणगमनवर्णनो नाम विंश सर्ग ॥२०॥

मिति पौष शुद्ध १५ चद्रवासरे सवत् १९७० ॥ लिखितमिद पुस्तक मिश्रोपनामक गुलजारीलाल शर्म्मणा । शुभ भवतु । भिण्डाग्रनगरवासोस्ति ॥

श्लोक सख्या ५५०० प्रमाण, सवत् १७९७ की लिखी हुई प्रति से यह नकल की गई है ।

देखे—जि० र० को०, पृ० २८ ।
Catg. of skt & pkt. Ms , Page 624.

१०. आराधनाकथा कोश

Opening श्रीमद्भव्याब्जसद्भानून् लोकालोकप्रकाशकान् ।
आराधना कथाकोश वक्ष्ये नत्वा जिनेश्वरान् ॥

Closing . भव्याना वरशातिकान्तिविलसद्कीर्तिप्रमोद श्रिय ।
कुर्यात्सरचिता विशुद्धशुभदा श्रीनेमिदत्तेन वै ॥

Colophon इति श्री कथाकोशे भट्टारक श्रीमल्लिभूषणशिष्य ब्रह्मनेमिदत्तविरचिते श्रीजिनपूजादृष्टातकथा वर्णनाया चतुर्थपरिच्छेद समाप्त । १११/सवत् १८४८/शाके १७१३/समयनाम आश्विनमासे कृ (ष्ण) पक्षे षष्ठी रविवार लिखित प प्राकृह्मनाथ पटणामध्ये स्वस्थान काशी मध्ये ।

देखे— दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३-४ ।
प्र० जै० सा०, पृ० १०४-१०५ ।
रा० जै० भ० सू० III, पृ० २२५ ।

जि० र० को०, पृ० ३२।
Catg. of skt & pkt. Ms., page, 626.

११. आराधनाकथा कोश

Opening : देखें, क्र० १० ।

Closing : तेषां पादपयोजयुग्मकृपया श्री जैनसूत्रोचिता,
सम्यग्दर्शनबोधवृत्ततपसामाराधनाख्यकथा ॥

Colophon : इति श्री भट्टारक श्री मल्लिभूषणशिष्यब्रह्मनेमिदत्तविरचिते श्री जिनपादपूजाफल,आराधना वर्णनाया चतुर्थ परिच्छेद समाप्त । संवत् १८०७ वर्षे फागुन सुदी ६ बुधे लिखितम् श्री श्री शांतिजिनचैत्यालय मध्ये । शुभ भवतु । श्रीरस्तु । लेखकपाठकयो ।

१२. आराधनासार

Opening : श्री अरिहंत जिनेसुरजी इस ग्रंथ की आदि सुमंगलदाई ।
लोक अलोक प्रकाशकदेव समोसरन अधिक छविलहाई ॥

Closing : जैवन्तो जिनदेव मुनि, जैन जन सुखकंद ।
सो स्याद्वाद भजा प्रजा, पावो बहुआनन्द ॥

Colophon : इति श्री आराधनासार कथाकोश समाप्तम् । शुभम् ।

१३. भद्रबाहुचरित्र

Opening श्रीबोधभानुनानित्यं जनानां मानसं तमः ।
य सन्मतित्वमापन्न सन्मति सन्मति क्रियात् ॥

Closing : श्वेतांशुकमनोद्धूति मूढान् ज्ञापयितुं जनान् ।
व्यरीरचमिमं ग्रंथ, न स्व पांडित्यगर्वत ॥

Colophon : इतिश्री भद्रबाहुचरित्रे आचार्य श्री रत्ननंदिविरचिते श्वेताम्बरमतोत्पत्ति आपलिमतोत्पत्ति वर्णनो नाम चतुर्थोऽधिकार । इति भद्रबाहुचरित्र समाप्तम् । पंडितदयारामेन लिखापितम् ।

देखे—दि० जि० ग्र० र०, पृ० ४ ।
प्र० जै० सा०, पृ० १९३ ।
जि० र० को०, पृ० २९१ ।

१४. भद्रबाहुचरित्र

Opening : देखें—क्र० १३।

Closing : देखें—क्र० १३।

Colophon : इति श्री भद्रबाहुचरित्रे आचार्य्य श्री रत्ननंदिविरचिते श्वेतांवरमतोत्पत्ति आपलिमतोत्पत्तिवर्णनो नाम चतुर्थोऽधिकारः ॥ इति श्री भद्रबाहुचरित्र समाप्तम् ॥ लीलकण्ठदासेन लिखितम् ॥

१५. भगवत् पुराण

Opening :
श्रीमत परमेश्वर शिवकर लीलानिवासं शिवम्,
नोम्यानन्तशिव महोदयमहं लोकत्रयाच्चर्यस्पदम् ।
त योगीन्द्रनृपेन्द्रदेवनिकरै. सस्तूयमान सदा,
यद्दृष्टया भुवनत्रयेपि नितरा पूज्यो भवेन्मानुष' ॥

Closing :
खखवह्निशिखिश्लोकसख्या प्रोक्ता कवीशिना ।
श्रीमतोऽस्य पुराणस्य लेखयतु सुखार्थिना ॥

Colophon : इति श्री भगवत्पुराणे महाप्रासादोद्धारसदर्भे भ० श्री रत्नभूषण भ० श्री जयकीर्त्याम्नायप्रवेकनरपत्याचार्य शिष्यब्रह्ममगलाग्रज मंडलाचार्य श्री केशवसेनविरचिते श्रीऋषभनिर्वाणानदनाटक वर्णननामा द्वाविंशतितम. स्कन्धः ॥२२॥ सवत् १६६८ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे पूर्णमाश्या तिथौ भृगुवासरे श्री अवतिकापुर्या श्री महावीरचैत्यालये श्रीमत् काष्ठासघे नदीतटगच्छे विद्यागणे भ० श्रीरामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ० श्रीरत्नभूषणतत्पट्टे भ० श्रीजयकीर्ति तद्गुरुभ्रातामडलाचार्य श्री केशवसेन तच्छिष्याचार्य श्री विश्वकीर्ति अवर्ल ब्र० कनकसागर ब्र० दीपजी सिद्धान्ती ब्र० राजसागर ब्र० इन्द्रसागर ब्र० मनोहर बा० दाना बा० लक्ष्मी बा० कमलावती पं० चपायण प० योगराज पं० मायाराम प० बलभद्र इति सवाष्टक चिरं जीयात् । आचार्य श्री विश्वकीर्तिपठनार्थ जोसी उद्धवेन लिखित मिद पुर क चिरतेतु ।
सवत् १९८९ वर्षे आश्विनमासे कृष्णपक्षे अष्टम्या तिथौ श्री आरानगर्या श्री स्व० देवकुमारेण स्थापित श्री जैन सिद्धान्तभवने तत्पुत्रबाबू निर्मलकुमारस्य मन्त्रित्वे श्री प० के० भुजवलीशास्त्रिण अध्यक्षत्वे च सग्रहार्थमिद पुस्तक लिखितम् । शुभमस्तु ।

१६. भक्तामर कथा

Opening : प्रथम पीठि कर जोरि करि शुद्ध भावते शिर नाइयें ।

वसुसिद्धि अरु नव निधि वृद्धि सु रिद्धि जातैं पाइये ॥

Closing — कही विनोदीलाल शारदगुरु परतापतैं ।
पूरन भई रसाल अद्भुत कथा सुहावनी ॥

Colophon : इति श्री प्रथम जिनेन्द्रस्तवने श्री भक्तामर महाचरित्रे भाषा लालविनोदीकृत . कथा सम्पूर्णम् । सब मिलके चौपही दोहा ॥ ३७५६ ॥ सवत् ॥ १९३८ मिती सावनशुक्लपक्षे अष्टम्या मगलवासरे आरा नगरे सम्पूर्णम् ।

१७. भक्तामर कथा

Opening : देखे, क्र० १६ ।

Closing : सख्या परम रसाल देखहु याही ग्रन्थ की ।
कही विनोदीलाल पट् सहस्त्र द्वै सतक पुनि ॥

Colophon — श्री इति प्रथम जिनेन्द्र स्तवन श्री भक्तामर महाचरित्रे भाषा लाल विनोदीकृत चौपाई वध अडतालीसमी कथा सम्पूर्ण । सर्वकथा चौपाई छद श्लोक दोहा अरिल्ल (अडिल्ल) कु डलिया सोरठा काव्य ॥ ३७६० ॥ सपूर्णं शुभमस्तु । पौषमासे कृष्णपक्षे तिथौ ११ चद्रवासरे सवत् १९५४ । दस्तखत बलदेवदत्त पडित के ।

१८. भक्तामर चरित्र

Opening : देखे, क्र० १६ ।

Closing : देखे, क्र० १७ ।

Colophon — इति श्री प्रथम जिनेन्द्रस्तवने श्री भक्तामरचरित्रे भाषा लाल विनोदि कृत चौपाई बध अडतालीसमी कथा समाप्तम् । सर्वकथा चौपाई छद श्लोक दोहा अरिल्ल कु डलिया सोरठा काव्य । ३७६० । मिति श्रावणकृष्ण दशम्या रोज मगर (ल) वार सवत् १९५५ । श्लोक ५४०० ।

यह ग्रथ लिखावित बाबू श्रीयाशदास वास्ते लोचना बीबी के दान देने श्री मुनीद्रकीर्ति जी भट्टारक जी को देने को लिखा चुनीमाली ने ।

१९. चन्द्रप्रभचरित्र

Opening : वन्देऽहं सहजानन्दकन्दलीकन्दवन्धुरम् ।
चन्द्राङ्कं चन्द्रसकाश चन्द्रनाथ स्मराम्यहम् ॥ १ ॥

चन्द्रप्रभार्हद्धीरस्य काव्य व्याख्यायते मया ।
विश्वमन्वयरूपेण स्पष्टसस्कृतभाषया ॥ २ ॥

Closing : इति वीरनन्दिकृतावुदयाङ्के चन्द्रप्रभचरिते महाकाव्ये तद्व्याख्याने च विद्वन्मनोवल्लभाख्ये अष्टादश सर्ग समाप्त. ।

Colophon : शक वर्ष १७६१ नेत्रविकारि सवत्सरद पाघ शुद्ध १ . . श्रीमच्चारुकीर्ति पडिताचार्यवर्य स्वामियवर पादकमल भृगोपमानियाद वेलगुलदयि वर्गदवसिष्टगोत्रद विजय णैयनयी चन्द्रप्रभा काव्यदव्याख्यानद पुस्तक वरदु सपूर्णवायितु आचद्रार्कपर्यंत भद्र शुभ मगलम् ।

द्रष्टव्य–जि० र० को०, पृ० ११६ ।
Cat. of Skt & Pkt Ms., Page-640.
Cat. of Skt. Ms., P 302.

२०. चन्द्रप्रभ पुराण

Opening :
श्री चन्द्रप्रभु पदकमल, हाथ जोड सिर नाय ।
प्रणम शारदा मातफुन, गुरु के लागू पाय ॥

Closing :
यही उत्तम जगत माही चार सव अघहार ।
सरन इनही की सुहीरा, लाल भवदध तार ॥
हमरै यही मगलचार ॥

Colophon : इति श्री चद्रप्रभुपुराणे कड्कल्लासगाम वर्णनो नाम सत्तमो अधिकार पूर्णभया । इति श्री चद्रप्रभुपुराण भाषा सम्पूर्णम् ।
मिति जेठवदी १ सवत् १६७८ । शुभ भवत् ।

२१ चतुर्विशति जिन भवावलि

Opening :
जयादिब्रह्मा च महावलोभवत्,
लालिन्यदेहत्ववज्जघक ।
आर्यस्तत श्रीधरको विधिस्ततो,
च्युतेन्द्र नाभित्वहमिद्र कर्षभे ॥

Closing :
देवो विव्वकनदिदेवहरयो भूतारक केशरी,
धर्मातार्कमिहदेवकनको धोत पुरो लातवे ।
राजाभूद्वरिपेणकमृरहतश्चक्रीसुरेनदक,
स्वर्गे पोडशमेऽपिजिनवरोवीरावनारम्पता ॥

Colophon : इति चतुर्वि शति जिन भवावलि सपूर्णम् ।

२२. चारुदत्तचरित्र

Opening : चरण नमो महावीरके, हरन सर्व दुखदंद।
तरन जु तारण जगत को, करन महासुख कंद ॥

Closing : चारुदत्त सपति विभो अहिमिंदर पद कहि वरन।
इस भांति चरित वाचो सुनो सकल संग मंगलकरण ॥

Colophon : इति श्री चारुदत्त चरित्र भाषा भारामल्ल विरचित सम्पूर्णम्। लिखित गुलजारीलाल निवासी रुस्तमगढ के जैनी पद्मावती पुरवार रोज वृहस्पतिवार संवत् १९६० मिती चैत्र शुक्ल ५ पंचमी शुभम्।

२३ चेतनचरित्र

Opening : श्रीजिनचरण प्रणामकरि, भविक भगति उरआनि।
चेतन अरु कर्मको, कहौ चरित्र बखानि ॥

Closing : संवत सत्रहसैंबनीस मे, जेष्ठ सप्तमी आदि।
श्री गुरुवार सुहावनो, रचना कही अनादि ॥

Colophon : इति श्री चेतनकर्मचरित्र सम्पूर्णम्। मिति श्रावण सुदी १३ संवत् १९५८।

२४. चेतनचरित्र नाटक

Opening : पारस चरन सरोजरज, सरस सुधारससार।
जेहि सेवत जडता नसै, सज सुबुद्धि सुखकार ॥ १ ॥
पंच परमपद को नमो, सर्वसिद्धि दातार।
चेतन कर्मचरित्र को कहू कछू उनिवार ॥ २ ॥

Closing : आप विराजो महल आपने समर भूमि जाता हू,
जितने आये सबी को बन्दी करके लाता हूँ।
खुशी मनावे जिनवर ध्यावो समर जीति मैं आता हूँ,
मै भी आपका राजवीर खास वीर कहलाता हूँ।
अपने मालिक के दुश्मन को सूरवीर यदि पाता है,
तो मारे बिन निरख गज के [illegible] खाता है ॥

Colophon : इति चेतनचरित्र नाटक सं पूर्ण।

२५ दर्शनकथा

Opening : श्री रिषभनाथ जिन प्रणमौ तोहि।
अजर अमर पद दीजे मोहि ।।
अजित जिनेश्वर वदन करौ।
कर्मकलक छिनक मे हरौ ।।

Closing : दर्शन कथा पूरणभई, पढै सुनै सब कोय।
दुख दलिद्र (दरिद्र) नाशै सबै, तुरत महासुख होय ।।
।। ८१ ।।

Colophon : इति श्रीदर्शनकथा सम्पूर्ण। मिती अगहन वदी ३० सवत् १९९१ मुकाम चन्द्रापुरी ।

२६. दर्शनकथा

Opening : देखे क्र० २५ ।

Closing : दुख दरिद्र सब जाय नशाय।
जो यह कथा सुनो मनलाय ।।
पुत्रकलित्र वढै परिवार।
जो यह कथा सुनै नरनार ।।

Colopnon : इति दर्शन कथा सम्पूर्णम्।
यह ग्रन्थ सवत् १९४० मे मनोहरदास आरा के मंदिर मे चढाया गया था।

२७. दशलाक्षणी कथा

Opening : अर्हत भारती विद्यानंदिसद्गुरु-पंकजम्।
प्रणम्य विनयात् वक्ष्ये दशलाक्षणिक व्रतम् ।। १ ।।
राजगेहात्समागत्य वैभारवरभूधरम्।
श्रेणिको नमतिस्मोच्चै. वीर गभीरधीधरम् ।। २ ।।

Closing : जातः श्रीमतिमूल सघतिलके श्री कुंदकुदान्वये,
विद्यानदि गुरुर्गरिष्ठमहिमा भव्यात्मसवुद्धये।
तच्छिष्य श्रुतसागरेण रचित कल्याणकीर्त्याग्रहे,
शदेयाद्दशलाक्षणव्रतमिद भूयाच्चसत्सपदे ।।

Colophon : इति श्री दशलाक्षणिक कथा समाप्ता.।

२८. दशलाक्षणीकथा

Opening : रिषभनाथ प्रनमू सदा, गुरुगनधर के पाय ।
तीन भवन विख्यात है, सब प्राणी सुपदाय ॥

Closing : भूला चूका होय जो, लीजो सुकवि सुधार ।
मोह दोस दीजै नहीं, करो पु भव हितकार ॥

Colophon : इति दशलाक्षणी कथा समाप्तम् ।

२६. दान कथा

Opening : देव नमो अरिहंत सदा और सिद्ध समूहन को चितलाई ।
सूरज आचार को भजो और नमो उपध्याय के नित पाई ॥

Closing : दानकथा पूरन भई, पढ़ै सुनै नित सोई ।
दुख दालिद्र (दारिद्र) नाशै सबै, तुरत महासुख होई ॥

Colophon इति श्री दानकथा सपूर्ण । लिखित पंडित रामनाथ पुरोहित मुकाम चन्द्रापुरी ।

३०. धर्मशर्माभ्युदय

Opening : श्री नाभिसूनोश्चिरमंघ्रियुग्म नखेंदव. कौमुदमेधयतु
यत्रानमन्नाकिनरेंद्रचक्रचूडाम्मणंप्रतिबिंबमेण ॥ १ ॥

Closing : अजस्रमखिचिस्रैर्वाक् प्रसूनोपचारै
प्रवर्दि ह चक्राराधितोमोक्षलक्ष्मीम् ।
तदनुतदनुयायी प्रापपर्य तपूजोपचित
मुक्तराशि स्व पद नापिलोक ॥ १२५ ॥

Colophon : इति श्री महाकवि हरिचन्द्रविरचिते धर्मशर्माभ्युदये महाकाव्ये श्री धर्मनाथ निर्वाणगमनो नाम एकविंशतितम सर्ग ॥ २१ ॥ श्री संवत् १८८६ कार्तिक धवल पंचम्याम् । अग्रवाल आरानगरे वासलगोत्रे बाबू जीवनलाल जी तथा गुपाल चंद जी तेन इद शास्त्र लिखापित तथा उत्तमचदजी वा जो धनलाल जी अछेलाल तथा प्यारेलालजी इद शास्त्र लिखापितम् ।

द्रष्टव्य--(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६ ।
(२) प्र० जै० सा०, पृ० १६२ ।

(३) रा० सू०, पृ० २१० ।
(४) जि० र० को०, पृ०१६३ ।
(5) Catg. of Skt. & Pkt Ms. Page 656
(6) Cat. of Skt. Ms. P. 302

३१. धर्मशर्माभ्युदय सटीक

Opening : जयति जगति मोहध्वातविध्वसदीप',
स्फुरित कनकमूर्तिर्ध्यान लीनो जिनेन्द्र. ।
यदुपरि परिकीर्णस्कधदेशाजटाली,
विगलितसरलात' कज्जलाभाविभर्ति ॥

Closing : ...... "तदनुयायी तत्रैवाभ्यत्र सन् कृतनिर्वाणकल्याणम-होत्सवोपार्जितपुण्यराशिर्निज निज स्थान चतुर्णिकायामरसघातो जगाम ।

Colophon : इति श्री मन्मडलाचार्य श्री ललितकीर्तिशिष्य पंडित श्री यश.कीर्तिविरचितायां सदेहध्वातदीपिकाया ' धर्मशर्माभ्युदयटीकाया एक-विंशतिम सर्ग' । स्वस्तिश्री सवत् १६५२ वर्षे भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे चतुर्थ्यातिथौ गुरुवासरे अवावती वास्तव्ये राजाधिराज श्रीमानसिंह जी राज्ये श्री नेमिनाथचैत्यालये श्री मूलसघे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदान्वये भट्टारकश्रीचन्द्रकीर्ति तदाम्नाये खडेलवालान्वये गोधागोत्रे सा पचाइण भार्या पुहसिरि तत् पुत्रौ द्वौ प्रथम सा नूना द्वितीय सा. पूना नूना पु सा. वीरदास भार्या ल्हौकन चादणदे सिगारदे एताभिर्मिलित्वा धर्मशर्मा-भ्युदयकाव्यश्च टीका लिखाप्य आचार्य लक्ष्मी चन्द्रायप्रदत्तां ।

शुभमिति ज्येष्ठशुक्ला द्वितीया शुक्रवार विक्रम सम्वत् १९९० को यह पुस्तक लिखकर पूर्ण हुई, जिसे आरा निवासी स्वर्गीय बाबू देवकुमार द्वारा स्थापित श्री जैनसिद्धान्त भवन में सग्रह करने के लिए प० के० भुजवली जी शास्त्री अध्यक्ष के द्वारा बाबू निर्मल कुमार जी मत्री जैन सिद्धान्त भवन ने लिखवाया । रोशनलाल ने लिखा ।

३२. धन्यकुमार चरित्र

Opening : श्रीमन्त जिन नत्वा केवलज्ञानलोचनम् ।
वक्ष्ये धन्यकुमारस्य वृत्त भव्यानुरंजनम् ॥

Closing : ता दि. परीत्य नद्भवन्या त दृष्ट्वा केवले क्षणम् ।
फलत्कालनन्दत्न सिंहासनमधिस्थितम् ॥

Colophon : उपलब्ध नहीं ।

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० १८७ ।

३३. धन्यकुमार चरित्र

Opening : देखें, क्र० ३२ ।

Closing : इह निचोर (ड) इन ग्रन्थको यही धर्म को मूर (मूल) ।
सुद्धातम त्यों लाये मिटै कर्म अकूर ॥ ६८ ॥

Colophon : इति धनकुमार चरित्र सम्पूर्णम् । सवत् १६३२ चैत्र वदि ७ शुक्रवार शुभम् । श्लोक सख्या १२२४ ।

३४. धन्यकुमार चरित्र

Opening : देखें, क्र० ३२ ।

Closing : धन्यकुमार चरित्र यह पूरन भयो विशाल ।
(प) ढत सुनत सुख उपजै आनद मगलकार ॥

Colophon : इति धन्यकुमार चरित्र सम्पूर्णम् ।

३५ दुधारस द्वादसी कथा

Opening : वीनवे उग्रसेन की लाडली कर जोरिके नेमि के आगे खडी ।
तुम काहे पिया गिरनार बैठो हमसेती कहो कहा चूक परी ॥

Closing : कथाकोष मे जो कह्या, ताको देखि विचार ।
सेवक भाषा मनधरी, पढो भव्य चितधार ॥

Colophon : इति दुधारस द्वादशी कथा समाप्ता ।
लिख्यता प्रभूदास अग्रवाला । मिति वैशाख सुदी ६ शुक्रवार सवत् १६१८ ।

३६. गजसिंह गुणमाला चरित्र

Opening : श्री ऋषभादिक जिनवर नमूं, चौवीसो सुखकंद।
दरसण दुखदूरै हरै, तामैं नित आनंद॥

Closing : जो नरहनारी सीलधारी तासमनि अतिमंडणी।
शिवसुखकरणी दुखहरणी क्रमयसयलविहंमणी॥

Colophon : इति श्री गजसिंह गुणमालचरित्रे गुणमाल तपकरण उपधानवहन राजा-धर्मशास्त्रवारत्ना रचना श्रवण हुकमकुमर पदस्थापन राजागुणमाल दीक्षाग्रहणदेवलोक गमनाधिकार पष्ट खंड संपूर्ण। इति श्री तपगच्छमध्ये चंद्रशाखाया पंडित श्री मुक्तिचंद्र तत् शिष्य पंडित श्री खेमचन्द्रविरचिताया गुणमाल चौपई सम्पूर्ण। संवत् १७८८ वर्षे मिति चैत्र सुदि पंचमी दिने जतिकुसला लिपिकृतं श्री मालपुरामध्ये। श्रीरस्तु।

३७. गजसिंह गुणमाला चरित्र

Opening : देखे—क्र० ३६।

Closing : देखे—क्र० ३६।

Colophon इति श्री गजसिंह गुणमाला चरित्रे गुणमाला तपकरण तपउपधान वहण राजाधर्मशास्त्रचारभारचना श्रवण हुकम कुमार पट्टस्थापन राजा गुणमाला दीक्षाग्रहणदेवलोक गमनाधिकार पष्ट खंड समाप्त। मिति फागुन वदी १५ संवत् १९८४ श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा लिखित भुजवल प्रसाद जैन मालथौन जिला• सागर।

३८. हनुमान चरित्र

Opening : सद्बोधसिंधु चन्द्राय, सुव्रताय जिनेशिने।
सुव्रताय नमोनित्य, धर्मशर्मार्थ सिद्धये॥

Closing : पठकं पाठकस्त्वेन, वक्ता, श्रोता च भावक,
चिरं नंद्यादय ग्रथं तेन सार्द्धं युगावधि।
प्रमाणमस्य ग्रथस्य द्विसहस्त्रमितं बुधैः
श्लोकानामिहमंतव्य हनूमच्चरित्रे शुभे॥

Colophon इति श्री हनुमच्चरित्रे ब्रह्मजितविरचिते एकादश. सर्गः

पर्याप्त. (समाप्त) । शुभ भवतु ।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ४५६ ।
(३) आ० सू०, पृ० १६० ।
(४) रा० सू० III, पृ० २२१ ।
(५) रा० सू० II, पृ० २० एव ५३४ ।
(6) Catg. of Skt & Pkt Ms Page-714.

३६ हनुमान चरित्र

Opening : देखें, क्र० ३८ ।

Closing : देखे, क्र० ३८ ।

Colophon : इति श्री हनूमच्चरित्रे ब्रह्माजितविरचिते द्वादशसर्ग समाप्त. ॥

४०. हनुमान चरित्र

Opening : देखे, क्र० ३८ ।

Closing : देखे, क्र० ३८ ।

Colophon : इति श्री हनुमच्चरित्रे ब्रह्माजितविरचिते एकादश सर्ग समाप्त ॥ १२ ॥ हस्ताक्षर वटुक प्रसाद ॥ मुकाम जैन सिद्धान्त भवन–आरा ॥ सवत् १९७८ ॥

४१. हनुमान चरित्र

Opening : देखे, क्र० ३८ ।

Closing : देखे, क्र० ३८ ।

Colophon : इति श्री हनुमानचरित्रे ब्रह्माजितविरचिते द्वादसे सर्ग समाप्त । मिती फागुनवदी ३ सवत् १९८४ लिख्यत भुजवलप्रसाद जैनी मुकाम मालथौन जिला सागर निवासी ने ।

४२. हनुमान चरित्र

Opening : देखे, क्र० ३८ ।

Closing : जिनवर एक वचन मो देहु । कुगुरु कुशास्त्र निवारहु गेहु ॥
होहि सदा सन्यासह मरन । भव भव धर्म जिनेश्वर सरन ॥

Colophon : इति श्री हनुमतचरित्रे आचार्य श्री अनतकीर्तिविरचिते हनुमन्निर्वाणगमनो नाम पचमो परिच्छेद । इति श्री हनुमच्चरित्र-सम्पूर्णम् । संवत् १६०१ का शाके १७६६ वा जेठ मासे कृष्णपक्षे तिथौ १३ बुधवासरे सवाई राजा रामसिंह जी को राज । लिखत महात्मा जोशीपन्नालाल लिखी सवाई जयपुर म (में) । श्रीरस्तु ।

४३ हनुमान चरित्र

Opening : देखे, क्र० ३८ ।

Closing : देखे, क्र० ४२ ।

Colophon : इति श्री हनुमानचरित्र आचार्य श्री अनतकीर्तिविरचिते हनुमन्निर्वाणगमनोनाम पचमो परिच्छेद । इति हनुमानचरित्र सम्पूर्णम् । श्रावणमासे शुक्लपक्षे तिथौ ६ रविवासरे सवत् १६५५ ।

४४. हरिवंश पुराण

Opening : सुरवइसय वदहु तिजणदहु, मिरि अरिट्ठणेमिहु चरण ।
पणविवितहु वसहु कइजयसरहु भणमि सवणमणसुदरयण ॥

Closing : चिरुणदउ सच्छो जामणहच्छो रविससिगणहणरकत्त गणु ।
कइयणणिरुसोहहु दोसु णिरोहहु सुणउपय- भव्वयणु ॥

Colophon : इय हरिवसपुराणे मणवछियफलेण सुपहाणे सिरिपडिय रइधूवणिए सिरिमहाभव्वसाधु लाहासुय संघाहिवनोणाणुमणिए सिरि अरिट्ठणेमि णिव्वाणगमण तहेव दायारव सुहराण णाम चउदहमो सधी परिछेऊ सम्मत्तो सधि ॥ १४ ॥

अथसवत्सरेऽस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्यगताब्द सवत् १६५८ वर्षे वैशाखशुदि पचमी आदित्यवासरे , भगउतीदासतेमेद, हरिवस शास्त्रलिखापितम्; ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्त लिखापितम् । इति हरि-पुराणरयधूकृत समाप्तम् । मिति, वैशाखशुक्ल १२ सवत् १८८७ ह० प० शिवदयाल चौवे चन्देरी वालो के ।

४५ हरिवंश पुराण

Opening : पयडिय जय हंसहो कुणय विहसहो ।
भविय कमल सरहसहो पणविव जिणहसहो ॥

Closing : जामहि णट्ठ मायरु चडु दिवायरु, ता णदउ ठिवढाहु कुलु ।
जेंवि राहुहि चरियउ कुरुवस हुनहियउ, काराविउ हय पावमालु ॥

Colophon : इय हरिवनपुराणे कुरुवसाहिट्ठए विवुहु चिताणुरजणे सिरि गुणहिनि नीम मुणि जसकित्ति विरइये साहु ठिवढा णाम किय णेमणाह जुधिठर भीमज्जुण णिव्वाणगमण णिकुल सहदेव सव्वट्ठसि द्वि गमण वण्णणो णाम तेरहमो सग्गो समत्तो । सधि १३ । इति हरिवश पुराण समाप्त । चैत्र सुदी १४ सवत् ८५ ? ।

४६. हरिवंश पुराण

Opening : सिद्ध सम्पूर्ण ... प्रतिपादनम् ॥

Closing : रक्षा कुर्वन्तु सघस्य जिनशासनदेवता ।
पापयनोच्छिन्नं नाम भव्यमज्ञानवत्सला ॥

Colophon : इति श्री हरिवशपुराणे ब्रह्म श्री जिनदास विरचिते नेमिनिर्वाण गमन वर्णनो नाम चत्वारिंशतम सर्ग । इति हरिवश पुराण समाप्तम् ।

यह पुस्तक प० पन्नालाल जी (उदासीन आश्रम तुकोगज इदौर) के मार्फत लिखाई गई । मिति माघकृष्ण २ स० १६८८ द० प० शिवदयाल चौवे चन्देरी वालो के ।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ४६० ।
(२) आ० सू०, पृ० १६१ ।
(३) जैन ग्रन्थ प्र० स, I, पृ० १०० ।
(४) प्रश० स० II, पृ० ७० ।
(५) रा० सू० II, पृ० २१८ ।
(६) रा० सू० III, पृ० २२४ ।
(7) Catg. of Skt. & Pkt Ms., P 715

४७. हरिवश पुराण

Opening : सिद्ध ध्रौव्यव्ययोत्पादलक्षण द्रव्यसाधनम् ।
जैन द्रव्याद्यपेक्षात साधनाद्यथशासनम् ॥ १ ॥

Closing : आशीर्वाद ॥ मागल्यम् ... ॥

Colophon : अब्दसवत्सरेऽस्मिन् श्रीविक्रमादित्यमहीभृतोगुरुद्वा ।

संवत् १८६४ । तत्र शाके १७२९ । वैसाखमासे कृष्णपक्षे द्वितीया भृगुवासरे । लिखितं भोपतिराम तिवारी । पोथीलिखी मैनपुरी मोहौकमगजमध्य. ।।

यावज्जिनस्य धर्मोऽयं लोकोस्थितिदयापरः ।
यावत्सुरनदीवाहस्तावन्न दतु पुस्तकम् ।।
यादृशं पुस्तकं ... दीयते ।।

द्रष्टव्य—(१) जि० र० को०, पृ० ४६० ।
(२) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३ ।

४८. हरिवंश पुराण

Opening : देखे, क्र० ४७ ।

Closing : सेवक नरपति कौ सही, नाम सुदौलतराम ।
तानै इह भाषा करी, जपकरि जिनवर नाम ।।
श्रीहरिवंश पुराण की, भाषा सुनऊ सुजान ।
सकलग्रंथ संख्या भई, सहस एकीस प्रमाण ।।

Colophon : इति श्रीहरिवंश पुराण भाषा वचनिका संपूर्णम् । श्लोक अनुष्टुप संख्या एकीस हजार । २१,००० । संवत् १८८४ मासोत्तमे मासे चैत्रमासे शुक्ले पक्षे सप्तम्यां भौमवासरे । पुस्तकमिदं रघुनाथ शर्मा लेखि । पट्टनपुरमध्ये गायघाट क्षत्री महलमध्ये निवास शुभमस्तु कल्याणकमस्तु । सिद्धिरस्तु मंगलमस्तु पुस्तक लिखायित बाबू जिनवरदास जी ने ।

४९. हरिवंश पुराण

Opening : देखे, क्र० ४७ ।

Closing : तवहिदेव तासौ फिरि जोई ।
तो सौ भूरि ' ।

Colophon :- अनुपलब्ध ।

५०. जम्बूस्वामी चरित्र (११ सर्ग)

Opening : श्रीवर्धमानतीर्थेशं वंदे मुक्तिवधूवरं ।
कारुण्यजलधिं देवं देवाधिपनमस्कृतम् ।।

Closing : द्वाविंशतिप्रमाणानि शतान्यत्रचरित्रके ।
त्रिंशद्युतानिश्लोकाना शुभानां संति निश्चितम् ॥

Colophon : इति श्री जम्बूस्वामीचरित्रे ब्रह्मश्रीजिनदासविरचिते विद्युच्चरमहामुनि सर्वार्थसिद्धिगमन नामैकादशा सर्ग ।
यावल्लवण समुद्रो यावन्नक्षत्रमडितो मेरु ।
यावद्भास्करचन्द्रो यन्नावदय पुस्तको जयतु ॥
सवत् १६८८ की प्रति से यह नक़ल की गई है ।
मिति ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्या १४ शनिवासरे सवत् १६७१ लिखितमिद पुस्तक मिश्रोनामक गुलजारीलालशर्मणा भिडाग्रनगरवास्तोऽरित रि० ग्वालियर ।

यादृश पुस्तक दृष्ट्वा तादृश लिख्यते मया ।
यदि शुद्धमशुद्ध वा ममदोषो न दीयते ॥

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३ ।
(२) प्र० जै० सा०, पृ० १२७ ।
(३) आ० सू०, पृ० ५६ ।
(४) रा० सू० I, पृ० ६८, ६६, १३१, २१० ।
(५) जि० र० को०, पृ० १३२ ।

५१. जम्बूस्वामी चरित्र

Opening : देखे, क्र० ५० ।

Closing : देखे, क्र० ५० ।

Colophon : इत्यार्षे श्री जंबूस्वामीचरित्रे भट्टारक श्रीसकलकीर्तिविरचिते विद्युच्चरमहामुनि सर्वार्थसिद्धिगमनो नामैकादश सर्ग ॥ ११ ॥
श्री संवत् १६६४ वर्षे आसोज सुदि १५ शुक्रे श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री [illegible]भूषणगुरुपदेशात श्रीलोडा वास्तव्यकुवडज्ञातीय सा, की का [illegible]नकादेताया सुत सा. लाडका भार्या ललतादेताया सुत[illegible] भार्यादाडमाद भ्रातृमहीश्रा भ्रातृगणे शयति, स्वज्ञानावर्णीकर्मक्षयार्थ वाङ्मीयवनाय इद लिखाप्य दत्तम् । लेखकपाठकयो शुभ भवतु । साहरामाकेन लिखितमिदं वर्द्धताजिनशासन श्री । श्री जंबूस्वामिचरित्र भट्टारक श्री सकलकीर्तिकृत । भ. श्री विनचन्द्रस्य पुस्तकमिद ।

५२. जम्बूस्वामी चरित्र

Opening : उद्दीपीकृतपरमानदाद्यात्मचतुष्टय च वृद्धया ।
निगदति यस्य गर्भाद्युत्सवमिहत स्तुवे वीरम् ॥

Closing : जवूस्वामीजिनाधीशो भूयान्मगलसिद्धये ।
भवता भुवि भो भव्या श्री वीरातिमकेवली ॥

Colophon : इति श्री जवूस्वामिचरित्रे भगवच्छ्रीपश्चिमतीर्थंकरोपदेशानुसरित स्याद्वादानवद्यगद्यपद्यविद्याविशारद पडित राजमल्लविरचिते साधुपासात्मजसाधुटोडरसमभ्यर्थिते मुनि श्री विद्युच्चर सर्वार्थसिद्धिगमनवर्णनो नाम त्रयोदशम पर्व ।

शब्दार्थैरर्थवच्छास्त्र यथेद याति पूर्णताम् ।
तथा कल्याणमालाभि वर्द्धता साधु टोडर ॥

अथ सवतसरेऽस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्यगताब्द सवत् १६३२ वर्षे चैत्रसुदी ८ वासरे परमश्रुश्रावकसाधु श्री टोडर जवूस्वामिचरित्र कारापित लिखापित च कर्मक्षयनिमित्तम् । लिखित गगादासेन ।

यह प्रतिलिपि स्व०, बा० देवकुमार जी द्वारा स्थापित श्री जैनसिद्धान्त भवन आरा, मे सग्रहार्थ श्री बाबू निर्मलकुमार जी के मन्त्रित्व काल मे श्री प० के भुजवली शास्त्री की अध्यक्षता मे बा० पन्नालाल जी के द्वारा देहली से उपरोक्त प्रति मगाकर तैयार की गई । शुभ मिति अषाढ कृष्णा १२ वीर स० २४६१ वि० स० १९९२ । हस्ताक्षर रोशनलाल लेखक ।

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० १३२ ।

५३ जम्बूस्वामी कथा

Opening : प्रथम पच परमेष्ठी नाऊँ ।
दूज्यौ सरस्वती नमू पाऊँ ॥
तीजै गुरु चरने अनुसरो ।
होय सिद्धि कवि तु विस्तरो ॥

Closing : तिन यह कथा करी मनलाई ।
वाच्य हर्ष उपजै सुखदाई ॥
पढै सुनै जो मनुवै कोई ।
मनवाछित फल पावै सोई ॥

Colophon : इति श्री जवूस्वामी की कथा सपूर्ण। मिति श्रावणवदी ३ वार रविवार सन् १८८३ साल। दस्तखत दुरगाप्रसाद जैनी आरे।

५४. जयकुमारचरित्र (१३ सर्ग)

Closing : श्रीमत त्रिजगन्नाथ वृषभ नृसुरार्च्चितम्।
भवभीतिनि हतार वन्दे नित्य शिवाप्तये ॥ १ ॥

Opening सकलकीर्तिकृत पुरदेवज समवलोक्य पुराणमिय कृतिः।
जयमुनेर्गुणपालसुतस्य च बृहदल जिनसेनकृत कृता ॥ १०१ ॥

Colophon : इति श्री जयाके जयनाम्निपुराणे भट्टारक श्री पद्मनदि गुरुपदे ब्रह्म कामराजविरचिते पडित जीवराजसहाय्या त्रयोदशमः सर्ग। इति श्री जयकुमार चरित्र समाप्त। गुरुप्रसादात सपूर्ण जातम्। सवत् १२४२ मासोत्तममासे आसौजमासे कृष्णपक्षे १५ सोमवासरे नगरवियानामध्ये पाडे हेमराजेन-लिखितमस्ति। स्वपठनार्थं श्रीरस्तु- कल्याणमस्तु। वाचै पढै जे पडितजी नै श्री जिनाय नम म्हाकी जीनै वै। आयुर्भवतु श्री। मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुदकुदाचार्यान्वये नद्याम्नाये श्री भट्टारक विश्वभूषणदेवा तत्पट्टे श्रीभट्टारकेदुश्रीभट्टारक जिनेन्द्रभूषणदेवा तत्पट्टे भट्टारकमहेन्द्रभूषणदेवास्तैरिह स्वस्थाध्यायनार्थं शुभ भूयात् गोपा ? नगरे जयकुमारचरितस्येद पुस्तकम्।

देखे—जि० र० को०, पृ० १३२।
Catg. of Skt & Pkt. Ms., P 643

५५. जिनदत्तचरित्र वचनिका

Opening : पचपरम गुरुकू प्रणमि पूजो शारदमाय।
भाषा जिनदत्त चरित की करू स्वपर हितदाय ॥

Closing : पन्नालाल सु चौधरी रची वचनिका सार।
जिनदत्त के जु चरित्र की निजमति के अनुसार ॥

Colophon : सम्पूर्णम्

५६. जिनेन्द्रमाहात्म्य पुराण

Opening : श्री मत्सिद्धपदाबुजद्वयरजः शुद्धाजनोन्मीलित-,
प्रोद्यल्लोचनतो विलोक्य निखिल जैनस्मृतेर्निश्चयम् ।
विद्वत्केसवनदिनाममुनिना प्रोक्ता यथा वै तथा,
निर्मास्यामि समस्तकल्मषहरी पौण्याश्रवी सत्कथाम् ॥

Closing : वाछा श्री मज्जिनेन्द्रादिभूषणस्य च या हृदि ।
सा जिनेन्द्रप्रसादेन सफली भवताध्रुवम् ॥

Colophon : इति मुमुक्षुसिद्धान्तचक्रवर्त्ति' श्री कुन्दकुन्दाचार्यानुक्रमेण श्री भट्टारकविश्वभूषण पट्टा भरण श्री ब्रह्महर्षसागरात्मज श्री भट्टारक-जिनेन्द्रभूपणविरचितम् श्री जिनेन्द्रपुराण समाप्तमिद शुभ भूयात् । सवत् १८५२ कातिकशुक्लप्रतिपदाया गुरुवासरे पुराणसमाप्ति ।

श्री मूलसघे बलात्कारगणे भट्टारकमहेन्द्रभूषणेन इय पुस्तिका लिखापिता दत्ता स्वज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थम् ।

यह पुस्तक जैन सिद्धान्त भवन मे लिखी गई । शुभमिति पौष कृष्ण सप्तमी ७ मगलवार श्री वीर निर्वाण स० २४६२ विक्रम सवत् १९९२ । ह० रोशनलाल जैन लेखक ।

विशेष—५५ कथाएँ (चरित्र) है ।

देखे—जि० र० को०, पृ० १३९ ।

५७. जिनमुखावलोकन कथा

Opening : चतुर्विशतितीर्थेशान् धर्मसाम्राज्यवर्तकान् ।
नत्वा वक्ष्ये व्रत श्री जिनेद्रमुखावलोकनम ॥

Closing : 'मौनव्रतसत्फलार्थकथकान दत्वय भूतले ॥

Colophon : इति मौनव्रत कथा समाप्तम् । लिखित पडित परमानदेन रात्रौ गुरौ एकादश्या १९३२ सवत्सरे दिल्ली नगरे आयामल मदिरे शुभ भूयात् ।

द्रष्टव्य :—जि० र० को०, पृ० १३६ ।

५८. जीवन्धर चरित्र

Opening : जयवतो वरतो सदा प्रथम रिषभ अवतार ।
धर्मप्रवर्तन तिन कियो जुग की आदि मझार ॥

Closing : सवत् अष्टादश शत जान। अधिक और पैंतीस प्रमान।
कातिक सुदि नौमी गुरुवार। ग्रन्थ समापित कीनो सार ॥

Colophon : इति श्री जीवधर चरित्र आचार्य श्री शुभचन्द्रप्रणीतानुसारेण नथमल विलालाकृत भाषाया जीवधरमुनिमोक्षगमन वर्णनो नाम त्रयोदशसर्ग. सम्पूर्णम्। इति जीवन्धर चरित्र सम्पूर्णम्। मिती फूस (पौष) सुदी ४ सवत् १९६१ मुक्काम चद्रापुरी।

५९. कथावली

Opening : श्री शारदास्पदीभूत-पादद्वितयपकजम्।
नत्वार्हंत प्रवक्ष्यामि व्रत मुकुटसप्तमी ॥

Closing : मुनिराहे निभोश्रेष्ठि ॥

द्रष्टव्य —जि० र० को०, पृ० ६६।

६०. कुदेव चरित्र

Opening : सो हे भव्य तू सुणि। सो देखौ जगत विषै
भी यह न्याय हैं।

Closing : तौ एक सर्वज्ञ वीतराग जो जिनेश्वर देवता का वचन अगीकारकरि अर ताका वचनांकैअनुसारि देवगुरु धर्म का श्रद्धानकरि।

Colophon : इति कुदेव चारित्र वर्णन सम्पूर्णम्। मिति कार्तिक सुदी २ सन् १२७९ साल दसव्रत दुरगाप्रसाद जैनी आरा मध्ये लिखा, जो देखा सो लिखा।

भूलचूक देखके, बुधजन लियो सुधार।
हमे दोष मत दीजियो, क्षमा करो उर ज्ञान ॥

६१/१. मदनपराजय्

Opening : यदमलपदपद्म श्री जिनेशस्य नित्यम्,
शतमखशतसेव्य पन्नगर्भादिवद्यम्।
दुरितवनकुठार ध्वस्तमोहाधकार,
सदखिलसुखहेतु त्रि. प्रकारैर्नमामि ॥ १ ॥

Closing : अज्ञानेन धिया विना किल जिनस्तोत्रं मयायत्कृतम्,
किं वा शुद्धमशुद्धमस्ति सकल नैव हि जानाम्यहम् ।
तत्सर्वंमुनिपुङ्गवा सुकवय. कुर्वन्तु सर्वे क्षमा,
ससोध्या' ···· कथामिमा स्वसमये विस्तारयन्तु ध्रुवम् ॥

Colophon : इति मदनपराजय समाप्तम, ।

६१/२. महिपाल चरित्र

Opening : यस्याशदेशे शत् कुंतलाली, दूर्वांकुरालीव विभाति नीला ।
कल्याणलक्ष्मी वसति सदिस्यादादीश्वरो मगलमालिका व ॥

Closing : श्रीरत्ननदिगुरुपादसरोरुहालिश्चारित्र भूषणकविर्यंदिदं ततान ।
तस्मिन् महीपचरिते भववर्णनाख्य सर्गं समाप्तिमगतमत्किल पचमोऽयम् ॥

Colophon : इति श्री भट्टारक रत्ननदिसूरि शिष्यमहाकविवर श्री चारित्र-भूषणमुनि विरचिते श्री महीपालचरित्रे पचमो सर्ग । इति श्री मही-पालचरित्र काव्य सम्पूर्णम् । अथ ग्रथ श्लोक सख्या ६६५ सवत्सरे १८७० का ज्येष्ठमासे कृष्ण पक्षे तिथौ ४ बुधवासरे लिप्यकृत महात्मा शभुराम ।

उक्त लिपि देहली से मगवाकर श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा मे सग्रह के लिए श्री प० के० भुजवली जी शास्त्री की अध्यक्षता मे लिखी शुभमिति चैत्रकृष्णा ११ बुधवार विक्रम स० १९९३ वीर स० २४६३ । हस्ताक्षर रोशनलाल,जैन ।

द्रष्टव्य— जि० र० को०, पृ० ३०८ ।

Catg. of Skt. & pkt Ms., P. 680.

६२. महिपाल चरित्र

Opening : श्रीमत वीर जिनेशर, युग नमकर धरि भाल ।
महीपाल नृप चरित्र की भाषा करो रसाल ॥

Closing : जिनप्रतिमा जिनभवन जिन पचकल्याणक थान ।
आदि मध्य अवसान मैं मगलकरी महान ॥

Colophon : इति श्री महीपाल चरित्र सम्पूर्णम् ।

६३. मैथिलीकल्याण नाटक

Opening : य· प्रस्तोता त्रिलोक्या प्रतिहतविपदां समंताना कृतीना,
य च स्तोता स्वय च स्तुतिशतपदवी वाग्वधूवल्लभानाम् ।
कन्प कल्याणभागिश्रियमतुपरमामाप्तवानाप्तरूप,
सोय भद्र विधेयाद्दशरथतनय साधुवो रामभद्र ॥

Closing : एतन्नाटकरत्नमुत्तमगुण विभ्राजते मैथिली,
कल्याण भृशमद्वितीयमपि सत्तेषु द्वितीय मतम् ।
सर्वत्रप्रथिता प्रबधमणय· श्री सूक्तिरत्नाकर,
प्रख्यातापरनामधेय महत श्री हस्तिमल्लस्य ये ॥

Colophon · समाप्तोऽय मैथिली कल्याणनाटकम् इति शुभम् । सवत् १६७२ विक्रमे आषाढ शुक्ला १४ रवौ श्री ऋषभादितीर्थंकरा श्रेयस्करा सन्तु ।

आषाढ शुक्लपक्षे हि चतुर्दश्या रवौ लिखे- ।
न्नेत्रर्षाङ्केन्दु वर्षे च सीतारामकरेण सत् ॥

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० ३१५ ।

६४. मेघेश्वर चरित्र

Opening सिरिरिसह जिणेन्दहु ग्रुवसयइन्दहु भवतम चदहु गणहरहु ।
पयजुयलुण वेंदि्पणु चित्तिगि हेप्पिणु चरिउ भणमि मेहेसरहु ॥

Closing : पुणु सुउतुहु तीयउ अइवरिणीयउ जिणसासण रहधूर धरणु ।
रइयति रयणोवमु पालियकुलकमु दुत्थिहजणदुह भरहरणु ॥१३॥

Colophon · इय मेहेसर चरिए । आइपुणस्स सुत्त अणुसरिए सिरिपडिय रइधूविरइय ॥ सिरिमहाभव्वखेमसीह साहुणामणाम किए ॥

अथ सवत्सरेऽस्मिन् श्री नृप विक्रमादित्य गताब्द १६०६ वर्षे मार्गसिर शुदि दुतिया श्री कुरूजागलदेशे श्री रुहितगढ साहि-राज्य प्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासघे माथुरगच्छे पुष्करगणे भट्टारक श्री कुमारसेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रतापसेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री महासेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री विजयसेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री नयसेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री आससेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री अनन्तकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री कुमारकीतिदेवा तत्पट्टे

अनेक विद्यानिधान भट्टारक श्री हेमचददेवा तत्पट्टे अनेकविद्या हरी-तरगु भट्टारक श्री पद्मनदिदेवा ॥

शुक्रवार वदी ८ स० १९९६ वीर स० २४६५ ॥ ई० १९३९ को समाप्त हुआ । लेखक राजधरलाल जैन ॥

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० ३१५.

६५. नन्दीश्वर व्रत कथा

Opening : प्रणम्य परमानद जगदानददायकम् ॥
सिद्धचक कथा वक्ष्ये भव्याना शुभहेतवे ॥ १ ॥

Closing : श्रीपद्मनदीमुनिराजपट्टे शुभोपदेशीशुभचन्द्रदेव ।
श्री सिद्धचक्रस्य कथावतारं चकार भव्यावुजभानुमाली ॥
सम्यग्दृष्टिविशुद्धात्मा जिनधर्मे च वत्सल ॥
जालाक कारयामास कथा कल्याणकारिणी ॥

Colophon : इति नन्दीश्वर अष्टान्हिका कथा समाप्ता: ॥

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० २००, ४३६

६६. नेमिचन्द्रिका

Opening आदि चरन हिरदै धरौ, अजित चरन चितलाय ।
सभवसुरत नगायकैं, अभिनदन मनलाय ॥

Closing . मारग जाने मोक्ष कौ, जिनवर भक्त सुवास ।
कहू अधिक कहू हीन है, सो सव लीजे सोर ॥

Colophon : इति श्री नेमिचन्द्रिका सपूर्णम् । मिती जेष्ठवदी ७ सवत् १९६२ । लिखित प० चौवे छुटीलालकी ।

६७. नेमिनाथचन्द्रिका

Opening · प्रथम नमो जिनचद्रपद नमत होत आनद ।
शिवसुखदायकं सकल हित, करत जगत जगफद ॥

Closing · एक सहस अरु अठशतक, वरष असिति और ।
याही सवत मो करी, पूरन इह गुणगौर ॥

Colophon · इति श्री नेमनाथ जीकी चन्द्रिका मुन्नालालकृत सम्पूर्णम् । सवत् १८९५ मासोत्तमे मासे माघेमासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्या चद्रवासरे

पुस्तकमिदं रघुनाथ द्विजलेखित पट्टनपुरे आलमगज निवसति जिन-प्रसादात् मगलमस्तु ।

६८. नेमिनाथचरित्र

Opening : प्राणित्राणप्रवणंहृदयो वधुवर्गं समग्रम्,
हित्वा भोगान्सहपरिजनैरुग्रसेनात्मजा च ।
श्रीमान्नेमिर्विपयविमुखो मोक्षकामश्चकार,
स्निग्धच्छायातरुपु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु ॥

Closing : श्री नेमिनाथ का निर्मल चरित्र रचा जो कि राजीमती के दुःख से आर्द्र है ।

Colophon इति श्री विक्रमकवि विरचित नेमिचरित हिन्दी भाषानुवाद सम्पूर्णम् ।

६९. नेमिनाथपुराण

Opening श्री मन्नेमि जिन नत्वा लोकालोकप्रकाशकम् ।
तत्पुराणमह वक्ष्ये भव्याना सौख्यदायकम् ॥

Closing . शांति कान्ति सु ीतिं सकलसुखयुता सपदामायुरुच्चैं,
सौभाग्य सावुमग सुरपति महित सारजैनेन्द्रधर्मम् ।
विद्या गोत्र पवित्र सुजन जन आदितार्ति,
श्री नेमे सुत्पुराण दिशतु शिवपद वोत्र ॥

Colophon इति श्री त्रिभुवनैक चूडामणि श्री नेमिजिनपुराणे भट्टारक श्री मल्लिभूषण शिष्याचार्य श्री सिंहनंदी नामांकिते ब्रह्मनेमिदत्त विरचिते श्री नेमितीर्थंकरपरमदेव पचम कल्याणक व्यावर्णनो नाम पद्मनाम नवम वलदेव कृष्णनाम नवमनारायण जरासंध नामप्रति-नारायण चरित्र व्यावर्णनो नाम पोडशोऽधिकार समाप्त ।

श्री शुभमिति आश्विनकृष्ण पचमी गुरुवार वीर स० २४६० विक्रम स० १९९० को यह पुस्तक लिखकर पूर्ण भई । हस्ताक्षर रोशनलाल लेखक । आरा जैनसिद्धान्त भवन मे प्रतिलिपि की गई ।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २१८ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १६६ ।
(४) आ० सू०, पृ० ८४ ।

(५) जै० ग्र० प्र० स०, पृ० १५७ ।

(6) Cntg. of Skt. & pkt. Ms. P. 661.

७०. नेमिपुराण

Opening : नमामि त्रिजगदीशं केवलज्ञानभास्करं ।
वन्देऽर्हन्तं भव्यानां ज्ञानगुणाकरम् ॥ १२ ॥

Closing : देखें-क्र० ६६ ।

Colophon : इत्यार्षे चूडामणि श्री नेमिजिनपुराणे भट्टारक श्री मल्लिभूषण शिष्याचार्य श्री सिंहनंदि नामांकिते ब्रह्मनेमिदत्त विरचिते श्री नेमितीर्थंकरपरमदेव पंचमहाकल्याणक व्यावर्णनो नाम पद्मनाम नवमबलदेव कृष्णनाम नवम-नारायण जरासंघ प्रतिनारायण-निर्वाणव्यावर्णनो नाम षोडशोऽधिकारः समाप्तः ।

७१. नेमिपुराण

Opening : देखें-क्र० ६६ ।

Closing : ततो भ्रातृवियोगेन शोकशोकाभिविह्वलः,
परब्रह्मणहारेण समारे समरंगम् ।
तस्मान् श्रावकोऽसौ नित्यम् मनोवाक्कायसंगतः,
स्तोयत्यागो दृढं भव्यैः पालनीयः सुखप्रदः ॥

विशेष — हस्तलिपि मे विभिन्नता है ।

७२. नेमिपुराण

Opening : नेमिचद जिनराज के चरण कमल युगध्याय ।
भाषू नेमपुराण की भाषा सुगम बनाय ॥

Closing : मगल श्री अरहत सिद्ध साधु जिनधर्म पुन ।
ये ही लोक महत परम सरण जगजीव को ॥

Colophon : ऐसे भट्टारक श्री मल्लिभूषण के शिष्य आचार्य श्री सिंहनन्दि के नामकरि चिन्हित ब्रह्मनेमिदत्त करि विरचित जो तीनभुवन का चूडामणि समान नेमिजिन ताके पुराण की भाषा वचनिका सपूर्ण । मिती वैशाख वदी १२ सवत् १९६२ मु० चदेरी मध्ये शुभ भवतु ।

७३. नेमिनाथरिस्ता

Opening : छोडे ससार, नेहे तपको जोडे ।
छोडे सब तात मात बात वीचारी ।
छोडे परिवार सबै राजुल नारी ॥

Closing . अब साई मेरा नेम है।
Colophon . इति रेषता सम्पूर्ण ।

७४. नेमिनिर्वाणकाव्य (१५ सर्ग)

Opening : श्री नाभिसूनो पदपद्मयुग्मनखा सुखानिप्रथयन्तु ते व·।
समुन्नमन्नाकिशिर. किरीटसघट्टविश्रस्तमणीयित यै. ॥
Closing : अहिच्छत्रपुरोत्पन्नप्राग्वाटकुलशालिन. ।
छाहस्य सुतश्चक्रे प्रबधवाग्भट कविः ॥
Colophon : इति श्री नेमिनिर्वाणाभिधानो नाम पचदश सर्ग समाप्त ।
सवत् १७२७ वर्षे पौषमासे कृष्णपक्षे अष्टमी शुक्रवासरे ।

द्रष्टव्य–(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २१८ ।
(३) जैन ग्रन्थ प्र० स, I, पृ० ८ ।
(४) रा० सू० II, पृ० २४८ ।
(५) प्र० जै० सा०, पृ० १६६ ।
(6) Catg. of Skt. & Pkt. Ms , Page-661.
(7) Catg. of Skt. Ms., P 302.

७५. नेमिनिर्वाणकाव्य पंजिका

Opening : धृत्वा नेमीश्वर चित्ते लब्धानतचतुष्टयम् ।
कुर्वेह नेमिणिर्वाणमहाकाव्यस्य पजिका ॥
Closing : चेरु· चरति स्म । पुरस्सर अग्रेशर । विरच्य रचयित्वा
अवसादितमोहशत्रु निरस्त मोहरिपुम् ॥ ८२ ॥
Colophon · इति श्री भट्टारकज्ञानभूषणविरचिताया श्री नेमिनिर्वाण
महाकाव्यपजिकाया पचदशम सर्ग. समाप्तोऽय ग्रन्थ । श्रीरस्तु ।
देहली से प्रति मगवाकर जैन सिद्धान्त भवन, आरा मे
प्रतिलिपि कराकर रखी गई ।

७६. निशि भोजन कथा

Opening · प्रथम प्रणमि जिनदेव, दूजै गुरु निरग्रथ कूँ ।
करहुँ सरस्वती सेव दरशावै शिव पथ कूँ ॥

Closing :　　निश मु कथा पूरन भई, पढै सुनै नित सोय।
सुख पावै जे नर त्रिया, पाप नाश तिन होय ॥

Colophon :　　इति निश भोजनत्याग कथा समाप्ता । शुभ भवतु। मिति अगहण वदी ७ सम्वत् १९६१ ।

७७. निशि भोजन कथा

Opening :　　देखे, क्र० ७६ ।

Closing :　　देखे, क्र० ७६ ।

Colophon :　　इति श्री निशिभोजन कथा समाप्तम् ।
महावीर वदौं सदा, रत्नतीन दातार।
निजगुण हमे सु दो अवे, अपनो जानि हितकार ॥
श्री शुभ सवत् १९५५ मिति कुआर कृष्ण ८ वार वृहस्पति।

७८. निर्दोष सप्तमी कथा

Opening :　　श्री जिन चरणकमल अनुसरू, सदगुरु की मैं सेवा करू।
निरदोष सातमनी कथा, बोलू जिन आगम छै यथा ॥

Closing :　　ये व्रत जे नरनारि करै, ते जन भवसागर उतरै।
अजर अमर पद अविचल लहैं, ब्रह्म ज्ञान सागर इम कहैं ॥

Colophon :　　इति श्री निर्दोष सप्तमी व्रत कथा समाप्तम् ।

७९. पद्मनन्दिचरित टिप्पण

Opening :　　शकर वरदातार जिणं नत्वा स्तुत सुरै.।
कुर्वे पद्मचरित्रस्य टिप्पण गुरुदेशनात् ॥

Closing :　　लाढ वागडि श्रीप्रवचन सेन पडिता पद्मचरितस्य कर्णोवलात्कारगण श्री श्रीनंद्याचार्य सत् शिष्येण श्री चन्द्रमुनिना श्रीमद्विक्रमादित्यमवत्सरे सप्तासीत्यधिकवर्ष सहस्त्र श्रीमद्धराया श्रीमतो राजे भोजदेवस्य पद्मचरिते ।

Colophon :　　इति पद्मचरित्रे पर्व टिप्पर्ण सम्पूर्णम् । एवमिद पद्मचरित-टिप्पण श्री चन्द्रमुनिकृत समाप्तम् । शुभ भवतु सवत् १८८४ वर्षे पौषमासे कृष्णपक्षे पचम रविवासरे श्रीमूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये आम्नाये ।

८०. पद्मपुराण

Opening :   सिद्धं संपूर्णभव्यार्थं सिद्धे. कारणमुत्तमम् ।।
प्रशस्तदर्शनज्ञानचारित्रप्रतिपादनम् ।। १ ।।

Closing :   इदमष्टादशप्रोक्तं सहस्राणि प्रमाणतः ।
शास्त्रभानुपटुपश्लोकं त्रयोविंशतिसंगतम् ।।

Colophon :   इति श्री पद्मचरिते रविषेणाचार्य प्रोक्त बलदेवनिर्वाणागमनाभिधान नाम पर्व. । १२३ ।। इति श्री रामायण सम्पूर्णम् । ग्रथाग्रथ सख्या-१८०२३ शुभमस्तु । संवत् १८८५ प्रथम आषाढ-शुक्लपक्षे पचमि भौमवासरे लिखित ब्राह्मण गौड तिवाडिभातराज-नग्रमध्ये (?) ।।

यादृशं · ·· ·· न दीयते ।।

द्रष्टव्य-(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० २० ।
(२) जि० र० को०, पृ० २३३ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १७१ ।
(४) आ० सू०, पृ० ८७ ।
(5) Cat of Skt. & Pkt. Ms., Page-664.
(6) Catg. of skt. Ms., page, 314.

८१. पद्मपुराण

Opening .   (पृष्ट १८) देववर्णनो नाम प्रथमोध्याय ।
अथ वसाश्चचत्वारि तेषा नामानि वक्षते ।
इक्ष्वाकुसोमवसौश्च हरिविद्याधरौ तथा ।। १ ।।
भरतस्यादित्ययसो पुत्रतस्माद्भुत यशा· ।
ततोवलाक: सुवलो महवलादतीवल ।। २ ।।

Closing :   (पृष्ट ८२)
कुंवेरेण ततो मार्गे मायाशालस्तु निर्मित ।
शतयोजनमुत्सेध क्रूरजीवैर्भयकर ।। ५२ ।।
दशास्येन ततो ज्ञात्वा समीय वैरिणपुर
ग्रहीतुर्प्रेषित सैन्य, प्रहस्तोककनीयती ।। ५३ ।।

८२. पद्मपुराण

Opening : अथानतर श्री रामलछमन सभा विषै विराजे अर राजा पृथ्वीधर ·· ।

Closing : जे पालै जे सरदहै, जिनवचधर्म सुजान ।
जे भाषे नर सुधता निश्चै लेहि निरवान ॥

Colophon : इति श्री पद्मपुराण जी की भाषा ग्रन्थ सपूर्णम् । श्लोक सख्या २३००० । सवत् १८६० । चैत्रकृष्णद्वितीयाया गुरुवासरे पुस्तकमिद रघुनाथसर्म्मणे लेखि ।

८३. पद्मपुराण वचनिका

Opening : चिदानद चैतन्य के, गुण अनत उरधार ।
भाषा पद्मपुराण की भाषू श्रुति अनुसार ॥

Closing : देखे, क्र० ८४ ।

Colophon : इति श्री रविषेणाचार्य विरचितमहापद्मपुराण संस्कृत ग्रथ ताकी भाषावचनिका विषै बालावबोध वर्णनो नाम एक सौ बाईसमा पर्व पूर्ण भया । यह ग्रंथ समाप्तभया शुभ भवतु । माघमासे कृष्णपक्षे तिथौ पचम्या । श्री सवत् १९५३ । ग्रथ श्लोक सख्या २३२०० ।

सूवा औध (अवध) देशमुल्क हिन्दुस्तान मे प्रसिद्धजिला सु नवानगज
बाराबकी नाम है ।
टिकैतनगर सुथाना डाकखाना जानौ तासु दिसपूरव सरैया
भलो ग्राम है ॥
कवि भगवानदत्त वास स्थान जानौ तहा अन्न जलके स्ववस
आयौ यही ठाम है ।
लिख्यौ ग्रथ पदुमपुराण धर्मवृद्धि हेत जिला शाहावाद
आरा शहर मुकाम है ॥

विशेष :— ग्रन्थ के काष्ठावरण पर (ऊपर) लिखा है—
"पुत्र पौत्र सपति बाढै बाढै अधिक सरस सुखदाई ।
मुसम्मात नन्ही बीवी जौजे बाबू सुखालचद पुत्र धनकुमारचद वो राजकुमारचद पौत्र संबूकुमारचद जबूकुमारचद जैनेन्द्रकुमार चन्द मगलम् भूयात् ।"

'बीच मे मन्दिर का चित्र है उसके दोनो ओर इन्द्र हाथियो के साथ चवर ढुराते हुए ।'

काष्टावरण पर (भीतर)

" चौबीस तीर्थंकरो के चिह्नों के बहुत ही सुन्दर रगीन चित्र " बने हुए हैं।

चौबीस तीर्थंकरो के चिह्नो के चित्र एव तीर्थंकरो नाम टीकाकार की हस्तलिपि मे स्पष्टरूप से लिखे हुए है। लकडी पर चित्रकारी का कौशल अनुपम है. जो कि अन्यत्र बहुत कम उपलब्ध है। अग्रेजी मे इसे "लैकर वर्क" चित्रकारी कहते है, जो कि सामान्यतया पानी पडने पर भी नही धुलता।
इस तरह के चित्रकारी के लिए चित्रकारिता का विशिष्ट ज्ञान आवश्यक है।

कला पारखी दर्शको के लिए इस काष्ठपट्ट पर बनायी गई अनुपम चित्रकला को श्री जैन सिद्धान्त भवन के अन्तर्गत श्री शाति-नाथ मदिर के प्रागण मे श्री निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार कला दीर्घा मे रखा जा रहा है, ताकि अधिक से अधिक दर्शक इसे देख सके।

८४. पद्मपुराण वचनिका

Opening : महावीर वदौं सुबुधि रतन तीन दातार।
निजगुण हमे द्यौ अबै, अपनो जानि हितकार ॥

Closing : तादिन सपूर्ण भयौ यह ग्रथ सिव दाय।
चहु सघ मगल करौ, वढौ धर्म जिनराय ॥

Colophon : इति श्री रविषेणाचार्य कृत महापद्मपुराण सस्कृत ग्रथ ताकी भाषा वचनिका वालवोध का तेईसवाँ पर्व पूर्ण भया। इति महा-पद्मपुराण समाप्तम्। १२३ ॥ सवत् १८४८ वर्ष भादौ सुदी १२ को लिख चुके, लेखक वखतमल्ल नंद वमी वारी नगर मध्ये लिखा है।

८५. पद्मपुराण भाषा

Opening : सिद्ध ... ...प्रतिपादनम् ॥

Closing :

बहुरि जाय वन तप करि भारी।
शिवपुर जानेकी मनमे विचारी ॥
अब इहा भई निरविघ्न अहार।
रामंमुनि को निरविघ्न अहार ॥

Colophon : इति श्री. रविषेणाचार्य कृत मूलसस्कृत ताकी वचनिका दौलतराम कृत ताकी चौपाई छद वध मह श्री राम महामुनि का निरन्तराय अहार का होना यह एकसौ वीसवी संधि पूर्ण भयो। शुभम्।

८६. पाडवपुराण

Opening :

सिद्धसिद्धार्थं सर्वस्वसिद्धिद सिद्धिसत्पदं ॥
प्रमाणनयसंसिद्धि सर्वज्ञं नौमि सिद्धये ॥ १ ॥

Closing :

यावच्चद्राकंतारा सुरपतिसदन तोयधिः शुद्धधर्मं
यावद्भूगर्भदेवा, सुरनिलयगिरिर्देव गगादिनद्यः ॥
यावत्सत्कल्पवृक्षास्त्रिभुवनमहिताभारते वैजगत्या
तावत्स्थेयात्पुराण शुभशततजनक भारत पाण्डवाना ॥

Colophon :

श्रीमद्विक्रमभूपते द्विकहतस्पष्टाष्ट सख्ये शते
रम्येष्टाधिकवत्सरे सुखकरे भाद्रे द्वितीया तिथौ ॥
श्रीमद्वाग्वरनी मृतीदमतुले श्री शाकवातेपुरे
श्रीमच्छ्रीपुरुधाम्निदं विरचित स्थेयात्पुराण चिरम् ॥

इति श्री पाडवपुराणे भारतनाम्निभट्टारकश्रीशुभचद्रप्रणीते ब्रह्मश्रीपालसाहाय्यसापेक्षे या भवोपसर्गसहनकेवलोत्पत्तिमुक्तिसर्वार्थसिद्धिगमनश्रीनेमिनाथनिर्वाणगमनवर्णनं नाम पचविंशतितम पर्व २५। सवत् १८२० वर्षे द्वितीयज्येष्ठसुदि रविवारे ग्रथ लिखापित पडित ? श्री यासमती जी तत् शिष्य पडित मथारामजी आत्मयोग्य कर्मक्षयार्थ लिखितम्। श्री कासमाबाजार मध्ये श्रीरस्तु ॥ श्री ॥

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० २०।
(२) जि० र० को, पृ० २४३।
(३) आ० सू०, पृ० ६८।
(४) प्र० जै० सा०, पृ० १८१।
(5) Catg. of Skt & Pkt Ms. P 667.

८७. पांडवपुराण

Opening : सेवत सत सुरराय स्वय सिवसिद्धमय ।
सिद्धारथ सरवसनय प्रमान ससिद्ध जय ॥

Closing : कीजे पुष्ट शरीर को, करके सरसाहार ।
को गुनता सो युद्ध में जो भाजै भयधार ॥

Colophon : नही है ।

८८. पार्श्वपुराण

Opening पणविवि सिरि पासहो सिवउरि वासहो, विहुणिय पासहो गुणभरिऊ ।
भविय सुहकारणु दुक्खणिवारणु, पुणु आहास मिवहु चरिऊ ॥

Closing : मच्छरमय हीणउ मत्थपवीणउ, पडियमणुणदउ सुचिरु ।
परगुणगहणायरु वयणिय मायरु जिणपय पयरुहु णविय सिरु ॥

Colophon : इय सिरि पासणाहपुराणे आयम अत्थस्स अत्थिसुणिहाणे सिरि पडिय रइधू विरइए सिरि महाभव्वखेऊ साहुणाम किए सिरि पासजिण पचकल्लाणवण्णणो तहेव दायार वस णिद्देसो णाम सत्तमो सधी परिच्छेओ सम्मत्तो । सधि । ७ । इति श्री पार्श्वनाथपुराण समाप्तम् ।

अथ सवत्सरेऽस्मिन् श्रीविक्रमादित्यराज्ये १५४९ वर्षे चैत्र-सुदि ११ शुक्रवासरे पुनर्वसुनक्षत्रे शुभनामा योगे श्री हिसारपेरोजा कोटे श्री महावीरचैत्यालये सुलितान श्री साहिसिकदरराज्यप्रवर्तमाने श्री काष्ठासघे माथुरान्वये पुष्करगणे त्रयोदशप्रकारचरित्रालकाराल-कृत वाह्याभ्यन्तर परिग्रहसमित्रह (?) समर्था. भट्टारक श्री खेमकी-र्तिदेवा. तत्पट्टे त्रिकालागत श्राद्धवृंदविहितपदसेवा भट्टारक श्री हेमकीर्तिदेवा तत्पट्टे कुवलयविकासनैकचन्द्रो भट्टारक श्री कुमारसेन-देवा तत्पट्टे प्रतिष्ठाचार्य श्री नेमचद्रदेवा, तदाम्नाये अग्रेकान्वये गोहलगोत्रे आशीवाल सराफ-देवशास्त्रगुरु चरणारविंदचचरीकोपम पचाणुव्रत प्रतिपालका समा परमश्रावकसाधु मइणाख्य: चादपाही । तृतीयपुत्र. जिनपूजापुरदरसाधु दूल्लणु भार्या जे वूहि तस्यागजा प्रथम पुत्रमयणरूप व्रत ' दू थितज कल्पवृक्षान् साध वणुभार्यादिवाही

द्वितीय पुत्र साधु सीहा, भार्या डेडीए तेषा...... कर्म्मक्षय साधुपि-रदूतस्य पुत्र ...... पार्श्वनाथ चरित्र लिखापितम।

उपर्युक्त प्रति से यह प्रति जैन सद्धान्तभवन, आरा के सग्रहार्थ लिखी गई। शुभमिती माघशुक्ला ८ गुरुवार वीरसम्वत २८६३। विक्रम सवत् १९९३ हस्ताक्षर रोशनलाल जैन। इति।

द्रष्टव्य— जि० र० को०, पृ० २४६।

८९. पार्श्वपुराण

Opening . नमः श्री पार्श्वनाथाय विश्वविघ्नौघनाशिने।
त्रिजगत्स्वामिने मूर्द्धा ह्यनन्तमहिमात्मने॥

Closing : सर्वे श्रीजिनपुंगवाश्च विमला सिद्धा अमूर्ता विदो,
विश्वाच्चर्या गुरुवोजिनेद्रमुखजा सिद्धान्तधर्मादय।
कर्त्तारो जिनशासनस्य सहिता स वदिता सश्रुता,
येतेमेऽत्र दिशतु मुक्तिजनकं सुद्धिं च रतनत्रये॥
पचादशाधिकानि वा विंशतिः शतान्यपि।
श्लोकसख्या अस्य विज्ञेया सर्व ग्रन्थस्य लेखकं॥

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथथचरित्रे भट्टारक सकलकीर्ति. विरचिते श्री पार्श्वनाथमोक्षगमन त्रयोविंशतितम सर्ग समाप्त। इति श्री पार्श्वनाथचरित्र समाप्तम्।

देखे—जि० र० को०, पृ० २४६।
Catg. of Skt. & pkt Ms, P. 667.

९०. पार्श्वपुराण

Opening देखे, क्र० ८९।

Closing : देखे, क्र० ८९।

Colophon इति श्री पार्श्वनाथचरित्रे भट्टारक श्री सकलकीतिविरचिते श्री पार्श्वनाथमोक्षगमनवर्णनो नाम त्रयोविंशतितम सर्गा श्री पार्श्वनाथचरित्रसमाप्त॥ देउल ग्रामे लिखित नेमसागरस्य इद पुस्तक॥

६१. पार्श्वपुराण

Opening : मोह महातम दमन दिन, तप लक्ष्मी भरतार।
से पारस परमेश गुरु, होय सुमति दातार॥

Closing : संवत् सतह से समै, अर नवासी लीय।
सुदि अषाढ तिथि पंचमी, ग्रंथ समापत कीय॥

Colophon : इति श्री पार्श्वपुराणभाषाया भगवन्निर्वाणगमनोनाम नवमो अधिकार समाप्तम्। संवत् १८५६ कार्तिक सुदी नवमी बुध-श्वेताम्बर ऋषि हुनराज जी तत् शिष्य ऋषि रामसुखदास जी शाहजहानाबाद मध्ये लिपिकृतम् आत्मार्थे। शुभ भवतु।

६२. पार्श्वपुराण

Opening : देखें, क्र० ६१।

Closing : देखें, क्र० ६१।

Colophon . इति श्री पार्श्वनाथपुराण भाषायां भगवन्निर्वाणकवर्णनो नाम नवमोधिकार॥ ९॥ इति श्री पार्श्वनाथपुराण भाषा सम्पूर्णम्। संवत् १९५३ सन् १३०३ अगहण शुक्ल एकादश्या तिथौ मंगरवासरे दसखत चुनीमाली का।

६३. प्रद्युम्नचरित (१४ सर्ग)

Opening : श्रीमत सन्मति नत्वा नेमिनाथ जिनेश्वरम्॥
विश्वजेतापि मदनो वाधितु नो शशाकय.॥ ॥

Closing : चतु सहस्रसख्यात· सार्द्ध चाष्टशतैर्युत.।
भूतले सतत जीयाच्छ्रीसर्वज्ञप्रसादत॥ १६६॥

Colophon इति श्री प्रद्युम्नचरिते श्री सोमकीर्त्याचार्यविरचिते श्री प्रद्युम्न सावअनिरुद्धादिनिर्वाणगमनो नाम चतुर्दश सर्ग· समाप्त·॥ मिति कार्तिक शुक्ला ५ चद्रवासरे सवत् १९५३। लिखि नटवर लाल शर्मणा॥

विशेष—इसमे मात्र १४ सर्ग है, जबकि दिल्ली जिनग्रन्थ रत्नावली मे १६ सर्ग की प्रतियो के भी उपलब्ध होने की सूचना है।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, प०, पृ० २२।
(२) जि० र० को०, पृ० २६४।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १७६।
(४) आ० सू०, पृ० ६४।
(५) रा० सू० III, पृ० २१३।
(6) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 670.

६४. प्रद्युम्नचरित्र

Opening : देखें, क्र० ६३।

Closing : देखे क्र० ६३।

Colophon : इतिश्री प्रद्युम्नचरिते आचार्य श्री-सोमकीर्तिविरचिते श्री प्रद्युम्न अनिरुद्धनिर्वाणगमनो नामचतुर्दश सर्ग समाप्त। समाप्तमिद श्री प्रद्युम्नचरितम्। वाच्यमान चिर नदन्तु पुस्तक सवत् १७१७ वर्षे माघ सुदि २ दिने लिख्या समाप्तिनीत लेखिततश्च कुशलान्वये साहश्री बगूजी तत्पुत्र परम धार्मिक साह श्री रायसिंहजी केन स्वकीय ज्ञातवृद्धयर्थम्।

श्लोक—यादृश ... न दीयते॥

६५. प्रद्युम्नचरित्र

Opening : देखें, क्र० ६३।

Closing : देखे, क्र० ६३।

Colophon : इति श्री प्रद्युम्नचरिते श्री सोमकीर्त्याचार्य विरचिते प्रद्युम्न शवअनिरुद्धादि निर्वाणगमनो नाम चतुर्दशः सर्गः। श्री मद्वि–क्रमभूपते–र्गजरसाद्री दुर्गते वत्सरे मासे फागुनि के दिने रवि सुते–रू द्राख्यकासत्तिथि तस्मिन्नेव लिपिकृतो गुवताराज्येविनष्टे क्षितौ ग्रथो धनपतिसज्ञिनामतिमता कैराणकाख्ये पुरे।

९६. प्रद्युम्नचरित्र

Opening : देखे, क्र० ९३ ।

Closing : देखे, क्र० ९३ ।

Colophon : इति श्री प्रद्युम्नचरित्रे श्रीसोमकीर्ति आचार्यविरचिते श्री प्रद्युम्नसवअनुरुद्धादि निर्वाणगमनो नामषोडश सर्ग । इति प्रद्युम्नचरित्र सम्पूर्णम् । सवत्सरे श्री विक्रमार्कभूपते सवत् १७९९ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे तिथौ च-नौम्या सोमवासरे । लिखत मुदकसागरेण तत् शिष्यसमीप तिष्ठते धामपुर मध्ये ।

जो उपजो ससार सर्व वस्तु का नाश है ।
तातै इही विचार धर्मविर्ष चितराखना ॥
श्रीरस्तु मगल दद्यात् ।

विशेष —सवत् १७९५ वर्ष फागुणमासे शुक्लपक्षे द्वादसी दिने नादरसाह ग्राद शाह नै दिल्ली मे कतलाम किया मनुष्यो का प्रहर तीन ।
इस प्रति मे सर्गों की सख्या १६ है, जबकि अन्त मे श्लोक सख्या वही है ।

९७. पुण्याश्रव कथा

Opening : श्री वीरजिनमानम्य वस्तुतत्वप्रकाशकम् ।
वक्ष्ये कथामय ग्रथ पुण्याश्रव विधानकम् ॥

Closing : रविसुतको पहलो दिन जोय ।
अरु सुरगुरु को पीछे होय ॥
बार यही गिन लीजो सही ।
तादिन ग्रथ समापति लही ॥

Colophon : इति श्री पुण्याश्रव ग्रथ मूल कर्त्ता रामचद्र मुनि टीका दौलतराम कृत सपूर्ण । सवत् १८७४ मिती माहसुदि ३ रविवासरे सपूर्ण कृतम् ।

९८. पुण्याश्रव कथा

Opening : देखें, क्र० ९७ ।

Closing : तीस्यौ पुकारै छै । तब राजाब्रहौनवल ला ।

Colophon : उपलब्ध नही ।

९९. पुण्याश्रव कथाकोष

Opening : वर्द्धमान जिन वंदिकै, तत्वप्रकाशनसार।
पुण्याश्रव भाषा करु भव्य जीवन हितकार ॥

Closing : दान तना अधिकार यह, पूरा भया सुजान ।
चहुविध की सत्रुसम, भोवहु करैं कल्यान ॥५९०६॥

Colophon : इति श्री पुन्याश्रवविधाने ग्रंथ के सवानददिव्य मुनि शिष्य रामचंद्र विरचिते दान अधिकार समाप्त ।

पुन्याश्रव ये कथा रसाल । पूजादिक अधिकार विसाल ॥
षट् अधिकार परम उतकिए । छप्पन कथा जासमैं मिए ॥
आदि पुरानादिक जे कहा । अभिप्राय सो यामैं लहा ॥
आचारज जिय धरि अभिलाष । कीनो तास सस्कृत भाष ॥
तास वचनकारूप सुधार । दौलतराम कथा बुधसार ॥
तातैं भावसिंघ निज छद । आरभ किया चौपाई वद ॥
... .

प्रभु को सुमिरन ध्यानकर, पूजा जाप विधान ।
जिन प्रणीत मारग विषैं, मगन होहु मतिमान ॥

१००. पुण्याश्रव कथाकोष

Opening : देखें, क्र० ९७ ।

Closing : प्रभु को सुमरण ध्यानकर, पूजा जाप विधान ।
जिनप्रणीत मारगविषैं, मगन होहु मतिमान ॥

Colophon : इति श्री पुण्याश्रव कथाकोष भाषाजी राजभावसिंह कृत समाप्तम् । श्रीशुभ सवत् १९६२ तत्र वैशाखकृष्ण तृतीयायां लिपि कृतम् प० सीतारामशास्त्री स्वकरेण सहारनपुर नगरे ।

नोट :—लेखक का नाम भावसिंह होना चाहिए ।

१०१. पुराणसार संग्रह

Opening : पुरूदेव पुराणाद्यं प्रणम्य वृषभ विभुं ।
चरित तस्य वक्ष्यामि पुण्यमादशमाद्भुवान् ॥

Closing : महिम्नामाधारो भुवनविततध्वाततपन ।
स भूयान्नो वीरो जननजयसपत्तिजनन ॥

Colophon : इति श्री वर्द्धमानचरित्रे पुराणसारसग्रहे भगवन्निर्वणिगमन नाम पचम सर्ग समाप्त ।

प्रतिलिपि जैनसिद्धान्त भवन आरा मे रोशनलाल जैन ने की। शुभमिती फाल्गुन शुक्ला ६ गुरुवार विक्रम सवत् १६६० वीर सवत् २४६० । इति शुभ भवतु ।

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० २५३ ।

१०२. पूज्यपाद चरित्र

Opening : पादपद्मगलिगे चाचुवेनेन्नलकवनु ॥
उपदेशगैदु सकलतत्ववनुरे कुप ३वेन्लव सहृरिसि ।
सुपथव तोरि सुखवनु भव्यर्गित्तवुपदेशकरिणे रगुवेनु ॥

Closing : सौख्यम कनकगिरिवराधीश्वर पार्श्वनाथ ।

Colophon : अतु सधि १५ क्का पदनु १६३२ सखिरद वर्भेनूर मूव—तोबत्तक्का मगल जयमगल शुभमगल नित्यमगल महा ।
हृदिनैदनेय मधि मुगिदुदु ।
पूज्यपादचरित्रे सपूर्न मगलमहा ।

१०३/१. रामयशोरसायन रास

Opening : श्री मनसोव्रत स्वाम जी त्रिभुवन त्यारण देव ।
तीरथकर प्रभु वीसमो सुरनर सारे सेव ॥ १ ॥

Closing : वरसा सोला केरी सुन्दरी सुन्दर मूयूल भाषै ।
रूप अनूपम अधिक वनायो इन्द्र करै अभिलाष ॥ सी० ॥
रिमझिम रिमझिम घूघर वाजै ।

Colophon : नही है ।

विशेष : यह पाण्डुलिपि गुजराती लिपि मे 'देवचद लालभाई पुस्त-कोद्धार फड, सूरत' से 'आनन्दकाव्य महोदधि' के दूसरे भाग मे

प्रकाशित है।

१०३/२. रत्नत्रय कथा

Opening : श्री जिनराज गिरा नमुं, सारदा प्रनमी अब निरगमु।
गोतम गेरा प्रनमो पाय, जह्नवि दृगिधि मगन गाद॥

Closing : यास्या गणि मानिक भंडार, पद-पद मगन जय जयकार।
श्रीभूषण गुरुवर आधार, ब्रह्मज्ञान बोले सुविचार॥

Colophon : इति रत्नत्रय कथा सम्पूर्णम्।

५०४. रत्नत्रयव्रत पूजा व कथा

Opening : श्रीमत सन्मत नत्वा श्रीमत सुगुरुमपि।
श्रीमदागमत. श्रीमान् वक्ष्ये रत्नत्रयार्चनम्॥

Closing : देखें, क्र० १०३/२।

Colophon : इनि श्री रत्नत्रयव्रत कथा समाप्तम्।

विशेष—पूजा जिनेन्द्रसेन रचित है।

१०५. रविव्रत कथा

Opening : श्री सुखदायक पास जिनेस,
प्रणमौं भव्य पयोज दिनेस।
सुमरौ सारद पद अरविंद,
दिनकर व्रत प्रगट्यो सानंद॥

Closing : यह व्रत जे नरनारी करैं,
सो कबहू नहिं दुरगति परैं।
भाव सहित सुर वर सुख लहैं,
बार बार जिन जी यो कहैं॥

Colophon : इति श्री रविव्रत कथा जी लघु समाप्तम्।

१०६. रविव्रत कथा

Opening : देखे–क्र० १०५।

Closing : इह व्रत जो नरनारी करै,
सो कवहू नहि दुर्गति परै।
भाव सहित सो सिवसुष लहै
भानुकीर्ति मुनिवर यो कहै ॥

Colophon इति रविव्रत कथा समाप्तम्।

१०७. राजाबलि कथा

Opening : श्री मत्समस्तभुवनशिरोमणि सद्विनयविनमिताखिलजनचिन्ता-मणिये नित्य परमस्वामियनभिनुतिसि पडे–वे शाश्वतसुखमम्।

Closing . इति कथेय केलवर भ्रातियु नेरेकेडुमु वलिकमायु॑ श्रीयु सतानवृद्धि सिद्धियनतसुख तप्पुदप्पुदेवुदु निहन।

Colophon : इति सत्यप्रवचन काल प्रवर्त्तन कनकाचलश्रीजिनाराधक मलेयूर देवचद्र पडित विरचित राजवली कथासारदोल् जातिनिर्णय–प्ररूपण त्रयोदशाधिकार। समाप्तोऽय ग्रन्थ॰।

१०८. रामपमारोपम पुराण

Opening पचपरमगुरु कौ सुमरन करौ, अरु जिन प्रतमा जिनधाम।
श्री जिनवाणी जिनधरम कौ, करजोर करौ परनाम ॥

Closing : श्रीरामपमारौ वर्नन करौ वाच सुनो नरकोय।
भवदधि तारन कौ यह कारनै मोक्षवछ वरलोय ॥ २५ ॥

Colophon : अपठनीय।

१०९. रामपुराण

Opening : वदेह सुव्रत देव पचकल्याणनायकम्।
देवदेवादिभि॰ सेव्य भव्यवृंदसुखप्रदम् ॥

Closing : श्री मूलसघे वरपुष्कराख्ये गच्छेमुजातो गुणभद्रसूरिः।
पट्टे च तस्येव सुगोमसेनो भट्टारकोभूद्विदुषा शिरोमणि ॥

Colophon : इति श्रीरामपुराणो भट्टारक श्री सोमसेनविरचिते राम-स्वामीनो निर्वाणवर्णनो नामत्रयत्रिशत्तमोधिकार । ३३ ॥

समाप्तोय रामपुराण ग्रथाग्रथश्लोक ७००० । सप्तसह॰स्त्राणि । मिती भादो सुदी ११ सवत् १९८६ तादिन यह पुस्तक लिखकर समाप्त की ।

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० ३३१, ३३४ ।

Catg. of Skt. & Pkt. Ms., Page-687.

११० रोहिणी कथा

Opening : वासुपूज्य जिनराज को, वदू मनवचकाय ।
ता प्रसाद भाषा करो, सुनो भविक चितलाय ॥

Closing : रोहनी व्रत पालै जो कोई, ता घर महामहोत्सव होई ।
मनवचकाय सुद्ध जो धरै, क्रमतेमुकति वधु सुख वरै ॥ ८५ ॥

Colophon : इति रोहणी व्रत कथा सम्पूर्णम् ।

१११ रोटतीज व्रत कथा

Opening : चौवीसो जिन को नमौ, श्री गुरुचरण प्रभाव ।
रोटतीज व्रत की कथा, कहो सहितचित चाव ॥

Closing : भूल चूक जो कथा मझारा, लै भविजन सव सुजन सवारा ।
शुभ सवत् उन्नीसपचासा, अषाढ शुक्ल तृतीया मलोमासा ॥
वार शुक्र शशि कथा प्रकाशा, वाचक हृदय हर्ष की आशा ।
जैन इन्द्र किशोर सुनाई, जय-जय ध्वनि चतुर्दिक छाई ॥

Colophon : इति सपूर्णम् । शुभ भूयात् ।

११२. रोटरीज व्रत कथा

Opening : देखे, क्र० १११ ।

Closing : देखे, क्र० १११ ।

Colophon : शुभ भूयात् । इति सम्पूर्णम् ।
यह पुस्तक सवत् १६५१ मिति वैशाख कृष्ण परिवा को शीतलप्रसाद के पुत्र विमलदास ने चढाया ।

११३ ऋषभपुराण

Opening : श्रीमत त्रिजगन्नाथमादितीर्थंकर परम् ।
फणीद्रेन्द्रनरेंद्राच्यं वदेऽनतगुणार्णवम् ॥

Closing : अस्टाविशाधिकाभि षट् चत्वारिंशत्शतप्रमा ।
अस्यादर्हश्चरित्रस्य स्यु श्लोका पिडितावुधैं ॥

Colophon : इति श्री वृषभनाथ चरित्रे भट्टारक श्री सकलकीर्ति विरचिते वृषभनाथनिर्वाणगमनोनाम विंशतितम सर्ग ।
द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० ५७ ।

११४ सम्यक्त्वकौमुदी

Opening . परमपुरुष आनन्दमय चेतन रूप सुजान ।
नमो शुद्धपरमातमा, जग परकामक भान ॥

Closing : सम्यक्दर्शन मूलहै, ग्यान पेढ द्रुम डार ।
चरण सुपरलव पहुप है, देहि मोषि फलसार ॥

Colophon : इति श्री सम्यक्त्व कौमुदी कथा भाषा जोधराज गोदीका विरचिते उदितोदयभूप अरहदाससेठादिक स्वर्गगमन कथन संधि ग्यारमी सपूर्णम् ।

अठारासै सोलहत्तरा, चैतमास है सार ।
शुक्लप्रतिपदा है सही, गुरुवार पैसार ॥१॥
लिपि कीन्ही भेलीराम जू, ग्याति सावडा जानि ।
वासी चपावति सही, वोरिगढ मधि आनि ॥२॥
जयचद जी सौ वीनती, करौ जुमनवचकाय ।
राति दिवस पढिज्यो सदा, इह कथा मनलाय ॥३॥

११५. सम्यक्त्वकौमुदी

Opening : देखें, ११४ ।

Closing : चदसूर पानी अवनि, जवलग अवर आकाश ।
मेरादिक जवलगि अटल, तवलगि जैन प्रकाश ॥

Colophon : इति श्री सम्यक्त्व कौमुदी कथा साह जोधराज गोदीका विरचिते उदतोदयभूप अरहदाससेठादिक स्वर्गगमनवर्णन नाम एकादश परिच्छेद । इति श्री समकित कौमुदी कथा साह जोधराज गोदीका जातिभावसाकी करि भाषा समाप्त । सवत् १६१३ पौष मासे कृष्ण सप्तमीया गुरुवासरे । श्लोक सख्या १७०० ।

११६. सम्यक्त्वकौमुदी

Opening : देखें, क्र० ११४ ।

Closing : धरम जिनेश्वर कोय है, स्वर्गमुक्ति पद देय ।
ताकी मनवचकाय सौं, देवसु पूज करेय ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

११७. सम्यक्त्वकौमुदी

Opening : देखे, क्र० ११४ ।

Closing : देखें, क्र० ११४ ।

Colophon : इति श्री सम्यक्त्व कौमुदी कथा भाषा जोधराज गोदीका विरचिते उदितोदयभूप अर्हदाससेठादिक स्वर्गगमन कथा सधी ग्यारमी सम्पूर्णम् ।

देखें, क्र० ११४ ।

स्त्री सवत् १६७० शाके १६३५ मगशिर सुदी ६ नबमी रविवार मध्यानमे इह ग्रथ सपूर्ण भया ।

विशेष—हरप्रमाद दास धर्मशालाशाला, आरा मे लिखा गया ।

११८. सम्यक्त्वकौमुदी

Opening : देखे, क्र० ११४ ।

Closing . देखें, क्र० ११४ ।

Colophon : देखे, क्र० ११७ ।

सवत् १६४६ ' श्रावण कृष्ण अष्टम्या सम्पूर्णम् ।

११६. संकटचतुर्थी कथा

Opening : वृषभनाथ वदो जिनराज, पुनि सारद वदो सुषसाज ।
गणधर ये सुभमति हो लहो, सकटचोथि कथा तब कहो ॥

Closing : विश्वभूषण भट्टारक भए देवेन्द्रभूषण तिहिपट्ट ठए ।
तिनि यह कथा करी मनुलाइ, भव्यकजन सुनियो चित ल्याइ ॥

Colophon : इति सकटचौथिकथा समाप्ता ।

१२०. संकटचतुर्थी कथा

Opening : देखे, क्र० ११६ ।

Closing : देखे, क्र० ११६ ।

Colophon : इति सकट चौथकी कथा सम्पूर्णम् ।

१२१. सप्तव्यसन चरित्र

Opening : श्री अर्हंत प्रनाम करि, गुरुनिरग्रंन्थ मनाइ ।
सप्तविसन भाषा कहूँ, भव्यजीव हितदाइ ॥

Closing : सकलमूल याग्रथ को जानो मनवचकाय ।
दयाधर्म नितकीजिये, सो भव भव सुख होय ॥

इति श्री सप्तविसन भाषाया समुच्चय कथा परस्त्री विसन-वर्णनो नाम सप्तमो अधिकार। इति श्री सप्तविसन चरित्र भाषा सम्पूर्ण। मिति चैत्रसुद २ सवत् १९७७।

१२२. सप्तव्यसन कथा

प्रणम्य श्रीजिनान् सिद्धानाचार्यान् पाठकान् यतीन्।
सर्वद्वद्विनिर्मुक्तान् सर्वकामार्थदायकान्॥

ng : यावत्सुदर्शनोमेरुर्यावच्च सागराद्वर।
तावन्नदत्वय लोके ग्रथो भव्य जनार्चित॥

lophon : इत्यार्षे भट्टारक श्रीधर्मसेन भट्टारक श्रीभीमसेनदेवा तेषा आचार्य श्री सोमकीर्तिविरचिते सप्तव्यसनकथा समुच्चये परस्त्रीव्य–सनफलवर्णनो नाम सप्तम सर्ग ॥७॥

शाके १६९४ मिति आषाढ वदि त्रयोदश्या तिथौ भौमवासरे सवत् १८२९ का तद्दिवसे आद्रानक्षत्रे श्रीमूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये वैराडदेशे मगलूरग्रामे भट्टारक श्री धर्मचद्रलिखितमिद शास्त्र सप्तव्यसनचरित्र अर्जिका श्री नागश्री पठनार्थ इद शास्त्र लिखित स्वज्ञानावर्णीकर्मक्षयार्थं दत्तम्।

विशेष—सपूर्णग्रन्थस्य श्लोकाना सख्या— १८५३।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० २४।
(२) प्र० जै० सा०, पृ० २३४।
(३) जि० र० को०, पृ० ४१६।
(4) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P 701.

१२३. सप्तव्यसन कथा

Opening : देखे, क्र० १२२।

Closing : देखे, क्र० १२२।

Colophon : सवत् १६२६ वर्षे शके १४९१ प्रवर्तमाने शुक्लसवत्सरे वैशाखमासे शुक्लपक्षे षष्ठी तिथौ रविवारे पुनर्वसुनक्षत्रे श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री धर्म–चन्द्रोपदेशात् बघेरवाल जाति चामरागोत्रे सघवीधीना तस्य भार्या लखमाई तयो पुत्र नील्ह साह तस्य भार्या पुत्तलाई तयो: पुत्र गुणासाह

तस्य भार्या गोजाई ज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थं गोमश्री अधिकार्थं पुत्तलिका पुस्तक दत्तम् । कल्याण भवतु । भट्टारक माहेन्द्रसेण ।

१२४. सम्यादान वंक चूली कथा

Opening सम्यादानगुणश्लाघी संवेगरसदीपिका ।
सम्यक्त्वननदिश्री वंकचूलकथाधाव्यात् ॥

Closing इत्येव नृपनन्दन प्रतिदिन नि शेषपापोद्यत,
सम्यादानमनुत्तर गुणवता दत्वा मुनीना मुदा ।

Colophon इति सम्यादाने वंकचूली कथा ।

१२५. शांतिनाथ पुराण (१६ सर्ग)

Olosing नम श्रीशान्तिनाथाय जगच्छाति वि धायिने ॥
कृत्स्न कर्म्मोघशाताय शातये सर्वकर्म्मणाम् ॥ १ ॥

Closing अस्य शातिचरित्रस्य ज्ञेया श्लोका. सुलेखकं ॥
पचसप्तत्यधिकात्रिचत्वरिंशच्छतप्रमा ॥ ४१७ ॥

Colophon . इति श्रीशातिनाथचरित्रे भट्टारक श्रीसकलकीर्तिविरचिते श्री शातिनाथसमवसरणधर्म्मोपदेशमोक्षगमनवर्णनो नाम षोडशोऽधिकार ॥ १६ । इति श्री शातिनाथचरित्र समाप्तम् । शुभ भवतु ॥ मासोत्तमे मासे वैशाखेमासे शुक्लतिथौ पष्ट्या भृगुवासरे अय ग्रथा समाप्त. । लिखितमिद पुस्तक मिश्रोपनामकगुलजारीलालशर्मणा ॥ सवत् १६७१ ॥ आर्य्या वनाई ।

श्लोक—भिन्डे निवासनशाली गुलजारीलाल नामको हि मिश्रश्च ॥
विललेखपुस्तक यत् पातु सदा तच्छिवश्रमान् लोके ॥ १ ॥

रि० ग्वालियर जि० भिड । श्लोक सख्या ५६७२ सवत् १६२१ की लिखी हुई प्रति से यह नकल की गई है ।

द्रष्टव्य–(१) जि० र० को०, पृ० ३८० ।
(२) दि० जि० ग्र० र०, पृ० २४ ।
(३) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 694

१२६. शान्तिनाथ पुराण

Opening : प्रणम्य परमानन्दान् देवसिद्धान्तसगुरून् ।
शातिनाथपुराणस्य भाषा सहित नौम्यहम् ॥

Closing : जिनवर धर्मप्रभाव सो, परम विस्तरयौ ग्रथ ।
ता सेवत पाइये सदा, नाक मोष (मोक्ष) को पथ ॥

Colophon : इति श्री शांतिनाश पुराण आचार्य श्री सकलकीर्ति विरचिताद्भाषा विरचितात् लघुकवि सेवारामेन तस्य जिनज्ञानोत्पत्ति धर्मोपदेश विहार समय निर्वाणगमन निरूपणो नाम पचदसमोधिकार' । इति शातिनाथ पुराण भाषा सम्पूर्णम् । लिखि आरा नगर मे श्री जिनमदिर विषै मिती चैत्रशुक्ल चौथ वार बुध को लिख समाप्त भया ।
शुभ भवतु ।

१२७. शान्तिनाथ पुराण

Opening : देखे, क्र० १२६ ।

Closing : देखे, क्र० १२६ ।

Colophon : देखे, क्र० १२६ ।

इनि श्री शान्तिनाथ पुराण भाषा सपूर्णम् । लेखक दुर्गाप्रसाद ब्राह्मण लिखि गोरखपुरमध्ये अलीनगर में श्री जिनमंदिर विषै मिति कातिक सुदी चौथ (४) वार बुध को लिखि समाप्त भया ।

धर्मेन हन्यते शत्रु धर्मेन हन्यते ग्रहः ।
धर्मेन हन्यते व्याधि यथा धर्म तथा जय. ॥

१२८. शीलकथा

Opening : प्रथमहि प्रणमूं श्री जिनदेव, इन्द्र नरिन्द्र करे तिन सेवं ।
तीनलोक मे मगलरूप, ते वदू जिनराज अनूप ॥

Closing : जा घर शील धुरधर नारि।
मो घर सदा पवित्र निहार ॥
जाघर त्रिया वि... . . ।

Colophon . अनुपलब्ध ।

१२९. शीलकथा

Opening · देखें, क्र० १२८ ।

Closing : देखें क्र० १३० ।

Colophon . इति शील माहात्म्य कथा सम्पूर्णम् । दस्तखत दुरगा-प्रसाद मिति कुवार (आश्विन) सुदी १४ सोमवार को वावू केशो (केशव) दास की कवीला सुमतदास की महतारी ने चढाया पचायती मदिर मे गया जी के ।

१३०. शीलकथा

Opening · देखें, क्र० १२८ ।

Closing : शीलकथा पूरनभई पढे सुने जो कोय ।
सुख पावें वे नर त्रिया, पाप नाश तिन होय ॥

Colophon : इति श्री शीलकथा सम्पूर्णम् । तारीख २ अप्रैल सन् १९०५ । वैशाख कृष्ण ३ सनिवार ।

१३१. शीलकथा

Opening : देखें, क्र० १२८ ।

Closing : देखें, क्र० १३० ।

Colophon · इति श्री शील माहात्म्य की कथा सम्पूर्णम् । मिती पौष कृष्ण ११ दिन शनिवार को पूरण भई । इदं पुस्तक नीलकंठदासेन लिखितम् ।

१३२. शीलकथा

Opening : देखे, क्र० १२८ ।

Closing : देखे, क्र १३० ।

Colophon : इति श्री शीलकथा सम्पूर्ण । मिति वैशाख वदी १ सन् १२७६ साल दसखत दुरगा प्रसाद जैनी जिला आरा ।

१३३. श्रेणिकचरित्र

Opening : तीनलोक तिहुकालमे पूजनीक जिनचद ।
श्री अरहत महतके, वदौं पद अरविंद ॥

Closing : मनवचतन यह शास्त्र को, सुनें सरदहै सार ।
नामशर्म्म भोगिकै, होत भवोदधिपार ॥

Colophon इति श्री श्रेणिक महाचरित्रे ग्रथ फलितवर्णनो नामएकविंशतिमो प्रभाव । इति श्रेणिकचारित्र सम्पूर्णम् ।

उगणीस सौ बासठ यही, कृष्ण पाच वैसाख ।
सोम सहारनपुर विषै, सीताराम जुराख ॥१॥
मूलऋक्ष शिवयोग मे लिखकरि पूर्ण विचार ।
पडित जन पढ लीजियो, लिखी बुद्धि अनुसार ॥२॥
जैसी प्रति देखी लिखी, तैसी नही महान ।
निजकर शोधि सभारिकै, पडि लीजे बुधवान ॥३॥

शुभम् सवत्सर. १९६२ शक. १८२७ वैशाखकृष्ण पचम्या सोमदिने मूलर्क्षे शिवयोगे सहारनपुरनगरे लिपिकृत प० सीताराम-शास्त्री निजकरेण ।

भव्या पठतु शृण्वन्तु, क्षेममार्गानुगामिन ।
कराग्रेण विदोतूर्ण श्रीमद्गुरुप्रसादत ॥

१३४. श्रेणिकचरित्र

Opening : श्री वर्द्धमानमानद नौमिनानागुणाकरम् ।
विशुद्धध्यानदीप्तार्चिर्हुतकर्मसमुच्चयम् ॥

Closing · चन्द्रार्कहेमगिरिसागरभूमिवान गगानदी नभसि सिद्धशिलाश्च लोके ।
तिष्ठतु यावदभितो वरमर्त्यसेवा तिष्ठतु कोविदमनोबुजमध्यभूता ॥

Colophon . इति श्री श्रेणिकचरित्रभवानूवद्ध भविष्यत् पद्मनाभपुराणे आचार्यशुभचन्द्रविरचिते पचकल्याणवर्णनो नाम पञ्चदशपर्व्व समाप्त । सवत् १८०७ ज्येष्ठसुदी ५ मगलदिने लिखित मुनिविमल सुश्रावकपुण्यप्रभावक जैनीलाला प्रतापसिंह जी आत्मार्थे परममनोग्यम् ।

सवत् १९९३ विक्रमीये आषाढ सुदि १० मगलदिने रोशनलाल लेखक ने लिखा ।

द्रष्टव्य–(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० २५ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ३९९ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० २२४ ।
(४) आ० सू० पृ०, १५७ ।
(५) रा० सू० II, पृ० १९, २३१ ।
(६) रा० सू० III, पृ० २१९ ।
(7) Catg. of skt & Pkt. Ms., page, 698

१३५. श्रेणिकचरित्र

Opening · पणवेवि अणिद हो चरमजिणिंद हो, वीर हो दसणणाणवहा ।
सेणिय हो णरिंदहु कुवलयचद हो णिसुणहो भविय हो पवरकहा ॥

Closing . दयधम्मपवत्तणु विमलसुकत्तणु णिसुणतहो जिणइदहु ।
ज होइ सघण्णउ हुउ मणिमण्णउ त सुह जगिहरि इदहु ॥

Colophon · इयसिरि वड्ढमाणकव्वे पयडियचउवग्गमग्गरसभव्वे सेणिग अभयचरित्ते विरइय जयमित्तहल्लुसुकइत्तो भवियणजणमणहरण सघाहिवहोलिवम्मकण्ण सेणियधम्मलाहो वड्ढमाणणिव्वाणगमणवण्णणो णाम एयारहमो सधी परिच्छेऊ सम्मत्तो सधी ॥ ११ ॥

इति श्री श्रेणिकचरित्र सम्पूर्णम् । सवत् १७९६ वर्षे श्रावणवदि ५ भृगु अपरान्हिसमए श्रीपालमनगरि स्थाने लिखित ब्रह्म कृपासागर तच्छिष्य लिखित पडित सु दरद स ।

शुभमिती माघशुक्ला ८ वृहस्तपरिवार वीर सम्वत् २४६३ विक्रम सवत् १९९३ । हस्ताक्षर रोशनलालजैन ।

द्रष्टव्य–जि० र० को०, पृ० ३९९ ।

१३६. श्रेणिकचरित्र (११ संधि)

Opening : परमप्पयभावगु सुहगुणगावगु णिहणिय जम्मजरामरणु ।
सासयसिरिसुंदरु पणयपुरंदरु रिसह्गुण वविविदभूसणसरणु ॥

Closing : देखे, क्र०, १३५

Colophon : इति श्री वर्द्धमानकाव्य ॥ श्रेणिकचरिएकादशमो संधि समाप्ता ॥ अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्य राज्ये संवत् १६०० तत्रवर्षे फालगुणमासे कृष्णपक्षेद्वितीयायां २ तिथौ शुक्रवासरे श्री तिजारा स्थान वास्तव्यो साहिआल सुराजप्रवर्त्तमाने श्री काष्टासंघे माथुरान्वये । पुष्करगणे भट्टारक श्री गुणकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री गुणभद्रदेवा तदाम्नाये अग्रोतकान्वये गर्गगोत्रे साहुतोल्दा (?) भार्या राणीतस्य पुत्र जिणदासु । तस्य भार्या सोभा तत्पुत्रा पंच । प्रथम पुत्रु साधू महादासु । द्वितीय पुत्र साधुगेल्हा । तृतीय पुत्र साधु नगराजु । चतुर्थपुत्र साधु जगराजु । पंचमपुत्र साधु सीहू । जिणदास प्रथमपुत्र महादासु तस्य भार्या दोदासही । तस्य पुत्रुते जनुतस्य भार्या लाडो । जिनदास द्वतीयपुत्र गेल्हा तस्य भार्या पीमाही तस्य पुत्र मानूमस्य भार्या भागो तस्यसुत्रफीतनु । द्वतीय सुत्र सोनू तस्य भार्या पोभी द्वतीय भार्या सवीगी । जिणदास तृतीयपुत्र नगराजु-तस्य भार्या धनपालही पुत्र चत्वार प्रथमपुत्र जीवाहुतस्य भार्या भीपयो द्वतीयपुत्रु अमियपालु तृतीय पुत्र ग ? चतुर्थ दरगहमलु । जिणदास पुत्र चतुर्थ जगराजु तस्य भार्या धीमाही तस्य तृतीय वूढा । तस्य तस्य भार्या चादिणी द्वतीय पुत्र ··· · तृतीयतो तु जिणदास पचमपुत्र सीहु तस्य भार्या लक्ष्मणही तस्य · तस्य भार्या कपूरी । एतेषा मध्ये साधु सागूनि इद श्री मेनिक्सारा ज्ञानावरणी कर्म्मक्षयनिमित्तेण आत्मपठनार्थं कर्मक्षय निमित्तम् लिख्यापित ॥

१३७. श्रेणिकचरित्र

Opening : श्री जिनवर्दौ भावयुत, मनवचतन सुद्ध रीति ।
ऐसो है परताप प्रभु, कही उपजै भीत ॥

Closing : धर्मचंद्र भट्टारक नाम, ठो या गोत वड्यो अभिराम ।
मलयसेण सिंहासन सही, कारजय पट सोभा लही ॥

Colophon : इति श्री होनहार तीर्थङ्कर पुराणे भट्टारक श्री विजयकीर्ति विरचिते जवूस्वामी अरहदास श्रेष्ठि अजिका मुनिदीक्षादिधानवर्णन नाम द्वात्रिसोऽधिकार । सवत् १९२९ शाके १७९४ समय भाद्रपदे मासे कृष्णपक्षे एकादश्या गुरुवासरे इद पुस्तक लिखित रामसहाय शर्मण सा० वावपाली प्र० आरे ।

१३८. श्रेणिकचरित्र

Opening :

श्री सिद्धचक्र विधि केवल रिद्धि ।
गुण अनत फल जाको सिद्ध ॥
प्रणमौ परम सिद्ध गुरु सोइ ।
भव्य सग ज्यौ मगल होइ ॥

Closing

जीवदया पालै दुखहरै, अशुचि वोल कवहु न उच्चरै ।
आप आपनै चित सव सुखी, कम जोग शक्ति नर दुखा ॥
तहा कथा यह पूरण करै ॥

Colophon : इति श्रीपालचरित्रे महापुराणे भव्यसगमगलकरण वुधजनमनरजन पातिगगजन सिद्धिचक्रविधि दुखहरण त्रिभुवनसुखकारण भव्यजलतारण सम्पूर्णम् । श्री लिखित ब्राह्मण प० चन्द्रावड महाराष्ट्र ज्ञानी ब्रह्मा हरिप्रसाद । सवत् १८९५ मिति चैत्र सुदी ७ रविवार । शुभ भूयात् ।

१३९. श्रेणिक चरित्र (६ अधिकार)

Opening :

नत्वा श्रीमज्जिनाधीश सुराधीशार्चितक्रमम् ।
श्रीपालचरित वक्ष्ये सिद्धचक्रार्चनोत्तमम् ॥

Closing :

जीयादत्र महेन्द्रदत्त सुयती मज्ञानवन्निर्मल ।
सूरि श्रीयुतनागरादियतिना सेवापर सन्मति ॥
ख्याते मालवदेशस्ये पूर्णानगरे वरे ।
श्रीमदादीजिनागारे सिद्ध शास्त्रमिद शुभम् ॥
सवत् सार्द्धसहस्रे च पचाशीति सहुत्तरे ।
आसाढेषु पचम्या सपूर्ण रविवासरे ॥

Colophon : इति श्रीसिद्धचक्रपूजातिशय प्राप्ते श्रीपालमहाराज चरिते भट्टारक श्री मल्लिभूषण शिष्याचार्य श्री सिंहनंदि ब्रह्म श्री शांति-दासानुमोदिते ब्रह्मनेमिदत्त विरचिते श्रीपालमहामुनीन्द्रनिर्वाण गमन-वर्णनो नाम नवमोधिकार सम्पूर्णम् । सवत् १८३७ श्री मूलसघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे । कुदकुद आचार्याम्नाये भट्टारक श्री गुलालकीर्त्तजी तत् शिष्य हरिसागरजी तत् पुन लालजु पडित इद पुस्तक लिखित्वा परोपकाराय इद हिरदै नग्रमध्ये श्रावण शुक्ल पचम्या सपूर्णो जात । शुभ भूयात् । मोसमात गोवीदा कुवर जौजे वावू महावीर सहायजी कीने दललाक्षणी के उद्यापन मे चढाया मीति भादो शुक्ल १५ सवत् १९४५ ।

द्रष्टव्य—जि र० को०, पृ० ३९७ ।

Catg. of Skt. & pkt. Ms. P 696.

१४०. श्रीपाल चरित्र

Opening प्रथमहि लीजै ऊँकार । जो भवदुख विनाशन हार ॥
सिद्धि चक्रविध केवल रिद्ध । गुण अनत जाको फल सिद्ध ॥

Closing ता सुत कुल मडन परमष्य । वसै आगरे मे अरि सघ ॥
ता सुत बुद्धि हीन नहि आन । तिन कियौ चौपई वध वखान॥

Colophon नही है ।

१४१. श्रीपाल चरित्र

Opening जय श्री धर्मनाथ सुखगेह, कंचन वरनविराजति देह ।
जय श्री सति पयासहु साति, दुखहरन मूरति सोभति ॥

Closing अरू जो नरनारी व्रतकरे, चहुँ गति कौ भ्रम सब हरे ।
भव्यनि कौ उपहास वताइ, निहिचैं सोउ मुकति हि जाइ॥
॥२४००॥

इति श्रीपालचरित्रे महापुराणे भव्यसगमगलकरने वुधजन मनरजने पातिगगजने सिद्धचक्रविधिदुखहरने त्रिभुवनसुखकरने भवजलतरने चौपही वध परिमल्ल कृत श्री जिनवर वद्यौ महि आनदौ सिद्धचक्र वसुसारलीय जुवती नवरग पुरजनमगम गहेसुर निजगेह गय । एक दशमो सधि ॥११॥

Colophon लिखत जवाहरब्राह्मणगढ गोपाच (ल) मध्ये मिति आषाढ कृष्ण ११ दैत्यवारे शुभ सवत् १८९१ ।

१४२. श्री पुराण

Opening : देखे, क्र० १ ।
Closing : देखे, क्र० १ ।
Colophon इति श्री पुराणसमाम्नाये दशम पर्व । इत्यय समाप्तो ग्रन्थ ।
द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० ३६८ ।

१४३. श्रुतपंचमी व्रत (भविष्यदत्त चरित्र)

Opening विशुद्धसिद्धान्तमनतदर्शन, स्फुरच्चिदानदमहोदयोदितम् ।
विनिद्रचद्रोज्ज्वलकेवलप्रभ प्रणौमि चद्रप्रभतीर्थनायकम् ।।
Closing . अपठनीय ।
Colophon . अपठनीय ।

१४४/१ सुदर्शनचरित्र (८ परिच्छेद)

Opening . नम श्रीवर्द्धमानाय धर्मतीर्थप्रवर्त्तिने ।
त्रिजगत्स्वामिनेनत शर्मणे विश्वबाधवे ।।
Cloning सर्वे पिंडीकृता श्लोका बुधैर्नवशतप्रमा ।
चरित्रस्यास्य विज्ञेया श्री सुदर्शनयोगिन ।।

Colophon इति श्री भट्टारक सकलकीर्तिविरचिते श्रीसुदर्शनचरित्रे सुदर्शनमहामुनिमुक्तिगमन वर्णनोनामाष्टम परिच्छेद समाप्तमिति । शुभ भवतु । देउलग्रामे नेमिसागरेण अय ग्रन्थ. लिखित स्व पठनार्थम् । शके १७३७ तिथि फाल्गुन सुदी ३ ।
द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३० ।
(२) प्र० जै० सा०, पृ० २४६ ।
(३) आ० सू०, पृ० १४६ ।
(४) जि० र० को०, पृ० ४४४ ।
(5) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P.711.

१४४/२. सुदर्शन सेठ कथा

Opening : तदा सुदर्शन. स्वामी तस्मिन्घोरोपमर्गके ।
ध्यानावासे स्थित तत्र मेरुवन्निश्चलासय' ।।

Closing : किंचिदून: परित्यक्त कायाकारोप्यकायक. ।
त्रैलोक्यशिखरारूढ: तनुवाते स्थिर स्थित ।।

Colophon : नही है ।

१४५. सुगंधदशमी कथा

Opening : श्रीजिनसारद मनमे धरू । सुहगुरु नैं नित वदन करु ।।
साधसत पद वदो सदा । कथा कहु दशमीनी मुदा ।।

Closing : ए व्रत जे नर नारी करैं, ते भौसागर ते ओतरैं ।
छदैं पाप सकल सुख भरैं, ब्रह्मज्ञानसार उच्चरैं ।।

Colophon : इति सुगधदशमी कथा सम्पूर्णम् ।

१४६. सुकोशल चरित्र

Opening जिणवरमुणिविंद हो थुवसयइदहु चरणजुवलु पणवेवित हो ।।
कलिमलदुहनासणु सुहणयसासणु चरिउ भसामि पुक्कोशल हो ।।

Closing : जा महियरणायरु णहिससिभायरू कुलगिरिवरकण यद्दिवरा ।
तावाइ जतउ वुहहि णिरूत्तउ चरिउ पवट्टउ एहुधरा ।।

Colophon : इय सुकौसल चरिए छउमथी सम्मत्तो ।। ६ ।।

यह प्रति मु० देहली खजूर की मसजिद वाले नये पचायती मदिर मे से सवत् १६३३ विक्रम की लिखी हुई प्रति से लिखी जो कि बाबू देवकुमार जी द्वारा स्थापित श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा के लिए सग्रहार्थं विक्रम् सवत् १९८७ के मार्गशीर्ष कृष्ण १४ को लिखकर तैयार हुई । इति शुभम् ।

द्रष्टव्य– जि० र० को०, पृ ४४४ ।

१४७ उत्तर पुराण

Opening : श्रीमाजितोजितो जीयाद् यद्वचास्यमलानलम् ।
क्षालयति जलानीव विनेयाना मनोमलम् ॥

Closing : अनुष्टुप छन्दसा ज्ञेया ग्रथसख्यात्रविंशति ।
सहस्राणा पुराणस्य व्याख्यातृश्रोतृलेखकै: ॥

Colophon : इत्यार्षे त्रिषष्टिलक्षणमहापुराणसग्रहे भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीते श्रीवर्द्धमानपुराण परिसमाप्तम् · ?
समाप्त च महापुराण ग्रथाग्रथसहस्त्र २०००० । श्रेय· श्रेणय. · ··· ··· । सवत् अष्टादशशत १८०० पचदशसवत्सरे मार्गशीर्षमासे दशम्या तिथौ कृष्णाया शनिवासरे ।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३२ ।
(२) प्र० जै० सा०, पृ० १०७ ।
(३) रा० सू० III, पृ० २१२ ।
(४) आ० सू०, पृ० १५ ।
(५) जि० र० को०, पृ० ४२ ।
(६) Catg. of Skt. & pkt. Ms., P. 627
(७) Catg of Skt Ms., P 314 ।

१४८ उत्तर पुराण

Opening : जिनि भूपति मे षट गुन होय ।
ते निह् कटक राजकरेय, आगे और सुनो चितदेय ॥

Closing : इह पुराण जिन पास कौ सपूरण सुखदाय ।
पढै सुने जे भव्य जन ते खुस्याल सुखपाय ॥

Colophon : इत्यार्षे त्रिषष्ठि लक्षण महापुराणसग्रहे भगवद्गुणभद्राचार्य प्रणीतानुसारेण श्री उत्तरपुराणस्य भाषाया श्री पार्श्वतीर्थङ्करपुराण परिसमाप्तम् ।

१४६. वर्द्धमानचरित्र (१९ अधिकार)

Opening :
जिनेशं विश्वनाथाय ह्यनतगुणसिंधवे ।
धर्मचक्रभृतेमूर्द्ध्नं श्री वीरस्वामिने नम ॥

Closing :
त्रिसहस्त्राधिका पच त्रिंशद्श्लोका भवतिवै ।
यत्नेन गुणिता सर्वे चरित्रस्यास्य सन्मते ॥

Colophon : इति भट्टारक श्रीसकलकीर्तिविरचिते श्री वीरवर्द्धमान-चरित्रे श्रेणिकाभयकुमारो भवावली भगवन्निर्वाणगमनवर्णनो नामैकोनविंशोधिकार । ग्रथ सख्या ३०३५ । सवत् १८८६ का मिति माघकृष्णत्रयोदश्या गुरुवासरे श्री काष्ठासघे माथुरान्वये पुष्करगणे-लोहाचार्याम्नाये भट्टारकश्री सहस्त्रकीर्ति देवा तत्पट्टे भट्टारक श्री महीचददेवा· तत्पट्टे भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जगत्कीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीललितकीर्ति वर्तमाने तेनेद पुस्तक लिखापित विराटनगर मध्ये कुथुनाथचैत्यालयमध्ये इद पुस्तक लिपिकृतम् ।

तैलाद्रक्षेजलाद्रक्षेद्रक्षेसिथलबधनात् ।
मूर्खहस्ते न दात्तव्य एव वदति पुस्तकम् ॥
जबलगमेरु अभिग्ग है तबलग ससिअरु सूर ।
तब लग यह पुस्तक रहो दुर्नय हस्तकर दूर ॥

द्रष्टव्य–जि० र० को०, पृ० ३४३ ।
Catg. of Skt & Pkt. Ms., P 689

१५०. वर्द्धमान पुराण

Opening :
श्री जिनवर्द्धमान इह नाम, साथ विराजतु है गुणधाम ।
घातिकर्म क्षय तै वृद्धि जोय, ज्ञानी तणी मम दीजै सोय ।

Closing :
महावीर पुराण के, श्लोक अनुष्टुप् जान ।
दोय सहस्त्र नवशतक है सख्या लयो शुभ जान ॥

Colophon : इत्यार्षे त्रिषष्ठि लक्षणमहापुराणेसग्रहे भगवद्गुणभद्राचार्य-प्रणीतानुसारेण श्री उत्तरपुराणस्य भाषाया श्री वर्द्धमानपुराण परिस-

माप्तम् । सवत् १८८४ शाके १७४६ ज्येष्ठ शुक्ल पचम्या गुरुवासरे पुस्तकमिद रघुनाथ शर्मा ने लिखि । शुभ भूयात् ।

१५१. विष्णुकुमार कथा

Opening . प्रथमहिं प्रथम जिनेन्द्र चरण चित ल्याईयै ।
प्रथम महाव्रतधरन सु ताहि मनाईयै ।।
प्रथम महामुनि भेष सुधरण धुरधरौ ।
प्रथम धरम परकाशन प्रथम तीर्थंकरौ ।।

Closing : मुनि उपसर्ग निवारणी, कथा सुने जो कोइ ।
करुणा उपजे चित्तमे, दिन दिन मगल होय ।।

Colophon इति श्री विष्णुकुमार का वात्सल्यमुनि उपसर्ग निवारणी कथा लाल विनोदी कृत स्वय पठनार्थं सूकरे लिखितम् सम्पूर्णम् । शुभ भवतु । सवत् १९४६ चैतशुक्ल पक्ष चौथ शनिवासरे । लिखत वुणू वावू की माँजी कलकत्ता मध्ये ।

इतनी मेरी अरज है, सुनो त्रिभुवन के ईश ।
तुम विन काऊ और कू , नये न मेरो शीश ।।

१५२. व्रतकथाकोश

Opening · ज्येपट जिन प्रणम्यादावकलक कलध्वनि ।
श्री विद्यानदिन ज्येष्टजिनव्रतमयोच्यते ।।

Colsing : स्त्री चैषागवशेन मात्रसदृडा निव्यु्ंढचारव्रता ।।
दीर्घायुर्वलभद्रदेवहृदया भूयात्पद सपद ।।२४६।।

Co!ophon . इति भट्टारक श्री मल्लिभूषण भट्टारक गुरुपदेशात्सूरो श्री श्रुतिसागर विरचितापल्लविधानव्रतोपाख्यान कथा समाप्ता । फागुण कृष्णपक्ष समत् १९३७ ।। ब्राह्मण गगा बकस पुष्करण्य पाराशूर ।। वनेडामध्ये ।।

सवत् १७१६ का भादवमासे कृष्णपक्षे प्रतिपत्तिथौ वुधवासरे अस्य व्रतकथा कोशशास्त्रस्य टीका लिखिता ।।

द्रष्टव्य—जि० र० को०, पृ० ३६८ ।

१५३. यशोधरचरित्र

Opening : जितारातीन्जिनान्नत्वा सिद्धान्सिद्धार्यसपद ।
सूरीनाचारसपन्नानुपाध्यायान् तथा यतीन् ॥१॥

Closing : सम्यक् सिद्धगिरौ ' सच्छ्रिया ॥

Colophon : इति यशोधरचरिते मुनिवासवसेनकृतेकाव्ये अभयरूचि भट्टारक अभयमत्यो सूर्यग्रगमनो चन्द्रमारी धर्म्मलाभो यशोमत्यादयोन्ये यथा-यथ नाक निवासिनोम् अष्टम सर्ग समाप्त । इति वासवसेन विरचिते यशोधरचरित्र समाप्तम् । सवत् १७३२ वर्ष सोमे काष्ठासंघे भट्टारक श्री प० विश्वसेन ब्रह्मजयसागर । आत्मपठनार्थम् ।

द्रष्टव्य—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३६ ।
(२) रा० सू० III, पृ० ७५, २१७ ।
(३) जै० ग्र० प्र० स० १, पृ० ७' ।
(४) जि० र० को० पृ० ३२० ।

१५४. यशोधरचरित्र

Opening : देखे, क्र० १५३ ।

Closing : कृतिर्वासवसेनस्य वागडान्वयजन्मन ।
इमा यशोधराभिख्या ससोध्य धीयता बुधाः ॥

Colophon : इति यशोधरचरिते अभयरुचि भट्टारकस्य स्वर्गगमनो वर्णनो नामाष्टम. सर्ग ।

सवत् १५०१ वर्षे माघसुदि ३ गुरो अद्य इहसूर्यपुरे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्रीमत्काष्ठासघे नदितटगच्छे विद्याधरगणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये' '' सुश्राविकाहरषू पुत्र जाईआ सारगधर्म-प्रभावना निमित्त श्री यशोधरचरित्रस्य पुस्तक लिखाप्य श्री जिन-शासनम् ।

१५५. यशोधरचरित्र (४ सर्ग)

Opening : श्रीमदारब्धदेवेन्द्रमयूगनवर्त्तनम् ।
सुव्रतामोधर वन्दे गम्भीरनयगर्जितम् ॥

Closing : मुनिभद्रयश कात मुनिवृन्दै सुशवितां ।
भद्र करोतु मे नित्य भयदोषाधिवर्जिता ॥७६॥
यह ग्रथ वीर स० २४४० मे लिखा गया है ।

देखे,जि० र० को०, पृ० ३१९ ।

धर्म, दर्शन, आचार

१५६. अध्यात्मकल्पद्रुम

Opening : नम प्रवचनाय। अथाय श्रीमान् शातनामरसाधिराज सकलागमादिसुशास्त्रास्मरिवायनिषद्भूतसुधारसाद्यमाऐहिकामुष्मिकाअ–नतानदोहसाधनतया पारमार्थिकोपादश्यतयमर्वरससारभूत ज्ञाताशा-तरसभावनात्माऽध्यात्मकल्पद्रुमाभिधान ग्रथातरग्रथननिपुणेन पद्य सदर्षेण भाव्यते ।

Closing : इममितिमानधीत्यवित्तेरम यतियो विरमत्यय भवाद्राग् ।
स च नियत मनोरमेतवास्मिन् सह नव वैरिजयश्रियाशिव श्री ।

Colophon : इति नवमश्रीशातरसभावनास्वयो अध्यात्मकल्पद्रुमग्रथोऽय जयअके । श्री मुनिसु दरभूरिभि कृतम् ।

विशेष—यह ग्रथ करीब वि० म० १८०० से भी कम का ज्ञात होता है ।
देखे, जि० र० को०, पृ० ५ ।

१५७. अध्यात्म बारखडी

Opening : खौर तिलक बिंदी, अग बाप उरमाल ।
यामै तो प्रभु ना मिले, पेट भराई चाल ॥

Closing : ग्यान हीन जानो नही, मनमे उठी तरग ।
धरम ध्यान के कारनै, चेतन रचे सुचग ॥

Colophon : इति अध्यात्म बारखडी समाप्त ।

१५८. अन्यमतसार

Opening . आदिनाथ भगवान की वदना करि ससारके हितके निमित्त जैनमतधर्मकी प्रसशाकरि मुख्यदया धर्म की धारना करना श्रेष्ठ है

Closing : शास्त्र यह अब पूरन भयो। भव्यन के मन आनद ठयो।
जे श्रावक पढ़हिं मनलाय। छहमत भेद तुरत सोपाय॥

Colophon : इति श्री अन्यमतसार सग्रह ग्रथ भाषा सपूर्ण।
एक सहस्र अरु छ सौ जान।
ग्रथ सो सख्या करी बखान॥
पडित बैनीचद सुजान।
जैनधर्म मैं किंकर जान॥ सपूर्ण।
मिति माघ वदी १८ सवत् १९३६।

१५९. अर्थप्रकाशिका टीका

Opening : वदो श्री वृषभादि जिन धर्मतीर्थ करतार॥
नमि सारदा गुरु मन शिवमारग करतार॥

Closing : राजै सहज स्वभाव मैं, तजि परभाव विभाव।
नमौं आप्त के परमपद ··· ··· ···॥

Colophon : अनुपलब्ध।
विशेष—आठ सूत्र अध्याय की टीका पूर्ण हुई है। शेष अनुपलब्ध है।

१६०. अष्टपाहुड वचनिका

Closing : देखें, क्र० १६० ।

Colophon : देखे, क्र० १६० ।

लिखत वैश्य गगाराम साकिन मुरादाबाद मुहल्ला किसरौल सवत् १९४६ चैतवदी अमावस दिन इतवार (रविवार) ।

१६२. आचारसार

Opening : लक्ष्मीवीर जिनेश्वर पदनतानतामराधीश्वर ।
पद्मासद्मपदावुज परमविल्लीलाप्ततत्वव्रज ॥

Closing : विमेघचद्रोज्वलकीर्तिमूर्तिस्समस्तसैद्धातिकचक्रवर्ति ।
श्रीवीरनदीकृतवानुदारमाचारसार यतिवृत्तसार ॥
ग्रथ प्रमाणमाचारसारस्य श्लोकसमित
भवेत्सहस्रद्विशत पचाशच्छांकतस्तथा ॥३५ ॥

Colophon . इतिश्रीमन्मेघचन्द्रत्रैविद्यदेव श्रीपादप्रसादऽसाधितात्मप्रभाव समस्त विद्याप्रभाव सकलदिग्वर्ति कीर्ति श्री मद्वीरनदी सैद्धातिक चक्रवर्ति कृताचारसारे शीलगुणवर्णन नाम द्वादशाधिकार समाप्त ॥१२॥ श्री पचगुरुभ्योनम ॥

शके १८३२ साधारण नाम स वत्सरस्य फाल्गुन मासे कृष्ण-पक्षे ११ रविवासरे समाप्तोय ग्रथ । रामकृष्ण शास्त्रिणा पुत्र रगनाथ शास्त्रिणा लिखितोय ग्रन्थ शुभ भवतु ।

देखें, जि० र० को०, पृ० २२ ।

१६३. आलापपद्धति

Opening : गुणानां विस्तरं वक्ष्ये स्वभाना तथैव च ।
पर्यायाणा विशेषेण नत्वा वीर जिनेश्वरम् ॥

Closing : ... सश्लेषसहितवस्तुसदन्धविषयोनुपचारिता सद्भू-तव्यवहार. यथाजीवस्य शरीरमिति ।

Colophon : इति श्री सुखवोधार्थमालापपद्धतिश्रीदेवसेन पडित विरचिता समाप्तम् ।

(१) जि० र० को०, पृ० ३४ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १०६ ।
(४) आ० सू० पृ०, १३ ।
(५) रा० सू० II, पृ० ८०, १९४ ।
(६) रा० सू० III, पृ० १९६ ।
(६) दि० जि० र०, पृ० ३८ ।
(7) Catg. of Skt. & Pkt Ms., page, 626

१६४. आलापपद्धति

Opening : देखे, क्र० १६३ ।

Closing : देखे, क्र० १६३ ।

Colophon : इति सुखबोधार्थमालापपद्धति श्रीदेवसेनपंडित विरचिता समाप्ता । लिखत पूर्वदेश आरा नगर श्री पार्श्वनाथजिनमंदिर मध्ये काष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्याम्नाये श्री १०८ भट्टारकोत्तमे भट्टारकजी श्री ललितकीर्ति तत्पट्टे मार्दवापरनामी श्री १०८ राजेन्द्रकीर्ति तत्शिष्य भट्टारक मुनीद्रकीर्ति दिल्ली सिंहासनाधीश्वर नै लिखी संवत् १९४९ का मिती भादव वदी ६ वार रवि कू पूरा किया ।

१६५. आराधनासार

Opening : विमलवरगुणसमिद्ध सुरसेण वंदिय सिरसा ।
णमिऊण महावीर वोच्छ आराहणासार ॥१॥

Closing : अमुणियतच्चेण इम भणिय ज किंपि देवसेणेण ।
सोहतु त मुणिदा अथि हूजइ पवयणविरुद्ध ॥११५॥

Colophon : एव आराधनासार समाप्तम् ।
द्रष्टव्य—जि र को, पृ ३३ ।
Catg. of Skt. & pkt. Ms. P. 626

१६६. आराधनासार

Opening : प्रथम नमू अर्हन्त कूं, नमू सिद्ध शिरनाय ।
आचारज उवझाय नमि, नमू साधु के पाय ॥

Closing : केई ग्रन्थनिकी वणी वचनिका भाषामई देश की ।
पन्नालाल जु चौधरी विरचिजो कारक दुलीचदजी ॥

Colophon : इति वचनिका बनने का सम्बन्ध सपूर्ण ।

१६७. आराधनासार

Opening : सम्यग्दर्शनबोधन चरित्रस्पान् प्रणम्य पचगुरून् ।
आराधनासमुच्चयमागमसार प्रवक्ष्याम ॥

Closing : छद्मस्थतया यस्मिन्नतिवद्ध किंचिदागमविरुद्धम् ।
शोध्य तन्नीमद्धीमद्भिर्विशुद्धनुध्या विचार्यपदम् ॥
श्री रविचन्द्रमुनीद्रै. पनसोगे ग्रामवासिभि· ग्रन्थ ।
रचितोऽयमखिलशास्त्रप्रवीणविद्वन्मनोहारी ॥

Colophon : इत्याराधनासार ।
यह ग्रन्थ जैन ज्ञानपीठ मूडविद्री के वर्तमान एव जैनसिद्धान्त भवन आरा के भूतपूर्व अध्यक्ष विद्याभूषण प के भुजवली शास्त्री के तत्वावधान मे उक्त भवन के लिए जैन मठ मूडविद्री के ग्रन्थागार से एन चन्द्रराजेन्द्र विशारद–द्वारा लिखवाया गया । नवबर १९४४ ई ।
द्रष्टव्य—जि र को, पृ ३३ ।

१६८. आषाढभूति चौपाई

Opening : सकल ऋद्धि समृद्धि करि, त्रिभुवन तिलक समान ।
प्रणमु पासजिणेसरु, निरुपम ज्ञान निधान ॥

Closing : नित हौज्यो परम कल्याण रे ।

Colophon : इति श्री पिंड विशुद्धि विषये आषाढभूति चौपाई सपूर्णम् । सवत् १७६७ वर्षे मिती ज्येष्ठ सुदी ८ शुक्रवारे श्रावकासदा कुवर लिखायत । श्री आगरा नगरे ॥

१६९. आत्मबोध नाममाल

Opening : सिद्धसरन चितधारके, प्रणमू शारद पाय ।
मुझ ऊपर कीजै कृपा, मेधा दीजे माय ॥

Closing : इक अष्ट चार अरि सात धरिये, माघसुदी दशमी रवी।
इह साख विक्रम राज के हैं, चित्तधार लीजे कवी।
इह नाममाला अतिविशाला कठ धारे जे नरा।
बहु बुद्धि उपजे हियैं माही, ग्यान जगमे है खरा ॥
॥२७६॥

Colophon : इति श्री आत्मबोध नाममाला भाषा सम्पूर्णम्।

१७०. आत्मतत्त्वपरीक्षण

Opening : समन्तभद्रमहिमा समतव्याप्तसविदा।
कुरुते देवराजार्य आत्मतत्त्वपरीक्षणम् ॥

Closing : प्राणात्मवादोप्य प्रामाणिक प्राणस्यानित्यतया देहात्मवादोक्तदोषप्रसङ्गात्।

Colophon : इति श्रीमदर्हत्परमेश्वरचारूचरणारविंदद्व द्वमधुकरायमान-आत्मीयस्वातेन सद्यु क्तियुक्तमवचननिचयवाचस्पतिना अतिसूक्ष्मम तिना परमयोगीयोग्यसमुपेक्षितभागधेयेन सुकृतिकृतिदितिभागधेयेन सज्जनविधेयेन समुचितपवित्रचरित्रानुसधेयेन जैनराजस्य जननजल-निधिराजायमानसितताटाकनिलयदेवराजराजाभिधेयेन रणविवरण-वितरणप्रवीणेन अगण्यपुण्यवरेण्येन प्रणि ।

१७१. आत्मानुसार

Opening : शिक्षावचस्सहस्त्रैव क्षीणपुण्येन धर्मधीः।
पात्रे तु स्फायते तस्मादात्मैव गुरुरात्मन ॥

Closing तद्विचारिम्हस्त्रेभ्यो वरमेकस्तत्वविस्तम।
तत्वज्ञानसम पात्र नाभून्न च भविष्यति ॥

Colophon नहीं है।

१७२. आत्मानुशासन

Opening : लक्ष्मी निवासनिलय, विलीननिलय निधाय हृदिवीर।
आत्मानुशासन शास्त्र, वक्ष्ये मोक्षाय भव्यानाम् ॥

Closing : श्री नाभियोजिनोभूयाद्, भूयसे श्रेयसेषव ।
जगद्ज्ञानजलेयस्य दधाति कमलाकृतिम् ।।

Colophon इति श्री आत्मानुशासन समाप्तम् ।
जैनधर्म की पाल, तुम करयो महाराज ।
दर्शन तुम्हारे करत ही, पाप जात है भाज ।।
मिति ज्येष्ठ वदी ११ शुक्रवार सवत् १६४० । लिखत ब्रह्मदत्त पडित आत्म पठनार्थम् ।

द्रष्टव्य–(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३६ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २७ ।
(३) प्र० जैन० सा०, पृ० १००–१०१ ।
(४) आ० सू०, पृ० १० ।
(५) रा० सू० II, पृ० १०, १७६, ३८४ ।
(६) रा० सू० III, पृ० ३६, १६१ ।
(7) Catg. of Skt & Pkt. Ms., P 623

१७३. आत्मानुशासन

Opening : देखे, क्र० १७२ ।

Closing : इति कतिपयवाचांगगोचरीकृत्यकृत्य,
चित्तमुदितमुच्चैश्चेतसा चित्तरम्य ।
इदम् विकलमतः सतत चिन्तयन्त,
सपदि विपद पेतामाश्रयते श्रियते ।। २६७ ।।

Colophon : जिनसेनाचार्य पादस्मरणादीनचेतसा ।
गुणभद्रभदताना कृतिरात्मानुशासनम् ।। २६८ ।।
इति श्रीमद्गुणभद्रस्वामी विरचितमत्मानुशासन समाप्तम् ।।

१७४. आत्मानुशासन

Opening : श्रीजिनशासनगुरु नमों नानाविधि सुखकार ।
आतमहित उपदेशतैं, करैं मगलाचार ।।

Closing : ... अथवा जिनसेनाचार्य का शिष्य जो गुणभद्र ताका भाष्या है। ए दोऊ अर्थ प्रमाण है।

Colophon : इति श्री आत्मानुशासनमूलभाषाग्रथ सपूर्णम्। सवत् १८५८ मिती मार्गशिर वदी १४।

१७५. आवश्यक विधि सूत्र

Opening : नमो अरहताण, नमो सिद्धाण, नमो आयरियाण,
नमो उवज्झायाण, नमो लोए सव्वसाहूण ॥

Closing : १ सच्चित्त, २ दव्व, ३. विगई, ४. वाहणह, ५. वक्ष, ६ कुसुमेसु, ७ वाहण, ८. सयण, ९ विलेपण, १० अवत, ११ दिसि, १२. न्हाण, १३ भात्तसु, १४. नीम।

Colophon : इति आवश्यकविधिसूत्र। सवत् १६४२ वर्षे कातग (कार्तिक) मासे शुक्लपक्षे पचमी तिथौ रविवारे लिखित कृषसतुगुणेन। शुभ भवतु।

१७६. बनारसीविलास

Opening : ताल अरथविचार ॥

Closing : 'ध्यानधरै विनती करै।
वनारसि वदाति ... ॥

Colopnon : अनुपलब्ध।

१७७. भगवती आराधना

Opening : सिद्धे जयप्पसिद्धे चउव्विआराहणा फल पत्ते।
वदित्ता अरिहते वुच्छं आराहणा कमसो ॥

Closing : हरो जगत के दुख सकल करो सदा सुखकद।
लसो लोक मे भगवती आराधना अमद ॥

Colophon : इति श्री शिवाचार्य विरचित भगवती अराधनानाम ग्रथ की देशभाषामय वचनिका समाप्त.। मिती माघ सुदी १२ सवत् १९६१। श्री जिनाय नम.।

१७८. बाईस परीषह

Opening : पच परमपद प्रनमिके, प्रनमो जिनवर वानि।
बाईस परीषह साधुके, विंशति दोय बखानि ॥

Closing : इरीगम उत्तम मैं भए कवित्त ए सार।
मुनि के गुन जे सरदहे, ते पावहि भवपार ॥

Colophon : इति श्री बाईस परीषह सम्पूर्णम् ।

१७९. भव्यकण्ठाभरण पञ्जिका

Opening : श्रीमान् जिनो मे श्रियमेतदिश्यादीयरत्नोज्ज्वलपादपीठम् ।
करैरिन्द्रोत्करमौलिरत्नैं स्वपक्षरागादिव चालित स्वैः ॥ १ ॥

Closing : आप्तादिष्वमितिमित्यगरेष्वात्मगतेषु रागमितरेषु च मध्यभावम् ।
ते तन्वते बुधजन मिनमेन तेऽ रागत्रमेत्य सतत सुखिनो भवन्ति ।६।

Colophon : इत्यर्हद्दासस्त भव्यकण्ठाभरणस्य पञ्जिका समाप्तम् ।
अथ च भट्टविद्धि शिवशिना रानू० नेमिराजाख्येन समालिख्य आषाढ शुक्लाष्टम्या समाप्तोऽभवत् ॥ वीरशक २४५१ ॥
देखे, जि० र० को०, पृ० २९३ ।

१८०. भव्यानन्दशास्त्र

Opening श्रियं क्रियाद्यस्य महाभिषेके निरस्तगाम्भीर्यगुण पयोधि ।
स्वीकीयरत्नप्रकरै प्रदीपशोभा बिधत्ते स जिनश्चिर व ॥१॥

Closing : नमः श्रीशान्तिनाथाय कर्मारण्यदवाग्नये ।
धर्मारामवसन्ताय बोधाम्भोधिसुधांशवे ॥

Colophon : इति श्रीमत्पाण्ड्यभूपतिविरचिते भव्यानन्द समाप्त ।
अयमपि रानू० नेमिराजाख्येन लिखित । आषाढ शु० नवम्या समाप्तोभूत् ॥
श्री वीरनिर्वाण शक २४५१ ॥ मूडबिद्री ॥

१८१. भावसंग्रह

Opening : खविदघणघायिकम्मे अरहन्ते सुविधिदन्थणिवहेय ।
सिघाण्ठ गुणेसिद्धेरय शान्तय साहगेथुवे साहू ॥ १ ॥

Closing : वरसारन्तयणीउणोसुन्दं परदो विरहिय परभावो ।
भवियाण पडिवोहूण परोपहा चन्दणाम मुणी ॥ १२३ ॥

Clophon : इति श्रुतमुनिविरचितः भाव सग्रह' समाप्त. ॥

देखे–Catg of skt. & pkt. Ms., P. 678.

१८२. भावसंग्रह

Opening श्रीमद्वीरजिनाधीश, मुक्तीश त्रिदशार्च्चिम् ।
नत्वा भव्य प्रवोघाय, वक्ष्येऽह भावसग्रहम् ॥

Closing : यावद्वीपाद्वयो मेरु द्यविचद्रदिवाकरौ ।
तावद्वृद्धि प्रयात्युच्चिर्विशद जिनशासन ॥
अयोगगुणस्थान चतुर्दशम् ।

Colophon . इति श्री वामदेव पडित . ..

देखे, (१) दि जि ग्र. र, पृ ४२ ।
(२) जि र. को., पृ. २९६ ।
(३) प्र जै सा, पृ १९५ ।
(४) आ. सू., पृ. १०८ ।
(५) रा सू II, पृ. १९४ ।
(६) रा सू I , पृ. १८३ ।
(7) Catg. of skt. & pkt. Ms , P. 678

१८३. भावनासार संग्रह

ॐ नमो वीतरागाय ।

Opening . अरिहनव रजो हतनररहस्य हरः पूजनायमहँ ' ।

Closing : तत्वार्थरद्धान्त महापुराणेष्वाचारशास्त्रेषु च विस्तरोक्तम् ।
आख्यान् समासातुअनुयोगवेदी चारित्रसार रणरगम्हि. ॥

Colophon . इति सकलागम सयम सपन्न श्रीमज्जिनसेन भट्टारक श्री पादपद्म प्रसादासादित ' '' शिष्य श्री ब्रह्मसार तदाम्नाये ।

देखे,–Catg. of Skt. & Pkt Ms. P 640.

१८४. ब्रह्मचर्याष्टक

Opening : कायोत्सर्गायतागो जयतिजिनपतिर्नाभिसुनु महात्मा ।
मध्यान्तेयस्य भास्वानुपरिपरिगते राजतेस्मोग्रमूर्ति ॥
चक्र कर्मेन्धनानामतिवहुदहतो दूरमैदास्य • ।
त्यादिना ॥

Closing मया पद्मनन्दिमुनिना मुमुक्षुजन प्रति युवती स्त्रीसगति वर्ज्जिन अष्टक भणित कथितम्, सुरतरागसमुद्रगता प्राप्ताजना लोका अजमयि मुनौ मुनीश्वरे क्रुद्ध क्रोध. माकुरुत माकुर्वंतु मयि पद्म-नंदिमुनौ ।

Colophon इति श्री ब्रह्मचार्याष्टकम् समाप्तम् । शुभ सवत् १९३७ भादव सुदी ५ गुरुवार लिखितम् सुगनचद पाल्मग्राममध्ये । शुभ भवतु ।
देखे– जि० र० को०, पृ० २८६ ।

१८५ ब्रह्म विलास

Opening ओंकार गुण अतिअगम, पचपरमेष्ठि निवास ।
प्रथम तासु वदन कियौ लहियह ब्रह्मविलास ॥

Closing जामे निज आतम की कथा, ब्रह्मविलास नाम है जथा ।
बुद्धिवत हसियो मतकोय, अल्पमति भाषाकवि होय ॥
भूलचूक निजनैन निहारि, शुद्ध कीजियौ अर्थविचारी ।
सवत् सत्रह सै पचावन • • ॥

Colophon : नही है ।

विशेष–इसके अन्तिम पद्य ही प्रशस्ति सूचक हैं ।

१८६ ब्रह्म विलास

Opening : प्रथम प्रणमि अरिहत वहुरि श्री सिद्ध नमीज्जै ।
आचारिज उपझाय तासु पदवदन किज्जै ॥

Closing : जह देखो तहाँ ब्रह्म है, विना ब्रह्म नही और ।
जे यह पाये विनसुख कहै, ते मूरप शिरमौर ॥

Colophon . इति श्री ब्रह्मविलास भैया भगवतीदास जी कृत समाप्तम् ।
तनुज श्री वीरनलाल के, लेखक दुर्गालाल ।
जैनी आरामो वसे, कासिल गोत्र अग्रवाल ॥
श्री शुभ सम्वत् १९५४ मिती भादो शुक्ल १४ वृहस्पतिवार समाप्त भया ।

१८७ बह्माब्रह्मनिरूपण

Opening : असी आउसा पच पद, वदौ शीश नवाय ।
कहु ब्रह्मा अरु ब्रह्म की, कहु कथा गुनगाय ॥

Closing : सोई तो कुपथ भेद जाने नाही ।
जीवन की, विना पथ पाय मूढ कैसे मुन्दा हरसे ॥

Colophon पूरनम् ।

१८८. बुद्धिप्रकाश

Opening : मनदुखहरकर सिद्धसुरा, नरासकल सुखदाय ।
हराकर्मभट अष्टक अरि, ते सिध सदा सहाय ॥

Closing : पढो सुनो सीखो सकल, बुधप्रकाश कहत ।
ताफन्न सिव अधनासिकैं, टेक लहो सिव सत ॥

Colophon : इति श्री बुधिप्रकाशनाम ग्रथ सपूर्णम् । इसग्रथ का प्रारभ तो नगर इदोर विषै भया । बहुरि तापीछैं स पूरण भाइल-नग्र जोमैलसाता विषै भया । याके पढैं सुनैं तैं ब्रहि होय तातैं है भव्य हो जैसे तैसे इसका अभ्यास करने योग्य है ।

मिति कार्तिक वदी एकम चद्रवार स वत् १९७८ तादिन यह शास्त्र ममाप्त भया । हस्ताक्षर प० श्री दुवे रुपनारायण के ।

१८९. बुद्धि विलास

Opening : समदविजय सुत जिनसु नमत अघहरत सकलजग,
कुवर पदहितप षडगलियवकर हनिये करम ठग ।

भरमतिमर नव नमतु उदय हुव तिभुवन दिनकर,
जपि भवि भवदधि तरन लहत गति परममुक्तिवर ।
तसु चरनकमल भविजन भ्रमर तजि अनुभवरस चखत,
वहुरन्हु नजरि मुजपर नुजिम फल फलहि छमकहि
चखत ॥ १॥

Closing . नजिन अश्वनी वारगुरु, शुभमहुरत के मद्धि ।
ग्रथ अनूप रच्यो पढ़ै, हूं ताको सवसिद्धि ॥

Colophon : इति श्री बुद्धिविलास नामग्रथ सम्पूर्णम् । मिती भादो वदी ६ सवत् १६८२ मे ग्रथ पूर्णभयो ।

जैसी प्रत देखी हती, तैसी लई उतार ।
अधिर घट वढ हो जो, बुधजन लीयो समार ॥

१६०. चन्द्रशतक

Opening · अनुभो अभ्यानमे निवास शुद्ध चेतन को,
अनुभो मरूप शुद्धबोध बोध को प्रकाश है ।
अनुभो अनूप उपरहत अनत ग्यान,
अनुभो अनीत त्याग ग्यान सुखरास है ॥

Closing : सपतभगपगुनथान वै छूटे एक गत देवकी ।
यों कह्यो अरथ गुरुग्रथ से, मति वचन जिनसेवकी ॥

Colophon · इति श्री चन्द्रशतक समाप्तम् ।

१६१. चरचा नामावली

Opening : त्रैलोक्य सकल त्रिकालविषय सालोकमालोकितम्,
साक्षाद्येनयथास्वय करतले रेखात्रय सागुलि ।
रागद्वेष भयामयातक् जरा लोलत्वलोभादयो,
नाल यत्पदलघनाय समह दिवो मया वद्यते ॥

Closing । ऐसें जानि करि सदाकाल वीतराग देवकौ स्मरण करवौ जोग्य छै ।

Colophon : इति चरचा नामावली सपूर्णम् । शुभ भवतु मगलम् । मिती भादो वदी ८ सवत् १९४२ मुनकाम चन्द्रापुरीमध्ये लिख्यत प० श्री चोवे मथुरापरसाद ।

१९२. चर्चा शतक वचनिका

Opening : जै सरवज्ञ अलोकलोक इक उकवतदेखै ।
हस्तामल जोलीक हाथ जो सर्व विशेखै ॥

Closing : तातै पदार्थ हम सरदहा भली प्रकार जानना । इति कहिये इस प्रकार चरचा कहियै सिद्धान्त की रदवदल सतक कहै सोकवित्त सपूर्णम् । करता द्यानतराय टीका का करता हरजीमल शुद्धजैनी पाणीयथिया । १०४ ।

Colophon : इति चरचाशतक टीका सपूर्ण । शुभमिती असाढ कृष्णा ४ सवत् १९१४ गुरुवार लिख्यत नदराम अग्रवाल । श्लोक सख्या २०४० ।

१९३. चर्चा शतक वचनिका

Opening : देखे, क्र० १९२ ।

Closing : जगमहादेव है रूद्रपद कृष्ण नामहर जानिये ।
द्यानतकुलकर मैनाभनृप भीम वली भुव मानिये ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१९४. चर्चा शतक वचनिका

Opening : देखे–क्र० १९२ ।

Closing : चरचा सुख सौं भनै सुनै नहि प्राणी कानन,
केई सुनि घरि जाय नाहि भाखै फिरि आनन ।
तिनको लखि उपगारसार यह, शतक वनाई,
पढत सुनत ह्वै वुद्धि शुद्ध जिनवाणी गाई ।
इसमे अनेक सिद्धान्त का मथन कथन द्यानत कहा,

मव माहि जीव को नाम है जीवभाव हम सरदहा ।।

Colophon : इति श्री द्यानतराय जी कृत चर्चाशतक सम्पूर्णम् । सवत् १९२९ श्रावण शुक्ल अष्टम्या चद्रवासरे लिखि कर्मणा पूर्णीकृतम् । शुभमस्तु कल्याणमस्तु ।

१९५. चर्चासंग्रह

Opening : धर्मधुरधर आदि जिन, आदिधर्म करतार ।
नमू देव अघहरण तैं, सव विधि मगलसार ।।

Closing : . . विद्यानामचतुर्दश प्रतिदिन कुरुवतनो-मगलम् ।

Colophon : इति चतुर्दश विद्यानाम मपूर्णम् ।
मिती ज्येष्ठ सुदी ५ सवत् १८५४ शुभस्थाने श्री अटेर मे लिख्यौ ग्रथप्रति श्री लाला जैनी फनेचदसघई जी की पैतैवासी सुखवास शुभस्याने श्री भैरोडजी मे लिखाई ग्रथ चर्चासग्रह जी ।

१९६. चर्चा समाधान

Opening : जयो वीर जिनचद्रमा उदे अपूर्व जासु ।
कलियुग कालेपाखमय, कीनो तिमिर विनास ।।

Closing : देवराज पूजत चरण, अशरणशरण उदार ।।
कहू सघ मगलकरण, प्रियकारिणी कुमार ।।

Colophon : इति श्री चरचा समाधान ग्रथ सपूर्णम् ।

१९७. चर्चा समाधान

Opening : देखे—क्र० १९६ ।

Closing : देखे— क्र० १९६ ।

Colophon : इति श्री चरचा समाधान ग्रथ सपूर्ण । पत्र १३२ । दोहा—
सुत श्री विरनलाल के, लेखक दुरगा लाल ।

जैनी आरा मो रहे, काशिल गौत्र अग्रवाल ॥
महल्ले महाजन टोली अनुअल मे। सवत् १९५६ मिति फागुन शुक्ल १ वार गुरुवार।

१९८. चर्चा सागर वचनिका

Opening : श्री जिन वासुपूज शिवदाय। चपा पचकल्यान लहाय।।
विघ्न विडारन मगलदाय। सो वदो शरणाइ सहाय ॥

Closing : चउपद के धुर वर्ण चउ, क्रम करि पक्ति अनूप।
चर्चा सागर ग्रथ को, कर्ता नाम स्वरूप ॥

Colophon : इति श्री चर्चासागर नाम शास्त्र सपूर्णम्। शुभ भवतु।

१९९. चरित्रसार वचनिका

Opening : परमधरमरथ नेमि सम, नेमिचद जिनराय।
मगल कर अघहर विमल, नमो सु मनवचकाय ॥

Closing : अन्य ग्राम विषै जो भिक्षा कै निमित्त गमन ता विषै नाही है उद्यम जाके वहुरि पाणिपुट मात्र ही है।

Colophon : अनुपलब्ध।

२००. चरित्रसार वचनिका

Opening : मुकतमार्गदसायकं कर्म सयल करि चूरि।
वदौ विश्व विलोकि को, इच्छ्र त्रयगुण भूरि ॥

Closing : ·· जो याके अपराध समान मेरा भी अपराध है, ऐसा ही ··।

Colophon : अनुपलब्ध।

२०१. चौबीस ठाणा

Opening : सिद्ध सुद्ध पणमिय जिणिंदवर णेमिचदमकलक ।
गुणरयणभूसणुदय जीवस्स परूवण वोच्छ ॥

Cloning : ए इंदिय वियलाण इक्काणवदी हवति कुल कोडी ।
तिरिय(४३)नर(१४)देव(२६)नारय(२४)सगअट्ठा
सहिय सद्धाण ॥

Colophon : इति चउवीस ठाणा समाप्ता । सवत् १७२५ वर्षे भादव वदि ६ वृहस्पतिवारे काष्ठासघी भट्टारक श्री महीचन्द्रजी तत्शिष्य पाडे भोवाल तेन लिखत स्वात्मार्थम् ।

विशेष—इसमे कुछ गाथाएँ गोम्मटसार की प्रतीत होती है ।
देखे, Catg of Skt & Pkt. Ms., P. 642.

२०२. चौबीस गणगाथा

Opening : गइइंदियचकायेजोयेवेय कषायणाणेय ॥
सयम दसण लेस्सा भविया सम्मत्त सण्णि आहारे ॥१॥

Closing . उरपाँच सहनन वाले न माडै । तेरमे गुणस्थान तक ।
वज वृषभनाराचसहनन है ॥ आगै सहनन ॥ हाड नाहि ।
ऐसा जिनवानी मे कह्या है । तीवानि धन्य है ॥५॥

Colophon . इति श्री पस्वुरणसमजनेल्यायकचर्चा ॥ सपूर्ण ॥ लिपीकृत लहिया करमचद रामजी पालीताणा नयरे ॥ सवत् १६६६ भाद्रमासे कृष्ण पक्षे तिथि द्वितियाम् ॥

विशेष—कुछ गोम्मटसार की गाथाएँ भी उद्धृत हैं ।

२०३. चौदस गुणनियम

Opening : सचित्त दव्व विगइ वाणहि तबोल वच्छ कुसुमेसु ।
वाहण सयण विलेवण दिसि वभ न्हाण भत्तेसु ॥

Closing : इति चउदस नियम प्राभातै मो कला राखी जै नच्याकू फ़ याद कीजे जितरामोकला राख्या था तिण मोउ वाल्यागै तो विशेष होइ, अधिक न लगाई जै ।

Colophon . इति श्री चउदस गुण नियम सपूर्णम् । लिखत कूष स्यामजी (श्यामजी) सवत् १८१० माघशुक्ला १४ । कल्याणमस्तु ।

२०४. चौदह गुणस्थान

Opening : गुन आतमीक परिनाम गुनी जीवनाम पदार्थ ते आतमी परिनाम तीन जातके शुभ, अशुभ, शुद्ध ।

Closing : तिन सहित अविनाशी टङ्कोत्कीर्ण उत्कृष्ट परमात्मा कहिए ।

Colophon : यह चौदह गुणस्थानक का स्वरूप संक्षेप मात्र जिनवाणी अनुसार कथन पूर्ण भया । इति श्री चौदह गुणस्थान चर्चा सम्पूर्णम । शुभसवत् १८६० मिती माघकृष्ण चतुर्दशी गुरुवासरे लिपिकृतम् नन्दलाल पाडे छपरामध्ये ।

२०५. चउसरण पईन्न

Opening : सावज्जजोगविरहुउ कित्तणगुण वउय पडिवत्ता ।
खलियस्स निंदणावण तिगिच्छ गुणधारणा चेव ॥

Colsing : इय जीव पमायमहारिवर सहृतमेव मझयण ।
जाए सुति सजम वउ कारण निवुई सुहण ॥

Colophon : इति श्री चउसरण पईन्न समाप्तम् । लिखत पूज्य ऋषि जी तस्य शिष्येण ऋषि लाखू आत्मार्थम् । सम्वत् १६८२ वर्षे चैत्रवदि ७ । कल्याणमस्तु ।

२०६. चालगण

Opening : देवधरमगुरु वदिकै कहू ढाल गणसार ।
जा अवलोके बुद्धि उर, उपजै शुभकरतार ॥

Closing : तहाँ काल अनता रहे सुसता अनअवहता सुखदानी ।
चिन्मूरति देवा ध्यान अभेवा सुरसुख सेवा अमलानी ॥

अव जनमे नाही या भवमाही सबके साँई भवजानी ।
तुमको जो ध्यावैं तुमपद पावैं कविटैक कहै क्या अधिकारी ॥

Colophon : इति चालगण सम्पूर्णम् ।

२०७. छहढाला

Opening — तीनभुवन मे सार, वीतराग विज्ञानता ।
शिवसरूप शिवकार, नमों त्रियोग सम्हारिकै ॥

Closing — लघुधी तथा प्रमादतै शब्द अर्थ की भूल ।
सुधी सुधार पढौ सदा ज्यौं पावौ भवकूल ॥

Colophon — इति श्री छहढाल्यौ दौलतरामजी कृत सपूर्णम् । मिती मगसिर सुदी १० वार सोमवार सवत् १९५० । शुभ भूयात् ।

२०८. छियालीस दोषरहित आहारशुद्धि

Opening . — अरिहत सिद्ध चितारिचित, आचारज उवझाय ।
साधु सहित वदन करो, मन वच शीश नवाय ॥

Closing — केवल ज्ञान दोउ उपजाय, पचम गतिमे पहुँच जाय ।
सुख अनत विलसैहि तिहि ठौर, तातै कहै जगत शिरमौर ॥

Colophon — सवत सत्रसै पचास ज्येष्ठ सुदी पचमी परकाश ।
भैया वदत मन हुल्लास जै जै मुक्ति पथ सुखवास ॥
इति छियालीस दोष रहित आहारशुद्धि सम्पूर्णम् ।

२०९. दर्शनसार

Opening : — पणमिय वीरजिणिद सुरसेणि णमेसिये विमलणाणे ।
वोच्छ दसणसार जह कहिय पुव्वसूरीहि ॥

Closing : — रूसतूरू सउलोउच्च अरकतयस्य जीवस्स ।
किं जुअभण्णसा जीवज्जियव्वाणरिदेण ॥

Colophon : — इति दर्शनसार समाप्तम् विराटनगरमध्ये मल्लिनाथ चैत्यालये इद पुस्तक लिखापित श्रावणवदी चतुर्दश्या बुधवासरे सवत् १८८६ का ।
देखे—जि० र० को०, पृ० १६७ ।
Catg. of Skt & Pkt Ms., P. 652.

२१०. दर्शनसारवचनिका

Opening : — देवेन्द्रादिक पूज्य जिन ताके क्रम शिरनाय ।
भूतभावि जिनवर्तते भावभक्ति उरल्याय ॥

Closing : विशेष विद्वान होय सो ग्रथ के अभिप्राय सू लिषी बातैंतो नीसैं नवति की जाणै और शास्त्रनतैं लिखी बातैं यह अवार की सवत् १६२३ की माघ सुदि १० की जानैं, ऐसैं जानना ।

Colophon : इति श्री दर्शनसार समाप्त: ।
षट्दर्शन अरू पच मिथ्यात जैनाभास पच अधबात ।
अरू कलि आचार शास्त्र निरूपण सार ।।

२११. दसलक्षणधर्म

Opening : ॐकार कूं नमनकरि, नमूं सारदा माय ।
तिनि काराग्रहमे टिकैं, श्रीजिन सीस नवाय ।।

Closing · · सम्यक् दृष्टि कै तो अैसी वांछा है ।

Colophon : इति दसलक्षणधर्म कथन भाषा वचनिका सम्पूर्णम् । मिति भाद्रपद कृष्ण चतुर्दशी गुरुवार सवत् विक्रम १६७८ ।

२१२. दानशासन

Opening : यस्य पादाब्जसद्गन्धाघ्राणनिर्मुक्तकल्मषा ।
ये भव्या. सन्ति त देवं जिनेन्द्र प्रणमाम्यहम् ।। १ ।।
दान वक्ष्येऽथ वारीव शस्यसम्पत्ति कारणम् ।
क्षेत्रोप्त फलतीव स्यात् सर्वस्त्रीषु सम सुखम् ।। २ ।।

Closing : मत समस्तैऋषिभिर्यदाहुतं प्रभासुरात्मावनदानशासनम् ।
मुदे सतां पुण्यधन समर्जित दानानि दद्यान्मुनये विचार्य्य तत् ।।

Colophon : शाकाब्दे त्रियुगाग्निशीतगुणितेऽतीते वृषे वत्सरे
माघे मासि च शुक्लपक्षदशमे श्री वासुपूज्यर्षिणा ।
प्रोक्त पावनदानशासनमिद ज्ञात्वाहित कुर्वताम्
दान स्वर्णपरीक्षका इव सदा पात्रत्रये धार्मिका: ।।
समाप्तमिदं दानशासनम्
देखे—जि० र० को, पृ० १७३ ।

२१३. द्रव्यसंग्रह

जीवमजीव दव्व जिणवरवसहेण जेण णिद्दिट्ठं ।
देविंदविंदवद वदेत सव्वदा सिरसा ।।

दव्वसगहमिण मुणिणाहा दोससचयचुदासुदपुण्णा ।
सोधयतु तणुसुत्तधरेण णेमिचदमुणिणा भणिय ज ॥
इति मोक्षमार्गप्रतिपादक तृतीयोऽध्याय । द्रव्यसग्रहसपूर्णम् ।
देखें, —जि० र० को, पृष्ठ १८१ ।
Catg of skt & pkt. Ms., P. 654.

२१४. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखे०—क्र०, २१३ ।

Closing : देखे०—क्र० २१३ ।

Colophon : इति द्रव्यसग्रह समाप्तम् । लिखित भट्टारक मुनीन्द्रकीर्ति छपरानगरमध्ये पार्श्वनाथ जिनदीर्घ मदिरे सवत् १९४८ मि० भा० सु० १ वा० शु० । प्रातकाल समाप्त शुभ भूयात् ।

२१५/१. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखे—क्र० २१३ ।

Closing : देखे—क्र० २१३ ।

Colophon . इति श्रीदव्वसग्रह जी सपूर्णम् । मीति माघवदी ५ रोज शुक्र सन् १२७३ साल ।

२१५/२. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखे–२१३ ।

Closing : देखें–क्र० २१३ ।

Colophon : इति श्री द्रव्यसग्रह गाथा सपूर्णम् ।

विशेष—इस प्रति मे ६३ गथाएँ है ।

२१६. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखे–क्र० २१३ ।

Closing : णिक्कम्मा अट्ठगुण किंचूणा चरमदेहदो सिद्धा ।
लोयग्गठिदा णिच्चा उप्पादवयेहिं संजुत्ता ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

२१७. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें क्र० २१३ ।

Closing : कुकथा के नासनि कूं बुद्धि के प्रकाशनि कूं ।
भाषा यह ग्रंथ भयो सम्यक् समाज जी ॥

Colophon : इति श्रीद्रव्यसंग्रह भाषा और प्राकृत सम्पूर्णम् ।

२१८. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें—क्र० २१३ ।

Closing : द्यानत तनक बुद्धि तापरि बखान करी,
बाल रीति धरी ढकी लीजौ गुणसाज जी ।
कुकथा के नाशन को बुद्धि के प्रकाशन को,
भाषा यह ग्रंथ भयो सम्यक् समाज जी ॥

Colophon : इति द्रव्यसंग्रह नेमिचन्द्राचार्य विरचितमिद पचधा द्रव्यसंग्रहः समाप्त । श्रीरस्तु । सं० १६६२ । नेत्ररसाकेन्दुवत्सरे विक्रमनृपस्य वर्तमाने माघमासे तमपक्षे वाणतिथौ शशिवासरे लिपिकृतम् । सीताराम करेण चक्षुषापि बुद्धिमंदतया विशेष कथं शक्यम् । इदमपि विद्वास पठनीयाः । शुभमस्तु ।

२१९. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें, क्र० २१३ ।

Closing : मंगलकरण परम सुखधाम । द्रव्यसंग्रह प्रति करौं प्रणाम ॥
आगे चेतन कर्मचरित्र । बरनौ भाषा बंध कवित्त ॥

Colophon : इति श्री दर्वसग्रह ग्रंथ गाथा कवित्त बंध संपूर्णम् ।

विशेष—अन्त मे चेतन कर्म चरित्र प्रारम्भ करने की बात लिखी है लेकिन लिखा नही गया है ।

२२०. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखे—क्र० ११३ ।
Closing : देखें—क्र० २१८ ।
Colophon : इति द्रव्यसग्रह मूल गाथा वा भाषा सपूर्णम् ।

२२१. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखे—क्र० २१३ ।
Closing : सवत् सतरसै इकतीस, माहसुदी दशमी सुभदीस ।
मगलकरण परम सुखधाम द्रव्यसग्रह प्रति करू प्रणाम ।।
Colophon : इति श्री द्रव्यसग्रह कवित्तबध सम्पूर्णम् ।

२२२. द्रव्यसंग्रह

Opening : रिषभनाथ जगनाथ सुगुण मनषान हे,
देव इन्द्र नरविंद वद सुखदान हे ।
मूल जीव निरजीव दरव षट्विध कहे,
वंदौ सीस नवाय सदा हम सरदहै ।। १ ।।
Closing : देखे, क्र० २१८ ।
Colophon : इतिपूर्ण ।

२२३. द्रव्यसंग्रह टीका (अवचूरि)

Opening : अथेष्टदेवताविशेष नमस्कृत्य महामुनि सैद्धान्तिक श्री नेमिचन्द्र प्रतिपादितानां षट्द्रव्याणा स्वल्पबोधप्रबोधार्थं सक्षेपार्थतया विवरण करिष्ये ।
Colophon : द्रव्यसग्रहमिमं किं विशिष्टा, दोषसचयचुदा रागद्वेषादिदोषसघातच्युतार· वचन गोचरा ।

Colophon : इति द्रव्यसग्रह टीकावचूरि सम्पूर्ण । सवत् १७२१ वर्षे चैत्रमासे शुक्लपक्षे पचमी दिवसे पुस्तिका लिखापित सा० कल्याण दासेन ।

२२४. द्रव्यसंग्रह वचनिका

Opening : · · · या मैं कहूँ हीनाधिक अर्थ लिखा होय तो पडित जन सोधियो ·· · ।

Closing : मगल श्री अरहतवर मगल सिद्धि सुसूरि ।
उपाध्याय साधू सदा करो पाप सब दूरि ॥

Colophon . इति श्री द्रव्यसग्रह भाषा सम्पूर्णम् ।

२२५. धर्मपरीक्षा

Opening : श्रीमन्नभस्वररत्नयतुन्गशाल जगद्गृहवोधमय प्रदीप. ।
समततोद्योतयते यदीया भवतु ते तीर्थकरा. श्रियेन ॥

Closing : सवत्सराणा विगते सहस्र, ससप्तातो विक्रम पार्थिवास्या ।
इद निषिद्धान्यमत समाप्त, जिनेन्द्र धर्मामितियुक्तशास्त्र ॥

Colophon : इत्यमितगतिकृता धर्मपरीक्षा समाप्ता । सवत् १६८१ वर्ते पोषवदी षष्ठी तिथौ । पुस्तक पडित जी श्रीरामचद जी आत्मपठनार्थं लिपिकृता ।

देखे, (१) दि. जि ग्र. र., पृ. ४७ ।
(२) जि र. को., पृ. १८६ ।
(३) प्र. जै सा., पृ. १६१ ।
(४) आ. सू., पृ. ७६ ।
(5) Catg. of Skt & Pkt. Ms., P 655.

२२६. धर्मपरीक्षा

Opening : देखें, क्र० २२५ ।

Closing : देखें, क्र० २२५ ।

Colophon : इत्यामितगति कृता धर्म्म परीक्षा समाप्ता ॥
संवत् १७७६ ॥ समय कार्तिक सुदि वदि दशम्या मगलवासरे लिखितमिद पुस्तक गोवर्द्धन पडितेन ॥

२२७. धर्मपरीक्षा

Opening : प्रणमु अरिहत देव, गुरु निरग्रथ दया धर्म ।
भवदधि तारण एव, अवर सकल मिथ्यात भणि ॥

Closing : पढै सुनै उपजै सुबुद्धि कल्याण शुभ सुख धरण ।
मनरसि मनोहर इम कहै सकल संघ मगलकरण ॥

Colohpon : इति श्री धर्मपरीक्षा भाषा मनोहर दास कृत सगानेरी खडेलवाल कृत सम्पूर्ण ।
ग्रन्थ सख्या ३३०० श्लोक ।

२२८. धर्मपरीक्षा

Opening · देखो – क्र० २२७ ।
Closing : देखो – क्र० २२७ ।
Colophon : इतिश्री धर्मपरीक्षा भाषा सम्पूर्ण । लिखत धरमदास अय पुस्तकम् ।

२२६. धर्मपरीक्षा

Opening : देखें — क्र० २२७ ।
Closing : देखे— क्र० २२७ ।
Colophon : इतिश्री धर्मपरीक्षा भाषा मनोहरदास कृत सम्पूर्ण ।

२३०. धर्मरत्नाकर

Opening : लक्ष्मीनिरस्तनिखिला पदमाप्रवतो,
लोकप्रकाशखयप्रभवति भव्या ।
यत् कीर्ति-कीर्तनपराजित वर्धमान,
त नौमि कोविदनुत सूरि-या सुधर्मम् ॥

Closing : य वद्यो नयता सुधाकरदवी, विश्व निजाश्रृत्करै,
यावल्लोकमिम विभर्तधरणी, यावच्च मेरुस्थिर ।
रत्नोंसुच्छुरितो तरगपञ्मो यावत्पयो राशय,
तावच्छास्त्रमिद महर्षिनिवहे तत्यत्वम,नश्रिये ॥

Colophon : इति श्री सूरि श्री जयसेन विरचिते धर्मरत्नाकरनामशास्त्र सम्पूर्णम् । मिती वैशाख सुदी दोयज (२) सवत् १९८५ भृगुवासरे शुभ लिषा भुजवल प्रसाद जैनी श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा के लिए । इत्यलम् ।

देखे—जि० र० को०, पृ० १९२ ।

२३१. धर्मरत्नाकर

Opening : देखे, क्र० २३० ।

Closing : देखें, क्र० २३० ।

Colophon : इति श्री सूरि श्री जयसेन विरचिते धर्मरत्नाकरनामशास्त्र सपूर्णम् । सवत् १९१० का मार्गशीर्ष वदी ५ बुधवासरे शुभम् ।

२३२. धर्मरत्नोद्योत

Opening : मगल लोकोत्तम नमो श्रीजिन सिद्ध महत ।
साधु केवली कथित वर, धरम शरण जयवत ॥

Closing . स्याद्वाद आगम निर्दोष, अन्य सर्व ही है जु सदोष ॥
त्याग दोष गुण धरे विचार । हेतु विचय ध्यान निर्द्धार ॥

Colophon : इति श्री बाबू जगमोहन लाल कृत धर्मरत्न ग्रन्थे मध्य आराधना नाम नवमो अधिकार ॥९॥ याके पूर्ण होते श्री धर्मरत्नग्रन्थ सपूर्णभया ।

आदि मध्य अरु अत मे, मगल सर्वप्रकार ।
श्रीजिनेन्द्र पद कज जुग, नमो सुकर सिरधार ॥
तर्कवात लागे नही नहि अज्ञानतमरच ।
धर्मरत्न उद्योत मे करि उद्यम सुध मच ॥

२३३. धर्मरत्नोद्योत

Opening · देखे, क्र० २३२ ।

Closing : उपमा बहु अहमिन्द्रकी, है सबही स्वाधीन ।
यह है पुरातन अर्थ को दाहै छद नवीन ॥

Colophon : इति श्री धर्मरत्नग्रन्थ सम्पूर्णम् । सवत् १९८८ मिति कार्तिक कृष्ण ६ रविवासरे लिखित नौरंगदासेन श्रेयांसदासस्य पठनार्थम् ।

२३४. धर्मरसायन

Opening : णमिऊण देवदेव धरणिंदणरिंद इद थुयचलण ।
णाण जस्स अणत लोयालोय पयासेइ ॥१॥

Closing : भव्वियाण वोहणत्थ इयधम्मरसायण समासेण ।
वरपउमणदि मुणिणा रइयजमणियमजुत्तेण ॥

Colophon : इति श्री धम्मरसायण सपूर्णम् ।
इति श्री धर्मरसायन ग्रन्थ की भाई देवीदासजी खडेलवाल गोधा गोती जैनगर वासी ने पटना मे भाषा की । मिति आसिन सुदी १४ ।

देखे—जि० र० को०, पृ० १९२ ।

Catg. of Skt. & pkt. Ms. P. 656.

२३५. धर्मरसायन

Opening : देखे, क्र० २३४ ।

Closing : देखे, क्र० २३४ ।

Colophon : इतिश्री धम्मरसायण सपूर्णम् ।

२३६. धर्मविलास

Opening गुण अनतकरि सहित रहित दस आठ दोषकर ॥
विमल ज्योति परगास भास निज आन विषै हर ॥

Closing : जग धन्न धन्न सब साधु तुम वकता श्रोता सुखकरी ।
द्यानत है माता सरसुती तुम प्रसाद सब नर तरी ॥

Colophon . इति श्री धर्म विलास भाषा महाग्रथ सुकवि द्यानतराय अगरवाले कृत सम्पूर्णः ।

पुस्तक रिषबदास जी छावडा के डेरै मस्तक परि विराजै, बस्ती सवाई जैपुर का तेरापंथ के मदिर की पचायती मैं ।

२३७. धर्मविलास

Opening : वदौ आदि जिनेश पाप तमहरन दिनेश्वर।
वदत हो प्रभु चंद चद दुख तपत हनेश्वर॥

Closing : देखे, क्र० २३६।

Colophon : इति श्री श्री धर्म विलास भाषा महाग्रथ सुकवि द्यानतराय अग्रवालकृत उनासी अधिकार मपूर्ण। सवत् १९३४ मिति माह (माघ) सुदी ९ रोज (दिन) सोमवार।

लिखत पीतम्बर दास जैमवार मोजै सहयऊ मध्ये परगन्ह सादावाद जिला मथुरा। लिखायत लाला जगभूषणदास जी अगरवाले मोजै आरे वाले।

२३८. धर्मविलास

Opening : देखे—क्र० २३७।

Closing : कनक किरती करी भाव, श्री जिन भक्ति रचे जी।
पढै सुणे नर नारि सुरग सुख लह्यो जी॥

Colophon : इति विनती सम्पूर्णम।

विशेष— प्रति के अन्त मे एक विनती है। प्रशस्ति नही।

२३९. धर्मोपदेशकाव्य टीका

Opening : श्री पार्श्वं प्रणिपत्यादौ श्री गुरूं भारती तथा।
धर्मोपदेश ग्रन्थस्य वृत्तिरेषा विधीयते॥

Closing : यावन्मेरु क्षितिभृत् यावन्नक्षत्रमडल विलसत्।
तावन्नन्दतु नित्य ग्रथ. सवृत्ति सदितोयम्॥

Colophon : इति श्री धर्मोपदेश काव्य सवृत्तिक सम्पूर्णम्।
शास्त्राभ्यास सदाकार्या विबुधै धर्मभीरुभि:।
पुस्तक साधनं तस्य तस्माद्रक्षेन् पुस्तकम्॥ १॥
अद्यनास्ति जिनाधीश नास्ति सप्रति केवली।
आधार: पुस्तकस्यैव नृणा सम्यक्त्वधारिणाम्॥ २॥
शृण्वन्ति जिनवाणी य गद्यपद्यमयरी बुधा:।

Closing : आर्य्यार्य्यसेन गुणसमूह सधार्य्यऽजित सेन गुरुर्भुवनगुरु. यस्य गोम्मटो जयतु ।

Colophon : नहीं है ।

२४४. गोम्मटसार (जीवकाण्ड)

Opening : वंदौ ज्ञानानन्दकर, नेमिचंद गुणकंद ।
माधव वंदित विमल पद पुण्य पयोनिधि नंद ।।

Closing : धन्य धन्य तुम तुमहीतै सब काज भयो कर जोरि
बारबार वंदना हमारी है ।
मंगल कल्यान सुख ऐसो अब चाहत हौं होऊ मेरी
ऐसी दशा जैसी तुम्हारी है ।।

Colophon : इति श्रीमत् लब्धिसार वा क्षपणासार सहित गोमटसार शास्त्र की सम्यग्ज्ञान चंद्रिका नामा भाषाटीका संपूर्ण । श्री महाराजा श्री राजाराम चंद्रराज्य शुभ । लिख्यत नग्रचंद्रापुरी मध्ये हीराधर जो वाचै सुनै ताको श्री शब्द वचनै । संवत् १८४८ आषाढ़ सुदी १५ दिन शुभ भवतु ।

२४५. गोम्मटसार (कर्मकांड)

Opening : पणमिय सिरसा णेमिं गुणरयणविभूषणं महावीरं ।
सम्मत्तरयणनिलयं पयडिसमुक्कित्तणं वोच्छं ।।

Closing : पाणवधादीसु रदो जिणपूजामोक्खमग्गविग्घयरो ।
अज्जोइ अंतरायं ण लहइ इच्छियं जेण ।।

Colophon : इति श्री कर्म्मकाण्ड सम्पूर्णम् ।
देखे, जि० र० को०, पृ० ११०
Catg. of Skt & pkt. Ms., P. 608.
Catg. of Skt. Ms., P. 310.

२४६. गोम्मटसार (कर्मकांड)

Opening : देखें—क्र० २४५ ।

Closing : देखो—नं० २४५ ।

Colophon : इति श्री कर्मकाण्ड समाप्तम् ।

२४७. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड)

Opening : देखो - नं० २४५ ।

Closing : ... ... पर्याप्तियाऊ ... अपूर्ण ।

Colophon : अपूर्ण ।

२४८. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड)

Opening : देखो - नं० २४५ ।

Closing : ... पूर्वोक्त क्रियाकरि करै सु स्थिति अनुभाग की विशेषता करि यह सिद्धान्त जानना ।

Colophon : इति श्री कर्मकाण्डगोम्मटसारस्य विरचिते हेमराजकृत टीका सम्पूर्णम् । मिती कार्तिक सुदी १३ संवत् १८८८, लिखत जीवन राम सवियाम तुलिका मार्ग पूरन्दर की ।

२४९. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड)

Opening : देखो नं० २४५ ।

Closing : ... अरु जु प्रत्यनीक आदिक पूर्वोक्त क्रियाकरि करै सु स्थिति अनुभाग की विशेषता करि यह सिद्धान्त जानना । इय भाषा टीका पंडित हेमराजेन कृता स्वबुध्यानुसारेण ।

Colophon : इति श्री कर्मकाण्ड टीका सम्पूर्णसमाप्ता श्री कल्याणमस्तु श्रीरस्तु । संवत् १८४५ शाके १७१० श्रावणवदि ११ भौम ।

२५०. गोत्रप्रवर निर्णय

Opening : गोत्रादिविवर-अमिततेजगोत्रं वृषभप्रवरकुम्भसूत्रम् पर्यायशाखा, हरिकेतु गोत्रम् सम्भवप्रवर सतधनु सूत्रम् पर्याय समास शाखा ।

Closing : भागिनि रथगोत्रं निष्कलङ्क प्रवर गङ्गदेवसूत्रम् अग्रायणीय शाखा ।

Colophon : नही है ।

२५१. गुणस्थान चर्चा

Opening : गुन आतमीक परिनाम गुनी जीऊ नाम पदार्थ ते
आतमी परिनामतीन जातके, शुभ, अशुभ,
शुद्ध ... ।

Closing : ए पाच भाव सिद्ध के रहे, तिन सहित अविनासी टकोत्कीर्ण उत्कृष्ट परमातमा कहिये ।

Colophon : यह चौदह गुणस्थानक कथनरूप सर्व्वेपमान् जिनवाणी अनुसार कथनकर पूरनक्रिया । सवत् १७३६ मगसिर वदी त्रयोदशी तिथौ। . . . . ।

२५२. गुरोपदेश श्रावकाचार

Opening : पचपरम मंगलकरन, उत्तम लोक मझारि ।
असग्न को ये ही सरन, नमू सीस करधारि ।।

Closing . माधौ नृपपुर जाहि डालूराम न्यौ गयाहि, इष्टदेवबललहि
उमगको अनाय है ।
गुरुउपदेशसार श्रावक आचारग्रन्थ, पूरनता पाहि अर्क्ष पदवी
को दायक है ।।

Colophon : इति श्री गुरोपदेश श्रावकाचार सम्पूर्णम् । इति शुभ मिती भाद्रपदसुदी ३ शनिवार सम्वत् १९८२ । हस्ताक्षर पँ० श्री वच्चूलाल चौबे के ।

२५३. गुरुशिष्यबोध

Opening : अनत जुगत जगदीश से है वो वडो सुजान ।
ताकू वदौं भाव से, सौ परमातम जान ।।

Closing : अर जैसो और है तैसो तू नाही,

जाहा (जहाँ) तहा (तहाँ) तू है सो तू ही है....।

Colophong : (Missing) नही है ।

२५४. हितोपदेश

Opening : जयति परं ज्योतिरिदं लोकालोकावभासनम् ।
यस्या परमात्मनामध्येम तद्वन्देशुद्धचैतन्यम् ॥

Closing : ये यथोक्तविधायिन सुमत्तयास्तेनन्त सौख्योज्वला ।
जायन्ते च हितोपदेशममल सन्त श्रयन्तु श्रीयै ॥

Colophon ; समाप्तोऽय ग्रन्थः । हस्ता० वटुकप्रसान । सवद् १९७० ।

२५५. इन्द्रनन्दिसहिता (४ अध्याय)

Opening : अथस्नानविधिप्रक्रमा ।
लोगियधम्मो लोगुत्तरोहि धम्मो जिणेंहि णिद्दिट्ठो ।
पढमंभतरसुद्धी पच्छाउवहिभवासुद्धी ॥

Closing : भावेइ छेदपिड जो एद इदणदिगणिरच्चिद ।
लोइयलोउत्तरिएववहारे होइ सो जुसलो ॥४८॥

Colophon : इति इन्द्रनन्दिसहितायां प्रायश्चित्तप्रकरणो नाम चतुर्थोऽध्याय। । इतिम्पूसर्णम्।

२५६. इष्टोपदेश

Opening : पूज्यपाद मुनिराजजी, रच्यो पाठ सुखदाय ।
धर्मदास बदनकरै, अतरघटमे जाय ॥

Closing : अर मोक्ष नैं प्राप्त होय है तातैं सर्व,
प्रयत्नकरि निर्ममत्वभाव ... .. ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

२५७. जलगालनी

Opening : प्रथम वंदं जिवदेव अनत । परम सुभग शीतल शुभ सत ।।
सारदं गुरं वंदुं प्रमाण । जलगालण विधि करू वखाण ।।

Closing : जो जलगालि जुगतिसु जिहि विधि कहु पुराण ।
गुलाल ब्रह्मइत नुरस किहिउ, लोकमधि परमान ।।३१।।

Colophon : इति जलगाल परिसपूर्णम् । भट्टारक शुभकीर्ति तत्शिष्य-स्वामी मेघकीर्ति लिखितम् । शुभभवतु ।

२५८. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति व्याख्यान

Opening : जंबूद्वीपमटीपणक । पचवीसकोडाकोडी उद्धार, पल्य। सजेत्ता-रोम हवति तेत्ता द्वीपसमुद्रा भवति ।

Closing : " गजदत-२०, वृषभगिरि १७०, मलेच्छखड ८५०, कुभोगभूमि ९६, समुद्र २, तोरणद्वार २२५०, एव ज्ञातव्यम् ।

Colophon : इति श्री पद्मनदी सिद्धातिवचनकाकृत जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति-व्याख्यानक कृत समाप्तम् । कर्मक्षयोनिमित्तम् । सवत् १९७९ आषाढकृष्णा ३ भौमवासरे श्री जैन सिद्धान्तभवन आरा के लिए प० भुजवलीशास्त्री की अध्यक्षता मे काशीमण्डलान्तर्गत सथवाग्राम-निवासी वटुकप्रसाद कायस्थ ने लिखा ।

देखें, Catg of Skt & Pkt Ms., P. 641.

२५९. जैनाचार

Opening : श्रीमदमरराजनुतपादसरसिज सोमभास्कर कोटितेज ।
कामितार्थवनीवसुरवीजसुखबीजक्षेमदोरि सु जिनराज ।।

Closing : दिनकरशशिकोटिभासुर सुज्ञानतनुरूपपुण्यकलाप ।
गुणमणिमयदीपयन्नघमताप तर्णिसिसतेसु निर्लेप ।।

Colophon : समाप्तम् ।

२६० जिनसंहिता

Opening : मगल भगवानर्हन्मगल भगवान् जिन. ।
मगल प्रथमाचार्यो मगल वृषभेश्वर ।।१।।

विज्ञान विमलं यस्य भासते विश्वगोचरम् ।
नमस्तस्मै जिनेन्द्राय सुरेन्द्राभ्यर्चिताङ्घ्रये ॥२॥

Closing : नाटकस्थलतुल्यस्तत्पार्श्वं मित्यच्छ्रियो भवेत् ।
तद्भित्तिस्थलभित्ति च यथाशोभ प्रकल्पयेत् ॥७५॥
सभद्रो वा कल्पोऽस्य रथोभवेत् ।
वासोऽस्मिन्पञ्चताल स्यादुक्तांशज्ञ ापितोच्छ्रये ॥७६॥

Colophon : इति जिनसहिता सपूर्णम् ।
देखे—जि० र० को०, पृ० १३७ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० ५२ ।
रा० सू० II, पृ० १४ ।

२६१. जीवसमास

Opening : श्रीमत त्रिजगन्नाथ केवलज्ञानभूषितम् ।
अनतमहीरूढ श्रीपार्श्वेश नमाम्यहम् ॥

Closing : नवधामानवाश्चैव नवधाविकलागिन ।
इति जीवसामासा स्युरष्टानवति सख्यका ॥

Colophon : नही है।

२६२. ज्ञानसूर्योदय नाटक

Opening : वदो केवलज्ञान रवि, उदय अखडित जास ।
जो भ्रमतमहर मोक्षपुर, मारग करत प्रकाश ॥

Closing : ये चार परममगल विमल ये ही लोकोत्तम विदित ।
ये ही शरण्य जगजीव कौं जानि भजहु जो चहत हित ॥

Colophon : इति श्री ज्ञानसूर्योदय नाटक सपूर्णम् । विक्रम सवत् १९६१ तत्र भाद्रशुक्ला १५ पौर्णिमाया लिपिकृतम् प० सीताराम शास्त्री स्वकरेण विमलमालायाम् ।
देखें, Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 649.

२६३. ज्ञानसूर्योदयनाटक वचनिका

Opening : देखे—क्र० २६२ ।

Closing : देखे—क्र० २६२ ।

Colophon : इति श्री ज्ञानसूर्योदय नाटक की वचनिका सम्पूर्णम्। मिति फाल्गुणमास शुक्लपक्ष द्वादश्यां वृहस्य (वृहस्पति) वासरे शुभ सवत् १६४५ का सवाई आरानगर मध्ये लिपिकृत्वा। शुभ।

२६४. ज्ञानसूर्योदय नाटक (वचनिका)

Opening : देखे—क्र० २६२।

Closing : देखें—क्र० २६२।

Colophon : इति ज्ञान सूर्योदय नाटक सम्पूर्णम्। मिती वैशाख वदी १० वुधवार सवत् १८६६।

२६५. ज्ञानसूर्योदय नाटक वचनिका

Opening : देखे—क्र० २६२।

Closing : देखे—क्र० २६२।

Colophon : इति श्री ज्ञानसूर्योदय नाटक की वचनिका सपूर्ण। मिति कार्तिकशुक्ल एकम्या शुक्रवासरे शुभ सवत् १६४६ का सवाई आरा नगर। कल्याणमस्तु।

२६६ ज्ञानार्णव

Opening : ज्ञानलक्ष्मीघनाश्लेष प्रभवानदनदितम्।
निर्णितार्थनज नौमि परमात्मानमव्ययम्॥

Closing : इति जिनपति सूत्रात्सारमुद्धृत्य किञ्चित्,
स्वमति विभवयोग्य ध्यानशास्त्र प्रणीतम्।
विवुधमुनि मनीषाभोधि चन्द्रायमाणम्,
चतुरस्तु भुवि विभूत्यै यावदीद्रचंद्रान्॥

Colophon इत्याचार्य श्री शुभचन्द्र विरचिते ज्ञानार्णवे योगप्रदीपाधिकारे मोक्षप्रकरणम् समाप्तम्। इति श्री ज्ञानार्णव समाप्त। सवत् १५२१ वर्षे आषाढ सुदी ६ सोमवासरे श्री गोपाचलदुर्गे तोमर वरवशे श्री राजाधिराज श्री कीर्तिसिंह राज्यप्रवर्तमाने श्री काष्ठासघे माथुरान्वये पुष्करगणे भ श्री गुणकीर्तिदेवस्तत्पट्टे भ श्रीयशः कीर्तिदेवस्तत्पट्टे भ श्रीमलयकीर्तिदेवस्तदाम्नाये गर्गगोत्रे सा महणासङ्घा-

र्याह्लोसुत्पुत्रत्रिपचाशत् क्रियाकमलिनी मार्त्तण्ड चतुर्विधदानपरपरा धाराधरा सारपोषितानेकोत्तममध्यमावरपात्र अनेक गुणिजनहृदया-नदाकूपारोल्लासेदूयकन्यदेहा सदा सदयोदय प्रभाकर कराप-हस्तित पाप सतापतमश्चय अनवरत दान पूजाश्रुतश्रवणादिगुणगण-निवासनिलय कारापितप्रतिष्ठा महामहोत्सव अत्यात्मरसरसिक सघभारधुरवर संघाधिपति बुधानानधेय सद्भार्याविमलतर शीलनी-रतरगिणी जिणधर्माणुरागिणी निर्मलतपाचरणा अनवरतकृतशरणा सघमणिपल्हो तयो प्रथमपुत्रआहारदानदानेश्वर आश्रितजनकल्पवृक्ष गुरुचरणकमलषट्पद पट्वर्मरत दानपूजाकारापितनिरतरक्षमामूर्ति सघाधिपति नल्भार्या ऋतह्नी स बुधाद्वितीयपुत्र हाथी भार्यापाल्हाही स. बुधा तृतीयपुत्र देवराजएतेषा मध्ये चतुर्विधदानरतेन सघई क्षेमल नामधेयेन निजज्ञानावरणीय कर्मक्षयाय श्री ज्ञानार्णव पुस्तक लिखाप्य मुनि श्री पद्मनदिने दत्तम् ।

श्री मूलनदि सघादि बलात्कारगणे गिर ।
• गच्छे भट्टारकस्येद ज्ञानभूषणस्य पुस्तकम् ।।

द्रष्टव्य–(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ५३ ।
(२) जि० र० को०, पृ० १५० ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० २५७ ।
(४) आ० सू०, पृ० १६६ ।
(५) रा० सू० II, पृ० २०२, ३४६ ।
(६) रा० सू० III, पृ० ४०, १६२ ।
(7) **Catg. of Skt & Pkt. Ms , P 646.**

२६७. ज्ञानार्णव

Opening : देखे— क्र० २६६ ।

Closing : देखे—क्र० २६६ ।

ज्ञानार्णवस्य माहात्म्य चित्त कोवित्ततत्रत
य ज्ञानातीयते भव्यै दुस्तरोपि भवार्णव ।। ३ ।।

Colophon : इत्याचार्य श्री शुभचन्द्रदेवविरचिते ज्ञानार्णवे योगप्रदी-पाधिकार । मोक्षप्रकरण समाप्त । इति श्री ज्ञानार्णवसूत्रस-

पूर्ण। सवत् १९८० वर्षे माघमासे कृष्णपक्षे पचमी तिथौ गुरुवासरे। श्री ज्ञानार्णवम् सपूर्णकृता।

लिखित श्री पट्टणानगरमध्ये। लेपक-पाठकयो चिर जीयात्। श्रीरस्तु शुभ भवतु॥

२६८. ज्ञानार्णव

Opening : देखे—क्र० २६६।

Closing : देखें—क्र० २६६।

Colophon : इत्याचार्य श्री शुभचंद्रविरचिते ज्ञानार्णवे योगप्रदीपाधिकारे मोक्षप्रकरण समाप्तम्। सवत् १८७०।

२६९. ज्ञानार्णव भाषा

Opening : ललितचिन्ह पद कलित निरखत निजसपति।
हरषित मुनिजन होइ घोइ कलिमलगुन जपति॥

Closing : ताके जिनवानी कौ श्रद्धान है प्रमान ज्ञान,
दरसन दान दयावान अवधान है।
ज्ञान ही के कारणतै भाषा भयौ ज्ञान सिधु,
आगम कौ अग यामे ध्यान कौ विधान है॥

Colophon : इति श्री शुभचन्द्राचार्यविरचिते ज्ञानार्णवे योगप्रदीपाधिकारे श्री श्रीमालान्वये वदलियागोत्रे परमपवित्र भईआ श्रीवस्तुपाल सुत श्री ताराचन्द्रस्याभ्यर्थनया पडित श्रीलक्ष्मीचन्द्रेण विहिताभाषेय सुखबोधनार्थम्। सवत् १८६९ शाके १७३४ वैशाखमासे तिथौ ११ बुधवासरे समाप्तम् भवतु, लिखत काशि मध्ये राजमदिर लिखायित लाला वगसुलाल जी पठनार्थ परोपकरणार्थम्। श्रीभगवानार्पणमस्तु। लिखत ब्राह्मण शिवलाल जाति गौड ब्राह्मण।शुभ भूयात्।

२७०. ज्ञानार्णव टीका

Opening : शिवोय वैनतेयश्च स्मरश्चात्मैव कीर्तित'।
आणिमादिगुणनर्घ्यरत्नवार्द्धिर्बुधैर्मतः॥

Closing : ‥ ‥ शुभ कारित गद्याना' गुणवत्त्रिय विनयतो ज्ञानावर्णवस्यातरे विद्यानदि गुरुप्रसादजनितदयादमेय सुखम्।

Colophon : इति श्री ज्ञानार्णवस्य स्थितिगतटीकातत्त्वत्रय प्रकाशिन समाप्ता ।

२७१. कर्मप्रकृति

Opening : प्रक्षीणावरणद्वंतमोहप्रत्यूह कर्मणे ।
अनन्तानन्तधीदृष्टि सुखवीर्यात्मने नम. ॥

Closing : जयन्ति विधुताशेषपापांजन समुच्चया. ।
अनन्तानन्तधी दृष्टिसुखवीर्या जिनेश्वरा· ॥

Colophon : इति कृतिरियमभयचद्र सिद्धान्तचक्रवर्तिन । भद्रमस्तु स्याद्वादश्रामनाय ।

देखें—जि० र० को०, पृ० ७२ ।

२७२. कर्मप्रकृति ग्रंथ

Opening : देखें– क्र० २४५ ।

Closing : देखें—क्र० २४५ ।

Colophon : इति श्री नेमिचदसिद्धान्ति विरचित कर्म्मप्रकृति ग्रथ समाप्तः ॥ सवत् १३६६ का शुभमस्तु ॥

विशेष—यह ग्रथ श्री देवेन्द्र प्रसाद जैन द्वारा दिनाक १३-६-१६१८ को श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा को सादर समर्पित किया गया है ।

देखें—(१) जि० र० को०, पृ० ७१ ।
(2) Catg. of skt & Pkt Ms., page, 632.

२७३. कर्मविपाक

Opening : सिरिवीरजिण वदिय, कम्मविवाग समासओ वुच्छ ।
कीरइ जिराणु हेऊहिं जेण सोमणराकम्म ॥

Closing : गाहगाभयरीए वु दमहत्तरमयाणुसारीए ।
टीगाए णिम्मियाण एगूणा होइ णऊईऊ (ओ) ॥

Colophon : इति श्री कर्मग्रथ सूत्रसमाप्तम् । षष्ट कर्मग्रथ । श्रीरस्तु । सवत् १६६६ शाके १७३१ मिती भादववदि ३ सोमवारे तया विजै

आणदसूरगच्छे लिपि शराज (स्वराज) दिजैमुनि श्री नागपुर मध्ये दिक्षणदेशे ।

देखे, जि र को पृ. ७२, ७३ ।

२७४. कपायजयभावना

Opening : येन कपायचतुष्क ध्वस्त ससारदुःखतरुबीजम् ।
प्रणिपत्य त जिनेन्द्र कपायजयभावना वक्ष्ये ॥

Closnig : यत कषायैरिहजन्मवासे समाप्यते दु खमनन्तपारम् ।
हिताहित प्राप्तविचारदक्षैरत कपाया खलु वर्जनीया. ॥

Colophon : इति कनककीर्तिमुनिना कपायजयभावना प्रयत्नेन भव्यचित्तशुद्धयैविनयेन समासतो रचिता । इति कपायजय चत्वारिंशत् समाप्त । जैन सिद्धान्त भवन, आरा ता १८-१०-२६ ताडपत्रसे उतारा गया ।

२७५. कार्तिकेयानुप्रेक्षा सटीक

Opening : शुभचद्र जिन नत्वानतानतगुणार्णवम् ।
कार्तिकेयानुप्रेक्षायास्टीका वक्ष्ये शुभश्रिये ॥

Closing : लक्ष्मीचद्रगुरु स्वामी शिष्यस्तस्य सुधीयसा ।
वृत्तिर्विस्तारिता तेन श्री शुभेन्दु प्रसादत ॥

Colophon : इति श्री स्वामी कार्तिकेयटीकाया त्रिद्य विद्याधरषट्भाषा कवि चक्रवर्तिभट्टारक श्री शुभचन्द्र विरचिताया धर्मानुप्रेक्षाया-द्वादशमोधिकार समाप्तम् । १२ सपूणम् । रामेपि वेदवस्वेंदु विक्रमार्कगतेपि वैशालिवाहनसाकश्च नागावरमुनिचद्र ।

देखे, —जि० र० को, पृष्ठ ८५ ।
Catg. of skt & pkt Ms., P. 634.

२७६/१. कार्तिकेयानुप्रेक्षा सटीक

Opening : देखे०—क्र०, २७५ ।
Closing : देखे०—क्र०, २७५ ।

Colophon : इति श्री स्वामि कार्तिकेयटीकायां त्रिविद्याधरषट्भाषा कविचक्रवर्ति भट्टारक श्री शुभचन्द्रविरचितायां धर्मानुप्रेक्षायां द्वादशमोधिकार समाप्तम् । सम्पूर्णम् संवत् १८५८ वर्षे शाके १७२३ ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे तिथौ षष्ठी मगलवासरे हिसार पट्टे लोहाचार्याम्नाये काष्ठासंघे पुष्करगणे माथुरगच्छे श्रीमद्भट्टारकत्रिभुवनकीर्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्री क्षेमकीर्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्रीसहसकीर्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्री जगत्कीर्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्री ललितकीर्ति जी तत् भ्राता पंडित आणदराम तच्छिष्य क्षेमचन्द्रेण प्रयागमध्ये लिपि कृतम् । स्वयं पठनार्थम् । शुभमस्तु ।

२७६।२. कार्तिकेयानुप्रेक्षा

Opening : अथ स्वामिकार्तिकेयो मुनीन्द्रोऽनुप्रेक्षा व्याख्यातुकामो ।
मलगालनमंगावाप्तिलक्षण मंगलमाचष्टे ॥

Closing : तिहुयणपहाण सामिं कुमारकाले वि तवियतवयरण ।
वसुपुज्जसुयं मल्लि चरिमतियं संसुवे णिच्च ॥

Colophon : इति स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा समाप्ता । मिती कार्तिगमासे शुभे कृष्णपक्षे तिथि ७ वार सोमवार संवत् १८९० का साल मध्यचीरजीव अमिचन्दगोतसेठी लिखायत चिरजीव श्री चन्द्रेण स्वकीय पठनार्थं वाचपढ ज्यानजथा योग्य वचज्यौ । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ।
यादृशं .... दीयते ।
इद पुस्तक राज्येंद्रकीर्तिमुने पठनार्थं श्रीचन्द्रेणदत्तम् ।

२७७. कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा

Opening : प्रथम रिषभजिन धरम कर, सनमति चरन जिनेश ।
विघनहरन मंगलकरन, भवतम दुरन दिनेश ॥

Closing : जैनधर्म जयवंत जग, जाको मर्म सुपाय ।
वस्तु यथारथ रूपलखि, ध्याये शिवपुर जाय ॥

Colophon : इति श्री स्वामि कार्तिकेयानुप्रेक्षा नाम प्राकृत ग्रंथ की देश भाषामय वचनिका सम्पूर्ण। मिती कार्तिक वदी ५ वार गुरु सम्वत् १६१४ को समाप्त भया। लिखा चदूलाल काएथ (कायस्थ) निज्राय। जौरीलाल अग्रवाल नारायण दास के वेटा ने मोकामी आरे वास्ते सिरी (श्री) असदासके।

२७८. क्रियाकलाप टीका

Opening : जिनेन्द्रमुन्मीलितकर्मवन्ध, प्रणम्य सन्मार्ग कृतस्वरूपम्।
अनतबोधादि भव गुणौघ, क्रियाकलाप प्रकट प्रवक्ष्ये॥

Closing : एतावत्सख्यश्रवाच्छिन्नयदपरिमाण श्रुत पचपद पचभि. पादैरधिक नामानि—११२८३५८००० ।

Colophon : इति श्रीपडित प्रभाचन्द्र विरचितायां क्रिया कलापटीकायां समाप्तम्। सवत् १५७० वर्षे चैत्रवदि ७ शुक्रवासरे। श्र.मूलसघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे श्रीसिहनन्दिनः शिष्यनीवाई विनय श्री लिखायितम्।

देखो, Catg of Skt & Pkt Ms. P 635

२७९. क्रियाकलापभाषा

Opening : समवसरण लछमी सहित, वर्द्धमान जिनराय।
नमो विवुध वदित चरण, भविजन कों सुखदाय॥

Closing : जवलौ धर्म जिनेसर सार।
जगतमाहि वरतै सुखकार॥
तवलौ विस्तर ज्यौ यह ग्रथ।
भविजन सुरसित् दायक पथ॥१६००॥

Colophon : इति श्री क्रियाकोश भाषा मूलत्रेपन क्रिया नै आदि दै भर और ग्रन्थ की शाखका मूलकथन उपरि सम्पूर्णम्।
इति क्रियाकलाप भाषा समाप्तम्।

२८० लघुतत्वार्थसूत्र

Opening : दृष्ट चराचरं येन केवलज्ञानचक्षुषा।
त प्रणम्य महावीर वेदिका त प्रवक्ष्यते॥

Closing : बोधि· समाधि प्रणमामि सिद्धि,
स्वात्मोपलब्धि शिवसौख्यसिद्धि ।
चिंतामणि चिंतितवस्तुदाने,
त्वा विद्यमानस्य ममास्तु देव ॥

Colophon : इति श्री लघुतत्वार्थानि समाप्तम् ।

२८१. लघुतत्वार्थ

Opening देखे, क्र० २८० ।
Closing · देखे, क्र० २८० ।
Colophon इति श्री लघुतत्वार्थानि समाप्तानि ।

२८२. लोकवर्णन

Opening : भवणेसु सत्तकोडी, बावत्तरिलख होंति जिणगेहा ।
भवणामरिंद महिया, भवणसमा ताणि वदामि ॥

Closing ; जवूरविंदूदीवे चरति सीदिं सद च अवसेस ।
लवणे चरति सेसा— — — ॥

Colophono : नही है ।

विशेष—प्रारभ मे गाथा एक से नौ तक मूल है । उसके बाद क्रमाङ्क ३०२ से ३७४ तक पूर्ण है । अन्त मे अधूरी गाथा Closing मे दी हुई है । ग्रन्थ अव्यवस्थित है ।

२८३. लोकविभाग

Opening : लोकालोकविभागज्ञान् भक्त्या स्तुत्वा जिनेश्वरान् ।
व्याख्यास्यामि समासेन लोकतत्वमनेकधा ॥

Closing : पञ्चादशशतान्याहु षट्त्रिंशदधिकानि वै ।
शास्त्रस्य संग्रहस्त्वेद छन्दसानुष्टुभेन च ॥

Colohpon : इति लोकविभागे मोक्षविभागो नामैकादश प्रकरणं समाप्तम् ।
देखे—जि० र० को०, पृ०३३९ ।

२८४. मरणकंडिका

Opening : पणमतिसुरासुरमजुलियरयणव्वकिरणकतिवियरयम् ।।
वीरजिणयजयलणमितुणमणेमिरिद्गातम् ।।१।।

Closing : दयद्अरकराइ दुणह् भावहलोराहि हरहणि १ ।।
जीवइ सोणरइले समेणमरण च सुणण ।।

Colophon : इति मरनकाड सपूर्ण मिती कात्यागवदी ५ बुधवासरे सवत् १८८७ समनलाल ।

२८५. मिथ्यात्व खण्डन

Opening : प्रथम सुमरि अरिहत को, सिद्धन कौ धरि ध्यान ।
सरस्वती सीश नवाइके, वदौ गुरु जुत ध्यान ।।

Closing : महिमा श्री जिनधर्म की, सुनियत अगम अनत ।
जा प्रसादतै होत नर मुक्ति वधू के कत ।।
ग्रन्थ अनूपम रच्यौ यह, दै ग्रन्थनिकी साखि ।
मूरख हाथि न देहु भवि, अधिक जतन सौ राखि ।।

Colophon : इति मिथ्यात्व खडन नाटक सम्पूर्ण । सवत् १६३५ मिती ज्येष्ठ कृष्ण नवमी शनिवारे ।

२८६. मिथ्यात्व खण्डन

Opening : देखे, क्र० २८५ ।

Closing : देखे, क्र० २८५ ।

Colophon : इति मिथ्यात्व खडन नाटक सम्पूर्ण । मिती श्रावण कृष्णे ४ बुधवार सवत् १८७१ लिखी फतेपुर मध्ये ।

२८७. मिथ्यात्व खंडन नाटक

Opening देखें —क्र० २८४ ।

Closing देखें—क्र० २८५ ।

Colophon इति श्री मिथ्यात्व खण्डन नाटक सम्पूर्ण ।

२८८. मोक्षमार्ग प्रकाशक

Opening मंगलमय मंगलकरण वीतराग विज्ञान ।
नमो ताहि जातैं भये अरहन्तादि महान ॥

Closing तुच्छ स्वरूप विर्षे वा जिनधर्म विर्षे वा धर्मात्मा जीवनि विर्षे अतिप्रीति भावनो वात्सल्य है । ऐसे आठ अंग जानने ।

Colophon : नहीं है ।

२८९. मोक्षमार्ग प्रकाशक

Opening देखें—क्र० २८८ ।

Closing · ... ... सो परलोक के अर्थि कैसे, स्मरण करे है किछू विचार होय सकता नाही ।

Colophon . इति श्री मोक्षमार्ग प्रकाशजी स पूर्ण ।

२९०. मृत्यु महोत्सव

Opening मृत्युमार्गेप्रवृत्तस्य वीतरागो ददातु मे ।
समाधि बोधिपाथेयं यावन्मुक्ति पुरीपुर· ॥

Closing : उगणीसे अठारा सुकल पचमि मास असाढ ।
पूरण लखी वाचो सदा मनधारि सम्यक् गाढ ॥

Colophon · इति श्री मृत्यु महोत्सव पाठ वचनिका समाप्ता । लिखत विरामण सियाराम वासी नग्र लिक्षमणगढ का । मिति पौ (प) सुदी २ सवत् १९४४ ।

२९१. मृत्युमहोत्सववचनिका

Opening : कृमिजालशताकीर्णे, जर्जरे देहपंजरे ।
भज्यमानेन भेतव्य यस्त्व ज्ञानविग्रह: ॥

Closing : देखे, क्र० २९० ।

Colophon : इति श्री मृत्युमहोत्सव वचनिका सम्पूर्णम् ।

विशेष—अन्तमे अभिषेक पाठ भी लिखाहुआ है, जो अपूर्ण है ।

२९२. मूलाचार

Opening : मूलगुणे सुविसुद्धे वंदित्ता सव्वसजदे शिरसा ।
इह परलोगहिदत्थे मूलगुणे कित्तइस्सामि ॥

Closing : ... सकललोकालोकस्वभाव श्रीमत्परमेश्वरजिन-पतिमतवितत मतिचिदचित्स्वावचिद्भावसाधितस्वभाव परमाराध्यतम-सैद्धान्तपारावार पारीणाय आचार्य श्री कुन्दकुन्दाचार्याय नम ।

Colophon : इति समाप्तोऽयं ग्रंथ. ।

२९३. मूलाचार प्रदीप

Opening : श्रीमत मुक्ति भर्त्तार, वृषभ वृषनायकम् ।
धर्मतीर्थंकर ज्येष्ठ, वदेनतगुणार्णवम् ॥

Closing : पचषष्ठ्याधिका', श्लोका त्रयस्त्रिशशतप्रमा ।
अस्याचारसुशास्त्रस्य ज्ञेया पिंडीकृता बुधैं ॥

Colophon : नही है ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ५६ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ३५ ।
(३) आ० सू०, पृ० ११३, २०१ ।
(४) रा० सू०, पृ० १६५ ।
(५) Catg. of Skt. & pkt. Ms. P. 681.

२९४. मूलाचार प्रदीप

Opening : देखे, क्र० २९३ ।

Closing : देखे, क्र० २९३ ।

Colophon : इति श्री मूलाचारप्रदीपकाख्ये महाग्रंथे भट्टारक श्री सकल-कीर्तिविरचितेअनुप्रेक्षा परीषहजयद्विवर्णनोनाम द्वादशमोधिकारः । लिखत दयानन्द लेखक पाणी जैनगर का हालवासी जैसिंघपुरामध्ये । मिति वैशाख शुक्लपक्षे तिथौ चतुर्थ्यां रविवासरे संवत् १८७४ का । वाचकानां लेखकानां शुभं भवतु ।

२६५. नवरत्न परीक्षा

Opening : रत्नत्रयाय भुवनत्रयवंदिताय कृत्वा नमः समवलोक्य च रत्नशास्त्रम् ।
रत्नप्रवेशपरमधिकृत्य विमुच्य फल्गुन् संक्षेपमात्र मिति बुद्ध-भटेन दृष्टम् ॥१॥

भुवनविततयाशातप्रकाशीकृतविक्रम. ।
बलो नाम।भवच्छ्रीमानुदानवेंद्रो महाबल ॥२॥

Closing : तत्रपुरगदहनूनुना नगमोक्तिन । मणिशास्त्र महता बुद्धभट-क्षयेणेयमिति वज्रमौक्तिक पद्मराग मरकतेंद्र नीलवैडूर्यकर्केतन पुलक रुधिराख्य स्फटिक विद्रुमाणा । बीजाकर गुणदोष छातमूल्य परीक्षा धारयितुम् । दोषगुणानाम् हानियोग च विस्तारेऽनौबुद्धभटेन निर्दिष्ट ॥

Colophon . इति बुद्धभट्टनाम रत्नशास्त्र समाप्तम् ॥ भद्र भूयादिति स्तौमि अयमपि ग्रन्थ रा०० नेमिराजाख्येन लिखित ॥ माघशुक्ल चतुर्दश्या समाप्तश्च रक्ताक्षि संवत्सर ॥ क्रिस्तशक १९२५-फेबुअरी ॥ मूडबिद्री ॥

२९६. नयचक्र सटीक

Opening : वदौं श्री जिनके वचन, स्याद्वाद नयमूल ।
ताहि सुनत अनभवतही, ह्वै मिथ्यात निरमूल ॥

Closing : तैसो ही कहनौ सोइ अनुपचरित असद्भूत विवहार कहिये । जैसे जीवकौ शरीर ऐसौ कहणौ ।

Colophon : इति पंडित नारायणदासोप् शेन यह हेमराजकृत नयचक्र की सामान्य वचनिका समाप्तम् । श्री मिती पौष सुदी ११ संवत् १९५६ । हस्ताक्षर बलदेव प्रसाद।

२६७. नीतिसार (समयभूषण)

Opening : प्रणम्यन्त्रिजगन्नाथान्निन्द्रा नन्दितसम्पद ।
अनागाराम्प्रवक्ष्यामि नीतिसारसमुच्चयम् ॥१॥

Closing : माघत्प्रात्यर्थिवादिद्विरद घटिघटाटोपवेगपावनोदे ।
वाणी यस्याभिरामामृगपतिपदवी गाहते देवमान्या ॥
श्रीमानिन्द्रनन्दी जगतिविजयता भूरिभावानुभावी ।
दैवज्ञ कुण्डकुन्दप्रभुपदविनय स्वागमाचारचञ्चु ॥११३॥

Colophon : इति श्रीमदिन्द्रनन्द्याचार्य्य विरचितमिद समयभूषण समाप्तम्
॥ शुभ भूयात् ॥

देखे—जि० र० को , पृ० २१६ ।
Catg. of Skt & Pkt Ms., P. 660.

२६८. नीतिसार

Opening : श्रीमद्भलक्ष्मीरमणाय नम ॥ निर्ग्रन्थसमय भूषणम् ॥
देखे, क्र० ४४७ ।

Closing : साद्यन्त सिद्धशान्तिस्तुतिजिनगर्भजनुपोस्तु या द्वैत ॥
निष्क्रमणेयोग्यतं विधिश्रुताद्यपि शिवे शिवान्तर्मपि ॥

Colophon : नही है ।

२६९. न्यायकुमुदचन्द्रोदय

Opneing : सिद्धिप्रद प्रकटिताखिलवस्तुतत्त्वमानदमदिरमशेषगुणैक पात्रम् ।
श्रीमज्जिनेन्द्रमकलकमनतवीर्यं मानम्य लक्षणपद प्रवर
प्रवक्ष्ये ॥१॥

Closing : तत्स पत्तौ च मुमुक्षुजनमोक्षमार्गोपदेशद्वारेण परार्थं
स पत्तये सौचेपहत इति ॥

Colophon . इति श्री भट्टारकाकलङ्कशशाङ्कानुस्मृतप्रवचनप्रवेश' समाप्तः।
इति ग्रन्थ समाप्तः ।

देखे—जि० र० को०, पृ० २१६ ।

३००. पद्मनन्दि पंचविंशतिका

Opening : देखे—क्र० १८४ ।

Closing : युवतिसंगतिवर्जनमष्टक प्रतिमुमुक्षुजन भणित मया ॥
सुरभिरागसमुद्रगता जना कुरुत माक्रुध मत्रमुनौ मयि ॥

Colophon : इति श्री ब्रह्मचर्याष्टकप्रकरण समाप्तम् ॥
इति श्री पद्मनंदिकृता पंचविंशतिका समाप्ता ॥
देखें,--जि० र० को०, पृ० २२८ ।
Catg. of Skt & Pkt. Ms., P 664

३०१. पद्मनंदि पंचविंशतिका

Opening : देखें—क० १८४ ।
Closing : देखें—क० ३०० ।
Colophon : इति श्री ब्रह्मचर्याष्टकप्रकरण समाप्तम् ॥ इति श्री पद्मनंदिकृता पचविंशतिका समाप्ता ॥ २५ ॥ अथ संवत्सरेऽस्मिन् नृपतिविक्रमादित्यराज्ये सवत् १८३६ मितिचैत्र शुक्लनवम्या शनिवासरे इद पुस्तक लिपीकृत पूर्ण जात श्री रस्तु शुभ भूयात् कल्याणमस्तु ॥

३०२. पंचमिथ्यात्व वर्णन

Opening : वदान्त क्षणकत्व च शून्यत्व विनयात्मकम् ।
अज्ञान चेति मिथ्यात्व पचधा वर्तते भुवि ॥
Closing : इत्येव पचधा प्रोक्त मिथ्यादृष्टिभिधानकम् ।
नोपादेयमिद सर्वं मिथ्यात्व विपदोपत ॥
Colophon : इति श्री पचमिथ्यात्व वर्णन सपूर्णम् । सवत् १८०३ वर्षे पोह (पौष) सुदी २ तिथौ बुधवारे श्री दिल्लीमध्ये श्री माथुर गच्छे काष्ठासघे स्वामी जी भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्त्ति जी तस्य भ्रातृयामे श्री जैरामजी तस्य यामे रामचद लिखापितम् । शुभ भवतु ।
परस्परस्य मर्माणि, न भाषन्ते बुधाजना ।
ते नरा च क्षय याति, वल्मीकोदर सर्पवत् ॥

३०३. पञ्चास्तिकाय भाषा

Opening : को नाही प्राप्त हुए है, तिनको सरण हैं । तिनको नमस्कार होउ ।

Closing : .. 'ससार समुद्रको उतरि करि सम ... ..।

Colophon ; अनुपलब्ध।

३०४. पंचास्तिकाय भाषा

Opening : जीर्ण ।

Closing : जीर्ण ।

Colophon · नही है ।

३०५. पंचसंग्रह

Opening : छद्दव्वसवपयत्थे दव्वाइ चउव्विहेण जाणते ।
वन्दित्ता अरहन्ते जीवस्स परूवण वोच्छं ॥ १ ॥

Closing : जाएत्थ अपडिपुणो अत्थो अप्पागमेणरइ उत्ति ।
त खमिऊण बहुसुया पूरऊण परिकहितु ॥ ६ ॥

Colophon एव पचसगह समाप्त' ॥ शुभ भवतलेखकपाठकयो ॥ अथ श्री टवक नगर ॥ सवत् १५२७ वर्षे माघवदि ३ गुरुवासरे श्री मूलसघे सारस्वतगच्छे । भट्टारक श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा ॥ तच्छि-ष्यो मुनि रत्नकीर्तिदेवा ॥

देखें, जि० र० को०, पृ० २२८, २२६ ।
Catg of Skt. & pkt Ms, P. 662.

३०६. परमार्थोपदेश

Opening : नत्वानंदमय शुद्ध परमात्मानमव्ययम् ।
परमार्थोपदेशाख्य ग्रथ वच्मि तदर्थिन. ॥

Closing : येऽत्रैव शमनयमयुक्ताः द्वेषरागमदमोहविमुक्ता ।
सति शुद्धपरमात्मनि रक्ता ते जयतु गतन जिनभक्ता ॥२३॥

Colophon । इति परमार्थोपदेशग्रन्थः भट्टारक श्री ज्ञानभूषण विरचित-समाप्त ।

यह प्रतिलिपि जैन सिद्धान्त भवन, आरा में संग्रहार्थ लिखी

गई । शुभमिती पौषकृष्णा ७ मगलवार विक्रम सवत् १६६२, हस्ताक्षर रोशनलाल जैन ।

देखे--(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६१ ।
(२) जै० ग्र० प्र० स०, प्रस्तावना, पृ० ५१ ।
(३) भ सम्प्र, पृ १४२, १५४, १८३, १६७

३०७ परमात्म प्रकाश

Opening . चिदानंदैकरूपाय जिनाय परमात्मने ।
परमात्मप्रकाशाय, नित्य सिद्धात्मने नम ॥

Closing परम पय गयाण भासवो दिव्वकाउ,
मणसि मुणिवराण मुक्खदो दिव्व जोई ।
विसय सुह रयाण दुल्लहो जोउ लोए,
जयउ सिव सरूवो केवली कोवि बोहो ॥

Colophon इति श्री योगीन्द्रदेव विरचित परमात्मप्रकाश सपूर्णम । सवत् १८२६ वर्षे मिती भादो वदी ११ एकादशी चद्रवासरे लिखित ग्रुमीनीराम मौन पोथी गुन आगर लेखक-पाठकयो शुभ अस्तु कल्याणमस्तु ।

देखे—जि र को, पृ २३७ ।
Catg of Skt & Pkt Ms, P. 665.

३०८ परमात्मप्रकाश वचनिका

Opening · चिदानद चिद्रूप जो, जिन परमातम देव ।
सिद्धरूप सुविशुद्ध जो, नमौ ताहि करि सेव ॥

Closing ऐसा श्री जिन भाषित शासन सुखनिक कैसे करानिकरि। वृद्धि कूं प्राप्त होऊ ।

Colophon . श्री योगिन्द्राचार्यकृत मूल दोहा ब्रह्मदेव कृत सस्कृत टीका दौलतराम कृत भाषा वचनिका सम्पूर्ण भई, सवत् १८६१ ।

३०९ परमात्म वचनिका

Opening : चेतन आनद एक रूप है, कर्मरूपी वैरीको जीते ताते जिन है ।

Closing : और विषै सुखमे जो मग्न है तिनकै इह जोग दुरलभ है।
जैवत प्रवर्तो सेव दुरलभ कोई ग्यान है सो।

Colophon : इति परमात्मप्रकाश समाप्तम्।

३१०. परसमयग्रथ

Opening : श्रूयता धर्मसर्वस्व श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मन प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥

Closing : निश्चेष्टाना वधो राजन् कुत्सितो जगती पते।
क्रतु मध्योपनीताना पशुनामिवराघव.॥१६५॥

Colophon : नही है।

विशेष—विभिन्न पुराणो से संग्रहीत सदाचार विषयक श्लोक हैं।

३११. प्रश्नमाला भाषा

Opening : आगै राजाश्रेणिक गौतम स्वामी तै प्रश्न किये'।

Closing : • ते भव्यात्मा कल्याण के अर्थि सुबुद्धी परभवमे सोभा-
पावेगे ऐसी जानि इस प्रश्नमाला कौ धारन करहु।

Colophon : इति श्री प्रश्नमाला सम्पूर्णम्।
प्रश्नमाला पूरनभई, आदेश्वर गुनगाय।
मग्यक्ति सहित याचित रहो, ज्ञान सुरति मनमाह॥

३१२. प्रबोधसार

Opening : नम श्री वीरनाथाय भव्याभोरुह भास्वते।
सदानद सुधास्यदत् स्वादम वेदनात्मने॥

Closing : सर्वलोकोत्तरत्वाच्च जेष्ठत्व,समर्व भूभृताम्।
महात्वात्म्वर्णवर्णत्वात्वमाद्य इह पुरुष.॥

Colophon इति प्रबोधसार. समाप्त.।

देखें—जि० र० को, पृ० १७३।

३१३. प्रश्नोत्तरोपासकाचार (२४ सर्ग)

Opening : जिनेश वृषभ वदे वृषम वृषनायकम्।
वृषाय भुवनाधीश वृषतीर्थ प्रवर्तकम्॥१॥

Closing : शून्याष्टाष्टद्वया काढ्य स ्ययामुनिनोदित ।
तदत्वे पावनो ग्रंथो यावत्कालातमेव हि ॥ १३४ ॥

Colophon इति श्री प्रश्नोत्तरोपासकाचारे भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति-विरचिते अनुमत्यादि प्रतिमा द्वयप्ररूपको नाम चतुर्विंशतितम. परिच्छेद ॥ २४६ ॥ सवत् १६७० । लिखितमिद मिश्रोपनामक गुलजारीलालशर्मणा ॥ मिती माघ शुद्ध ५ शनौ शुभ भवतु श्लोकसंख्या प्रमाणम् ३३०० ॥ सवत् १८७५ की लिखी हुई प्रति से यह नकल की गई है ।

देखें–(१) दि० जि० र०, पृ० ६३ ।
(२) जि र को., पृ २७८ ।

३१४. प्रश्नोत्तरोपासकाचार

Opening : देखे—क्र० ३१३ ।

Closing : गुणधरमुनिसेव्य, विश्वतत्वप्रदीपम् ।
विगतसकलादेश ... ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

३१५. प्रश्नोतरश्रावकाचार

Opening सेवत जहि सुरईश, वृषनायक वृषदाइ हैं ।
वदौ जिनवृषभेश, रच्यो तीर्थ वृष आदिजिन ॥

Closing : तीनहिसे या ग्रथ के, भए जहानावाद ।
चौथाई जलपथ विषै, वीतराग परमाद ॥

Colophon : इति श्री मन्महाशीलाभरण भूषित जैनी सुनु लाला बुलाकीदास विरचिताया प्रश्नोत्तरोपासकाचारभापायां अनुमत्यादिमप्रतिमाद्वय प्ररूपणो नाम चतुर्विंशतिम प्रभाव ॥ २४ ॥ इति भाषा प्रश्नोत्तर श्रावकाचार ग्रथ सम्पूर्ण । सवत् १८२१ पौष शुक्ल दशमी चद्रवार । पुस्तकमिद रघुनाथ शर्मा ने लिखि । मगलमस्तु ।

३१६. प्रतिक्रमण सूत्र

Opening : इच्छामि पडिक्कमिउ पगामसिज्झाए निगामसिज्झाण उव्वत्तणाण परियत्तणाए आउट्टणाए सारणाए ... ।

Closing : एवमाह आलोइय निंदिय गरहिय दुगथिय ।
तिविहेण पडिक्कतो वदामिणे चौवीस ॥

Colophon : इति यतिना प्रतिक्रमणसूत्र सम्पूर्णम् । श्रीरस्तु ।

देखे—(१) जि० र० को०, पृ० २५९ ।
(2) Catg. of skt. & Pkt. Ms., page, 669.

३१७. प्रवचनपरीक्षा

Opening : त्रिलोकीतिलकायार्हत्पुवराय नमो नमः ।
वाचामगोचराचिन्त्य बहिरभ्यन्तरश्रिये ॥

Closing : परमामृतदानेन प्रीणयद्विवुधान् परम् ।
शरण भक्तिमन्नेमिचन्द्रवज्जिनशासनम् ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

देखे—जि० र० को०, पृ० २७० ।

३१८. प्रवचन प्रवेश

Opening : धर्मतीर्थंकरेभ्योस्तु स्याद्वादिभ्यो नमो नमः ।
वृपभादिमहावीरान्तेभ्य स्वात्मोपलब्धये ॥

Closing : प्रवचन पदान्यभ्यस्यार्था स्तत परिनिष्ठिता-
नसकृदवबुद्धेद्धाद्बोधाद्बुधो हतसशय ।
भगवदकलकाना स्थान सुखेन समाश्रित,
कथयतु शिव पथान व. पदस्य महात्मनाम् ॥

Coophon : इति भट्टाकलकशशाकानुस्मृतप्रवचनप्रवेश समाप्त ।
अयमपि एन नेमिराजाख्येन लिखित । माघशुक्ल त्रयो-
दश्या समाप्त। । दक्षिण कनाडा मूडविद्री १९२५ फेब्रवरी ।

देखे—जि० र० को०, पृ० २७० ।

३१९. प्रवचनसार

Opening : सर्व व्याप्यैकचिद्रूप, स्वरूपाय परमात्मने ।
स्वोपलब्धि. प्रसिद्धाय ज्ञानानदात्मने नम ॥

Closing : इतिगदितिमनीचैस्तत्वमुच्चावच य,
श्चित्तितदपि किलाभूवकल्पमग्नो कृतस्य ।

अनुभुवत्तदुच्चैः विश्विदेवाद्य यस्माद्,
अपरमिह न किंचित् तत्वमेक परचित् ॥

Colophon · इति तत्वदीपिका नाम प्रवचनसारवृत्ति समाप्ता। श्रीरस्तु। सवत् १७०५ वर्षे भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे पौर्णमास्या बुधवासरे अर्गलपुरमध्ये शाह जहान राज्ये लि० श्वेतावर रामविजयेन लिखाप्येद भाडिकाख्यगोत्रणा सघपत्तिना श्री साह श्री जयतीदासेन पुत्र जगतराजयुतेन स्वकीयज्ञानावरणीय कर्मक्षयनिमित्त पडित श्री वीरकायदत्त वाच्यमान श्री चतुर्विधसघपुरत " " पुस्तक जीयात्।

देखें, (१) दि. जि ग्र र, पृ. ६३।
(२) जि. र को, पृ. २७०।
(३) प्र. जै सा., पृ. १७८।
(४) आ. सू, पृ. ६६।
(5) Catg. of skt & pkt. Ms., P. 671.

३२०. प्रवचनसार

Opening : सिद्ध सदन बुधिवदन मदनमदकदनदहन रज,
लवद्विलसन अनत चारु गुनवत सत अज ॥

Closing : प्रवचनसार जी महान, वृदावन छदवद करी।
ताको दुजिप्रत्यहरि आन मनवछित पूरन करी ॥

Colophon : श्री प्रवचनसार जी गाथा २७५ टीका सस्कृत २७५ भाषा छद २८६४। मकरमासे कृष्णपक्षे तिथौ ७ बुधवासरे सवत् १९६६।

३२१. प्रायश्चित्त

Opening : जिनचन्द्र प्रणम्याहमकलक समन्तत।
प्रायश्चित्त प्रवक्ष्यामि श्रावकाणा विशुद्धये ॥

Closing : मद्गुन्त्राणि वज्रेत्वेका पचनिष्कं प्रपूजनम्,
प्रायश्चित्त य करोत्येतदेव जाते दोषे तथा शान्त्यर्थमार्या।
राष्ट्रग्रामौ भूमिपस्यात्मनोपि स्वस्थावस्थित श तनोति ॥

Colopnon : इत्यकलकस्वामि निरूपित प्रायश्चित्त समाप्तम्। मिती वि सवत् १९७६ श्रावण शुक्ला चतुर्थी लिखित जयपुरे प० मूल चन्द्रेण समाप्त प्रायश्चित्तो ग्रथ अकलकविरचित।

(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६४ ।
देखे— (२) जि० र० को०, पृ० २७६ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ १८० ।
(४) रा सू II, पृ १७२ ।
(५) रा सू III, पृ १८६ ।
(६) Catg of Skt & Pkt Ms, P 673

३२२. पुण्य पचीसी

Opening : प्रथम प्रणमि अरिहत बहुरि श्रीसिद्ध नमीजे ।
आचारज उवझाय तासु पदवदन कीजे ।।

Cloing : सत्रह से तेतीसके उत्तम फागुणमास ।
आदि पक्ष नमिभावसो कहै भगोती दास ।।

Colophon . इति पुण्य पचीसी ।

३२३. पुरुषार्थ सिद्धयुपाय

Opening · परमपुरुष निज अर्थ कों साधि भए गुणवृ द ।
आनदामृत्त चद को वदत्त हूँ सुषकद ।।

Closing : अठारह से ऊपरे सवत् सत्ताईस ।
मास मागिमररतिससिर सुदि दोयज रजनीस ।।

Colophon । इति श्री पुरुषार्थसिद्धयुपाय ।

३२४. पुरुषार्थ सिद्धयुपाय

Opening : देखे—क्र० ३२३ ।

Closing । अठारह से ऊपरे सवत् है बीस मास ।
मार्गसिर शिशिर रितु, सुदी है जरनीस ।।

Colophon · इति श्री अमृतचन्द्र सूरि कृत पुरुषार्थसिद्धयुपाय सम्पूर्णम् ।
इद पुस्तक लिखत हरचदराय श्रवक पल्लीवार गोटि गुजरात
कास्यप गोत्र तस्य तनय रामदयाल निविसते कान्यकुब्जे मिति
वैशाखमासे शुक्लपक्षे गुरुवासरे दशम्या सवत् विक्रमादित्ये १९४७ ।।
विशेष—इसके आवरण (कूट) पर एक स्टीकर चिपका हुआ है

जिनदर " पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय दाबू सीरी अमदास " हिन्दी
एव अग्रेजी दोनो भाषाओ मे लिखा हुआ है। जिसका
ग्रन्थ की प्रशस्ति मे कोई सम्बन्ध नही प्रतीत होता, अत.
यह क्या है ? समझना कठिन है।

३२५. रत्नकरण्डश्रावकाचार सूत्री

Opening : नम: श्रीवर्धमानाय निर्धूतकलिलात्मने:।
सालोकानां त्रिलोकानां यद्विद्यादर्पणायते ॥

Closing : सुखयति सुखभूमि. कामिन कामिनीव,
सुतमिव जननी मां शुद्धशीलाभुनक्तु ।
कुलमिव गुणभूषण कन्यका सपुनीतात्,
जिनपतिपदपद्म प्रेक्षिणी दृष्टिलक्ष्मी ॥

Colophon : इति श्री समन्तभद्रस्वामि विरचितोपासकाध्ययने पचम
परिच्छेद: समाप्त:।

देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६५।
जि० र० को०, पृ० ३२६।
प्र० जै० सा०, पृ० २०८।
आ० सू०, पृ० १२०।
रा० सू० II, पृ० १६८।
रा० सू० III, पृ० ३४।
Catg of Skt & Pkt Ms., P 685.

३२६. रत्नकरण्ड श्रावकाचार वचनिका

Opening : इहां इस ग्रन्थ के आदि मे स्याद्वाद विद्याके परमेश्वर परम
निर्ग्रंथ वीतरागी श्री समन्तभद्रस्वामी जगतके भव्यनि के परमोपकार
के अर्थि ।

Closnig : हरि अनीति कुमरण हरो, करो ' ।
मोक्ष निति भूषित करो, शास्त्र जु रत्नकरड ॥

Colophon : इति श्री स्वामी समन्तभद्र विरचित रत्नकरड श्रावकाचार
की देशभाषामय वचनिका समाप्ता। इस प्रकार मूलग्रन्थ के अर्थ
का प्रसादतें अपने हस्त ते लिखा। सवत् १६२६ श्रावण
शुक्ल चतुर्दश्यां शनिवासरे। श्लोक अनुष्टुप १६०० हजार ग्रन्थ
सपूर्ण लिखा।

३२७. रत्नकरण्ड श्रावकाचार वचनिका

Opening : वृषभ आदि जिन सन्मतिसार ।
शारद गुरुकूं नमि सुखकार ॥
मूल समन्तभद्र मुनिराज ।
वृत्ति करी प्रभेन्दु यतिराज ।

Closing टीका रमणी देखिकरि, सस्कृत करि अभिराम ।
कल्पित किंचित् नही लिखी, रची तासकी दाम ॥

Colophon : इति रत्नकरड वचनिका सम्पूर्णम् ।

३२८. रत्नकरण्ड विषम पद

Opening : रत्नकरडक विषमपदव्याख्यान कथ्यते ॥
श्री वर्धमानाय ॥ अतिम तीर्थङ्कराय ॥

Closing : जिनोक्तपदपदार्थप्रेक्षमवेलेति ॥

Colophon : इति रत्नकरडक विषमपदव्याख्यान समाप्तम् ।

विशेष—समत भद्राचार्य के रत्नकरडक के विषम पदो का व्याख्यान है। आचार विषयक होने पर भी पुस्तक की प्रकृति कोशात्मक है।

३२९ रत्नमाला

Opening . सर्वज्ञ सर्ववागीश वीर मारमदायकम् ।
प्रणमामि महामोह-शातये मुक्तिताप्तये ॥

Closing योनित्य पठति श्रीमान् रत्नमालामिमा परा ।
ससुद्धचरणो नून शिवकोटित्वमाप्नुयात् ॥

Colophon . इति रत्नमाला सपूर्णम् ।

विशेष—छपी पुस्तक मे ६७ श्लोक है, जबकि उक्त प्रति मे ६८ हैं।
देखें—जि० र० को०, पृ० ३२७ ।

Catg. of Skt & Pkt. Ms , P 686.

३३०. रत्नमाला

Opening : सर्वज्ञ सर्ववागीश वीर मारमदापह ।
प्रणमामि महामोह शन्तयेम मुक्तताप्तये ॥१॥

Closing : योनित्यम्पठति श्रीमान् रत्नमालामिमा पराम् ।
सशुद्धभावनोनून शिवकोटित्वमाश्नुयात् ॥६७॥

Colophon इति श्री समन्तभद्र स्वामि शिष्यशिव कोटयाचार्य्य विरचिता-रत्नमाला समाप्ता ॥ शुभभूयात् ।

३३१: राजवार्त्तिक

Opening : प्रणम्यसर्वविज्ञानमहास्पदमुसाश्रेय ॥
मिथ्यैतकल्मपचीर वक्ष्ये तत्वार्थवर्त्तिकम् ॥१॥

Closing : प्रत्यक्ष तद्भगवतानर्हतातैश्च माषितम् ॥
गुह्यतेस्तीत्यत प्राज्ञैर्न्नधद्मपरीक्षया ॥३२ ॥

Colophon : इति तत्त्वार्थवार्त्तिके व्याख्यानालकारे दशमो ध्याय ॥ समाप्त ॥

देखे —जि० र० को, पृ० १५६ ।
Catg of Skt & Pkt Ms, P 869

३३२. रूपचन्द्र शतक

Opening : अपनौ पद न विचारहु, अहो जगत के राय ।
भववन ज्ञायकहार हे, शिवपुर सुधि विसराय ॥

Closing : रूपचद सद्गुरुनिकी जतु वलिहारी जाइ ।
आपुनवै सिवपुर गए, भव्यनु पथ दिखाइ ॥

Colophon : इति श्री पाडे रूपचद शतक समाप्तम् ।

३३३. सद्बोध चन्द्रोदय

Opening : यज्जानन्नपि बुद्धिमानपि गुरु शक्तो न वक्तु गिरा,
प्रोक्त चेन्न तथापि चेतसि नृणा सम्मातिचाकाशवत् ।
यत्रस्वानुभवस्थितेपि विरला लक्ष्य लभन्ते चिरात्,
तन्मोक्षैकनिवन्धन विजयते चितत्मत्यङ्गतम् ॥१॥

Closing : तत्वज्ञानसुधार्णव लहरिभिर्दूर समुल्लायन्,
तृच्छायत्र विचित्रचित्तकमले सकोचमुद्रां दधत् ।
सद्विद्याश्रितभव्यकैरवकुले कुर्वन्विकाश श्रिय,
योगीन्द्रोदयभूधरेविजयते सद्बोधचन्द्रोदय. ॥५०॥

Colophon : इति श्री सद्बोधचन्द्रोदय समाप्तम् ।
विशेष—जिनरत्नकोष पृ० ४१२ पर 'पद्नानन्द' कृत सद्बोधचन्द्रोदय का उल्लेख है, जिसमे ६० सस्कृत श्लोक है । किन्तु इसमे मात्र ५० श्लोक हैं ।
देखे—जि० र० को०, पृ० ४१२ ।
Catg. of Skt & pkt, Ms P 700.

३३४. सद्बोध चन्द्रोदय

Opening : देखे—क्र० ३३३ ।
Closing : देखे—क्र० ३३३ ।
Colophon : इति पद्मनन्दिविरचितसद्बोधचन्द्रोदय समाप्त' ।

३३५. सज्जनचित्त बल्लभ

Opening : नत्वा वीरजिन जगत्त्रयगुरु मुक्तिश्रियो वल्लभं,
पुष्पेषु क्षीयनीतबाणनिवह ससारदुखापहम् ।
वक्ष्ये भव्यजनप्रबोधजनन ग्रथ समासादह
नाम्ना सज्जनचितवल्लभमिम शृण्वतु सतो जना ॥

Closing : वृत्तं विंशति ' ' " ससारविच्छित्तये ॥

Colophon : इति सज्जनचित्तवल्लभ समाप्तम् ।
देखे—दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६७ ।
जि० र० को., पृ. ४११ ।
प्र० जै० सा०, पृ० २३० ।
रा० सू० II, पृ० ३६०, ३७३ ३८६ ।
जै. ग्र प्र. स. १ पृ ६१, ७२ ।
Catg. of Skt & Pkt. Ms., P. 700.

३३६. सज्जनचित्त बल्लभ

Opening : यहा प्रथम ही टीकाकार अपने इष्टदेवगुरुशास्त्रदेव कौ नमस्कारूप मगलाचरण करै है ।

Closing · हरगुलाल कहै, जोलौ जगजालदहै ।
और शिवनाही लहै तोलौ तू ही स्वामी हमार है ।।

Colophon . इति सज्जनचित्तवल्लभ नाम ग्रन्थ सपूर्णम् सवत् १९५३ ।

३३७· संबोध पंचास्तिका

Opening : णमिऊण अरूहचरण वदे गुणु मिद्ध तिहुयणे सार ।
आयरियउज्झायाण साहू वदामि तिविहेण ।।

Closing : सावणमासम्मि कया गाहावधेण विरइय सुणह ।
कहिय समुच्चय छपयडिज्जत च सुहवोह ।।५०।।

Colophon : इति सवोध पचास्तिका समाप्तम् ।
देखे,—जि० र० को०, पृ० ४२२ ।
Catg. of Skt & Pkt. Ms., P 704.

३३८. संबोध पंचास्तिका सटीक

Opening : देखे—क्र० ३३७ ।

Closing : अस्या सवोधपचासिकाया वहवो अर्थों भवति परन्तु मया सपेक्षार्थे कथिता: च पुन. सुख स्वात्मोत्पन्नसुख बोधि प्राप्त्यर्थं मया कृता ।

Colophn : इति सवोधपचासिका धर्माविकाशिकशास्त्र समाप्तम् । श्री गौतमस्वामीविरचित शास्त्र समाप्तम् । सम्वत् १७९३ वर्षे शाके १६५८ प्रवर्तमाने कार्तिकमासे कृष्णपक्षे षष्ठी तिथौ ।

शुभमिती पौपकृष्णा ७ मंगलवार श्रीवीर सवत् २४६२ वि० स० १९९२ के दिन यह प्रतिलिपि लिखकर तैयार हुई । ह० रोशनलाल जैन ।

३३९. समयसार (आत्मख्याति टीका)

Opening : नम समयसाराय स्वानुभूत्या चकाशते ।
चित्स्वभावायभावाय सर्वभावातरच्छिदे ।।

Closing : स्वशक्तिससूचितवस्तुतत्वै., व्याख्याकृतेय समयस्य शब्दै ।
स्वरूपगुप्तस्य न किंचिदस्ति, कर्त्तव्यमेवामृतचन्द्रसूरि ।।

Colophon : इति समयसारव्याख्यायामात्मख्यातिनाम्नी वृत्ति· समाप्ता ।
समाप्तश्चसमयसारव्याख्याव्यास. । श्रीरस्तु लेखकपाठकयो: मगलमस्तु । ओंकाराय नमो नम । परमात्मविनाशिने नमोनम । ओ नम सिद्धाय ।

देखे—दि जि ग्र र, पृ. ६९ ।
जि र. को, पृ. ४१८ ।
प्र. जै सा., पृ २३५ ।
आ सू पृ. १३५ ।
रा. सू. II, पृ. १८६, ३८६ ।
र सू III, पृ ४३ ।
Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 703.

३४०. समयसार (आत्मख्याति टीका)

Opening : देखें—क्र० ३३९ ।

Closing : देखे—क्र० ३३९ ।

Colophon : इत्यात्मख्यातिनामा समयसार व्याख्या समाप्ता ।
विशेष—यह ग्रन्थ करीब १९०० विक्रम सवत् का है ।

३४१. समयसार सटीक

Opening : देखे—क्र० ३३९ ।

Closing : अनुपलब्ध ।

३४२. समयसार नाटक

Opening : करम भरम जगतिमिर हरन खगतुरग लखन पगशिव-
मगदरसी ।
निरखत नयन भविक जल वरषत हरषत अमितभविक-
जन सरसी ।।

Closing : समैसार आतमदरव, नाटकभाव अनत ।
मोहै आगम नामपै, परमारथ विरतत ॥

Colophon : इति श्री परमागम समैसार (समयसार) नाटकनाम सिद्धान्त सम्पूर्ण ।

सवत् १७३५ वर्षे माघसुदि ८ वृहस्पतिवारे साहिजहानाबाद-मध्ये पातिसाह श्री अवरगजेबराज्ये । श्रीमालज्ञाति शृ गार ।

अज्ञानभावान्मतिविभ्रमाद्वा, यदर्थहीन लिखत मयात्र ।
तत्सर्व्वमार्यपरिशोधनाय, कोप न कुर्यात खलु लेखकस्य ॥

३४३. समयसार नाटक

Opening : देखे— क्र० ३४२ ।

Closing : देखे—क्र० ३४२ ।

Colophon : इति श्री परमागम नाटक समयसार सिद्धान्त सम्पूर्णम्। लिखत प्रयागमध्ये । सवत् १८२८ वर्षे मिति श्रावण सुदि १२ तिथौ ज्ञवासरे लिखत शुभवेलाया लेखक पाठक चिरजीव आयु । श्रीरस्तु ।

ओसवाल ज्ञातीय वैणी प्रसाद जी पुस्तक लिखाया प्रयाग मध्ये स० १८२८ वर्षे लिखत श्री ।

३४४. समयसार नाटक

Opening : देखे—क्रम ३४२ ।

Closing : देखे—क्र० ३४२ ।

Colophon : इति श्री परमागम समयसार नाटकनाम सिद्धान्त सपूर्णम् । मिति अग्रहण शुक्ल प्रतिपदा बुधवासरे तृतीये प्रहरे पूर्ण किया ।

३४५. समयसार नाटक

Opening : देखे०—क्र०, ३४२ ।

Closing देखे०—क्र०, ३४२ ।

Colophon . सर्वत् १७४५ फागुन वदि १० शनिवार को पूरन भया ।

३४६. समयसार नाटक सार्थ

Opening : देखे, क्र० ३४२ ।

Closing : देखे, क्र० ३४२ ।

Colophon : इति श्री परमागम समयसार सिद्धान्त नाटक समाप्त ।

३४७. समयसार नाटक

Opening : देखें, क्र० ३४२ ।

Closing : .. बानी लीन भयो जगमो ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

३४८. समयसार नाटक

Opening : देखें, क्र० ३४२ ।

Closing : देखें, क्र० ३४२ ।

Colophono : इति श्री परमागम समयसार नाटक नाम सिद्धान्त समाप्तम् । श्लोकसख्या १७०७ । सन् १८८६ मिती माघ शुक्ल ४ वार रविवार के सपूरन भया । दसखत दुरगाप्रसाद आरेमध्ये महाजन टोली मे ।

३४९. समयसार नाटक

Opening : देखें, क्र० ३४२ ।

Closing : देखें, क्र० ३४२ ।

Colohpon : इति श्री नाटक समयसार सम्पूर्ण । सवत् १८६२ । वैशाख मास कृष्णपक्ष तिथि सातै (सप्तमी) शनिवार दिन गौरीशकर अग्रवाल जैन धर्म प्रतिपालक · लिखी पठनार्थं जैनधरम पालनहार श्री मगल ददातु ।

३५०. समयसार नाटक

Opening : देखे, क्र० ३४२ ।

Closing ; देखे क्र० ३४२ ।

Colophon ; इति श्री समयसार नाटक सिद्धान्त समाप्तः । सवत् १७२५ अ सु १० म. ।

३५१. समयसार नाटक

Opening : ' दलन नरकपद क्षयकरन, अतट भव जलतरन ।
बरसबल मदन बनहर दहन, जय जय परम अभय करन ॥

Closing : देखे क्र. ३४२ ।

Colophon । इति श्री परमागम समैसार नाटक नाम सिद्धान्त बनारसीदासकृतम् । लिखित नित्यानदब्राह्मणेन लिखायत श्रावग जीवसुखराम उभयोमगल ददातु । सवत् १८७६ वर्षे भाद्रपद शुक्ला ५ बुधवासरे समाप्ता. । शुभ भूयात् ।

३५२. सम्यक कौमुदी

Opening : श्री वर्द्धमानस्य जिनदेव जगद्गुरुम् ।
वक्षेह कौमुदी नृणा सम्यक्तगुण हेतवे ॥ १ ॥

Closing । अर्हद्दासेन राजा हृष्टस्तस्य पुण्य कृता प्रशसनश्च ॥

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ७१ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ४२४ ।
(३) प्र जै सा, पृ २३६ ।
(४) रा० सू०, पृ० १३२, १३३ ।
(५) रा० सू० III, पृ० ८१ ।

३५३. समाधिमरण

Opening : अग अपने इष्टदेव कौ नमस्कार करि अतिम समाधिमरण ताका सरूप वरनन करिए है । सो हे भव्य तुम सुणौ । सोही अब लक्षण वरणन करिहै । सो समाधिनाम नि कषाय का है शाति प्रणामो (परिणामो) का है ।

Closing : ताका सुख की महिमा वचन अगोचर है ।

Colophon · इति श्री समाधिमरण सरूप सम्पूर्णम् । सवत् १८६२ आसोज सुदि ५ गुरुवारे लिखत महात्मा ब्रकसराम सवाई जयपुर मध्ये । श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय ।

३५४. समाधितन्त्र

Opening : जिनान् प्रणम्याखिलकर्ममुक्तान् गुरुन् यदाचारपरान् तथैव ।
समाधितन्त्रस्य करोमि बालाविवोधन भव्यविबोधनाय ॥

Closing : · इण ही आठ प्रकार का पृथक्-२ जघन्य अतरा-समय १ जाणिवा ।

Colophon · इति ममाधितत्रसूत्र बालबोध समाप्ता । ग्रन्थसख्या ४८००, सवत् १८७४ शाके १७३९ । आषाढ शुक्ल १ रवि पुस्तकरघुनाथ-शर्मणा लेषि पाठार्थं रत्नचदस्य । शुभ भूयात् ।

देखे, जि० र० को०, पृ० ४२१ ।

Catg. of Skt. & pkt Ms, P. 703.

३५५. समाधितन्त्र सटीक

Opneing : जिनान् प्रणम्याखिल कर्ममुक्तान् गुरुन् सदाचार
परात् तथैव ।
समाधितत्रस्य करोमि बालावबोधन . भव्य
विवोधनाय ॥

Closing : · अर्घोदय सुकृतधी कृत्त वा समाधौ ॥

Colophon : बालबोध समाधितत्रसूत्रे भव्यप्रबोधनाधिकारे आत्मर-सप्रकाशे धर्माधिकार सम्पूर्णम् । सवत् १७८८ प्रवर्तमाने फागुण (फाल्गुन) वदी ११ तिथौ मुनि फत्तेसागरेण लिपि चक्रे ।

३५६. समाधितन्त्र

Opening : देखें—क्र० ३५४ ।

Closing : देखे—क्र० ३५४ ।

Colophon · नही है ।

३५७. समाधितन्त्र वचनिका

Opening इहाँ संस्कृत मे प्रवीण नाही अर अर्थ सीखने के रोचक ऐसे केतेकसुबुद्धी मूलग्रथ का प्रयोजन ।

Closing : औरनितूँ भी मेरी सोधिवे निमित्त प्रार्थना है सो देखि सोधि लीजियो ।

Colophon : इति समाधितंत्र वचनिका माणिकचंद कृत संपूर्णम् । संवत् १९३८ का मिती माघ शुक्ल पडिवा शुक्रवार ।

३५८. समाधिशतक

Opening : येनात्मावुद्धात्मैव परत्वेनैवचापरं ॥
अक्षयानंतवोधाय तस्मै सिद्धात्मने नम ॥१॥

Closing : ज्योतिर्मय सुखमुपैति परात्मतिष्ट ॥
स्तन्मार्गमेतदधिगम्यसमाधितंत्रम् ॥ १०५ ॥

Colophon : इति श्री समाधिशतक समाप्तम् ॥ शुभमस्तु सिद्धिरस्तु । संवत् १८१४ । आश्विनकृष्ण ७ गुरुवासरे पुस्तकदमिदं संपूर्णम् ॥

देखे—जि० र० को०, पृ०४२१

३५९. सम्मेदशिखर महात्म्य

Opening : पंच परमगुरु को नमो दोकर सीस नवाय ।
श्रीजिन भाषित भारती, ताको लागो पाय ॥

Closing : रेवा सहर मनोग, वसैं श्रावग भव्य सव ।
आदित्य ऐश्वर्य योग, तृतीय पहर पूरन भयौ ॥

Colophon : इति श्री संमेदशिखरमहात्मे लोहाचार्यानुसारेण भट्टारक श्री जगत्कीर्ति छप्पय लालचंद विरचिते सुवरकूटवर्णनो नाम एकविंशतिम सर्ग. ॥२१॥ समाप्त भया । इति श्री सवेदशिखर महात्म जी सपूर्णम् । लिखित गु ॱचंद अगरवाले जैनी कानसीलगोत्रस्य पुत्र

३५६ बाबू मुन्नीलाल जीके। श्लोक ॥ १२६० ॥ मिति जेठ वदी ५ रोज सनीचर। संवत् १६३३ साल के सपूर्ण भया। पत्र चौतीस।

३६०. सप्तपंचास दास्त्रविका

Opening : अभिवन्द्य जिनान् वीरान् सज्ञानादि गुणात्मकान्।
कर्णाटभाषाया वक्ष्ये जकामास्रव सन्मते ॥

Closing : ध्यानमुम मेण्नगे दिसदुदयें गेय्यलिकर कृतपराध क्षतुमर्हंति सतः।

Colophon : मन्मथ नाम संवत्सरद श्रावग बहुल विदिगे बुधवारदल्लु मगलम्।

३६१. सत्वत्रिभगी

Opening : पणमीय सुरेंद्रपूजिय पयकमल वड्ढमाडममलगुणं।
पचासतावण वोच्छेह सुणुह भवियजणा ॥१॥

Closing : पचासवेहिं विरमणं पचिंदिय णिगहोकसायजया ॥
तिहिं दडेहिं यविरदिस तारस संयमा भणियो ॥
तिथयरातपि यराहट्ठधर चकायअधकाय ॥
देवायभोगभूमिआहारा अत्थिणत्थिणिहारा ॥ १६४ ॥

Colophon : इत्यास्रवबधउदयोदीरसत्वत्रिभगीमूल समाप्तः उड्डुपुर प्रात दुर्ग ग्रामस्थ रामकृष्ण शास्त्रि तनयेन रगनाथ भट्टारव्येन लिखित्वा परिधाविवत्सरे वैशाख मासी शुक्लपक्षे पौर्णिम्या समापितस्यास्य ग्रथस्य शुभमस्तु।

३६२. सत्यशासन परीक्षा

Opening : विद्यानन्दाधिप स्वामी विद्वद्देवो जिनेश्वर।
यो लोकैकहितस्तस्मै नमस्तात्स्वात्मलब्धये ॥

Closing : तदेवमनेकवाधवसद्भावात् भादृप्राभाकरैरिष्टम्। भद्र भूयात्।

Colophon : नहीं है।

देखे—जि० र० को, पृ० ४१२।

३६३. सत्यशासन परीक्षा

Opening : देखे—क्र० ३६२ ।

Colophon : यतो युगपद्भिन्नदेशस्वाधारवृतित्वे सत्येकत्व तस्थासिद्ध-स्त्वाधारावृत्तित्वेसत्येकत्व तस्य सिद्धयत्स्वाधारातरालेस्तित्व साधयेदिति तदेवमनेकवाधकसद्भावाद्भातृप्राभाकरैरिष्टम् ।।

३६४. सागारधर्मामृत (स्वोपज्ञटीका)

Opening : श्री वर्द्धमाननमाम्य मदबुद्धि प्रबुद्धये ।
धर्मामृतोक्त सागार धर्मटीका करोम्यहम् ।।

Closing : यावत्तिप्टशासन जिनपते छिदानमतस्तमो,
यावच्चार्कनिशाकरौ प्रकुरुत पुसा दृशामुत्सव ।
तावत्तिष्ठतु धर्मस्तरिभिरिय व्याख्यायमाना निश,
भव्याना पुग्तोत्रदेशविरता वार प्रवोधोद्धुर ।।

Colophon : इत्याशाधर विरचिता स्वोपज्ञधर्मामृतसागारधर्मटीकाया भव्य-कुमुदचद्रिका नाम्नी समाप्ता ।

अनुपस्या दसापचशतायाणिसता मता सहस्त्राण्यस्य चत्वारि ग्रथस्य प्रमिति किल । मिति मार्गशिर (शीर्ष) कृष्णा ४ रविवासरे लिखत रामगोपाल ब्राह्मण वासी मौजपुरमध्ये अलवर का राजमैं ।

देखे– जि० र० को०, पृ० १६५ ।

Catg. of skt. & pkt. Ms., P. 707.

३६५. सामायिक

Opening : पडिक्कमामि भते । इरियां वहियाए विराहणाए अणागुत्ते ॰ ॰॰ ।

Closing : गुरव पातु नो नित्य ज्ञातदर्शननायका॰ ।
चारित्रार्णवगभीरा मोक्षमार्गोपदेशका ।।

Colophon : इति सामयिक सपूर्णम् ।

३६६. सामायिक

Opening : सिद्धश्चाष्ट गुणान्भक्त्या सिद्धान् प्रमणमत सदा ।
सिद्धकार्या. शिव प्राप्ता. सिद्धि ददतु नोहिते ।।

Closing : एव सामयिक सम्यक् सामायिकमखण्डितम् ।
वर्तता मुक्तिमानेन वसीभूतमिद मम ।। १२ ।।

Colophon : इति श्रीलघु सामायिक समाप्तम् ।

३६७. सामायिक

Opening : सिद्धिवस्तुवचोभक्त्या सिद्धान् प्रणमते सदा ।
सिद्धिकार्यासिवप्रेदा सिद्ध दधतु नोव्ययम् ।।

Closing : • भो सामायक मुक्ति वधू के वसीभूत ऐसे तुम्हारे अर्थ हमारा नमस्कार होहु ।

Colophon : इति सामायक सम्पूर्णम् ।

३६८. सामायिक

Opening : अर्हन्त भगवान की वाणी की भक्ति करि सदाकाल सिद्धभगवान कूं नमस्कार करते ।

Closing : जलयी वाकी सख्या । वाजित्र वजासुन वाकी सख्या ।
दशोदिशा की सख्या ।

Colophon : इति सामायिक सम्पूर्णम् ।

३६९. सामायिक वचनिका

Opening : आदि रिषभ सनमति चरम, तीर्थंकर चउवीस ।
सिद्ध सूरि उवझाय मुनि, नमूं धारिकरि शीश ।।

Closing : ऐसैं सामायिक पठ्यो सारजानि मुनि वृंद ।
धर्मराज मति अल्प फुनि भाषामय जयचद ।।

Colophon : इति सामायिक वचनिका सम्पूर्णम् । लिखितमिद [पुस्तक श्रावक नो (मप) नन्नाभिण । पुत्र नाम्हे रामजी चौदूका का सवाई जयपुर मे मिति आषा. सुदी १० संवत् १८७० का ।

२७०. सामायिक वचनिका

Opening : देखें—नं० ३६६ ।

Closing : देखें—नं० ३६६ ।

Colophon : इति सामायिक वचनिका सम्पूर्णम् ।

२७१. शासन प्रभावना

Opening : निबद्धपुरुषसगनकल्याननार परापरगुरून् शास्त्राणिपूर्वाचा-नविरचितग्रथाः उपदेशा गुर्वानुक्रमस्य प्रकाशका व्यवहारः कर्मप्रयोग जिनप्रतिष्ठाया शास्त्राणि सोपकरणच व्यवहारश्च तेषा दृष्टिः सम्यक् प्रतिपालितया ।

Closing : प्रहरा नहींदरणवजिनेन्द्रप्रमाणशास्त्र जैनेन्द्रव्याकरण च पठित महावीरान् जयधर्मनाममालवाधिपति पण्डितदेवचद्रादीन् श्लोके-नोपरतुन यांडीप्रविशालकीर्त्यादय उदयति स्म बालसरस्वतीमहाक विमदनादय सद्गुरुविदाधेयुमध्ये भट्टारक विनयचद्रादय अर्हत्प्रवचन मोक्षमार्गे स्वयकृतनिबधेन स्फुट प्रतिभाग सिद्धिशब्दोकचिद्दुमर्गप्रातेषु यस्य तत् जिनागमनिर्यासभूत आराधनासारभूपालचतुर्विशतिस्तवना-द्यर्थं प्रतिष्ठाचार्यं सर्वधिन वसुनदिसैद्धांत्याद्याचार्यविरचितानि स्पष्टी-कृत्य पञ्चकल्याणा (का) दिविधानकथनात् शासनप्रभावना अभ्यर्चनम् ।

२७२. शास्त्र-सार-समुच्चय -

Opening : श्री विबुधवधजिनरकेवलिचित्सुखदसिद्धपरमेष्ठिगलम् ।
भावजजयमावुगल भविसिपोईवपटुपडवेनक्षयसुखमम् ॥ १ ॥

Closing : अनुपलब्ध ।

देखें—जि० र० को०, पृ० ३८३ ।

३७३. सिद्धान्तागमप्रशस्ति

Opening : सिद्धमणतमणिदिय मणुवममप्पुत्थ सोक्खमणवज्ज।
केवल पहोह णिज्जियदुण्णय तिमिर जिण णमह ॥१॥

Closing : सर्वज्ञ प्रतिपादितार्थ गणभृत्सूत्रानुटीकामिमा।
यभ्यर्च्यन्ति बहुश्रुता श्रुतगुरु मपूज्य वीर प्रभु ॥
ते नित्योज्वल पद्मसेन परम श्री देवसेनार्चिता।
भासन्ते रविचद्र भासिसुतप श्री पाल सत्यकीर्तिय ॥३६॥

Colophon : These two Prashastees of Shri धवल सिद्धान्त and जयधवल सिद्धान्त are personally Copied from श्री सिद्धान्त शास्त्र at गुरुवस्ति in moodbidri for the sake of the, Central Jain Oriental Library alias श्री सिद्धान्त भवन at Arrah, on the 30 th August 1912 at 10.30 am. to 12 30 am

By the most humble
जिनवाणी सेवक
तात्या नेमिनाथ पॉंगल
वार्शी–टौन

३७४. सिद्धान्तसार

Opening : जीवगुणट्ठाणसण्णापज्जत्ती पाणमग्गणणवूणे ॥
सिद्धंतसारमिणमो भजामि सिद्धं णमूसित्ता ॥ १ ॥

Closing : सिद्न्तसारवरसुत्तगुत्ता साहुतु साहू मयमोहचत्ता।
पूरतु हीण जिणणाहभत्ता वीरायचित्तासीवमग्ग जुत्ता ॥ ॥

Colophono ; सिद्धान्त सारसमाप्त.। श्रीवर्धमानाय नम.। हुयेन जिनेन्द्रदेवाचार्यनिन्दगता ॥

— सपूर्ण —

देखे—जि० र० को०, पृ० ४४० ।
Catg. of Skt. & pkt Ms., P. 709.
Catg. of Skt & Pkt. Ms., P. 312

३७५. सिद्धान्तसार दीपक

Opening : श्रीमंत त्रिजगन्नाथ नमस्कृत्य जिनेश्वरम् ।
सर्वलोकोपकाराय वक्ष्ये सिद्धान्त दीपकम् ॥ १ ॥

Closing : ग्रंथेऽस्मिन् पञ्चसर्गानुष्ठानज्योतिर्भिस्ता ।
षोडशाश्च कुर्वंतु वा सिद्धान्तसार शान्तिः ॥ ११६ ।

Colohpon : इति श्री सिद्धान्तसारदीपक महाग्रन्थः सम्पूर्ण समाप्तम् । शुभ-
संवत्सरे संवत् १८३० वर्षे मार्गशीर्षमासे कृष्णपक्षे ।
देखे—जि० र० को., पृ. ४४० ।

Catg. of Skt & Pkt. Ms., P 702.
Catg. of Skt. & Pkt Ms, P 320.

३७६. सिद्धान्तसार दीपक

Opening : नहीं है ।
Closing : नहीं है ।

३७७. सिद्धिविनिश्चय टीका

Opening : भास्वत जिनमन्त्रया गुर्व्वी सरस्वतीम् ।
नत्वा टीका प्रवक्ष्यामि शुभ्र सिद्धि विनिश्चये ॥

Closing : यत् एव तस्मात् नैरात्म्य सालम्बन्यत्व बहिरन्तर्वा इत्येव प्रनयता इत्यादिना सम्बन्धः स्याद्वादमन्तरेण तदप्रतिपत्ते इतिभाव ।

Colophon : इति श्री रविभद्रपादोपजीवि अनन्तवीर्य विरचिताया सिद्धि-विनिश्चय टीकाया प्रत्यक्षसिद्धि. प्रथम प्रस्ताव ।
देखे—जि० र० को, पृ० ४४१ ।

३७८. श्लोकवार्तिक

Opening : श्री वर्द्धमानमाध्याय घाति सघातघातनम् ।
विद्यास्पद प्रवक्ष्यामि तत्वार्थश्लोकवार्त्तिकम् ॥

Closing : अनुपलब्ध ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

देखे—जि र को, पृ १५६ ।
Catg. of Skt & Pkt Ms, P 698.

३७६. श्रावक प्रतिक्रमण

Opening :
जीवे प्रमादजनिता· प्रचुराप्तदोषा,
यस्मात्प्रतिक्रमणत प्रलय प्रयान्ति ।
तस्मात्तदर्थममल मुनिबोधनार्थम्,
वक्ष्ये विचित्रभवकर्मविशोधनार्थम् ॥

Closing :
अरकर पयथ हीन मत्ता हीन च जमए भाणिय ।
त खु मउणाणदेवयमपभविदु खु खु वदितु ॥

Colophon : इति श्रावक प्रतिक्रमण सम्पूर्णम् ।

३८०. श्रावकाचार

Opening :
प्रणम्य त्रिजगत्कीर्ति जिनेन्द्र गुणभूषणम् ।
सक्षेणैव सवक्ष्ये धर्म सागारगोचरम् ॥

Closing ;
श्रीमद्वीरजिनेशपादकमले चेत षड्ंघ्रि सदा,
हेयादेयविचारबोधनिपुणा बुद्धिश्च यस्यात्मनि ।
दान श्रीकरकुड्मलेगुणततिर्देहोशिरस्युन्नती,
रत्नाना त्रितय हृदि स्थितमसौ नेमिश्चिर नदतु ॥

Colophon : इति श्रीमद्गुण भूषणाचार्य विरचितेभव्यजनवल्लभाभिदान श्रावकाचारो साधुनेमिदेवनामाङ्किते सम्यक्त्वचारित्रवर्णनम् तृतीयोद्देशसमाप्त । ग० रत्नेन लिखितम् । श्री सवत् १५२६ वर्षे चैत्र-सुदी ५ शनिदिने ।

जैनसिद्धान्त भवन, आरा मे रोशनलाल लेखक द्वारा लिखी । शुभ सवत् १६६२ वर्षे आषाढ शुक्ला १५ मगलवासरे ।

देखे—दि० जि० ग्र० र०, पृ० ४२, ७७ ।
रा० सू० III, पृ० ३६ ।

३८१. श्रावकाचार

Opening : श्रीमज्जिनेन्द्रचन्द्रस्य सान्द्रवाक्चन्द्रिकागिनाम् ॥
हृदीकदुष्टकर्माष्टघर्मसंतापनश्रमम् ॥१॥
दुराचारचयाक्रान्त दु ख स दोह हानये ॥
श्रावकाचार सारभूति सुखप्रदम् ॥२॥

Closing : जीवन्त मृतक मन्ये देहिन धर्मवर्जितम् ॥
मतो धर्मेण संयुक्तो दीर्घजीवी भविष्यति ॥१०१॥
शरीरमडन शील स्वर्णरत्नादयह ततो. ॥
रागोवक्तस्य ताम्बूल सत्येनैवोज्वल मुखम् ॥१०२॥

Colophon : इति श्री पूज्यपाद स्वामि विरचित श्रावकाचार समाप्त ॥
शुभभवतु स १६७६ भादो वदी ३ लिखित पं० मूलचन्द्रेण जयपुरे ।
देखें—जि र को, पृ ३९५ । (X)
Catg of Skt & Pkt Ms., P. 696.

३८२. श्रावकाचार

Opening : राजत केवलज्ञान जुत, परमौदारिक काय ।
निरखि छवि भवि छकत है, पीरन सहज सुभाय ॥

Closing : असैं ताका वचन के अनुसारि देवगुरुधर्म का श्रद्धान करै ।
इति कुदेवादिक का वर्णन सपूर्ण ।

Colophon इति श्री श्रावकाचार ग्रथ समाप्त । श्रीरस्तु लेखकपाठक-
यो लिपि कृत पडित शिवलाल नगर मालपुरा मध्ये मिति आषाढ
वदी ३ भूमि (भौम) वासरे पूर्णीकृत सम्वत् १८८८ का ।

३८३. श्रावकाचार

Opening : देखे—क्र० ३८२ ।

Closing : सर्वज्ञ वीतराग का वचन ताते तू अगीकार कर
और ताके अनुसार देव गुरु धर्म का सरूप अगीकार कर श्रद्धान कर ।

Colophon : इति कुदेवादिक का वर्णन पूर्ण । इति श्री श्रावकाचार
ग्रन्थ पूर्ण । स वत् १८५६ फाल्गुन शुक्ल अष्टमी ।

३८४. श्रुतस्कन्ध

Opening : वूढलियलालहूर माणुस जम्मस्स थाणियदिन्न ।
जीवा जेहिं णाणाया ना कुण णारकिया जेहिं ॥

Closing : जो पढइ सुणइ गाहा, अथ (अत्थ) जाणेइ कुणइ सद्दहण ।
आसण्णभव्वजीवो सो पावइ परम णिव्वाण ॥
इति ब्रह्महेमचन्द्र विरचित श्रुत स्कंध समाप्तम् । श्रीरस्तु । शुभमस्तु ।

देखे—जि० र० को०, पृ० ३११ ।
Catg. of Skt. & pkt. Ms , P. 697.

३८५. श्रुसागरी टीका

Opening : अथ श्रुतसागरी टीका तत्त्वार्थसूत्रस्यद शाध्यायस्य प्रारम्यते ॥
सिद्धोमास्वामिपूज्य जिनवरवृषभ वीरमुत्तीरमाप्त
श्रीमत पूज्यपाद गुणनिधिमधियन्सत्प्रभाचन्द्रमिदुः ॥
श्री विद्यानदधीशगतम लमकल कार्यम नम्यरम्यम्
वक्ष्ये तत्त्वार्थवृत्ति निजविभवतयार्हश्रुतादन्वदाख्य ॥१॥

Closing : श्रीवर्द्धमानमकलकसमतभद्र. श्रीपूज्यपादसदुमापति
पूज्यपादम् ॥
विधा दिनदि गुणरत्नमुनीन्द्रसत्य भक्त्या नमामि
परित श्रुतसागराद्यै ॥१॥

Colophon : इत्यनवधगधपधविद्याकविनोदनोदितप्रमोदरीयूष.रसपान विन-मतिसमासरल राज मतिसागर यतिराज राजितार्थनसमर्थन तर्कव्याकरण छदोलकारसाहित्यादिशास्त्र निशितमतिना यतिनादेवेन्द्र कीर्त्ति भट्टारक-प्रशिष्येण सकलविद्वज्जनविहितचरणसेवस्य श्री विधानदिदेवस्य सघा-यितंमिथ्यामत ? देण श्रुतसागरेण सूरिणा विरचिताया श्लोकवार्त्तिक राजवार्त्तिक सर्वासिद्धि न्याय कुमुदचन्द्रोदय प्रमेयकमलमार्कण्ड प्रचण्डाप्रर्वसहररीषृमुख ग्रन्थ सदर्भ निर्मरावलोकनवृद्धिविराजिता तत्त्वार्थटीकाया दशमो ऽध्याय ॥ इति तत्वार्थस्य श्रुतसागरी टीका समाप्ता चक्षुपत्कमिते वर्षे द्विसने माशते माघेवदि पक्षे पचम्या संवत्सरे ॥१॥
सहारणपुरे मध्ये लिषित मदबुद्धिना ।
भव्याना पठनार्थाय सीयारामकर शुभम् ॥२॥

देखे—जि० र० को०, पृ० १५६ (१५) ।

३८६. सुदृष्टि तरंगिणी

Opening : · · जानियैं ।
मनवचनतनत्रय सुद्धकरिकै सदा तिनहि प्रनामियैं ॥

Closing : सवत् अष्टादश शतक, फिर ऊपरि अडतीस ।
सावन सुदि एकादशी, अर्धनिश पूरणकीन ॥

Colophon : इति श्री सुदृष्टि तरगिणी नाममध्ये व्यालीसमी सधि सपूर्णम् ।
इति श्री सुदृष्टि तरगिणी नाम ग्रन्थ सम्पूर्णम् ।
धर्मकरत ससारसुख, धर्मकरत निर्वान ।
धर्मपथ साधन विना, नर तिर्यञ्च समान ॥
शुभ भवत् मगल दद्यात् । मिती ज्येष्ठ सुदी १० स वत्
१९६१ ।

३८७. सुदृष्टि तरंगिणी

Opening : श्री अरहतमहत के, वदौ जुग पदसार ।
ग्रन्थ सुदृष्टितरगनी, करौ स्वपर हितकार ॥

Closing : ऐसे समुद्घातनका शामान्य सरूप कह्या विशेष श्री गोम्मट-
सार जीतैं जानना तहां ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

३८८. सुखबोध टीका

Opening : · · · न सम्यक्त्वपर्याय उत्पद्यते तदैव मत्यज्ञानश्रुताज्ञानाभावे
मतिज्ञान श्रुतज्ञान चोत्पद्यत इति · · ।

Closing : ···· ··· सख्येयगुणा पुष्करद्वीपसिद्धाः संख्येयगुणा. एवं
कालादिविभागेऽल्पबहुत्वमागमाद्बोद्धव्यम् ।

Colophon :　　अथप्रशस्ती । शुद्धेद्धतप प्रभाव पवित्रपादपद्मराज किंजल्प-पु जस्यमन: कोर्णैकदेशक्रोडीकृताखिलशास्त्रार्था तरस्य पडित श्री वघु-देवस्यगुण प्रबन्धानुस्मरणजातानुग्रहेण प्रमाणनमनिर्णीताखिलपदार्थप्रपचेन श्रीमद्भूजबलभीमभूपालमार्त्तउसभायामनेकधा लब्धतर्कचक्राकल्केनावलव-रादीनामात्मनश्चोपकारार्थेन पाडित्यमदविलासात्सुखवोधामिधा वृत्ति कृता महाभट्टारकेन कु भनगरवास्तव्येन पडित श्री योगदेवेन प्रकटयतु सशोध्य बुधायदत्तायुक्तमुक्त किञ्चिन्मति विभ्रममभवादिति । प्रचड पडित-मडलीमौनदीक्षागुरोर्यो योगदेव विदुष कृतौ सुखबोधतत्वार्थवृत्तौ दशम. पाद समाप्त ।

जैन सिद्धान्त भवन आरा मे शुभमिति आषाढ शुक्ल ५ वृहस्पतिवार स० १९९२ वी० स० २४६१ । ह० राशनलाल जैन लेखक ।

देखे—जि० र० को०, पृ० १५६ (१३) ।

३८९. स्वस्वरूप स्वानुभव सूचक (सचित्र)

Opening :　　अथ अनादि अनत जिनेश्वरगुर गरस सुंदर वोध मयिपर ।
परम मगलदायक हैं सही, नमतहूइस कारण शुभ मही ॥

Colsing :　　बहुत क्या कहूँ ज्ञान अज्ञान सूर्य प्रकाशवत् नये कहू वान है न होवैगा ।

Colophon :　　इति श्री क्षुल्लक ब्रह्मचारी धर्मदास रचित स्वरूपपस्वानु-भव सूचक समाप्त । स० १९४६ आ० सु० १० ।

विशेष—(आठो कर्मो की प्रकृतियो को आठ चित्रो द्वारा दिखाया गया है) ।

३९०. स्वरूप स्वानुभव सम्यक् ज्ञान

Opening :　　देखे—क्रम ३८९ ।

Closing :　　मेरे अर तेरे वीच मे कर्म हे, सो न मेरे न तेरे कर्म कर्म ही मे निश्चय है ।

Colophon :　　नही है ।

विशेश—(१) क्र० ३८९ की ही प्रतिलिपि है ।
(२) मात्र नामकरण मे थोडा सा अन्तर है ।
(३) पेज न० २, ६, ७, ८, ९, १०, १२, १३ और १४ मे वने हुए हैं ।

३६१. स्वरूप सम्बोधन

Opening: मुक्तामुक्तैकरूपो य कर्मभिस्सविदादिना ।
अक्षय परमात्मान ज्ञानमूर्ति नमामि तम् ॥

Closing: इति स्वतत्व परिभाव्यवाङ्मय,
य एतदाख्याति शृणोति चादरात् ।
करोति तस्मै परमार्थसंपदम्,
स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति ॥२५॥
अकरो दाहिंतो ब्रह्मसूरि पडित सद्विज ।
स्वरूपबोधनाख्यस्य टीका कर्णाटभाषया ॥

Colophon: नही है ।
देखे—जि० र० को०, पृ० ४५८ ।

३६२. तत्त्वरत्न प्रदीप

Opening: श्री निधिममन्तभद्र नवू ? पूज्यपादनजितनज,
विद्यानद तत्त्व सत्धान मनेमगीजे ˉमवयसार वीरम् ॥

Closing: साक्षाद्राक्षाफलाना सुरमम धुरताधूरमास्ता निरस्ता मौधी-माधुर्यरीति परमतिविदुरा कर्कशाशर्कराषि वीचा वीचिविचार-प्रचुरतररसा सारनिष्पन्विनीना चेत्माक्लप्रवधप्रणयनसुहृदा श्रूयते धर्म्मकीर्त्ते ॥
श्री श्रुतमुनये नम ।
तत्वसार ।

३६३. तत्वसार

Opening: झाणाग्गिदट्ठकम्मे णिम्मलसुविसुद्धलद्धसब्भावे ।
णमिऊण परमसिद्धे सुतच्चसार पवुच्छामि ॥१॥

Closing: सोऊण तच्चसार रइय मुणिणाहदेवसेणेण ।
जो सद्दिट्ठी भावइ सो पावइ सासय सुक्ख ॥७४॥

Colophon: इति तत्त्वसार समाप्तम् ।
देखे—जि० र० को०, पृ० १५३ ।
Catg. of skt. & Pkt. Ms., peag. 648,

३६४. तत्वसार भाषा

Opening : आदि सुखी अतज सुखी, सिद्धसिद्ध भगवान ।
निज प्रताप प्रलाप विन, जगदर्पण जग आन ॥

Closing : सत्रहसै एकावने, पौष सुकल तिथि चार ।
जो ईश्वर के गुन लखै, सो पावै भवपार ॥

Colophon . । नही है ।

३६५. तत्वसार वचनिका

Opening : प्रणमि श्री अर्हंत कूँ सिद्धनिकू शिरनाय ।
आचार्य उवझाय मुनि पूजू मनवचकाय ॥

Closing : ---पन्नालाल जु चौधरी विरचि जो कारक दुलीचदजी ।

Colophon : इति ग्रन्थ वचनिका बनने का सबध समाप्तम् । सवत् १६३८ का महावुदि १२ सोमवार ।

३६६. तत्वानुशासन

Opening : सिद्धस्वात्थान शेषार्थ स्वरुपस्योपदेशकान् ।
परापरगुरुन्नत्वा वक्ष्ये तत्वानुशासनम् ॥

Closing : तेन प्रसिद्धधिषणेन गुरुपदेश,
मासाद्य सिंफिसुखसपदुपाय भूतम् ।
तत्वानुशासनमिद जगते हिताय,
श्री रामसेन विदुषाव्यरच स्फुटोर्थम् ॥

Colophon · इद पुस्तक परिधावि मवत्सरे उत्तरायणे अधिक आषाढमासे कृष्णपक्षे एकादश्याया सौम्यवासरे द्वाविंश घटिकाया दिवा च वेणूपुरस्त पन्नेचारीरित्तल विद्वत् वामनशर्मणा पचम पुत्र भगदीति केशव शर्मणेन लिखित समाप्तमित्यर्थं श्री जिनेश्वराय नमः ।

देखे,—जि० र० को०, पृ० १५३ ।

३९७· तत्वार्थसार

Opening · मोक्षमार्गस्य नेत्तार भेत्तार कर्मभूभृताम् ।
ज्ञातार विश्वतत्वाना वदे तद्गुणलब्धये ॥

Closing : वर्णा· पदाना कर्त्तारो वाक्याना तु पदावलि ।
पाक्यानि चास्य शास्त्रस्य कर्तृणि न पुनर्वयम् ।।

Colophon : इति श्री अमृतसूरीणाकृति तत्वार्थसारोनाम मोक्षशास्त्र समाप्ताम् ।

देखे--(१) दि० जि० ग० र०, पृ० ७६ ।
(२) जि० र० को०, पृ० १५३ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १५० ।
(४) आ० सू०, पृ० ६६ ।
(५) रा० सू० II, पृ० १३३ ।
(६) रा० सू० III, पृ० १७६ ।
Catg. of Skt & Pkt. Ms., P. 648.

३६८. तत्वार्थसार

Opening : देखें, क्र० ३६७ ।
Closing : देखे, क्र० ३६७ ।
Colophon : इति श्री अमृतचंद्रसूरीणा कृतिस्तत्वार्थसारोनाममोक्षशात्र-समाप्तम् । लिपिकृतम् वालमोकुन्दलाल अग्रवाला आराव्नग्र । श्रीरस्तु।

१६६. तत्वार्थसार

Opening : देखे, क्र० ३६७ ।
Closing . देखे, क्र० ३६७ ।
Colophon : इति अमृतचद्र सूरीणा कृति तत्वार्थसारो नाम मोक्षशास्त्र समाप्तम् ।

श्री काष्ठासघे श्री रामकीर्तिदेवामुन्कन्दकीर्त्ति । ग्रथश्लोक सख्या ७२४ । सवत् १५५३ वैशाख सुदी सोमे श्री काष्ठासघे मापुर-गच्छे पुष्करगणे आर्गलपुरमध्ये लिखाप्त ताड ? कीर्तिदेवा ।

४००. तत्वार्थसूत्र (श्रुतसागरी टीका)

Opening · देखे, क्र० ३८५ ।
Cosing देखे, क्र० ३८५ ।

Colophon : इत्यनवद्यगद्यपद्यविद्याविनोदेनोदितप्रमोदपीयूषरसपानपावनमतिसभाजरत्नराराजमतिसागर यतिराजराजितार्थेनसमर्थेन तर्कव्याकरण छदोलकारसाहित्यादि शास्त्रनिशितमतिना यतिना श्रीमद्देवेन्द्रकीर्ति भट्टारकप्रशिष्येण चशिष्येण सकलविद्वज्वन विरचितचिरसो सेवस्य श्री विद्यानदिदेवस्य सछंदित मिथ्यामतदुर्गरेण श्रुतसागरेण सूरिणा विरचिताया श्लोकवार्तिक राजवार्तिकसवर्थिसिद्धिन्यायकुमुदचद्रोदय प्रमेयकमलमार्तण्ड प्रचडाप्टसहस्त्री प्रमुखग्रथ सदर्भनिर्भरावलोकनवुद्धिराजिताया तत्वार्थटीकाया दशमोध्याय. समाप्त । इति तत्वार्थस्य श्रुतसागरी टीका समाप्ता । सवत् १७७० माघमासे शुक्लपक्षे तिथौ सप्तम्या रविवासरे पाटलिपुरे लिखितम् अमीसागरेण आत्मार्थे । श्री। श्री।

देखे—दि जि ग्र र, पृ ८५ ।
जि र को, पृ १५६ (१५) ।
आ० सू० पृ० ६७ ।
रा० सू० III, पृ १३ ।
भट्टारक सम्प्रदाय, पृ० १८१ ।
Catg of Skt & Pkt Ms, P 649

४०१. तत्वार्थसूत्र

४०१

Opening : सम्यग्दर्शन ज्ञानचरित्राणि मोक्षमार्ग ।

Closing : तत्वार्थसूत्रकर्त्तार गृध्रपिच्छोपलक्षितम् ।
वदे गणेन्द्र सजातमुमास्वामि मुनीश्वरम् ॥

Colophon : इति दशध्याय सूत्र सम्पूर्णम् लिखित पडित कस्तूरी चद तारतोलमध्ये पठनार्थम् लाला मोदयाल का बेटा मनुलाल के वास्ते सवत् १९४६ का मिति आसोज सुदी पूर्णमासी के दिन समाप्तम ..

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ८१ ।
(२) जि० र० को०, पृ० १५४ (२) ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ १५१ ।
(४) रा सू II, पृ २८, ८३ ।
(५) रा सू III पृ. ११, १२ ।
(६) Catg of Skt. & Pkt Ms, P. 7

४०२. तत्त्वार्थसूत्र

Opneing : त्रैकाल्य द्रव्यषट्क नवपदसहित जीवषट्कायलेश्या ।।
पचान्यचास्तिकाया व्रत समिति गति ज्ञानचरित्रभेदा ।।
इत्येतन्मोक्षमूल त्रिभुवनमहितैं प्रोक्तमर्हद्भिरीशै ।।
प्रत्येतिश्रद्दधाति स्पृशति च मतिमानय सवैशुद्धदृष्टि ।।१।।

Closing . णवमे नज्जर निजर । दसमे मोक्ष्य वियाणेहि ।
इयसत्त तच्च भणिय । दहसूत्रे मुणिदेहि ।।७।।

Colophon · इति श्री उमास्वामि विरचित तत्वार्थसूत्र समाप्त । लिखित पडित किसनचद सवाई जयपुर का वासी ।। धर्ममूर्ति धर्मात्मा कवरजी श्री दिलसुखजी पठनार्थं ।।

४०३. तत्वार्थसूत्र

Opening : · · · ससारिणस्त्रसस्थावरा ।

Closing : देखे—क्र० ४०१ ।

Colophon : इति उमास्वामीकृत तत्वार्थसूत्र समाप्तम् ।

४०४. तत्वार्थसूत्र

Opening : त्रैकाल्यं द्रव्यषट्क · ··· शुद्धदृष्टि ।।

Closing : तवयरण · ··· निवारई ।।

Colophon : इति श्री तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशाध्यायसूत्र जी समाप्तम् ।

४०५. तत्वार्थसूत्र वचनिका

Opening : देखे— क्र० ४०२ ।

Closing : आनयन, प्रेष्यप्रयोग, पुद्गलक्षेप ··· ··· ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

४०६. तत्वार्थसूत्र

Opening : देखे—क्रम ४०४ ।

Closing : देखे—क्र० ४०४ ।

Colophon : इति सूत्रदशाध्याय समाप्तम् ।
श्रावणमासे कृष्णपक्षे तिथौ १ (एक) चन्द्रवासरे संवत् १६५५ श्री ।

४०७. तत्वार्थसूत्र

Opening : त्रैकाल्य द्रव्यषट्क " " शुद्धदृष्टि ॥

Closing : तत्वार्थसूत्रकर्त्तारं ' ' मुनीश्वरम् ॥

Colophon : इति उमास्वामीकृत तत्वार्थसूत्र समाप्तम् ।

४०८. तत्वार्थसूत्र (मूल)

Opening : त्रैकाल्यद्रव्यषट्क " शुद्धदृष्टि ॥

Closing : तत्वार्थसूत्र '' ' उमास्वामिमुनीश्वरम् ॥

Colophon : इमि तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोध्याय. संवत् १६०८ चैत्रकृष्णपक्षे नवम्या बुद्धवारे ।

४०९. तत्वार्थसूत्र

Opening : त्रैकाल्य द्रव्यषट्क ' '' शुद्धदृष्टि ॥

Closing : पहिले चतुके जीवपचमे जाणि पुग्गलत च ।
छहसत्तमेत्रआश्रव अष्टमे जानि वध ॥
नवमे संवरनिर्जरा, दशमे ज्ञानकेवल मोक्ष ॥

Colophon : इति तत्वार्थसूत्रम् ।
पुरन सुतर जी ।

४१०. तत्वार्थसूत्र

Opening : मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम् ।
ज्ञातारं विश्वतत्वानां वंदे तद्गुणलब्धये ।

Closing : भयो निद्धकारज यह मगत करता सोई।
इहकथा धमराधर्मजिन परमव मिलियो मोह ॥

Colophon : अनुपलब्ध।

४११. तत्वार्थसूत्र टिप्पण

Opening : देखें—क्र० ४१०।

Closing : सवत् उगणीसैदशशुद्ध।
फाल्गुण वदि दशमी तिथि बुद्ध ॥
लिख्यो सूत्र टिप्पण गुणथान।
नमैं सदा सुख निति धरिध्यान ॥

Colophon इति श्री तत्वार्थ सूत्र का देशभाषामय टिप्पण समाप्तम्। सवत् १९१० मिति फाल्गुण कृष्ण १४ दीत वार समाप्तम्।

४१२. तत्त्वार्थवृत्ति

Opening : जयन्ति कुमतध्वांतपाटने पटुभास्वरा।
विद्यानदास्मता मान्या पूज्यपादा जिनेश्वरा. ॥

Closing : तस्यास्सुविशुद्धदृष्टिविभव सिद्धान्त पारगत,
शिष्य. श्रीजिनचद्रनामकलित चारित्रभूषान्वित.।
वाशिष्टेरपिनदिनामविबुधस्तस्याभवत्तत्ववित्,
तेनाकारिसुखादिबोधविषया तत्वार्थवृत्ति स्फुटम् ॥

Colophon : परमत महासैद्धान्तिजिनचद्रभट्टारकस्ताच्छिष्य पडित श्रीभास्करनदिविरचितमहाशास्त्रतत्वार्थवृत्तौ सुखवोधाया दशमोध्याय. समाप्तः।

स्वस्ति श्री विजयाभ्युदयशालिवाहनशकाब्दा. १७५० ने सर्वधारिसवत्सरद्कार्तिकशुद्ध १४ गुरुवारदिन तत्वार्थसूत्रक्के सुखवोधय व वृत्तियन्नु तगडूरु सिद्धान्तिब्रह्मसूरि ज्येष्ठपुत्रनादता, चद्रोपाध्यसिद्धातियुवरे दुदु सपूर्णवादुदु। जयमगल। शोभनमस्तु ॥

देखें—जि० र० को, पृ० १५६।

४१३. तत्वार्थबोध

Opening : सिवमग दाइकमान, कर्मतिमिर गिरके हरनं ।
सर्वतत्वमय ग्यान, वदू जिणगुण हेतकूं ॥

Closing : सवत्ठारासं विर्षं, अधिक गुन्यासी देम ।
कातिकसुद सासिपचमी, पूरनग्रथ असेस ॥
मगल श्री अरिहत, सिधमगलदायक सदा ।
मगलमाधमहत, मगल जिनवर धर्मवर ॥

Colophon : इति श्री तत्वार्थवोध ग्रथ मपूणम् । इति शुभ मिति आषाढ सुदी १२ सवत् १९८२ ।
जैमी प्रत पाई हती, तैसी दई उतार ।
भूलचूक जो होय सो, बुधजन लियो सुधार ॥
हस्ताक्षर प० चौबे लक्ष्मीनारायण के ।

४१४. तत्वार्थसूत्र टीका

Opening : देखें०—क्र०, ४१० ।

Closing : इह भाति करि घणाही भेदास्यौ सिद्ध हुआ सो सिद्धान्त से समझि लीज्यौ ।

Colophon : इति श्री तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोध्याय· ।१०। श्री उमास्वामी विरचित सूत्र बालावोध टीका पाडे जैवतकृत सपूर्ण । सवत् १९०४ वैशाख शुक्ल १२ लिपि कृत इदम् ।

४१५. तत्वार्थसूत्र वचनिका

Opening : देखें—क्र० ४१० ।

Closing : ऐसे ही कालादिक का विभागतैं अल्पवहुत्व जानना । ऐसें द्वादश अनुयोगनि करि सिद्धनि में भेद है और स्वरूप भेद नहीं है ।

Colophon : इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोध्याय: ॥१०॥
देखें—क्र० ४११ ।

इति श्री तत्वार्थसूत्र का देशभाषामय टिप्पण समाप्त। लिखत दौलत-राम ब्रह्मरावसासनी मध्ये गुरु बकस के बेटा ने। संवत् १६२५ शुक्ल ६ गुरुवासरे सम्पूर्ण। शुभमस्तु।

४१६. तत्वार्थसूत्र टीका

Opening : शुद्धतत्व की अर्थ मे, लह्यो सार जिनराय।
तिनपद नमो त्रियोगिकरि, होहु इष्ट सुखदाय॥

Closing : आदि अंत मंगल करत, होत काज हितकार।
तातैं मंगलमय नमो, पंच परम गुरु सार॥

Colophon : इति तत्वार्थसूत्र दशाध्याय की तत्वार्थसार नामा भाषा टीका समाप्ता। संवत् १९७० शक १८३५ चैत्र शुक्ला ५ भृगुवासरे लिपि-कृतम् प० सीताराम शास्त्री निजक ण संशोधिता.।

४१७. तत्वार्थाधिगम सूत्र

Opening : पूज्यपाद जगद्वंद्य तत्वोमास्वामीभाषितम्।
क्रियते बालबोधाय मोक्षशास्त्रस्य टिप्पणीम्॥

Closing : रत्नप्रभाकरा सर्वार्थसिद्धिराजवार्तिका.।
श्रुताभोधिकृतयाश्चश्लोकवर्तिकसंज्ञिका॥
ताभ्य विशेषज्ञानाय ज्ञेया विस्तारमजसा।
अल्पज्ञानाय सर्वेषा रचिता बोधचंद्रिका॥

Colophon : इति तत्वार्थ सिद्धान्त सूत्रस्य टीकासमाप्तेयम्। श्रीरस्तु। सम्वत् १९१९ मिती फाल्गुन शुक्लदशम्या स्वहस्तेन लिपि-कृतम् इन्द्रप्रस्थे प० शिवचन्द्रेण।

४१८. तत्वार्थ वार्तिक

Opening : अनुपलब्ध।

Closing : इति तत्वार्थसूत्राणां भाष्य भाषितमुत्तमैः।
यत्रसंनिहितस्तर्कन्यायागम विनिर्णय॥

Colophon : इति तत्त्वार्थवार्तिकव्याख्यानालकारे दशमोध्याय समाप्त ॥
जीयाज्जगति जिनेश्वरनिगदितधर्मप्रकाशक. सूरि.
अभयेदुरितिख्यात परवादिपितामह' सततम् ॥
वदे वालेंदु मुनितममदवुधाग्रणि गुणनिनिधिम्
यस्य वचस्तोऽशस्त स्वातध्वत दुरस्तमपि नश्येत् ॥

श्रीपचगुरुभ्यो नम. मगलमहा । शके २२६२ वर्तमान परिधावी सवत्सरे भाद्रपदशुक्लएकादश्या भानुवासरे समाप्तोऽय ग्रथ' ॥ दक्षिणकर्नाटदेशे उडुपी कार्कप्रात्यदुर्गग्रामनिवासस्यरामकृष्णशास्त्रिण पुत्रो रगनाथ भट्टेन लिखित पुस्तकम् ॥

शुभ मगलानि भवतु ॥

देखे—जि० र० को०, पृ० १५६।

४१६. त्रैकालिकद्रव्य

इस ग्रथ मे मात्र "त्रैकाल्य द्रव्यपट्क ... इत्यादि" अर्थ सहित लिखा गया है।

अन्त मे एक भजन भी है।

४२०. त्रैलोक्य प्रज्ञप्ति

Opening : अट्ठविहकम्मवियला णिट्ठय कज्जा पणट्ठ ससारा ।
दिट्ठसलत्थसारासिद्धासिद्धि मम दिसतु ॥१॥

Closing : सूरि श्री जिनचद्रा ह्रि स्मरणाधीन चेतसा ।
प्रशस्तिर्विहिता वासौमीहाख्येनसुधीमता ॥१२३॥
यत्रयुक्ताप्पवधस्यादर्थे ...मयाद्दृत ।
तदाशोध्यवुधैर्वाच्चमनत शब्दवारिधि' ॥१२४॥

Colophon : इति सूरि श्रीजिनचद्रातेवासिना पडित मेधाविना विरचिता प्रशस्ता प्रशस्ति समाप्ता ॥ श्री सिहपुरी जैननीर्थ समीप सथवा ग्राम निवासी कायस्थ वटुकप्रसाद ने श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा मे लिखा ॥ स० १९८८ विक्रम ॥

४२१. त्रैलोक्य प्रज्ञप्ति

Opening : देखे—क्र० ४२० ।

Closing : देखे,—क्र० ४२० ।

Colophon : देखे—क्र० ४२० ।

४२२. त्रिभङ्गी

Opening : श्री पंचगुरुभ्यो नम ॥

पणमियसुरिन्वद पूजियपयकमल वड्ढमाणममलगुण ।
पच्चयपत्तावण्ण वोच्छेह सुणुह भवियजणा ॥१॥

Closing : जह चक्केण य चक्की छक्खड साहये अविग्घेण ।
तहमइ चक्केण मया छक्खड सहिय सम ॥

Colophon : इति श्री कनकनदि सैद्धातिकचक्रवर्तिकृत विस्तरसत्वत्रिभगी समाप्ता ॥

४२३. त्रिभंगीसार टीका

Opening : सर्वज्ञ करुणार्णव त्रिभुवन वीमार्च्यपाद विभुम्,
य जीवादिपदार्थसार्थकलने लब्धप्रशम सदा ।
त नत्वाखिलमगलास्पदमहं श्रीनेमिचन्द्र जिन,
वक्ष्ये भव्यजनप्रवोधजनक टीकां सुवोधाभिधाम् ॥

Closing : श्री सद्यो हि युगे जिनस्य नितरा लीन शिवासाधरः,
सोम. सद्गुणभाजन सविनय. सत्पात्रदाने रत: ।
सद्रत्नत्रययुक् सदा वुध मनोल्हादीचिर भूतले,
तद्यार्थेन विवेकिना विरचिता टीका सुवोधाभिधा ॥

Colophon : इति त्रिभगीसार टीका समाप्ता । सवत् १६१५ । विक्रमादित्यगताब्दवाणैकरद्धाचद्र वर्षे ज्येष्ठवदि तृतीयाया ३ सुरगुरुवासरे पूज्य श्री अर्यानीऋषिशिष्य दुर्गु नाम्नेति ऋषिलिख्यत आत्मावबोधनार्थ जलमार्गसज्ञाभिधानेन नगरे लिख्यनमिद पुस्तकम् ।

यहप्रतिलिपि श्रावणकृष्णा १३ गुरुवार वि० स० १९९४ को लिखी गई । हस्ताक्षर रोशनलाल लेखक ।

देखें—जि० र० को०, पृ० १६२।
दि जि. ग्र र., पृ. ८७।
जै ग्र प्र स. १, पृ २८, प्रस्तावना, पृ २६।

४२४. त्रिलोकसार

Opening . वलगोविंदसिहामणि किरणकलावरुणचरणमाहकिरण।
विमलपरमणेमिचंद तिहुवणचंद णमसामि ॥

Closing : अरहन्तासिद्धआयरिय उवज्झायासाहुपंचपरमेट्ठी।
इयपंचणमोयारो भवे भवे मम सुहं हितु ॥१०१०॥

Colophon . इति श्री त्रिलोकसारजी श्रीनेमिचंद आचार्यकृत मूलगाथा सपूर्णम्। शुभ मस्तु ॥

देखें—जि० र० को०, पृ० १६२।
Catg. of Skt & pkt Ms, P. 162.
Catg. of Skt Ms, P. 320

४२५. त्रिलोकसार

Opening : देखें—क्र० ४२४।

Closing : महाध्वज प्रणपरिवारध्वज १०८।
महाध्वज ड १०८०। ल दि १ ‥ ११६६२०।

४२६. त्रिलोकसार भाषा

Opening : · समान ही सिन्धु नदी है सो सर्व वर्णन सिंधु विषै भी तैसै ही जानना।

Closing : तातै परमवीतराग भावरूप शुद्धात्म स्वरूप जनित परम आनद की प्राप्ति करहु।

Colophon इति श्री त्रिलोकसार जी श्री नेमिचन्द्र आचार्यकृत मूलगाथा तारी टीका संस्कृत कर्त्ता आचार्यमाधवचन्द्र ताकी भाषा टीका टोडरमल जी कृत सपूर्ण।

४२७. त्रिलोकसार

Opening :- त्रिभुवनसार अपारगुन, ज्ञायक नायक सत ।
त्रिभुवन हितकारी नमो, श्री अरहत महत ॥

Closing : अर्थको जानता सता रागादिक त्यागि मोक्षपद को पावै है । अव सस्कृत टीका अनुसार लिए मूलशास्त्र का अर्थ लिखिए है ।

Colophon : इति श्री त्रिलोकसार का टीका का पीठवध सम्पूर्णम् ।
विशेष—अन्त मे पीठवध सम्पूर्ण ऐसा लिखा है, लेकिन ग्रथ की भाषा टीका लिखी जा चुकी है ।

४२८. त्रिलोकसार

Opening : मगलमय मंगलकरन वीतराग विज्ञान ।
नमो ताहि जाते भये अरिहतादि महान ॥

Closing : इति श्री अरिष्ट नेम पुराण ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

४२९. त्रिलोकसार भाषा

Opening देखे—क्र० ४२७ ।

Closing : अव सस्कृत टीका अनुसार लिए मूलशास्त्र का अर्थ लिखिए है ।

Colophon : इति श्री त्रिलोकसारसाषाटीका का पीठवध सम्पूर्ण । सवत् १८६६ वर्षे मिती सावन वदी दो लिखत भूपतिराम तिवारी, लिखी मौहौकमगज मध्ये ।

४३०. त्रिवर्णाचार (५ पर्व)

Opening : अथोच्यते त्रिवर्णाना शौचाचारविधिक्रम ।
शौचाचारविधिप्राप्तौ देह सस्कर्तुमर्हसि ॥१॥
सस्कृतो देह एवासौ दीक्षणाद्यभिसम्मत ।
विशिष्ठान्वयजोऽप्यस्मै नेष्यतेऽयमसस्कृत. ॥२॥

Closing : तत्रोपनयादारभ्य समावर्तनपर्यन्तमुपनयनब्रह्मचारी । स्त्री-सेवां कुर्वाणो जुगुप्सया गुरुसमक्षे तन्निवृत्त: आलम्बनब्रह्मचाचारी । विवाहपूर्वक त्रिभुवनपरिग्रहारम्भाद् क्रियाप्रवृत्तो गृहस्थः । परिग्रहानु-

मत्युद्धिष्टनिवृत्ता वाणप्रस्था. । वैराग्यदीक्षितो महाव्रती भिक्षु. ।
इत्याश्रमलक्षणम् ।

Colophon : इति ब्रह्मसूरि विरचिते जिनसंहितासारोद्धारे प्रतिष्ठातिलकनाम्नि त्रैवर्णिकाचारग्रथे (सग्रहे) गर्भाधानादिविवाह-पर्यन्तकर्मणा मन्त्रप्रयोगो नाम पञ्चम पर्व समाप्तम् । फाल्गुनशुद्ध द्वितीयाया तिथौ समाप्त ॥

देखे– जि० र० को०, पृ० १६३ ।

४३१. त्रिवर्णाचार (५ पर्व)

Opening : देखें, क्र० ३० ।

Closing : देखे, क्र० ४३० ।

Colophon : इति श्री ब्रह्मसूरिविरचिते जिनसहितासारोद्धारे प्रतिष्ठाति-लकनाम्नि त्रैवर्णिकाच रसग्रहे गर्भाधानादि विवाहपर्यन्तकर्म्मणा मत्र-प्रयोगो नाम पचम पर्व्व । नम सिद्धेभ्य । श्री चद्रप्रभजिनाय नम ॥

४३२. त्रिवर्णाचार (१३ अध्याय)

Opening : श्री चद्रप्रभदेवदेवचरणौ नत्वा सदा पावनौ,
ससारार्णवतारकौ शिवकरौ धर्मार्थकामप्रदौ ।
वर्णाचार विकाशक वसुकर वक्ष्ये सुशास्त्र परम्,
यच्छ्रुत्वा सुचरति भव्यमनुजा स्वर्गादिसौख्यार्थिन: ॥

Closing : श्लोकाना यत्र सख्यास्ति शतानिसप्तत्रिशति ।
तद्धर्मरसिक शास्त्र वक्तु श्रोतृ सुखप्रदम् ॥

Colophon : इति श्री धर्मास्तिकशास्त्रे त्रिवर्णाचारप्ररूपणे भट्टारक श्रीसोम-सेनविरचिते सूतकशुद्धिकथनीगो नाम त्रयोदशमोध्याय ॥ इति त्रिवर्णा-चार: समाप्त ॥ सवत् १७५६ वर्षे फाल्गुन सित पक्षे त्रयोदशी गुरु-वासरे इय सपूर्णा जाता । अहमदाबादमध्ये इद पुस्तक लिखितमस्ति । शुभ भूयात् । श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वती ग · कुन्दकुन्दान्वये श्रीभट्टारक विश्वभूषण जी देवास्तत्पट्टे श्रीभट्टारक जिनेन्द्रभूषणजी देवास्तत्पट्टे श्रीभट्टारक महेन्द्रभूषण जी देवा तेनेद देवेन्द्रकीर्ते दत्तम् ।

देखे—दि० जि० ग्र० र०, पृ० ८८ ।
जि०र० को०, पृ० १६३, I ।

प्र० जै० सा०, पृ० २५६ ।
रा० सू० II, पृ० ७, १५५ ।
रा० सू० III, पृ० १८४ ।
जै० ग्र० प्र० स० १ प्रस्तावना पृ. २६ ।
Catg of skt & pkt Ms., P. 651.

४३३. त्रिवर्णाचार

Opening तज्जयति परं ज्योति सम समस्तैरनतपर्यायैः ।
दर्पणतल इव सकला प्रतिफलति पदार्थमालिका यत्र ।।
(पद्य पुरुषार्थ सिद्धयुपाय का है ।)

Closing : धर्मार्थकामाय कृत सुशास्त्र, श्री जैनसेनेन शिवार्थिनापि ।
गृहस्थधर्मेषु सदारता ये कुर्वन्तु तेऽभ्यासमहोजनास्ते ।।

Colophon इत्यार्षे श्रीमद्भगवन्मुखारविन्दविनिर्गते श्री गौतमर्षि पादपद्मा-राधकेन श्री जिनसेनाचार्येण विरचिते त्रिवर्णाचारे उपासकाध्ययनसारो-द्धारे सूतकशुद्धि कथनीय नाम अष्टादश पर्व ।।१८।। इति त्रिवर्णाचार समाप्तम् । सवत् १९७० । मिती पौष वदी ५ बुधवासरे लिखितमिद पुस्तक गुलजारीलाल शर्म्मणा । भिण्डाग्रनगरवासोस्ति । रिग्वालियर ।

देखे—जि० र० को०, पृ० १६३ ।
Catg. of skt & Pkt. Ms., p. 651.

४३४. त्रिवर्णाचार

Opening : देखे—क्र० ४३३ ।

Closing : देखे—क्र० ४३३ ।

Colophon : देखे—क्र० ४३३ ।
मिति श्रावण कृष्ण ११ सवत् १९१९ । सुभ भूयात् ।

४३५. त्रिवर्णाचार

Opening : देखे—क्र० ४३३ ।

Closing : देखे—क्र० ४३३ ।

Colophon : इत्यार्षे श्रीमद्भगवद्न्मुखारविंदाद्विनिर्गते श्री गौतमर्षि-पदा

पद्मारादधकेन श्री जिनसेनाचार्येण विरचिते त्रिवर्णाचारे उपासकाध्ययन-सारोद्धारे सूतकशुद्धि कथनीय नाम अष्टादश पर्व ।।१८।। सवत् १६१६ • • • वार मगलवारे लि कोठारी मोहनलाल मुगरशी ।। रहेवाशी वडवाण शे हेरना ।। श्लोक सख्या ८५२५ ।।

४३६. त्रिवर्णाचार वचनिका

Opening : देखें—क्र० ४३२ ।

Closing : जयवतो यह शास्त्र शुभ भूमडल मे नित्त ।
मंगलकर्ता हूजियो सुखकर्ता भविचित्त ।।

Colophon : इति त्रिवर्णाचार ग्रन्थ की वचनिका समाप्तम् । ज्येष्ठ शुक्ला १५ शनिवासरे सवत् १६५६ ।

४३७. त्रिवर्णा शौचाचार (७ परिच्छेद)

Opening : देखें—क्र. ४३० ।

Closing : आर्षं यद्यच्च तेषामुदितखनयानूतनापुण्यभाज: ।
भेतत्त्रैवर्णिकाद्याचरणविधिमहाकण्ठिका कण्ठमेति ।।

Colophon : इत्यार्षसग्रहे त्रैवर्णिकाचारे नित्यनैमित्तिकक्रमो नाम सप्तम परिच्छेद ।। श्रीमदादिनाथाय नम. ।। श्रीमद्विद्यागुरु श्री मदन्तमुनये नम ।।पुस्तकमिद श्री वेणुपुरस्थगीर्वाणपाठशालाध्यापकनेमिराजय्याज्ञानुसारेण सकमणात्मजेन पद्मराजनाम्ना मया प्रणीतमस्ति मगलमस्तु चिर भूयात् । करकृतमपराध क्षन्तुमर्हन्ति सन्त' इति विरम्यते ।
श्रीरस्तु ।

४३८. उपदेश रत्नमाला

Opening : तिहुवण परमेसरेहइवमीसरे अनतचतुष्टय महियो ।
वदमि श्रुतनारणे कम्रुपसारणे सुरनरेन्द्र अहिमहियो ।।

Closing : मो अवियाणिघरौं अणलगत्त अयहुद्द हीणय ।
सवारहु सुत्रुघिपडित जनतुमतो जगि पमाणय ।।

Colophon : इति श्री महापुराणसम्बन्धिनिकलिका समाप्ता । शुभमिति फाल्गुन शुक्ला २ वृहस्पतिवार वीर स० २४६० वि० स. १६६० ।

४३९. उपदेश रत्नमाला (१८ परिच्छेद)

Opening : वदे श्री वृषभ देव, दिव्यलक्षणलक्षितम् ।
प्रीणित प्राणिसद्वर्ग, युगादिपुरुषोत्तमम् ॥१॥
अजित जितकर्मारि, मतान शीलसागरम् ।
भवभूधरभेत्तार, शभव च भवे सदा ॥२॥

Closing : सहस्त्रत्रितय चैदा परि असीत मयुतम् ।
अनुष्टप् वद सा चाम्य, प्रमाण निश्चित बुधै ॥

Colophon : इति भट्टारक श्री शुभचद्र शिष्याचार्य श्री सकलभूषण विरचितायामुपदेशरत्नमालाया पुण्यषट्कर्मप्रकाशिकाया तपोदानमाहात्म्यवर्णनो नामाष्टदश परिच्छेद ।१८। समाप्त । श्री माहिजहनाबादे पृथ्वीपति मुहम्मद साह शुभराज्ये सवत् वेदनभगजशशि वैशाख शुक्ल सप्तम्या ।
सकलगुणधारिणो भव्यजीवतारणो,
परोपकारिणो गुरुगुण अनुचारिणो ॥
श्री भट्टारकपदधार देवेन्द्रकीर्ति विस्तार
तत्पट्टे सुखकार श्री जगकीर्तिबहुश्रुत धारम् ॥
एषा प्रति प्रमुदितया लिखापिता शिष्यपरपराचार्थे
मेरु शशि भानु यावत् तावदिय विस्तरता यान्तु ॥ (१११४)

देखे—दि. जि ग्र र, पृ. ८९ ।
जि. र को, पृ. ५१ (VI) ।
रा सू. II, पृ. १४९ ।
रा सू. III, पृ. २३ ।
आ० सू० पृ० १६ ।
जै० ग्र० प्र० स० १, पृ० १९ ।
प्र० स० (कस्तूरचन्द), पृ० २–४
भट्टारक सम्प्रदाय, पृ. २४ ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 628.
Catg. of Skt Ms., P. 312.

४४०. उपदेश रत्नमाला

Opening : देखे—क्र० ४३९ ।

Closing : देखें—क्र० ४३६ ।

Colophon : इति श्री भट्टारक श्री शुभचन्द्र शिष्याचार्य्य श्री सकलभूषण विरचितायमुपदेशरत्नमालाया पुण्यषटकर्म्मप्रकाशिकायाँ तपोदान माहात्म्यवर्णनोनामष्टादश परिच्छेद ॥१८॥ मितीफागुनसुदी ॥३॥ भृगुवासरे ॥ सम्वत् ॥१६७०॥ लिखितमिद पुस्तक मिश्रोपनामक गुलजारीलालशर्म्मणा शिडागनगरवासोस्ति ॥ इस ग्रन्थ की श्लोक सख्या ॥३६००॥ प्रमाणम् ॥

४४१. वैराग्यसार सटीक

Opening : इक्कहिं घरेवधामणा अण्णहिं घरि धाहहि रोविज्जइ ।
परमत्थई सुप्पउ भणई किमवइ सयभाउण किज्जइ ॥

Closing : असौ जीव चतुर्गतिपु अनतदु खानि भु जति । कदाचित् सुख न प्राप्नोति ।

Colophon : इति सुप्रभाचार्यकृत वैराग्यसार प्राकृत दोहावध सटीक सपूर्ण । सवत् १८२७ वर्षे मिति पौष वदि ३ बुधवारे वसवानगरमध्ये श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये पडित जी श्री परसराम जी तत्शिष्य प० अणतराम जी तत्शिष्य श्रीचद्र स्ववाचनार्थं वा उपदेशार्थ लिपिकृत । लेखकपाठकयो शुभमस्ति । श्रीजिनराजसहाय । तत्लिपे सवत् १६८६ विक्रमीये मासोत्तमेमासे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे चतुर्दश्या गुरुवासरे आरानगरे स्व० देवकुमारेण स्थापित श्री जैनसिद्धान्तभवने श्री के० भुवबलीशास्त्रिण अध्यक्षताया इद प्रतिलिपि पूर्तिमभवत् । इति शुभ भूयात् ।

देखें—जि० र० को, पृ० ३६६ ।

४४२. वसुनन्दि श्रावकाचार वचनिका

Opening : वदू मै अरिहतपद, नमू सिद्ध शिवराय ।
सूरि सु पाठक साधुके, चरण नमू सुखदाय ॥१॥
वदू श्री जिनवैन कूँ, वदू श्री जिनधर्म ।
जिनप्रतिमा जिनभवन कू नमू हरण वसुकर्म ॥२॥

Closing : ऋषि पूरण नव एक फुनि, माधव फुनि शुभ स्वेत ।
जया प्रथमकुजवार मम, मगल होऊ निकेत ॥

Colophon : इति श्री वसुनन्दि सिद्धान्ती चक्रवर्ति विरचित श्रावकाचार की वचनिका सपूर्णम् ।

वेदपणन्द चन्द्रेब्दे वैशाखे पूर्तिगे सिते ।
सीतारामाभिधयेन लिखित शोधित मया ।।

भग्न पृष्टिकटिग्रीवा ऊर्ध्वदृष्टि अधोमुखम् ।
कष्टेन लिखित शास्त्र यत्नेन परिकल्पयेत् ।।

४४३. वसुनन्दि श्रावकाचार

Opening : देखें—क्र० ४४२ ।

Closing : देखें—क्र० ४४२ ।

Colophon . इति श्री वसुनन्दि सिद्धान्त चक्रवर्ती विरचित श्रावकाचार की वचनिका सम्पूर्णम् । सवत् १९०७ वैशाख शुक्ल ३ भौमवासरे । पुस्तक लिखी ब्राह्मण श्री गौणमालवी ज्ञाति साप्रदाय पडा भैरव लाले सू ।

४४४. वसूनन्दि श्रावकाचार वचनिका

Opening . देखे—क्र० ४४२ ।

Closing · अपठनीय (जीर्ण) ।

Colohpon : अपठनीय (जीर्ण) ।

४४५. विदग्धमुखमण्डन (४ परिच्छेद)

Opening :

सिद्धौषधानि भवदु ख महागदाना,
पुण्यात्मना परम कर्णरसायनानि ।
प्रक्षालनैकमलिलानि मनोमलाना,
शौद्धोदने. प्रवचनानि चिर जयन्ति ।।

Closing :

पूर्णचन्द्रमुखीरम्या कामिनी निर्मलावरा ।
करोति कस्य न स्वातमेकान्तमदनोत्तरम् ।।

Colophon : च्युतदत्ताक्षरजाति । इति धर्मदासविरचिते चतुर्थपरिच्छेद समाप्त शास्त्ररत्नमिद विदग्धमुखमडनारगम् ।

... ..

४८० ग्रथश्लोका ।
देखे—जि० र० को, पृ ३५५ ।
दि. जि ग्र र, पृ
Catg. of Skt. & Pkt. Ms, P. 691

४४६. विश्वतत्वप्रकाश (१ अध्याय)

Opening : विश्वतत्व प्रकाशाय परमानदमूर्त्तये ।
अनाद्यनतरूपाय नमस्तस्मै परमात्मने ॥

Closing : चार्वाकवेदांतिकयोगभाट्टप्राभाकरार्षक्षणिकोक्ततत्वम् ।
यथोक्तयुक्त्यावितथ समर्थ्य समापितोऽय प्रथमोधिकार ॥

Colophon : इति परवादिगिरिसुरेश्वर श्री भावसेनत्रैविद्यदेवविरचिते मोक्षशास्त्रे विश्वतत्वप्रकाशे अशेषपरमततत्वविचारे प्रथम. परिच्छेद समाप्त । शुभसवत् १९८८ फाल्गुण शुक्ला १० गुरुवासर ।

विशेष—प्रथम परिच्छेद के अतिरिक्त एक पत्र मे प्रमाण के विषयमे थोडा सा लिखा है, जिसमे विभिन्न मतो मे स्वीकृत प्रमाण सख्या दी गई है। जिनरत्नकोष मे भी पृष्ठ ३६० पर इसका एकही अधिकार होने की सूचना है।

देखें – दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३६० ।
Catg of Skt & Pkt. Ms, P. 692.

४४७. विवाद मत खण्डन

Opening : किं जापहोमनियमैं तीर्थस्नानैश्च भारत ।
यदि स्वादति मांशानि सर्वमेव निर्थकम् ॥

Closing : मद्वय भद्वय चैव व त्रिय व चतुष्टय ।
अनया कुस्कलिंगानि पुराणानष्टादशानि च ॥

Colophon : इति विवादमत खडन सम्पूर्णम् ।

४४८. विवादगत खण्डन

Opening : अभिमानरहमनोय रागो मैथुनवर्जनम् ।
य न स्वे तेन धर्मेण नर्वधर्मा. प्रतिष्ठिता ॥

Closing : आदायगुणाना त्यागस्य वचनद्वयम् ।
परोपकार पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥

Colophon : इति नाम्ने इति तात्पर्यानराधिकार. एकविंशतितम:
२१ इति सम्पूर्ण ।

४४९. विवेक विलास

Opening : शाश्वतानन्दरूपाय तम. स्तोमैक भास्वते ।
सर्वज्ञाय नमस्तस्मै कस्मैचित्परमात्मने ॥

Closing : सर्वेन्द्रः पुण्यागणी न गुणटोत न प्रजनाम्पद न,
प्रशः गम्भानिधि म न गुनि नत्मातन्ने योगविश ।
मनानी नगृणि चन्द्रपतिलको जानातिय स्वाभूनि,
निर्मोह समुपार्जयत्वया पद गोगोत्तर नास्यतम् ॥

Colophon : इति श्री जिनदत्त (स) रि विरचिते हादनोल्लासे विवेक
विलासे जन्मचर्याया परमपदप्रापणोनाम द्वादशमोल्लास ।
यह ग्रंथ करीब विक्रम सं० १६०० में बना था है ।
देखें—जि० र० को, पृ० ३५६ ।
Catg of Skt & Pkt Ms, P 692

४५०. बृहद्दीक्षाविधि

Opening : पूर्वदिने भोजनसमये भोजनतिरस्कारविधि विधाय ... ...

Colsing : स्वान्येषां ज्ञानसिद्धयर्थं शास्त्राण्यालोच्य युक्तित·
गुरुमार्गानुयायोति प्रतिष्ठासारसंग्रहम् ॥

Colophon : लिलेखेम फतेलालपंडितो हितकाम्यया ।
शोधयंतु विद्वास. सद्धर्मस्मिग्धमानसा ॥३॥

४५१. योगसार

Opening : भद्र भूरिभवाम्भोधि शोषिणी दोषमोषिणी ।
जिनेशशासनायालम् कुशासनविशासिने ॥१॥

Closing : श्रीनन्दनन्दिवत्स श्रीनन्दीगुरुपादाब्जषट्चरणः ।
श्रीगुरुदासो नन्घान्मुग्दमति श्री सरस्वति सूनु' ॥

Colophon : इति श्री योगसारसग्रह समाप्तम् । सवत् १९८९ विक्रमीये मासोत्तमेमासे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे नवमीतिथौ रविवासरे जैन-सिद्धान्त भवने इद पुस्तके पूर्णमगमत् ।

देखे—जि० र० को०, पृ० ३२४ (१) ।

४५२. योगसार

Opening : देखें--क्र० ४५१ ।

तस्याभवच्छ्रुतनिधिर्जिनचद्रनामा
शिप्योनुतस्यकृति भास्करन(द)नाम्ना ॥
शिप्येण सस्तवमिम निजभावनाथँ
ध्यानानुग विरचित सुवितो विदतु ॥

Colophon : इतिध्यानस्तव समाप्त ।

विशेष—अर्वाचीन लेख—

यह ग्रन्थ करीव १९५० विक्रम स० का ज्ञात होता है ।

४५३. योगसार सटीका

Opening : णिम्मलझाण परट्ठिया कम्मकलक डहेवि ।
अप्पा लद्धउ जेण परु ते परमप्पणवेवि ॥

Closing : ससारह भयभीयएण जोगचद मुणिएण ।
अप्पा सवोहणकया दोहा इक्कमंणेण ॥

इति श्री जोगसारग्रथ समाप्त ।

जैनसिद्धान्त भवन आरा मे लिखा । हस्ताक्षर रोशनलाल जैन । शुभमिति कार्तिक शुक्ला १२ शनिवार श्री वीर सम्वत् २४६२ श्री विक्रम सवत् १९९२ । इति सपूर्णम् ।

श्रीपद्मनन्द्यधिपपट्टपयोजटसश्वेवातपचितयशः

स्फुरदात्मवशः ।

राजाधिराजकृतपादपयोजसेवः स्यान्नः श्रिये कुवलयें

शुभचन्द्रदेव ॥२॥

आर्याशीदार्यवर्यैर्यादीक्षिता पद्मनंदिभि ।

रत्नश्रीरितिविख्याता तन्नाम्नैवास्तिदीक्षिता ॥

शुभचन्द्रार्यवर्यैर्या श्रीमद्भिः शीलशालिनी

मलयश्रीरितिख्याता क्षांतिका गर्वगालि ॥

तयैषा लेखिता स्वस्थ ज्ञानावरजशातयें

लिखिता राजराजेन जीयादष्टसहस्रिका ॥

संवत् १८४२ कर्तिक शुक्लसप्तम्यां गुरुवारे इद पुस्तका लिपिकृता महात्मा सीतारामेण जयनगरमध्ये । लेखकपाठक चिरञ्जीयात् शुभं भवतु कल्याणमस्तु ॥

४५६. आप्तमीमांसा

Opening : श्रीवर्द्धमानमभिवंद्य समन्तभद्रमुद्भूतबोधमहिमा-

नमनिन्द्यवाचम् ।

शास्त्रावतार रचितस्तुतिगोचराप्त मीमांसितं कृतिरलं

क्रियते मयास्य ॥

Closing : अनुपलब्ध ।

देखे—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६१ ।
(२) जि० र० को०, पृ० १७६ (VI) ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १०४ ।
(४) रा० सू० II, पृ० १६६ ।
(५) रा० सू० III, पृ० ४७ २४० ।

४५७. आप्तमीमांसा भाष्य

Opening : उद्दीपीकृतधर्मतीर्थमचलं ज्योतिर्ज्वलत्केवलालोकालोकित-

लोकलोकमखिलैरिन्द्रादिभिः वंदितम् ।

वंदित्वापरमार्हतां समुदयं गां सप्तभङ्गीविधिं,

स्याद्वादामृतगर्भिणीं प्रतिहति कांताधकमरादयम् ॥

Closing : श्रीवर्द्धमानमकलकमनिघघ पादारविन्दयुगलल प्रणिपत्य-
मूद्धर्ना ॥
भाव्येकलाकनयन परिपालयत स्याद्वादवर्त्मपरिणोमि
समन्तभद्रम् ॥

Colophon : इत्याप्तमीमासाभाप्यदशमा परिच्छेद । इति श्री भट्टकल-
कदेवविरचिताप्तमीमासावृत्तिरप्टशवतीय परिसमाप्ता । मवत् १६६५
वर्षे कार्तिकवदि ८ शुक्रे श्री मूलनघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे श्री-
कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री विजयकीतिदेवा. तत्पट्टे भट्टारक
श्री विजयकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्तच्छियेण ब्र०
सघारणाख्येन स्वहस्तेन लिखितमिद शास्त्रम् । शुभ भवतु ।

देखे—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६३ ।
(२) जि० र० को०, पृ० १६, १७८ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ ६७ ।
(4) Catg of Skt. Ms. P. 306.

४५८. देवागम स्तोत्र

Opening : देवागमनभोयान् ···· नो महान् ।

Closing : जयति जगति क्लेशा .... समुपास्ते ॥

Colophon इति श्री समन्तभद्रपरमर्हता विरचिते देवागमापरनाम अप्ट-
मीमांसा स्त्रोत्रम् ।

४५९. देवागम स्तोत्र

Opening : देवागमनभोवान ······· नो महान ॥

Closing : जयति जगति · · · समुपासते ॥

Colophon : इति श्रीसमन्तभद्रपरमहंताचार्य विरचित देवागमस्तोत्रं
सम्पूर्णम् ।

४६०. देवागम वचनिका

Opening : वृपभ आदि चउवीसजिन, वदौ शीश नवाय ।
विघनहरन मगलकरन मनवाछित फलदाय ॥

Closing : सुखी होऊ पाठक सदा, श्रवणकरै चितधारि ।
बुद्धि विग्धि मगल कहा, होउ सदा विस्तारि ।।

Colophon : इति श्री देवागमस्तोत्र वचनिका सम्पूर्णम् । शुभ भवतु १८६८ मासोत्तमे मासे अधिक आश्विनमासे शुक्लपक्षे द्वादश्या चन्द्रवासरे पुस्तकमिदं सपूर्णम् । लेखाकाक्षर रघुनाथशर्मा पट्टनपुरमध्ये आलमगज निवसति । शुभमस्तु ।

४६१. देवागम वचनिका

Opening : देखें—क्र० ४६० ।

Closing : अष्टादश सत साठि षट् विक्रम संवत् जानि ।
चैत्र कृष्ण चतुर्थी दिवस, पूर्ण वचनिका मानि ।।

Colophon : इति श्री देवागम स्तोत्र की वचनिका सम्पूर्ण ।

४६२. आप्त परीक्षा

Opening : प्रबुद्धाशेषतत्त्वार्थ बोधदीधितिमालिने ।।
नम श्रीजिनचन्द्राय मोहध्वातप्रभेदिने ।।१।।

Closing : स जयतु विद्यानंदो रत्नत्रयभूरिभूषणस्सततम् ।
तत्त्वार्थार्णवतरणे सदुपाय प्रकटितो येन ।। ।।

Colophon : इति श्री आप्त परीक्षा विद्यानंदिश्चाचार्ये ।।
समाप्तम् । सपूर्ण । शुभम् ।।

देखे—(१) दि० जि ग्र र, पृ ६१ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ३० ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १०३ ।
(४) रा० सू० II, पृ १६३ ।
(५) रा० सू० III, पृ० १६६ ।
(6) Catg of Skt & pkt Ms, P. 625.

४६३. आप्त परीक्षा

Opening : प्रबुद्धाशेषतत्त्वार्थ बोधदीधितिमालिने ।।
नम श्रीं जिनचंद्राय मोहध्वातप्रभेदिने।।

Closing : स जयतु विद्यानंदो रत्नत्रयभूरिभूषणस्सतम् ।
तत्त्वार्थार्णवतरणे सदुपाय प्रकटितो येन ॥१२६॥

Colophon : इति आप्त परीक्षा टीका विद्यानन्दि आचार्यकृतसमाप्तम् ॥ श्री गुरुभ्यो नमो नम ॥

नेत्रषट्खेटचद्रेऽब्दे माधवस्यासितेशरे ॥
तिथौमृगाकवारेऽय मूलर्क्षपूर्तिमाप्नुयात् ॥ ॥
शिवयोगे शिव भद्र शास्त्र शिवप्रकाशकम्
सीतारामेण लिपित भव्या पाठयितुं क्षमा. ॥
रामे राज्ये चहामीये पौराज्ये जनवार्द्धिके
षड्दर्शनानि प्राप्तानि गू मरेदानमानत. ॥३॥
इच्छापडिभगुं णिता इच्छार्धा चतुर्गुणेणय इत्रव्धम् ।
पुनरपि तदष्टगुणित तीर्थंकरकदवक वन्दे ॥४॥

संवत् १६६२ शक पट १८२७ वैशाख कृष्ण पचम्याम् चदवासरे लिपिकृतम् प० सीतारामशास्त्री शुभ सहारनपुरनगरे । भव्यजनाना सर्वेपा पठनार्थम् । मगल भवतु । शुभ ॥२॥

४६४. न्यायदीपिका

Opening : श्री वर्द्धमानमर्हंत नत्वा बालप्रवृद्धये ॥
विरच्यते मितस्पष्ट सदर्भन्याय दीपिका ॥१॥

Closing : ततो नयप्रमाणाभ्यां वस्तुसिद्धिरितिसिद्ध. सिद्धान्त पर्याप्तमागमप्रमाणम् ॥

Colophon : इति श्रीमद्वर्द्धमानभट्टारकाचार्य गुरुकारूण्यसिद्धसारस्वतोदय श्रीमदभिनवधर्मभूषणाचार्यविरचिताया न्यायदीपिकायामागमप्रकाश समाप्त । सवत् १६१० मिति माघमासे शुक्ल पक्षे प्रतिपद्दिवसे रविवारे । शुभ भवतु ॥

देखे—दि० जि० ग्र० र०, पृ० ६५ ।
जि० र० को०, पृ० २१६ II
प्र० जै० सा०, पृ० १६४ ।
आ० सू० II, पृ० ८२ ।
रा० सू० II, पृ० १६७ ।

रा० सू० III, पृ० ४७, १६६ ।
Catg. of Skt. & Pkt. Ms, P. 662.

४६५. न्यायदीपिका

Opening : श्री वर्द्धमानमर्हन्तं नत्वा बालप्रवुद्धये ।
विरच्येतु मितस्पष्टसदर्भं न्यायदीपिका ॥

Closing : ... तत्समाप्तौ च समाप्ता न्यायदीपिका मद्गुरोः वर्द्धमादेशोवर्द्धमानदयानिधे. श्रीपादस्नेह-सवन्धात् सिद्धेय न्यायदीपिका ।

Colophon : इति श्री मद्वर्द्धमानभट्टारकाचार्य गुरुकारुण्यसिद्धिसिद्धसारस्वतोदय श्री मदभिनवधर्मभूषणाचार्य विरचितायां न्यायदीपिकायामागमप्रकाश समाप्त. ।

४६६. न्यायमणिदीपिक

४६६

Opening : श्रीवर्द्धमानमकलङ्कमनन्तवीर्य-
माणिक्यनन्दियतिभाषितशास्त्रवृत्तिम् ।
भक्त्या प्रभेन्दुरचितालघुवृत्तिदृष्टया,
नत्वा यथाविधि वृणोमि लघुप्रपचम् ॥१॥
मदज्ञानमरुन्नीतं मलमत्र यदि स्थितम् ।
तन्निष्काश्योर्मिवन्मन्तं प्रवर्त्तन्तामिहाब्दिवत् ॥२॥

Closing : अकलङ्करत्ननन्दिप्रभेन्दुमददन्तगुणिभक्त्या ।
एतद्विकां वालो निरुद्धवारि ने(?)ष किल गुरु भक्त्या ॥
स्याद्वादनीनिकान्तामुखलोकनमुख्यसौख्यमिच्छन्त ।
न्यायमणिदीपिका हृद्वासागारे प्रवर्त्तयन्तु बुधा ॥

Colophon : इति परीक्षामुखलघुवृत्ते प्रमेयरत्नमाला नामधेयप्रसिद्धायां न्यायमणिदीपिकासज्ञाया टीकायां षष्ठ परिच्छेद ।

श्रीमत्स्वर्गीयबाबूदेवकुमारस्यात्मजदानवीरबाबूनिर्मलकुमारस्यादेशमादाय आगराप्रान्तगतसकरौलीनिवासिनः रेवतीलालस्यात्मजराजकुमरविद्यार्थिना लिखितमिद शास्त्रम् ।

इद लक्ष्मणभट्टेन विलिखित प्रथम शास्त्र लक्षीकृत्य लिखितम् । मशोधयितव्या विद्वज्जनै. । प्रतिलिपिकाल स० १६८० श्रावण-शुक्ल- त्रयोदशी ।

४६७. न्यायविनिश्चय विवरण

Opening : श्रोमज्ज्ञानमयोदयोन्नतपदव्यक्तोविविक्त जगत्
कुर्वन्सर्वतनूमदीक्षामच्ससर्वं विश्व वचो रश्मिभि ॥
व्यातन्वन्भुवि भव्यलोक नलिनी षडेष्वरखडश्रिय
श्रेय शाश्वतमातनोतु भवता देवोजिनाहंयन्यति. ॥१॥

Closing : व्याख्यानरत्नमालेय प्रस्फुरन्नयदीधिति ।
क्रियता हृदि विद्वद्भिस्तुदतीमानस तम ॥

Colophon : श्रीमान्सिह् महीपते परिषदि प्रख्यातवादोन्नति·
तर्कन्यायतमोघ्नतोदयगिरि सारस्वत श्री निधि· ॥
शिष्य श्रीमतिसागरस्य विदुषा पत्युस्तप. श्रीभृता
भर्तु· सिहपुरेश्वरो विजयते स्याद्वादविद्यापति ॥
इत्याचार्यवर्यस्याद्वादविद्यापति विरचिताया न्यायविनिश्चय-तात्पर्यविद्योतिन्या व्याख्यानरत्नमालाया तृतीय प्रस्ताव· समाप्त. ॥ समाप्त च शास्त्रम् । ॐ नमो वीतरागाय ॐ नम सिद्धेभ्य । करकृत-मपराध क्षन्तुमर्हन्ति सन्त । ६ ।शाके १८३२ वर्तमानसा-धारण नाम सवत्सरे उदयगयने वसतऋतौ चैत्रे मासे कृष्णपक्षे द्वाद-श्या भार्गववासरे मध्याह्नसमये समाप्तोऽय ग्रथ· । इदपुस्तक ३६ पी प्रात दुर्गग्रामवासिना फुडा जेमरावटे इत्युपनामक रामकृष्णशा-स्त्रीणा लिखितम् ॥
श्री सन् १२१०-५-७ ॥

४६८. परीक्षामुखवचनिका

Opening : श्रीमत् वीर जिनेश रवि, तम अज्ञान नशाय ।
शिव पथ वरतायो जगति, वदौ मै तसु पाय ॥

Closing : अष्टादशतमाठिलय विक्रम सवत माहि ।
सुकल असाढ सु चोथि वुध पूरण करी सुचाहि ॥

Colophon : इति परीक्षामुख जैनन्यायप्रकरण की लघुवृत्ति प्रमेयरत्न-माला की देशभाषामय वचनिका जयचद छावडा कृत सपूर्ण । सवत् १६२७ मिती पौहोवदी १ । श्री ।

४६९. परीक्षामुखवचनिका

Opening : देखें—क्र० ४६४ ।

Closing : देखें—क्र० ४६४ ।

Colophon : इति परीक्षामुख जैनन्याय प्रकरण की लघुवृत्ति प्रयेयरत्न-माला की देशभाषामय वचनिका जयचद्र छावडा कृता समाप्ता । सवत् १९६२ वैशाख कृष्णा ५ पचमी सोमवासरे । शुभ भवतु ।

४७०. प्रमाणलक्षण

Opening : सिद्धंधाम महारिमोहहनन कीर्तें पर मदिरम्,
मिथ्यात्वप्रतिपक्षमक्षयसुख संशीति विध्वसनम् ।
सर्वप्राणिहित प्रभेदु वचन सिद्धं प्रमालक्षणम्,
सतश्चेतसि चितयतु सतत श्री वर्धमान जिनम् ॥

Closing : • • • • तत्कालभावी—उत्तरकालभावी वा विज्ञानप्रमाणता हेतुः न भावत्तत्कालभाविक्वचिन्मिथ्यात्वज्ञानेपि तस्य भावात् अथोत्तर-कालभावि—स किं ज्ञातोऽज्ञातो न तावदज्ञा ॥

Colophon : नही है ।

४७१. प्रमाण मीमांसा

Opening : अनन्तदर्शनज्ञानवीर्यानन्दमयात्मने ।
नमोऽर्हते कृत्याकृत्य धर्मतीर्थयितायिनें ॥

Closing : यतो न विज्ञातस्वरूपस्यास्यवलवनं जयाय प्रभवति न चावि-ज्ञातस्वरुप परतत्र भेत्तु शक्यमित्याह ।

Colophon : इति प्रमाणमीमासा ग्रन्थ । मिती श्रावण कृष्णा १० सवत् १९८७ ।

४७२. प्रमाणप्रमेय

Opening : तत्त्रिकालवर्त्यशेषवस्तुक्रमव्यापि केवल सकलप्रत्यक्षम् ॥

Closing : स्पर्शरसगधरूपा शब्दसख्याविभागसयोगो परिमाण च प्रथक्त्वं तथा परत्वापेच ? समाप्त श्रीरस्तु. ॥

Colophon : इद पुस्तक परिधाविनाम सवत्सरे दक्षिणायने ग्रीष्मऋतौ निज आषाढमासे कृष्णपक्षे दशम्या गुरुवासरे दिवा दश घटिकाया वेणुपुरस्थित पन्नैचारी मठस्थ श्रीपति अर्चक गौडसारस्वत ब्राह्मन् विदवत् षट्कर्मी वेदमूर्तिवामननाम शर्मणस्य पचमात्मज: केशवनाम शर्म्मणेन लिखितमिति । समाप्तमित्यर्थं श्रीरस्तु । श्री पचगुरुभ्य: वीतरागाय नम. ।
नयी लिपि मे—यह ग्रन्थ वीर निर्वाण सवत् २४४० मे लिखा गया ।

४७३. प्रमाण-प्रमेय-कलिका

Opening : जयति निर्जिताशेषसर्वथैकान्तनीतय ।
सत्यवाक्याधिपा शश्वद्विद्यानदादिजिनेश्वरा ॥

Closing : ननु यद्येव कथमेकाधिपत्य न भवतीति चेत्, इत्यत्राप्युक्त समतभद्राचार्यै ।

काल कलिर्वा कलुषाशयो वा श्रोतु प्रवक्तुर्वचनात्ययो वा ।
त्वच्छासनैकाधिपतित्वलक्ष्मी प्रभुत्वशक्तेरपवादहेतु ॥

Colophon : इति श्री नरेन्द्रसेनविरचिता प्रमाणप्रमेयकलिका समाप्ता । लिप्यकृतशुभचितक लेख्यकदयाचदमहात्मा । शुभमस्तु । मिति भादवा प्रथमशुक्लपक्षे छठि रविवासरे सवत् १८७१ का ।

जैन सिद्धान्त भवन, आरा के लिए प्रतिलिपि की गई । शुभमिति मार्गशीर्षशुक्ला द्वादमी १२ चन्द्रवार विक्रम सवत् १९९१ । हस्ताक्षर रोशनलाल जैन । इति ।

देखे—जि र को., पृ. २९८ ।
दि. जि ग्र र, पृ ९८ ।
रा सू II, पृ. १९८ ।

४७४. प्रमेयकमल मार्तण्ड

Opening : देखे—क्र० ४७० ।

Closing : इति श्री प्रभाचंदविरचिते प्रमेयकमलमार्त्तण्डे परीक्षामुखाल-
कारे षष्ठ परिच्छेद संपूर्ण ॥

Colophon ; गभीरनिखिलार्थगोचरमल शिष्यप्रबोधप्रद
यद्व्यक्त पदमद्वितीयमखिल माणिक्य नन्दी प्रभो. ।
तद्व्याख्यातमदोयथागमत. किंचन्मया लेशत
स्वेया(?) द्वुधिया मनोरथतिगृहे चद्रार्कतारावधि ॥
मोहध्वातविनाशनो निखिलतो विज्ञानवृद्धिप्रदो
मेयानतनभोविसर्पणपटुर्वस्तु विभाभामुर
शिष्याब्जप्रतिबोधने समुदितो योग्रेपरीक्षामुखा-
ज्जीयात् सोत्र निबंधरावसुचिर मार्तण्डतुल्गोमल्प: ॥२॥
गुरु श्री नदि माणिक्यनदिताशेषसज्जन
नदता हरितैकनर जार्जनमती ?वं ॥

श्री पद्मनदिसिद्धामतिशिष्योनेकगुणालय प्रभाचद्राश्चिर जीया ।
पदेरत इति श्री प्रमेयकमलमार्त्तण्ड: संपूर्णतामगमत् ।
मिति प्रथमजेवा सुदी ६ सनीचरवार संवत् १८९६ का संपूर्ण हुवो ग्रंथ

विशेष—बाबू श्रीमधरदास आरेवाले की पोथी है।

देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० ९८ ।
जि० र० को०, पृ० २३८, २९९ ।
प्र० जै० सा०, पृ० १७७ ।
रा० सू० II, पृ० १९८ ।
Catg. of skt & pkt. Ms., P. 671.
Catg. of skt. Ms., P. 306.

४७५. प्रमेयकमलमार्त्तण्ड

Opening : सिद्धं धर्ममहारिमोहहननं कीर्त्तं परं मन्दिरं
मिथ्यात्वप्रतिपक्षमक्षयसुख संशीतिविध्वंसनम् ॥
सर्वप्राणिहित प्रभेन्दुभवनं सिद्धं प्रमालक्षण
सन्तश्चेतसि चिन्तयन्तु सततं श्री वर्द्धमानं जिनम् ॥१॥

Closing : यत्तुशास्त्रान्तरद्वारेणापगतहेयोपादेयस्वरूपो न तं प्रतीत्यर्थं ॥
इति ॥

Colophon : इति श्री प्रभाचन्द्राचार्यविरचिते प्रमेयकमलमार्त्तण्डे परीक्षामुखालंकारे षष्ठ परिच्छेद ॥

४७६. प्रमेयकण्ठिका

Opening : श्रीवर्द्धमानमानम्य विष्णुं विश्वसृजं हरम् ।
परीक्षामुखसूत्रस्य ग्रन्थस्यार्थं विवृण्महे ॥१॥
अथ स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मकं ज्ञानं प्रमाणमिति प्रमाणलक्षणं बाधातीतं नान्यद्युक्तिशतबाधितत्वात् । ननु स्वापूर्वार्थेतिलक्षणे यानि विशेषणान्युपात्तावितानि निरर्थकानीतिचेन्न परप्रतिपादितानेकदूषणवारकत्वेन तेषां सार्थकत्वात् ।

Closing : प्रमेयकण्ठिका जीयात्प्रसिद्धानेकसद्गुणा
लसन्मार्त्तण्डसाम्राज्ययौवराज्यस्य कण्ठिका ॥
सनिष्कलङ्कं जनयन्तु तर्कं वा बाधितर्को मम तर्करत्ने ।
केनानिशं ब्रह्मकृतं कलङ्कश्चन्द्रस्य किं भूषण-
कारणं न ॥

Colophon : क्रोधन संवत्सरे माघमासे कृष्णचतुर्दश्यायं विजयचन्द्रेण जैन क्षत्रियेण । श्री शांतिवर्णिविरचिता प्रमेयकण्ठिका लिखित्वा समर्पिता ॥
॥ भद्रंभूयात् वर्द्धतां जिनशासनम् ॥

४७७. प्रमेयरत्नमाला

Opening : अनुपलब्ध ।

Closing : तस्योपरोधवशतो विशदोरुकीर्तिर्माणिक्यनन्दि-
कृतशास्त्रमगाधबोधः ॥
स्पष्टीकृतं कतिपयैर्वचनैरुदारैर्बालप्रबोधकरमे-
तदनंत वियँ. ॥

Colophon : इति प्रमेयरत्नमालापरनामधया परीक्षामुखलघुवृत्ति समाप्ता. ॥ शुभम् संवत् १९६३ चैं० शुक्ल लि० पं० सीतारामशास्त्रि ॥

देखे Catg. of Skt & Pkt. Ms , P. 671.
Catg. Skt. Ms , P 306.

४७८. प्रमेयरत्नमाला (न्यायमणिदीपिका)

Opening : श्री वर्द्धमानमकलंकमनन्तवीर्यमाणिक्यनंदि-
यतिभाषितशास्त्रवृत्तिम् ॥
भक्त्या प्रभेंदुरचिता लघुवृत्तिद्रष्ट्या नता यथा-
विधिवृणोमि लघुप्रपंचम् ॥१॥

Closing : स्याद्वादनीतिकांतामुखावलोकन मुरगसौख्याभि वतः ॥
न्यायमणिदीपिकां हृदा सागारे प्रवर्त्तयन्तु बुधा ॥ ॥

Colophon : इति परीक्षामुखलघुवृत्ते प्रमेयरत्नमाला नामधेयप्रसिद्धायां न्यायमणिदीपिकायाम् सज्ञाया टीकायां षष्ठ परिच्छेद. ॥ श्री वीत-रागाय नम· । श्रीमद्महाकलंक मुनये नमः । श्रीमद्वेदशास्त्रसपन्न मूडविदे दक्षिण कन्नडापन्ने च्चारि (रिधत) वेदमूर्तिवामनमहस्यपुत्र-लक्ष्मणभट्टेन लिखितमिदं पुस्तक परिधावि संवत्सरे भाद्रपद ५ कुजवासरे संपूर्णश्च ॥

४७९. प्रमेयरत्नमाला-अर्थप्रकाशिका

Opening : श्रीमन्नेमिजिनेन्द्रस्य वन्दित्वा पादपङ्कजम् ।
प्रमेयरत्नमालार्थं संक्षेपेण विविच्यते ॥१॥
प्रमेयरत्नमालाया. व्याख्यास्सन्ति सहस्रश ।
तथापि पण्डिताचार्यकृतिर्ग्राह्यैव कोविदैः ॥२॥

Closing : सर्वदाशक्पद शकल्पार्थबोधकमिति ज्ञानमित्थं भूतनया-भासमित्यत्र विस्तर । सम्पूर्णं मंगलमहा श्री ॥

Colophon : स्वस्ति श्रीमन्सुरासुरवृंदवं दितपाद योज श्री मन्नेमीश्व रसमुत्पत्ति पवित्रीकृत गौतमगोत्र समुद्भूताहँन् द्विज श्रीब्रह्मसूरि शास्त्रि तनुज श्री मद्दोर्वलिजिन दास शास्त्रिणामतेवासिना । मेरु गिरि गोत्रोत्पन्न । वि । विजय चंद्राभिधेन जैन क्षत्रिणा लेखीति ॥ भद्रं भूयात् ॥

४८०. षड्दर्शन प्रमाण प्रमेयानुप्रवेश

Opening : सात्वनन्तं समाख्यातं व्यक्तानन्तचतुष्टयम् ।
त्रैलोक्ये यस्य साम्राज्य तस्मै तीर्थकृते नम ॥

Closing : जयति शुभचन्द्रदेव कण्डूगणपुण्डरीकवनमार्त्तण्ड ।
चण्डालदण्डदूरो सिद्धान्तपयोधिपारगोबुधाविनुत· ॥

Colophon : इति समाप्त शुभ भवतात् वर्धता जिनशासनम् । इत्ययग्रथ. दक्षिण कर्णाटके मूडविद्री निवासिना राजू० नेमिराजाख्येन लिखितस्स-माप्तश्चस्मिन दिने ॥ रक्ताक्षिस । माघशुक्ल द्वादशी ॥

४८१. चिन्तामणिवृत्ति

Opening · श्रिय क्रियाद्व सर्वज्ञज्ञानज्योतिरनश्वरीम् ।
विश्व प्रकाशयश्चिन्तामणिश्चिन्तार्थसाधनम् ॥

Closing · किं भोजको गच्छति तुल्यकर्तृक इति किं इच्छामि ववान् क्रियाया तदर्थायामिति किं इच्छा न भु क्ते ॥

Colophon इति श्री श्रुतकेवलिदेशीयाचार्य शाकटायनकृतौ शब्दानुशासने चिंतामणौ वृत्तौ चतुर्थस्याध्यायस्य चतुर्थ पाद समाप्तोध्यायश्चतुर्थ ॥ स्याद्वादाधिपशाकटायनमहाचार्य प्रणीतस्यय शब्दानुशासनस्य महतीवृत्ति -स्समाहृत्यताम् ।

प्रेक्षातिक्षम यक्षवर्मरचिता वृत्तिर्लघीयस्यसौ ।
श्री चिंतामणिसज्ञिकाविजयतामाचन्द्रतार भुवि ॥

श्रीमते शाकटायनाचार्याय नम ॥श्रीयक्षवर्माचार्याय नम

दक्षिणकर्नाटदेशे कार्कल दुर्गग्रामे शके १८३२ स्य वर्त्त माने साधारणनाम सवत्सरे मार्गशीर्षे कृष्णे अष्टम्याया स्थिरवासरे लिखितोऽय ग्रन्थ । फु डाजेरामकृष्णशास्त्रिण पुत्रेण रगनाथ शास्त्रिणा अस्मद्गुरवे नम. । लक्ष्मीसेन गुरुभ्यो नम· ।

देखे—Catg of Skt & Pkt. Ms., P 694

४८२. धातुपाठ

Opening : श्री विद्याप्रकृतिं नत्वा जिन शब्दानुशासने ॥
मूलप्रकृति पाठोऽय क्रियार्थगणसिद्धये ॥ ॥

Closing : ··· ·एकादशेति शब्दानुशासने धातवो मता ॥
धातुपाठ समाप्त । श्रीकल्याणकीर्त्तिमुनये नम

४८३. हेमचन्द्रकोष

Opening : इमनाल्लोइ इम प्रत्ययातमल प्रयात नान पुल्लिग । इनम् प्रतिधिमा प्रदिमाश्रुतिम्यद्रठिमा इत्यादि । तथा निवसिद्ध इम न ग्रहण-माचाशदिरिति नपुन्सक च वाधनार्थं ।

Closing : यत्रोक्तमत्रसद्भिल्लो ऽतएव विज्ञेय लिग शिष्या लोकाश्रय चाल्लिगस्येतिज्ञान ता सख्याऽतियुष्मद्रमस्त्वस्फरलिंगका पञ्चान्यमव्य-यचित्य सख्य च तछ दुन्नर विपुला निस्वाप नाम लिगानुशासनाम्यभि समीक्ष्य सख्या क्षप्यत । आचार्य हेमचन्द्र समद्मदनुशासनानि लिगाना ।

Colophon : इत्याचार्य श्री हेमचद्रविरचित स्वोपज्ञलिगानुशासन विवरण समाप्त ॥

विशेष—यह ग्रन्थ पूर्णतः जीर्णशीर्ण अवस्था मे है । अत इसके सभी अक्षर स्पष्ट पढे नही जा सकते है ।

देखें— (१) दि. जि. ग्र र., पृ. १०१ ।
(२) जि. र. को , पृ ४६२ ।

४८४. जैनेन्द्रव्याकरण महावृत्ति

Opening : प्रारम्भ के ७९ पत्र नही है ।

Closing : चतुष्टय समन्तभद्रस्य ॥१२४॥ फगोह इत्यादि चतुष्टय समन्तभद्राचार्यस्य मतेन भवति, नान्येषा, तथाचैवोदाहृतम् ।

Colophon : इत्यभयनदिविरचिताया जैनेन्द्रव्याकरणमहावृत्तौ पचमस्या-ध्यायस्य चातुर्थपादः समाप्तः । समाप्तश्चपचमोध्याय. । मगलमस्तु । इति श्री जैनेन्द्रव्याकरणग्रन्थ । आरे मध्ये लिखायित जैनधर्मीशुभकर्मीबाबू कन्हैयालाल तस्यात्मज बाबू श्रीमन्दिरदास निजपरोपकारार्थ लिपिकृत देवकुमारलालभक्त कायस्थ शुभ मिति आषाढ सुदी सप्तमी सोमवार सवत १९०७ । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ।

देखें—(१) दि. जि. ग्र र., पृ. १०२ ।
(२) जि र. को , पृ. १४६ (I) ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १४८ ।
(४) आ० सू० पृ० ६४ ।
(४) रा. सू. II, पृ. २५७ ।
(५) रा सू III, पृ. ८७ ।
(६) Catg of Skt & Pkt. Ms., P. 645.

४८५. जैनेन्द्र व्याकरण महावृत्ति

Opening : लक्ष्मीरात्यतिकीयस्य निरवयावभासते ।
देवनदितपूजेशे नमस्तस्मै स्वयभुवे ॥

Closing : क्षरोक्षरि खे २३ ॥

Colophon : इत्यभयनदिविरचिताया जैनेन्द्रमहावृत्तौ पचमस्याध्यस्य चतुर्थ: पाद समाप्त: । शुभमस्तु मगलमस्तु ।

४८६/१. जैनेन्द्र व्याकरण महावृत्ति

Opening : Missing.

Closing : कृयोह इत्यादिचतुष्टय समतभद्राचार्यस्य मतेन भवति नान्येषा तथाचेवोदाहृतम् ।

Colophon : इत्यभयनदिविरचिताया जैनेन्द्रव्याकरणमहावृत्तौ पचमस्या-ध्यायस्य चतुर्थ. पाद समाप्त । समाप्तश्चाय पचमोध्याय: ॥

४८६।२. कातन्त्र विस्तार

Opening : जिनेश्वर नमस्कृत्य गौतम तदनन्तरम् ।
सुगम क्रियतेऽस्माभिरय कातत्रविस्तर ॥

Closing : · · सणे तद्धिते वृद्धिरागमो वा भवति । न्यकोरिदन्याकव नैयकव ।

Colophon : इति श्री मत्कर्णदेवोपाध्यायश्रीवर्धमानविरचिते कातत्रविस्तरे तद्धिते दशमप्रकरण समाप्तमिति ।

परिसमाप्तोऽय कातत्रविस्तरो नाम ग्रन्थो माधवकृष्णाप्टम्या लिखित्वा मया रानू नामधेयेन । सन् १६२८ ।

४८७. पंचसन्धि व्याकरण

Opening : प्रणम्य परमात्मान बालधी वृद्धिसिद्धये ।
सारस्वतीमृजुकुर्व्वेपि क्रिया नातिविस्तराम् ॥

Closing : भ्रमत् अग रुडप्रत्यय· डित्वादिलोप स्वरहीन अत्र तकारस्य नाश. प्रथमैकवचन सि इकार उच्चारणार्थ. इति इकारलोप. स्त्रोविसर्ग. भ्रमन् सन् रौतिशब्द करोतीति भ्रमर इति सिद्धम् ।

Colophon : इति विसर्ग सधि. । पचसंधि पूर्ण जातम् । इति सारश्वत पचसंधि सपूर्णम् ।

४८८. प्राकृत व्याकरण (२ अध्याय)

Opening : अत्र प्रणम्य सर्वज्ञं विद्यानदारपदप्रदम् ।
पूज्यपाद प्रवक्ष्यामि प्राकृतव्याकृतस्सताम् ।।

Closing : .... एक्केक्क एक्केक्के एअगगस्मिरसेडारत अत अकारातात् लिङ्गात् परस्य स्यादि ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

४८९. रूपसिद्धि व्याकरण

Opening : श्री वीरममल पूर्णश्री दृग्वीर्यसुखात्मकम् ।
नत्वा देवमत्राधोक्ति रूपसिद्धि हिता ब्रुवे ।।

Closing : इञ इति दीर्घ. । अविजिगासते व्याकरणं । इत्यादि समस्त सप्रवच शब्दानुशासन विद्वद्भिरुन्नेतव्यम् ।

Colophon : इति रूपसिद्धि. समाप्त. । श्री कृष्णार्पण श्री गुंमटनाथाय नम: । इति धातुप्रत्ययसिद्धि.
व्याकरणोधमो नीत्वा प्राप्तु ज्ञानसुखामृतम् ।
बालानामृजुमार्गोय सक्षेपेण प्रदर्शित: ।।
दयापालकृता स्वत्तु रूपसिद्धि प्रवर्धताम् ।
भूमावदित्तमो भेत्ति विपुनो (लो) भानु रश्मिवत् ।।
जिननाथाय नम: ।

४९०. सरस्वती प्रक्रिया

Opening : .. . आव् भवति स्वरे परे पौ अक., पावक: .. ... ।

Closing : अचताद्वोहयग्रीव: कमलाकरईश्वर. ।
सुरासुरनराकारमधुपापीतपत्कज' ।।

Colophon : इति श्री सरस्वती प्रक्रिया समाप्ता ।
सवत १८०९ वर्षे मार्ग वदी ४ शुक्रे लिखित पडित श्री हेमराजेन स्व पठनार्थम् । शुभ भवतु ।

४६१. सिद्धान्त चन्द्रिका

Opening : नमस्कृत्य महेशान • ।
वर्णप्रतीतिसूत्राणा, कुर्व्वेसिद्धान्तचन्द्रिका ।

Closing : • • ककारादि फो वा रेफ रकार लोकाछे वपस्य सिद्धिर्यण्वामातरा दे ।

Colophon : इति श्री रामचद्राश्रम विरचिताया सिद्धान्तचन्द्रिका सम्पूर्णम् ।
अदृष्टिदोषात् मतिविभ्रमाश्च यदर्प्यहीन लिषत मयात्र ।
तत्साधुमुख्यैरपि शोधनीय कोपो न कार्य खलु लेषकाय ॥
यादृश पुस्तक • • • ॥
वाचनाचार्यवर्यधुर्यज्ञानकुशलगणि. तत्शिष्यप्रशिष्यपडितोत्तमपडित श्री ज्ञानसिहगणि शिष्य धनजी लिषत । श्री मेदणी तटमध्ये ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १०६ ।
(२) रा० सू० II, पृ० २६, २६४ ।
(३) रा० सू० III, पृ० २३१ ।
(४) आ० सू०, पृ० १४२ ।
(५) जि र. को., पृ ४३९ (II) ।

४६२. तद्धित प्रक्रिया

Opening : • " आआ एऐ औ एते वृद्धिसज्ञका' भवन्ति ।

Closing : सख्याया द्वितय, त्रितय, द्वय शेषानिपात्या. कृत्यान्दया कृति यति तति ।

Opening : इति तद्धितप्रक्रिया समाप्ता ।

४६३. धनञ्जयकोष

Opening : तन्नमामि परः ज्योतिरवाड्मनसगोचरम् ।
उन्मूलयत्यविद्या यत् विद्यामुन्मीलयत्यपि ॥

Closing : अर्हत्सिद्धमितिद्वावप्यर्हत्सिद्धाभिधायिनं ।
अर्हदादिनापि प्राहु शरणोत्तममंगलान् ।।

Colophon : नहीं है ।
देखें—Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 654.

४९४. नाममाला

Opening : वंदौ श्री परमातमा, दरसावन निजपंथ ।
तसु प्रसाद भाषा करौ, नाम मालिका ग्रन्थ ।।

Closing : संवत् अष्टादश लिपौ, जा ऊपर उनतीस ।
वासो दे भादौ सुदी, वातेचतुरदशीश ।।

Colophon : इति श्री देवीदास कृत नाममालिका सम्पूर्णम् । संवत् १८७३ वैशाख वदी २ आदि वारे ।

४९५. शारदीयाख्यनाममाला

Opening : प्रणम्य परमात्मानं सच्चिदानंदमीश्वरम् ।
ग्रथनाम्यहं नाममालां मालामिवमनोरमाम् ।।

Closing : भूद्वीपवर्षसरिदद्रिनभः समुद्रपातालदिक्,
ज्वलनवायु वनानि यावत् ।
यावन्मुद वितरतो भूवितरतो भुवि पुष्पदंतो,
तावन्स्थिरा विजयतां वत् नामालामिमा ।।

Colophon : इति श्री शारदीयाख्यनाममाला समाप्ता ।
संवत् १८२८ वर्षे मासोत्त (मे) मासे वैशाखमासे कृष्णपक्ष-पंचम्यां गुरुवासरे गोपाचलमध्ये लिखितमाचार्य सकलकीर्ति स्वहस्ते । श्रीरस्तु । कल्याणमस्तु । शुभमवतु ।
एकाक्षर परमदातारो ज्योगुरु नयैव मन्यते ।
स्वानज्योन्यमन गत्वा चौकालो शुभजायते ।।
देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १११ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ३३५ ।
(३) Catg. of Skt. & Pkt. Ms, P. 695.

४९६. शारदीयाख्यनाममाला

Opening : देखे—क्र० ४६३ ।

Closing : देखे,—क्र० ४६३ ।

Colophon : इति श्री सारदीयाख्य लघु नाममाला समाप्तम् । सवत् १९१८ मासाना मासोत्तममासे मार्गशिर मासे शुभेशुक्लपक्षे तिथौ षष्ठी भृगुवासरे लिपीकृत ब्राह्मण रामगोपालेन वासी मौजपुर को लीखी रामगढमध्ये । शुभमस्तु ।

४९७. शारदीयाख्यनाममाला

Opening देखें—क्र० ४६३ ।

Closing : देखे—क्र० ४६३ ।

Colophon : इति श्री सारदीयाख्य नाममाला समाप्त । सवत् १९८५ का जेष्ट शुक्ला ८ शनिवासरे ।

४९८. त्रेपनक्रियाकोष

Opening : समवसरण लिछिमी सहित वरधमान जिनराय ।
नमौ विबुध वदित चरन भविजन कौं सुखदाय ॥

Closing : जबलौ धर्मजिनेश्वर साह । जगत माहिं वरतैं सुखकार ॥
तबलो विसतरिजो ईह ग्रन्थ । भविजन सुर शिव दायक पथ ॥

Colophon : इति श्री त्रेपनक्रिया भाषा ग्रन्थ सिघई किसनसिघ (सिंह) कृत सपूर्णम् । मिती फूस (पौष) सुदी ११ संवत् १९६१ ।

४९९. त्रेपनक्रिया कोष

Opening : देखे—क्र० ४९६ ।

Closing : देखे—क्र० ४९६ ।

Colophon : इति श्री त्रेपनक्रिया कोस विधान का छद की जाति का अक २६१५ एक अधिकार का अक १०८। श्लोक सख्या टीका शुद्ध । ३००० । तीन हजार के ऊन मान ।

इति श्री क्रियाकोस भाषाग्रन्थ सिहो किसनसिंघ कृत सपूर्णम् श्रीरस्तु ।।

५००. उर्वशीनाममाला

Opening : श्री आदिपुरुष कहिये जगत, जाकी आदि अनत ।
अगम अगोचर विश्वपति, सो सुमिरो भगवत ।।

Closing : वक्तासुरगुरुसौ हुतो श्रोता हो सुरराज ।
तहुभवन पारन लह्यो कहा औरको काज ।।

Colophon : इति श्री शिरोमणि कृता उर्वशीनाममाला सपूर्णं । शुभभवतु ।

५०१. विश्वलोचन कोष

Opening : जयति भगवानास्ता धर्म्मं प्रसीदतु भारती,
वहन्तु जगतीप्रेमोद्गारतरज्वशुभ जना ।

अयमपि ममश्र्यानगु स्तनोन्मनोमुद
किमधिकमितस्त्यक्तावेगान् भवन्तु विपश्चित ।।१।।

Closing : हेहे व्यस्तौ समस्तौ च स्मृत्या मत्र हूनिषु ।।
हौच हौव समस्तौ व सबुद्धया ध्यानयोर्म्मतौ ।।८६।।

Colophon : इति श्री पडित श्री श्री धरसेन विरचितायां विश्वलोचन-मित्यपराभिधानाया मुक्तवल्या नामार्थकाड समाप्त ।। भवतु ।।१८६१।। वर्षे ? मासे शुक्लपक्षे .... शेदास। ? आनतीयो १३ दिने गुरुवारे ।।

५०२. अलंकारसग्रह

Opening : जगद्वैचित्र्यजनन जागरूकपद्वयम् ।
अवियोगरसाभिन्नमाद्य मिथुनमाश्रये ।।१।।

Closing : सर्वदोपरहित सगुण यत् काव्यमव्ययशकरमूर्व्यम् ।
त्वच्चारित्रमि वमादुनिषिव्य गर्वितारियमग डरग डए ।

Colophon : इत्यमृतानदयोगी प्रवरविरचितेऽलकारसग्रहे दोषगुणनिर्णयो नाम षष्ठ परिच्छेद ॥५२४॥
जुम्ला श्लोक ६६० ।
देखें—जि० र० को०, पृ० १७

५०३. अलकारसंग्रह

Opening : देखे, क्र० ५०२ ।

Closing : रसोक्तस्यान्यथाव्याख्यारावीचार्या बुद्धिशालिभि ॥

Colophon : इत्यमृतानदयोगि प्रवरविरचिते अलकारसग्रहे वसुनिर्णयो नामाष्टमो अध्याय ।

करकृतमपराध क्षतुमर्हन्तिसत ॥
अयमलकारमग्रहो नाम ग्रथ रानू नेमिराजाख्येन लिखित।
रक्ताक्षिस माघमासे शुलपक्षे द्वितीया तिथौ समाप्तश्च ॥

५०४. बारहमासा

Opening : अलिरी घर नेमपिया विनमैं नर होरी ।
प्रथ(म)लियो नहि मन समुकाय ।
नाहक पठयो है लगन लिषाय ॥

Closing : जेठ सपूरन बारहमास, नेम लियो सिवथान नेवास ।
रजमति सुरपद पाई विख्यात, सागरबुध कहत यह बात ॥

Colophon : बारहमासा सपूरन ।

५०५. चन्द्रोन्मीलन

Opening : चंद्रप्रभ नमस्कृत्य चंद्राभ चंद्रलाच्छनम् ॥
चंद्रोन्मीलनकं वक्ष्ये, सकलार्थं चराचरम् ।

Closing : यत्तु लभ्यते तत्तत्संवत्सर आदित्य वद्वितप्रश्ना-
दित्य लभ्यते ।
चंद्रचद्वितप्रश्ना चंद्रं लभ्यते,
क्षितिजवर्द्धित प्रश्ना भौम लभ्यते ॥

Colophon : इति चंद्रोन्मील्न समाप्त ।

देखे—जि० र० को० पृ०, १२१

५०६. चन्द्रोन्मीलन

Opening : देखे, क्र० ५०५ ।

Closing : .... एवं चन्द्रमा से चन्द्रलोक की प्राप्ति और भौम से भौम लोक की प्राप्ति कहना चाहिए ।

Colophon : इति चन्द्रोन्मीलन समाप्तम् । शुभ भवतु ।
शुभमिति फाल्गुन शुक्ला ५ सं० १६६० ।

देखें—जि० र० को०, पृ० १२१ ।

५०७. चन्द्रोन्मीलन

Opening : देखें, क्र० ५०५ ।

Closing : देखें, क्र० ५०६ ।

Colophon : इति चन्द्रोन्मीलन समाप्तम् ।

५०८. दोहावली

Opening : जिनके वचन विनोद ते प्रगटे शिवपुर राह ।
ते जिनेन्द्र मंगल करो नितप्रति नयो उछाह ॥१॥

Closing : सो सम्यक्त सहित वने व्रत संयम सम्बन्ध ।
तो उपमा सांची फबे सोना और सुगन्ध ॥

Colophon : नहीं है ।

५०६. फुटकर कवित्त

Opening : भौ (भव) जल माहि भरयो चिर जीव सदीव
अतीत भवस्थिति गाठी।
राग विरोध विमोह उदै वसु कर्मप्रकृति लगि
अति गाठी ॥

Closing : ... ... ? अस्पष्ट।

Colophon : इति कवित्तानि।

५१०: फुटकर कवित्त

Opening : देखे, क्र० ५०६।

Closing : कहू लताह्व फून्यो कहू फूलह्व फूल्यो कहू,
भौरह्व भूल्यो कहूँ रूप कहू दिप्ट है।
सकल निवासी अविनाशी सर्वभूतवासी,
गुपत प्रकासी आपै सिप्ट आपै मिप्ट हूँ।

Colophon : इति श्री तिलोकचंदकृत फुटकर कवित्त सम्पूर्णम्।
सवत् द्वादशषष्ठहि, अवर असी परमानि।
माघशुक्ल द्वितीया तिथौ, वार चद्र शुभ जानि ॥१॥
अच्छेलाल आरे वसै, लिखवायो जिन ग्रंथ।
नंदलाल लेखक सही, समीचीन यह पंथ ॥२॥
गगातट छपरा नगर देवलत गज सुधाम।
तहा लिखि पूरन कियौ, सु दर रचि विश्राम ॥३॥

५११. नीतिवाक्यामृत

Opening : सोम सोमसमाकार, सोमाभ सोमसंभवम्।
सोमदेवमुनि नत्वा, नीतिवाक्यामृत ब्रुवे ॥

Closing : ... ... जनस्याकृत्तविप्रियस्य हि् वालकस्य जनन्येव जीवितव्यकारणम् ।

Colophon : इति सकलतार्किकचक्रचूडामणिचुवितचरणस्य रमणीय-पंचपचाशन्महावादिविजयोपार्जितोर्जिकीर्ति मदाकिनीपवित्रित त्रिभुवनस्य परमतपश्चरणरत्नोदन्वतः श्रीनेमिदेवभगवत· प्रियशिष्येण वादीन्द्रकालानल श्रीमन्महेन्द्रदेवभट्टारकानुजेन स्याद्वादाचलसिंह तार्किकचक्रवर्तिवादिभय चाननवाक्कल्लोलपयोनिधि के कुलराजकुंजरप्रभृतिप्रशस्तिप्रशस्तालकारेण षण्णवतिप्रकरणयुक्तिचिंतामणि त्रिवर्गमहेन्द्रमातलिसजल्पयशोधरमहाराज चरित्र महाशास्त्रवेधसा श्रीमत्सोमदेवसूरिणा विरचित नीतिवाक्यामृत नाम राजनीतिशास्त्र समाप्तम् ।

मिति पौष कृष्णदशम्यया रविवामरान्यतायां शुभसवत्सर १९१० का मध्ये ममाप्तम् । लिखित ब्राह्मण रामकवारकेन, लिखायतचिरजीवसाहु जी श्री सदासुख जी कासलीवाल जयनगरमध्ये लिखि ।

देखे—जि र को, पृ २१५ ।
Catg of Skt. & Pkt Ms., P. 660.

५१२. नीतिवाक्यामृत

Opening : देखें—क्र० ५११ ।

Closing : अथाप्तलक्षणमाह । यथानुभूतानुमतश्रुतार्थाविसवादिवचन पुमानास. यथाभूत सत्य अनुमत लोकसमत यथाश्रुतार्थ भुतार्थो यस्य वचनस्य स आप्तपुरुषः ।

५१३. रत्नमंजूषा

Opening : यो भूतमव्यमवदर्थयथार्थवेदी, देवासुरेन्द्रमुकुटपादपद्मः ।
विद्यानदीप्रभवपर्वत एक एव, त क्षीणकल्मपगण
प्रणमामि वीरम् ॥

Closing : संकामेकगणोज्ज्वलामभिमतच्छन्दोऽक्षरागारिका-
मेका श्रेणिमुपक्षिपन्नधरतोऽप्येकैक्हीनाश्च वा. ।

उर्ध्वं द्विद्विगृह्यकमेलनम ग्रेध स्थानकेष्वालिखे-
देकच्छन्दसि खण्डमेरुरमल पु नागचन्द्रोदित ॥१॥

Colophon : एतत्त्रयोक्तक्रमेण प्रस्तारे कृते विवक्षितछन्दस लगक्रियया सह तत पूर्वस्थितसकलछन्दसा लगक्रिया सर्वा समायान्तीत्यर्थ ॥

देखे– जि० र० को०, पृ० ३२७ ।

५१४. राघवपाण्डवीयम् सटीक

Opening : श्रीमान् शिवानदनयीशवमो
भूयादिभूत्यै मुनिसुव्रतो व: ॥
सद्धर्मसभूतिनरेन्द्रपूज्यो
भिन्नेन्दुनीलोल्लसदगकाति. ॥१॥

Closing : केन गुरुणा किमाख्येन दशरथेनेति

Colophon : इति निरवद्यविद्यामडनपडितमडलीजितस्य षट्तर्कचक्रवर्तिन: श्रीमद्विनयचद्रपडितस्य गुरुरतेवासिनो देवनदिनाम्न. शिष्येण सकलकलोद्भवचारुचातुरीचद्रिकाचकोरेण विरचिताया द्विसधानकवेर्धनजयस्य राघवपाडवीयाभिधानस्य महाकाव्यस्य पदकौमुदीनामदधानाया टीकाया नायकाभ्युदयरावणजरासधवधमावर्णन नामष्टादश: सर्ग: ॥१८॥

देखे—Catg of Skt & Pkt Ms. P 654.

५१५. शृंगारमञ्जरी

Opening : श्री मदादीश्वर नत्वा सोमवशभुवार्थित ।
रायाख्य जैनभूपेन वक्ष्ये शृ गारमञ्जरीम् ॥१॥

Closing : तद्भूमिपालपाठार्थमुदितेयमलङ्क्रिया ।
सक्षेपेण बुधैर्ह्येषा यद्यत्रास्ति विशोध्यताम् ॥

Colophon : इति शृंगारमञ्जर्यां तृतीय परिच्छेद । श्री सेनगणाग्रगण्यातपोलक्ष्मीविराजिताजितसेनदेवयतीश्वरविरचित. शृ गारमञ्जरीनामालङ्कारोऽयम् । सवत् १९८६ विक्रमीये मासोत्तमेमासे कार्तिकमासे शुभशुक्लपक्षे चतुर्दश्या शुक्रवासरे आरानगरे श्रीयुत स्व० देवकुमारेण स्थापित जैनसिद्धान्तभवने श्री के० भुजबलिशास्त्रिण अध्यक्षतां इद पुस्तक पूर्तिमगमत् ।

देखें—जि० र० को०, पृ० ३८६ ।

५१६. श्रृंगारवर्णव चन्द्रिका

Opening : जयति सत्सिद्धकाव्यालापपद्माकरैवम् (?)
बहुगुणयुतजीवन्मुक्तिपु स ' ' ।
रवाणीसारनिक्काणरम्यो—
जिनपतिकलहृसश्चारुसनीति(?) वक्ष्ये ॥१॥
अमन्दानन्दसन्दोहपीयूषरसदायिनीम् ।
स्तवीमि शारद दिव्या सज्ज्ञानफल-
शालिनीम् ॥२॥

Closing : कीर्तिस्ते विमला सदा वरगुणा वाणी जयश्रीपरा,
लक्ष्मी सर्वहिता सुख सुरसुख दान विधान महत् ।
ज्ञान पीनमिव पराक्रमगुणस्तुङ्गो नय कोमल
रूप कान्ततर जयन्तमिव(?)भो श्रीरायभूमीश्वर ॥११७

Colophon : इति परमजिनेन्द्रवदनचन्द्रिरविनिर्गतस्याद्वादचन्द्रिकाचकोर-विजयकीर्त्तिमुनीन्द्रचरणाब्जचञ्चरीकविजयवर्णिविरचिते श्रीवीरनर-सिंहकाभिरायनरेन्द्रशरदिन्दुसन्निभकीर्त्तिप्रकाशके श्रृङ्गारार्णवचन्द्रिका-नाम्नि अलङ्कारसग्रहे दोषगुणनिर्णयो नाम दशमः परिच्छेद समाप्त । श्रवणवेलुगुलक्षेत्र निवासि बि० विजयचद्रेण जैन क्षत्रियेण इद ग्रथ समाप्त लेखीति मगल महा ॥

५१७. श्रुतबोध

Opening : छन्दसा लक्षण येन, श्रुतमात्रेण बुध्यते ।
तमहृ सप्रवक्ष्यामि श्रुतबोधमविस्तरम् ॥

Closing : चत्वारो यत्रवर्णा प्रथमलघव षष्टकस्सप्तमोऽपि,
द्वौतावत्षोडशाद्यौ मृगमदमुदिते षोडशान्त्यौ तथान्त्यौ ।
रम्भास्तम्भोरुकाण्डे मुनि मुनि मुनिभिर्यत्रकान्ते विरामं,
बाले वन्द्यं कवीन्द्रैरसुतनु निगदिता स्त्रग्धरा सा प्रसिद्धा ॥

Colophon : इति श्रीमदजितसेनाचार्य विरचित श्रुतबोधाभिधानच्छन्दो-लक्षण ग्रन्थ समाप्त ।

विशेष—यह ग्रन्थ कालिदास रचित है, किन्तु इसकी प्रशस्ति मे अजितसेन रचित लिखा है।

देखें—(१) दि० जि. ग्र र., पृ. १०८।
(२) जि० र० को०, पृ० ३६८।
(३) रा० सू० III, पृ० ८६, २३३।

१ . श्रुतबोध

Opening : देखें—क्र० ५१७।

Closing : देखें—क्र० ५१७।

Colophon : इति श्री कालिदासविरचित श्रुतवोधाख्य छंदस्सपूर्णम्। माघवद्य बन पचम्यां लिलेख रामकृष्णाभिधो द्विजन्मा।

५१९. श्रुतपंचमीरासा

Opening : .... सुनहु भव्य एक चित देय सवही सुखकारी ॥१॥

Closing : नरनारी जे रास सुनेइ मन वच रुचिगाय।
सुख संपति आनंद लहै वंछित फल पावइ ॥

Colophon : नही है।

५२०. सुभद्रा नाटिका

Opening : आहन्तीमतुलामवाप्य तपसामेक फलं भूयसाम्,
यो नैराश्य घपस्त्रयस्य जगतामभ्यर्हणाया. पदम्।
स्वीचक्रे स्तवनातिवर्तिविभवा सिद्धिश्रिय शाश्वती-
माद्यस्तीर्थकृतां कृति स वृषभः श्रेयांसि पुष्णातु न. ॥

Closing : ... ... भद्र चिराय भवता जिन शासनाय। नामि' एवमस्तु। इतिनिष्क्रान्ता. सर्वे।

Colophon : इति श्री भट्टारगोविन्दस्वामिन सूनुना श्रीकुमारसत्यवाक्यदेव वरवल्लभोदयभूषणानामार्यमिश्राणमनुजेन कवेर्वर्द्धमानस्याग्रजेन महाकविना हस्तिमल्लेन विरचिताया सुभद्रानामनाटिकायां चतुर्थोऽङ्कः।
हस्तिमल्लस्य गोविन्दनन्दनस्य महीयस।
सूक्तिरत्नाकरस्यैषा सुभद्रानामनाटिका ॥
समाप्ता चेय सुभद्रा नाटिका। भद्र भूयात्।

सत्यवत्वस्य परीक्षार्थं मुक्तं मत्तमतंगजम् ।
य मरण्यापुरेजित्वा हस्तिमन्नेतिकीर्तित ।।१।।
कविकुलगुरुणा तेन हि रचितेयं नाटिका सुभद्राख्या ।
'लिखिता' सुमार्थरम्या बुधजनपदसेविना 'शशिना' ।।२।
समाप्तश्चाय ग्रन्थ. वैशाख शुक्ला प्रतिपत् वीर नि०
सं० २४५८ ।

देखें—जि० र०, को० पृ० ४४५ ।
Catg. of skt. Ms., P. 304

५२१. सुभाषित मुक्तावली

Opening : अर्हंतो भगवंतइन्द्रमहिता सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा. पूज्या उपाध्यायका ।
श्री सिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा. रत्नत्रयाराधका:,
पंचै ते परमेष्ठिन. प्रदिदिनं कुर्वंतु ते मगलम् ।

Closing : सुखस्य दुःखस्य न कोपि दाता,
परो ददातीति कुबुद्धिरेषा ।
पुराकृत कर्म तदैव भुज्यते,
शरीरतो निस्तृपयत्त्वया कृतम् ।।

Colophon : नहीं है ।

विशेष—प्रारंभ का श्लोक मगलाष्टक का है ।

५२२. सुभाषितरत्नसंदोह

Opening : जनयति मुदमतर्भव्यपाथोरुहाणा हरति तिमिर राशि या प्रभाभानवीव
कृतनिखिलपदार्थद्योतनाभारतीद्धा वितरतु धुतदोषा साऽर्हती भारतीवः ।।१।।

Closing : आशीर्विध्वस्तकन्तोर्विपुलशमभृत· श्रीमत कान्तकीर्ति:
सूरेर्यातस्य पार श्रुतसलिलनिधे देवसेनस्य शिष्य· ।
विज्ञाताशेषशास्त्रो व्रतसमितिभृतामग्रणीरस्तकोप:
श्रीमान्मान्यो मुनीनाममितगतियतिस्त्यक्तनि:शेषसग. ।। ।।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० २८ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ४४५ ।

(३) प्र० जै० सा०, पृ० २५० ।
(४) आ० सू०, पृ० २१४ ।
(५) रा० सू० II, पृ० २८८ ।
(६) रा० सू० III, पृ० २३६ ।
(७) भ० सप्र०, पृ० २१३ ।

५२३. सुभाषितरत्नसंदोह

Opening : दोषनत नृपतयो रिपवोपि रुष्टा ।
कुर्वंति केशरि करीद्रमहोरू गावा ।
धर्म्म निहत्य भवकानन दाव वन्हि ।
यदोयमत्र विदधाति नरस्य शेष ॥३॥

Closing : यावच्चद्रदिवाकरौ दिविगतौ भित्रूस्तम शार्वर
यावन्मेरू तरगिणी परिवृढोनोमु चत·
स्वस्थिति यावद्याति तरग भगुर तनुर्गगाहिमा-
द्रेर्भुव
तावच्छास्त्रमिद करोतु विदुषां पृथ्वीतले सम्मद ॥६॥

Colophon : इत्यमितगति विरचित. सुभापितरत्नसदोह सपूर्णता । संवत् १७८४ वर्षे कात्तिकमासे कृष्ण चतुर्दसी दीपोत्सव दिने श्री युगल वदिरे लिषतोय ग्रथ: शुभ भूयात् ।

५२४. सुभाषितावली

Opening : जनिाधीश नमस्कृत्य ससाराबुधितारकम् ।
स्वान्यस्पहितमुद्दिश्य वक्ष्ये सद्भाषितावलीम् ॥

Closing : जिनवरमुखजातं ग्रथितं श्री गणेन्द्रै,
त्रिभुवनपति सेव्य विश्वतत्वैकदीपम् ।
अमृतमिव सुमिष्ट धर्मबीज पवित्र,
सकलजनहितार्थं ज्ञानतीर्थं हि जीयात् ॥

Colophon : इति श्री सुभाषितावली सपूर्णं ।

देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० २७ ।
जि० र० को०, पृ० ४४६ ।

आ० सू०, पृ० १४७ ।
रा० सू० II, पृ० ४४, ७४,२८८ ।
रा० सू० III, पृ० ६६, ३३७ ।
Catg. of skt. & pkt. Ms., P. 701, 712.

५२५. सुभाषितावली

Opening : देखें—क्र० ५२४ ।

Closing : नाभेयादिजिनेश्वराश्चविमलाः ख्याता परे ये जिना ।
त्रैकाल्ये प्रभवा व्यतीतगणना सौख्याकराः सौख्यदा. ॥
.... ।

Colophon : नहीं है ।

५२६. सुभाषित रत्नावली

Opening : देखें, क्र० ५२४ ।

Closing : देखें, क्र० ५२४ ।

Colophon : इति श्रीमदाचार्य श्री सकलकीर्तिविरचिता सुभाषितावली समाप्ता । संवत् १८३६ मिति आश्विन शुक्ला तृतीया भौमवासरे पुस्तक लिपिकृतम् दिलसुखब्राह्मणस्य फरकनग्रमध्ये पठनार्थं लालचंद-जी स्वपठनार्थम् ।

विशेष—" ॐ नमो सुग्रीवाय हनुमताय (हनुमंताय) सर्वकीटकानक्षायपिपीलका विलेप्रवेशाय स्वाहा ।"

५२७. सूक्ति-मुक्तावली

Opening : तक्रादिवत् नवनीत पंकादि च पद्ममभृतमिव जलात् ।
मुक्तामणिरिव वशात् धर्मं सारमनुष्यभवात् ॥

Closing : नगरे वंससि त्व वाले, अटव्या नेव गच्छसि ।
व्याघ्ररीछमनुष्याणां, कथं जानासि भाषितम् ॥

Colophon : Missing

५२८. सूक्ति मुक्तावली

Opening : देखे, क्र० ५२१ ।
Closing : लक्ष्मीर्वसति वाणिज्ये किंचित् किंचित् कर्षणे ।
• ।
Colophon : Missing.

५२९. सूक्ति मुक्तावली

Opening : सिंदूरप्रकरस्तप करिशिर क्रोडे कषायाटवी
दावाग्निर्निचय. प्रबोधदिवसप्रारंभसूर्योदय· ।
मुक्तस्थिकुत्रचकुंभ कुंकुमरस. श्रेयस्तरोपल्लव • • ।
प्रोल्लास: क्रमयोर्नखद्युतिभर: पार्श्वप्रभो पातुव. ॥१॥
Closing : अभजदजितदेवाचार्यपट्टोदयाद्रि
द्युमणिविजय-सिंहाचार्य पादारविंदे ॥
मधुकरसमता यस्तेन सोमप्रभेण
विरचि मुनिपराज्ञा सूक्तिमुक्तावलीयम् ॥
Colophon : इति श्री सोमप्रभुसूरि विरचित सूक्तिमुक्ता वली सपूर्णम् ।
श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ॥

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० ३०-३१ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ४४१, ४४८, ४४६ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० २५१ ।
(४) आ० सू० पृ २१४ ।
(५) रा० सू० II, पृ० २६ ।
(६) रा० सू III, पृ० १००, २३७ ।
(7) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 710, 712.

५३०. सूक्ति मुक्तावली (सिन्दूर प्रकरण)

Opening : देखें—क्र० ५२६ ।
Closing : देखे—क्र० ५२६ ।

Colophon : इति सूक्तिमुक्तावली सिन्दूरप्रकरणः संपूर्णः । लिखत मुन्यषेतसी जी तस्य शिष्य ...... तस्य शिष्य सेवक आज्ञाकारी मून्य. चन्द्रभाण गढ रणस्थभोर मध्ये सवत् १८१३ का ॥श्री॥

५३१. सिन्दूरप्रकरण

Opening : देखे क्र० ५२६ ।

Closing : सोमप्रभाचार्यमभाषयन्न पुसातम पकमपाकरोति ।
तदप्यमुस्मिन्नुपदेशलेशे निशम्यमाने निशमेति नाशम् ॥

Colophon : इति श्री सोमप्रभाचार्यकृत सिंदूरप्रकरण काव्य समाप्त-मिदम् । स्वस्ति श्री काष्ठासघे लौहाचार्याम्नाये भट्टारकोत्तमभट्टारक जी श्री १०८ ललितकीर्त्तिदेवा तद्पट्टे भट्टारक श्री १०८ राजेन्द्रकीर्तिदेवा तेषा पट्टे भट्टारक जी श्री १०८ मुनीन्द्र-कीर्त्तिदेवा महातपासि तेषा पठनार्थम् । सवत् १६४७ मध्ये कार्तिकमासे कृष्णपक्षे तिथौ दशम्या बुधवासरे आदिनाथवृहज्जिनमदिरे लक्ष्मणपुरमध्ये प्रात काले पडितपरमानन्देन रचितमिद शुभ भूयात् । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु । शुभ भूयात् लेखकपाठकयो ।

सन्दर्भ के लिए—क्र० ५२६ ।

५३२. अक्षर केवली

Opening : ॐकारे लभते सिद्धि प्रतिष्ठां च सुशोभना ।
सर्वकार्याणि सिद्धयति मित्राणा च समागम ॥

Closing : क्षकारे क्षेममारोग्य सर्वसिद्धिर्नसशय ।
पृछकस्यमहालाभ मित्रदर्शनमाप्नुते ॥

Colophon : इति अक्षरकेवली शकुन समाप्त. ।

५३३. अक्षरकेवली प्रश्नशास्त्र

Opening : ओ चिलि चिलि मिलि मिलि मानगिनि ! सत्य निर्दशय निर्दशय स्वाहा । ककारादि हकारान्त वर्णमात्रक विलिखेत् । तत्र

स्वकार्यं चिंतित यत्त्वया पश्यन् सर्वेषा वर्णमेक पृच्छय, सफलाफल शुभाशुभ निवेदयति ।

Closing : ह-हकारे सर्वसिद्धिश्च द्रव्यलाभश्च जायते ।
तस्मात्कर्मप्रकर्त्तव्य सफल तस्य जायते ॥४८॥

Colophon : इति अक्षरकेवली प्रश्नशास्त्रम् ।
श्री वेणुपुर (मूडविद्रि) स्थ श्री वीरवाणी विलाससिद्धान्त भवनस्य तालपत्रग्रथादुद्धृत श्री लोकनाथशास्त्रिणा आरा 'जैनसिद्धान्त-भवन कृते' श्री महावीर निर्वाण शक २४७० तमे मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष-पूर्णिमाया तिथौ परिसमापित च । इति मगलमह । ११-१२-१९४३ ।-

५३४. अरिष्टाध्याय

Opening : पणमत सुरासुरमउलि रयणवरकिरणकत विछुरिय ।
वीरजिनपाय जुयल णमिऊण भणेमि रिट्ठाइ ॥

Closing : अट्ठट्ठारहछिणे जे लद्धहितछरे हाऊ ।
पढमो हि रेह अक गविज्जए याहिण तछ ॥

Colophon : इत्यारिष्टाध्याय शास्त्र जिनभाषित समाप्तम् । मरणकाण्ड-निमित्तसारशास्त्र सम्पूर्णम् । सवत् १८३५ मास आषाढ वदि ३ शनीवार । शुभ भूयात् । लिखापित पडित रामचन्द ।

५३५. द्वादसभावफल

Opening : अथ द्वादसभावमध्ये रविफलम् ।

Closing : .. उच्च कन्या को सुग्रीव धन को नीच । इति उच्चनीच सुग्रीव ।
साथ मे उच्चनीच चक्र भी है ।

Colophon : नहीं है ।

५३६. गणितप्रकरण

Opening : यत्राप्यक्षरसदेहं तत्र स्थाप्य तु देवरम् ।
त्यजेत्तद्गतवाक्यानि अन्य वाक्यानि शोधयेत् ॥

Closing : भिन्ना खविर्जानि रत्न भा नु सुनिर्णय । इत्यपूर्णोऽय ग्रन्थ ।

Colophon : श्री वेणुपुरनिवासिना लोकनाथशास्त्रिणा मूडविद्रिस्थ-श्री वीरवाणी विलास-नामक जैन सिद्धान्तभवनस्य ग्रन्थसग्रहादुद्धृत्य ज्योतिर्ज्ञानविधि आरा जैनसिद्धान्त भवनकृते श्री महावीर शक २४७० पौषमासस्य अमावस्याया दिने लिखित्वा परिसमापितमिति भद्र भूयात् ।

५३७. ज्ञानतिलक सटीक (२४ प्रकरण)

Opening : नमिऊण नमिय नमिय दुत्तरससारसायरुत्तिन्न ।
सव्वन्न वीरजिण पुलिदिणि सिद्धसघ च ॥

Closing : • • • अतश्चेतो वसति ११ महादेवान्मात्री (१२)

Colophon : इति श्री दिगम्बराचार्य पडितश्रीदामनदिशिष्य भट्टवोसरि विरचिते सायश्री टीकाया ज्ञानतिलके चक्रपूजाप्रकरणम् समाप्तम् ।

शुभमिति आषाढकृष्णा ३ स० १६६० विक्रमीय । लिपि कर्त्ता रोशनलाल जैन् कठूमर (अलवर) निवासी ।

देखे—जि० र० को०, पृ० १४७ ।

५३८. ज्योतिर्ज्ञानविधि

Opening : प्रणिपत्य वर्धमान स्फुटकेवलदृग्टतत्वमीशानम् ।
ज्योतिर्ज्ञानविधान सम्यक्स्वायभुव वक्ष्ये ॥

Closing : ललाटलोके कलमा सुधी समा,
खनोरि खिन्नोरिव चेरि दौ नवा ।
कापालिकोपागमसाधुसमि
गाच्छायाहि, मध्यान्हनिमेषमुख्यतः ॥ १३ ॥

Colophon : इति श्री धराचार्य विरचिते ज्योतिर्ज्ञानविधौ श्रीकरणे लग्नप्रकरण नाम अष्टम परिच्छेद. ।

५३९. ज्ञानप्रदीपिका

Opening : मद्वीरजिनाधीश सर्वज्ञ त्रिजगद्गुरुम् ।
प्रातिहार्याष्टकोपेत प्रकृष्ट प्रणमाम्यहम् ॥

द्वितीये वा तृतीये वा शुक्रश्चेन्नौ समागम ।
अनेन च क्रमेणैव सर्व वक्ष्म वदेत् स्फुट ।।

Colophon : इति ज्ञानप्रदीपिका नाम ज्योतिपशास्त्र समाप्तम् । मंगलमस्तु।। श्री भारव्यै नमो नमः ।। अयमपि रानू नेमिराजनामधेयेन लिखित. ।।

देखे—जि० र० को०, पृ० १४८ ।

५४०. केवलज्ञानप्रश्न चूडामणि

Opening : अ क च ट त प य श वर्गा ।
आ ए क च ट त प य शा. इति । प्रथम· ।।१।।

Closing : जो पढमो सो मरओ, जो मरओ सो होइ अत्ति आ ।
अत्तिल्लेशा पढमो जतण्णाम णत्थि सदेहो ।।

Colophon : समाप्ता केवलज्ञानप्रश्न चूडामणिः ।

५४१. केवलज्ञानहोरा

Opening : अनन्तविद्याविभव जिनेन्द्र निधाय नित्य निरवद्यबोधम् ।
स्वान्तेदुहभिन्दुप्रममिन्द्रवन्द्य वक्ष्ये परा केवलबोधहोराम् ।।१।

Closing : X X X X हगरे ६५ । हरियट्टि ९६ । हुक्केरि ६७ ।
हरिगे ६८ । हिप्परिगे ६६ । हुरुमु जि १०० । कोडन–
हुब्बल्लि १०१ । होसदुर्ग १०२ । हिजर्यिडि १०३ ।
हुवल्लि १०४ । हुणिसिगे १०५ । हनगवाडे १०६
हामाल्लि १०७ । सम्पूर्णम् ।

Colophon : यादृश पुस्त ·· ·········· दीयते ।।१।।

देखे—जि र. को , पृ. ६६ ।
Catg. of Skt. Ms , P. 318.

५४२. निमित्तशास्त्र टीका

Opening : सो जयउ जाए उसहो अणत ससार सायरुत्तिणो ।
काणाणलेण जेण लीलाइ निउज्जइ मयणो ।।

Closing : एव बहुपायार उप्पायपरपरायणाऊण ।
रिसिपुत्तेणामुणिणा सर्वाप्पय अप्पगथेण ।।

Colophon : इति श्री एव रिखिपुत्तिकेय सपूर्ण । इति श्री गाथा निमित्त शास्त्र की सपूर्णम् ।

५४३. महानिमित्तशास्त्र

Opening : नमस्कृत्य जिन वीर, सुरासुरनतक्रमम् ।
यस्य ज्ञानाबुधे: प्राप्य, किञ्चिद्वक्ष्ये निमित्तकम् ।।

Closing : चत्तारि एक चत्ता मासावरणे चोत्तसंसदावतसा ।
णाऊण विह विहिणा ततो विवियारण कुणह ।।

Colophon : इति श्री भद्रबाहु विरचिते निमित्त परिसमाप्तम् । शुभ भवतु कल्याणमस्तु । श्री । इति श्री भद्रबाहु विरचिते महानिमित्त-शास्त्रे सप्तविंशतिमोध्याय समाप्त ।

दखे– (१) जि र को, पृ २१२, २६ । (भद्रबाहुसहिता)
(२) दि जि ग्र र., पृ. ११५ ।

५४४. महानिमित्तशास्त्र

Opening : देखे—क्र० ५४३ ।

Closing : देखें—क्र० ५४३ ।

Colophon देखें—क्र० ५४३ ।

सवत् १८७७ कार्तिकमासे कृष्णपक्षे १ रविवासरे लिखित-मिद पुस्तकम् । श्रीरस्तु । शुभ भूयात् ।

५४५. निमित्तशास्त्र टीका

Closing : देखे—क्र० ५४३ ।

Closing : देखे—क्र० ५४३ ।

Colophon : देखे—क्र० ५४३ ।

५४६. षट्पञ्चषिका सूत्र

Opening : प्रणिपत्य रविमूर्ध्ना वराहमिहिरात्मजेन पृथु यशसा ।
प्रश्नेक्रियातार्थं ग्रहाना परार्थमुद्दिश्य सद्यशग्रा ॥

Closing : जीवसितौ विप्राणा क्षेत्र स्यारोप्लगूविशाचद्र ।
शूद्राधिप शशि स्तुतः शनीश्वरशकरो भवानाम् ॥

Colophon : इति श्री षट्पचासिकाया मित्रकानाम सप्तमोऽध्यायः । इति श्री षट्पचासिकासूत्र नाम ज्योतिष सपूर्णम् । सवत् द्वीपनयनमुनिचद्र वत्सरे शालिवाहन गताब्द अबकनदभूत कौमदी प्रवर्त्तमाने पौषमासे कृष्णपक्षे चतुर्दशी पोषणवासरे मैत्री नक्षत्रे श्री उग्रसेनपुरे लिखितम् ।

देखे—जि र. को , पृ. ४०१

५४७. सामुद्रिकाशास्त्रम्

Opening : आदिदेव नमस्कृत्य सर्वज्ञ सर्वदर्शनम् ।
सामुद्रिक प्रवक्ष्यामि शुभाग पुरुषस्त्रियो ॥

Closing . पद्मिनी पद्मगधा च मदगधा च हस्तिनी ।
शखिनी क्षारगधा च शून्यगधा च चित्रिनी ॥

Colophon · इति सामुद्रिकाशास्त्रे स्त्रीलक्षण कथन नाम तृतीय पर्व समाप्तोऽय ग्रन्थश्च ।

देखे--जि० र० को०, पृ० ४३३ ।
Catg of Skt & Pkt Ms, P. 708.

५४८. व्रततिथिनिर्णय

OPening : श्रीमत वर्द्धमानेश भारती गोतमा गुरुम् ।
नत्वा वक्ष्ये तिथिना वै निर्णय व्रतनिर्णयम् ॥

Closing क्रममुल्लघ्य यो नारी नरो वा गच्छति स्वयम् ।
स एव नरक याति जिनाज्ञा गुरुलोपत ॥७॥

Colophon : इति आचार्य सिहनंदि विरचित व्रततिथिनिर्णय समाप्तम। सम्वत् १९६६ चैत्रशुक्ल ६ का लिखी हुई सरस्वती भवन बम्बई की प्रति से श्री प० के० भुजवली जी शास्त्री की अध्यक्षता मे श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा के लिए प्रतिलिपि की गई। शुभ मिति ज्येष्ठ शुक्ला १२ रविवार विक्रमसम्वत् १९९१ वीर स. २४६० । हस्ताक्षर रोशनलाल लखक ।

देखे—जि र. को, पृ ३६८ ।

५४९. यात्रामुहूर्त्त

इसमे ग्यारह मुहूर्त्त वोधक चक्र है ।

५५०/१. आकाशगामिनी विद्या विधि

Opening : जहा गगा तथा और नदी के सगम के निकास पर वट का वृक्ष होइ ।

Closing : - - - णमो लोए सव्वसाहूण । एहो मत्रराज को एक सौ आठ बार जपै ।

Colophon : इति आकाशगामिनी विद्या विधि ।

५५०/२. अम्बिका कल्प ।

Opening : वन्देऽहं वीरसन्नाथम् शुभचद्रजगत्पतिम् ।
येनाप्येतमहामुक्तिवधूस्त्रीहस्तपालनम् ॥१॥

Closing : समसामथन भरभारभर धरधारमर पुरुत सुखकारम् ।
अतएव भजध्वमतिप्रथित प्रथित सार्थकमेव जनै. ॥

Colophon : इत्यंविकाकल्पे चार्वे शुभचद्रप्रणीते सप्तमोऽधिकारः समाप्त :॥७॥
नाम्नाधिकार प्रथितोय यत्रसाधनकर्मण.
समाप्त एष मत्रोऽय पूर्ण कुर्यात् शुभ वन. ॥१॥
इत्यम्बिका कल्पः ।
... ... — शुभमिति कार्तिक कृष्णा ७ मंगलवार विक्रम-सम्वत् १९९४ वीर सम्वत् २४६३ । इति शुभम् । ह० रोशनलाल ।

देखे—दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२१ ।
जि० र० को०, पृ० १५ ।
जै० ग्र० प्र० स०, I, पृ० १७१ ।

५५१ बालग्रह चिकित्सा

Opening : श्रीमन्तचतुरुत्तरा नत्वनान्व नुद्रत ।
बालग्रहचिकित्सेय मल्लिषेणेन रच्यते ॥

Closing : ··· ··· रावणस्य सजया ··· ··· मन्त्रात्मा
विनि गति पाठके ।

Colophon : इत्युभयभाषाकविशेखरश्री मल्लिषेणसूरि विरचिते -ल-
विधि ... ... द्वितीयोध्याय ।

देखें -जि० र० को०, पृ० २८२ ।

५५२. बालग्रह चिकित्सा

Opening : अथाग्र प्रथमे दिवसे मासे वर्षे बाल ... ... नाम
माता तस्य प्रथम जायते ज्वर ·· ···· ··· ।

Closing : ··· एतेषा चूर्णीकृत्य विजयवृ ... कुर्यात् ।

विशेष—यह प्रति अपूर्ण है ।

५५३. बालग्रह शान्ति

Opening : प्रणिपत्य जिनेन्द्रस्य चरण. रोरुहद्वयम् ।
... ... शान्ति ... ... ।

Closing : ॐ ... ... स्वाहा ।

Colophon : इति ... ... ।३।
... ... ।
... ... ॥

इति ...

देखे--जि० र० को०, पृ० २८२ ।

५५४. बालकमुण्डन विधि

Opening : मुन्डन सर्वजातीना बालकेषु प्रवर्तते ।
पुष्टिबलप्रद वक्षे, जैनशास्त्रानुमार्गत ॥

Closing : ... ... तत· कुमार स्थापयित्वा वस्त्राभूषणै अलकृत्वा गृह-मानीय यक्षादीना अर्घंदत्वा पुण्याहवचनं· पुन सचयित्वा सज्जनान् भोजयेत् इति ।

Colophon : नही है ।

५५५. भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमंत्र

Opening : भक्तामरप्रणत .. .. — जनानाम् ॥

Closing : — ... अजनातस्कर वत निसक सत्य जानै तौ सर्वसिद्ध होइ सत्यमेव ॥४८॥।

Colophon इति श्री गौतमस्वामी विरचिते अढतालीस ऋद्धिमत्रगर्भित स्तोत्र भक्तामरमूलमत्र सम्पूर्णम् ।

५५६· भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमत्र

Opening : देखे, क्र० ५५५ ।

Closing : देखे—क्र० ५५५ ।

Colophon : इति श्री गौतमस्वामीविरचिते अडतालीस ऋद्धिमत्रगुणगर्भित-स्तोत्र सम्पूर्णम् ।
सम्वत् १९५० मी० वै० कृ० ·१० ।

५५७. भूमिशुद्धिकरण मंत्र

Opening : ॐ क्षी भू. शुद्धयत् स्वाहा ।

Closing : ... — तालुरध्रेण गत त श्रवतममृता तुभिः ।

Colophon : नही है ।

५५८. बीज मत्र

Opening : मन वचन काय के जोग की जो क्रिया सो जोग ताके दोय भेद एक शुभ एक अशुभ ।

Closing : वक्तु' लालविनोदेन श्री गुरुणा प्रभावत. ।
श्लोकसख्यामिति ज्ञेय अष्टाधिकशतद्वयी ।।

Colophon : लालविनोदी ने रचा सस्कृतवानी माहि ।
वृदावन भाषा लिखी कछु इक ताकी छाह ।।१८६।।
भूलचूक सब क्षिमा करि लीजो पडित सोध ।
बालक बुद्धी जानि मोहि मत कीजो उर क्रोध ।।१९०।।
सम्वतसर विक्रमविगत चन्द्ररन्ध्रदिगचद ।
माघ कृष्ण आठै गुरु पूरण जयति जिनद ।।१९१।।
इति भाषाकारनामकुलाग्रनामसमस्त लिखित सम्वत् १८९१ माघवदी ८ गुरौ वार कूं नवीन भाषा बनी सो यही मूल प्रति है कर्त्ता के हाथ की लिषी ।

५५९. बीजकोश

Opening : तेजो भक्तिर्विनयः प्रणवः ब्रह्मप्रदीपवामाश्च ।
वेदोब्जदहनध्रुवमादि (?) ओमितिख्यातम् ।।
मायातत्वं शक्तिर्लोकेशो ह्रीं त्रिमूर्त्तिबीजेशो ।
कूटाक्षरं क्षकारं मलवरयू पिण्डमष्टमूर्त्तिञ्च ।।

Closing : सर्वधान्यकृतैर्लाजैस्तद्रजोभिगु'डान्वितैः ।
चन्द्रनागुरुकर्पू'रगुग्गुलान्नघृतादिभिः ।।
पायामान्नाक्षतैर्मिश्रैर्ब्रह्मवृक्षोद्भवादिभि ।
समिद्भिश्च चरेद्धोम प्रतिष्ठाशान्तिपौष्टिके ।।

Colophon : ।। इति षट्कर्मविधि समाप्त ।।

५६०. ब्रह्मविद्याविधि

Opening : श्रीमद्वीर महासेन ब्रह्माण पुरुषोत्तमम् ।
जिनेश्वर च त वदे मोक्षलक्ष्म्यैकनायकम् ।।

चन्द्रप्रभ जिन नत्वा सर्वज्ञं त्रिजगद्गुरुम् ।
ब्रह्मविद्याविधिं वक्ष्ये यथाविद्योपदेशतः ॥

Closing : धेनुमुद्रया सर्वोपचारं कृत्वा पूजाविधिं परिसमापयेत् ।

Colophon : नहीं है ।

५६१. चन्द्रप्रभमंत्र

Opening : ॐ चंद्रप्रभो प्रभाधीश-चंद्रशेखरचन्द्रभृ ।
चन्द्रलक्ष्मकचन्द्राग चन्द्रबीजनमोऽस्तु ते ॥

Closing : ... — नित्य जपने ते सर्वमगल होय है ।

Colophon : नही है ।

५६२. चौबीस तीर्थङ्कर मंत्र

Opening : आदिनाथमंत्र । ॐह्रीं श्री चक्रेश्वरी अप्रतिचक्रे ... सर्व शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ।

Closing : ... ... नित्य स्मरण करना सर्वकार्य सिद्ध होय ।

Colophon : इति श्री मंत्र सम्पूर्णम् ।

५६३. चौबीस शासन देवी मंत्र

Opening : मंत्र के अन्त मे मरन माह नवसा अरण विद्वेषण आकर्षण सर्व ... .. ।

Closing ... धनार्थी आकर्षन करे ता धन बहुत पावे ।

Colophon : नही है ।

५६४. गणधरवलयकल्प

Opening : देवदत्तस्य नामाहंकारेण वेष्टयेत् ।
ततोऽनाहतेन तस्याद्य कर्मक्षयार्थं अर्थप्राप्त्यर्थं पद्मासनम् शांतिकर्मादिष्टं सारस्वता [illegible] शत्रुविनाशार्थं क्रूरप्राणिवश्यार्थं [illegible]

५६७. घंटाकर्णवृद्धिकल्प

Opening : देखें—क्र० ५६६ ।

Closing : देखें—क्र० ५६६ ।

Colophon : इति घटाकर्णवृद्धि कल्प सपूर्णम्। मिति अगहन कृष्णामावस्या लिखत रूपनप्रसाद अग्रवाल अपने पठनार्थम् । सम्वत् १९०३ ।

५६८. घंटाकर्णवृद्धिकल्प

Opening : देखें, क्र० ५६६ ।

Closing : देखें, क्र० ५६६ ।

Colophon : इति घटाकर्णवृद्धि कल्प सम्पूर्णम् ।
विशेष-सात मत्रचित्र (मत्र चक्र) भी हैं ।

५६९. हाथाजोडीकल्प

Opening : रविभौमशनिवार, हस्तपुष्य पुनर्वसु ।
दीपोब्दव होलिका च, गृहीत्वा हस्त जोडीका ॥

Closing : खदोसो दासता ज्योति, मनोवाञ्छितदायकम् ।
मस्तके कठव्याप्त च, पार्श्वे रक्ष गुणाढिक ॥

Colophon : इति हाथाजोडीकल्प शिवोक्त सम्पूर्णम् ।

५७०. इष्टदेवताराधन मत्र

Opening : वश्यकर्मणिपूर्वाङ्ग कालश्च स्वस्तिकाशनम् ।
उत्तरादिक् सरोजाख्या मुद्राविद्रुममालिका ॥

Closing : ... ... मोहस्य समोहन पापात्पचनमस्क्रियाक्षरमयी साराधना देवता ॥

Colophon : इति मत्र इष्टदेवता के आराधना का समाप्तम् ।

५७१. जैनसन्ध्या

Opening : ॐ ध्मां भू पुद्वयतु स्वाहा ।

Closing : ॐ भूर्भुव स्व असिआ उसा हूं प्राणायाम करोति स्वाहा । अनामिकां गृहीत्वा त्रिवार जपेत् ।

Colophon : इति प्राणायाममंत्र । इति जैनसन्ध्या सम्पूर्णम् ।

५७२. जैन विवाह विधि

Opening : स्वस्ति श्रीतारक नत्वा वर्द्धमानजिनेश्वर ।
गौतमादिगणाधीशं वाग्देवि च विशेषत ॥

Closing : मगलमय मगलकरण परमपूज्य गुणवृन्द ।
त्म तुम को मगल करो नाभिराय कुलचन्द ॥

Colophon : इति जैनविवाह पद्धति समाप्तम् ।
मिती असाढ वदी १० स० १९७८ । सहारनपुर ।

५७३. जैनसंहिता

Opening : विज्ञान विमलं यस्य भासते विश्वगोचरम् ।
नमस्तस्मै जिनेन्द्राय सुरेन्द्राभ्यर्चिताङ्घ्रये ॥

Closing : दधीर्धतु कुसुमवाणधनु. शर च, वेटासिपाशवरदोत्पलमक्षसूत्र । हि. षड्भुजाभयफल गरुडादिरूढा, सिद्धायिनी धरति हेमगिरिप्रभा श्री ॥

Colophon : इति श्री माघनन्दिविरचितायां जिनसंहितायायक्षयक्षी प्रतिष्ठा विधानम् ।

इति श्री माघनन्दिविरचित जिनसंहिता समाप्ता ।

उक्त सन्हिता वैदर्भदेशस्थ पूज्य प्रात स्मरणीय बालब्रह्मचारी- रामचन्द्रजी महाराज का परमप्रिय शिष्य दिगम्बर बालकृष्ण टाकल- कर मर्दतवान जैन चम्पापुरी निवासी ने सोलापुर (महाराष्ट्र प्रान्त) मे वर्धमान जिनचैत्यालय मे अत्यन्तभक्तिपूर्वक लिखकर पूर्ण की । मिती कार्तिक वदी ६ बुधवार शके १८६० वीर सं० २४६५ विक्रम सम्वत् १९९५ सन् १९३८ । कल्याणमस्तु ।

५७४. कर्मदहन मंत्र

Opening : ॐ ह्रीं सर्वकर्मरहिताय सिद्धाय नम ॥१॥

Closing : ॐ ह्रीं वीर्यान्तराय रहिताय सिद्धाय नम ॥१६४॥

Colophong : इति कर्म्मदहनमन्त्रसम्पूर्णम् ।१६४। श्रावणमासे शुक्लपक्षे तिथौ १२ रविवासरे सम्वत् १६६५ ।

५७५ कलिकुंड मंत्र

Opening : ॐ ह्रीं श्री क्ली एँ अर्हं कलिकुंड " ।

Closing : पापारचनमस्कारक्रियाक्षरमयी साराधनादेवता ।

Colophon : इति मंत्र इष्टदेवता के आराधन का समाप्तम् ।

५७६. मंत्र यंत्र

Opening : अघताज के षोडशी जोग सुवर्णमाती सारा की डली ऊपर धरिये अग्नि देई तब .... ।

Closing : ...... सिद्धि गुरु श्रीराम आज्ञा काली करि दर नहीं तेल पलाय अमुकी नरजहे घर । मंत्र ।

Colophon : नहीं है ।

५७७. नमोकार गण विधि

Opening : रेखयाष्ट गुण पुन्य पुत्रजीवेफलैर्दम ।
सत स्यात्सखमणिभिः सहस्त्रं च प्रवारकं. ॥

Closing : अगुल्यग्रेनुयज्जप्त यज्जप्तमेरुलंघनाद् ।
सख्यासहितं जप्तं सर्वं तन्निफल भवत् ॥

Colophon . इति जाप्य विधि. समाप्तम् ।

५७८. णमोकार मंत्र

Opening णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं ॥
णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं ॥
णमो लोए सव्व साहूणं ॥

Closing : समस्त लोकतश्रु प्रभु खसत्तापछैनिरंस्त्र ॥
नगनही करिवार १०८ जपण जपक्षेवण ॥
पसासन पूर्वदिशि मुखराखणु
जो विचारै सोही वश्यहोवै मत्रदीन जपण ॥

५७६. पद्मावती कवच

Opening : ॐ अस्य श्री मन्त्रराजस्य परमदेवता पद्मावती चरणाबुजेभ्यो नमः ।

Closing : पाठालं कपता " — .... परमेश्वरी ॥३३॥

Colophon : इति पद्मावती स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखें—जि० र० को०, पृ० २३५ ।

५८०. पंचपरमेष्ठी मंत्र

Opening : ॐ ह्री नि स्वेरगुणयुक्त श्री जिनेभ्यो नम. स्वाहा ।

Closing . ॐ ह्लीं दननवरत्यागमूनगुणसहितसर्वसाधुभ्यो नमः — ।

Colophon : नही है ।

५८१. पञ्चनमस्कार चक्र

Opening : येनास्यामवसर्पिण्यामादावुत्पाद्यकेवलम् ॥
कृत्स्नो मन्त्रविधि. प्रोक्तस्तस्मै तंत्राण्यथोक्तवान्,
तस्मै सर्वज्ञदेवाय देवदेवात्मने नम. ॥

Closing : सम्यग्दृष्टिजनस्य एषा विद्या दातव्या । निन्दासूयानास्तिक्य-युक्तानां धर्मद्वेपिणां मिथ्यादृशामपुष्टधर्माणञ्च न दातव्या । कदाचिद्दत्ते (?) सति (?) तदा महापातक प्रयुक्त भवति ।

Colophon : एव पञ्चनमस्कारचक्रं समाप्तमिति

५८२. पीठिका मंत्र

Opening : ॐ नीरजसे नमः । ॐ दर्प्पमथनाय नमः ।

Closing : ॐ ह्री अर्हं नमो भयदो महावीरवदठ्माणानम् ।

Colophon : नही है ।

५८३. सरस्वती कल्प

Opening : बारहअग गिज्जा दसणनिलया चरित्तहुहरा ।
चउदसपुव्वाहरण ठावे दव्याय सुखदेवी ।।
आचारशिरस सूत्रकृतवक्रा (सरस्वती) सकणिठकाम् ।
स्थानेन समयोद्घ (स्थानागसमयाश्रिता) व्याख्याप्रज्ञप्तिद्दोर्लताम

Closing : परमहसहिमाचलनिर्गता सकलपातकपकविवर्जिता ।
अमितवोधपय परिपूरिता दिशतु मेऽभिमतानि सरस्वती ।।
परममुक्तिनिवाससमुज्जवल कमलया कृतवासमनुत्तमम् ।
वहति या वदनाम्बुरूह् सदा दिशतु मेऽभिमतानि सरस्वती।।

Colophon : मलयकीर्ति कृतामिति सस्तुति सतत मतिमान्नर ।
विजयकीर्ति गुरुकृतमादरात् समति कल्पलता फलमश्नुते ।।
इति सरस्वति कल्प समाप्त.

५८४. शान्तिनाथ मंत्र

Opening : ॐ नमोर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष · · ।

Closing : चक्रादिसपदका दाता अचिन्त्य प्रतापी हैं ।

Colophon : नही है ।

५८५. सिद्ध भगवान के गुण

Opening : ॐ, ह्री मतिज्ञानावरणीकर्मरहित श्री सिद्धदेवेभ्यो नमः स्वाहा।

Closing : ॐ ह्री सम्य · · · · · ।

Colophon : नही है ।

५८६. सोलह चाली

Opening : श्री जिन नमि फुनि गुरु को नमो, मन धरि अधिक सनेह ।
सोलह चाली मन की रचौं सुविधि कर एह ॥

Closing : .... और जो एक घटाईये तो एक-एक घटाइ लिपै ८ के अक तही ।

Colophong : इति श्री १६ चाली पूर्णम् ।

५८७. विवाह विधि

Opening : स्वस्ति श्री कारक नत्वा वर्द्धमान जिनेश्वरम् ।
गौतमादि गणाधीशा वाग्देव विशेषत: ।

Closing : ... ... विपुल नीलोत्पलाल कृत स्वस्येकोचन,
भूषितैरूपचितैः विद्युत्प्रमा भासुरै ।

Colophon : Missing.

५८८. यन्त्रमंत्र संग्रह

Opening : यस्तु कोटिमहस्राणि मन्त्रतन्त्राण्य नेकशान् ।
तस्मै सर्वज्ञदेवाय देवदेवात्मने नम ॥

Closing : अपुष्टधर्माणा च न दातव्य इद दृश्वा यदि कदाचिद्ददाति तदा महापातक प्रयुक्तो भवति एवं पचनमस्कारचक्र नानाक्रियासाधन स ... यसार समाप्तमिति ।

Colophon : समाप्तमभूत् ।

५८९. अकलंक संहिता (सारसंग्रह)

Opening : श्री मच्चातुर्निकायामरखचरवरै नृत्यमगीतकीर्तिम्
व्याप्ता ....शाल सुरपटहादि सत्प्रतिहार्यम् ।
नत्वा श्री वीरनाथ भुवि सकलजनारोग्यसिद्धयै समस्तै-
रायुर्वेदोक्तसारैरिहममल(?) महासग्रह सलिखामि ॥

Closing : नालिगेय दोष २० वगेय प्रमेह प्रदर चैत्य कामाले पाडु सह सह परिहर । इच्छा पथ्य ।

Colophon : वैद्यग्रंथ परिसमाप्तम् ।

५६०. आरोग्य चिन्तामणि

Opening : आरोग्य भवरोगपीडितनृणां यच्चिंतना जायते
तं सर्गादिविधायिनं सुरनुतं नत्वा शिवं शाश्वतम् ॥
आयुर्वेदमहोदधेर्लघुतरः सर्वार्थदं सुप्रभं
वक्ष्येहं चरकादिसूक्तिनिचयैरारोग्यचिंतामणिम् ॥ ॥

Closing : बालादिह प्रमाणेन पुष्पमाला सदीपकम् ॥
प्रगृह्य मुष्टिका भक्तं बलिर्द्देय सुमन्त्रिणा ॥ ॥

इति सूतिका बालरोगाध्याय: त्रिंश बालतंत्रम् ॥ इति श्री भट्टारविष्णुसुतपंडितदामोदरविरचितायामारोग्यचिंतामणिसहितायामुत्तरस्थानं षष्ठ समाप्तम् ॥ एवं ग्रंथसंख्या शत ॥ १२०० ॥ परिधावि संवत्शरद माघ शुक्लपक्ष १४ चतुर्दशीयु गुरुवारदल्लु । मूडविद्रेयल्ले च्यारि श्रीधरभट्टनुवरदशा आरोग्यचिंतामणिसहितेयें मंगलमहा ॥ श्री वीतरागाय नमः ॥ करकृतमपराध क्षतुमर्हंति संत: ॥ विजयापुरीश्च भवनस्वर्गविलरोजिनं ॥ श्रीमन्मंदरमस्तकाग्रसदन: श्रीमत्तपोधासन लोकालोक विभासि बोधनघनोलोकाग्रसिंहासन: ॥ सधानैक्यर्कमुद्गमाणिकजिनं पयातु पायात्मनं ॥

श्रीजिनार्पणमस्तु ॥ श्री शुभमस्तु । श्री वीतरागार्पणमस्तु ॥ ॐ श्री वासुपूज्याय नम: ॥ सिध्यदिनदलूवजेठु माडुवांगल कदमं प्रात: का लदलूमोंनदि पागि ॥

ॐ नम: औषधेभ्य उज्जवितोमतिषययवीर्यं मर्कंकस्मिन् कुरुध्वं पथ दह दहनं धारय तुभ्य नम: काचीपुरवासिन । दिमत्रदिमत्रि सिअग दुत छायाशुष्क कमठ भाडि अजमूर्थदिनस्य जग्ये सर्व्वं ग्रहं ॥

देखें— जि० र० को, पृ० ३४ ।

५६१. कल्याण कारक

Opening : श्रीमत्सुरासुरनरेन्द्रकिरीकोटि—माणिक्यरश्मि निकराचितपादपीठ: ।
तीर्थादिपूजितवपुर्वृषभो बभूव साक्षादकारणजगत्त्रितयैकबन्धु: ॥१॥

Closing । इति जिनवक्त्रनिर्गत सुशास्त्रमहाम्बुनिधे· सकलपदा-
र्थविस्तृततरंगकुलाकुलत. ।
उभयभवार्थसाधनत उद्वयभासुरतो निसृतमिद हि
शीकरनिभ जगदेकहितम् ॥२॥

Colophon । इत्युग्रादित्यचार्यकृत कल्याणकोत्तरे नानाविधकल्पककल्पना-
सिद्धये कल्पाधिकार: पंञ्चमोऽध्यायोऽप्यादित. पञ्चविंश परिच्छेद. ।
देखें— जि० र० को., पृ. ७६ ।

५६२. मदनकामरत्न

Opening : मृतंमृतलोहाभ्ररोप्य समाशम्
· · · मृतन्वर्णगन्ध (?)
समत्रं विनिक्षिप्य खल्वे विमर्वेत्तत स्वर्णतैलोद्भवेन त्रिवारम् ॥१॥

Closing : अहन्येव रज. स्त्रीणा भवन्ति प्रियदर्शनात् ।
वीर्यवृद्धिकरञ्चैव नारीणा रमते शतम् ॥

Colophon : पञ्चबाणरसो नाम पूज्यपादेन निर्मित ॥

५६३. निदान मुक्तावलो

Opening । रिष्ट दोष प्रवक्ष्यामि सर्वशास्त्रेषु सम्मतम् ।
सर्वप्राणिहित दृष्ट कालारिष्टञ्च निर्णयम् ॥१॥

Closing । गुरौ मैत्रे देवेऽप्यगदनिकरैर्नास्ति भजनम्
तथाप्येव विद्या अतिनिगदिता शास्त्रनिपुणै ।
अरिष्ट प्रत्यक्ष सुभवमनुमारूढसुभगम् विचार्य्यन्तच्छ्रवन्नि-
पुणमतिभि कर्मणि सदा ॥
विज्ञाय यो नर: काललक्षणैरेवमादिभि. ।
न भूयो मृत्यवे यस्माद्विद्वान्कर्म समाचरेत् ॥

Colophon । इति पूज्यापादविरचिताया स्वस्थारिष्ठनिदान समाप्तम् ।

५६४. रससार संग्रह

Opening । भद्र भूयात् जिनेन्द्राणा शासनायाघनासिने ।
कुतीर्थध्वांतसघातरभिन्नघनभानवे ॥१॥

Closing : ... . एव रत्तश्रयारी . . . ।

५९५. वद्यकसार संग्रह

Opening : सिद्धौषधानि पथ्यानि रागद्वेषरुजां जये ।
जयन्ति यद्वचाशत्र तीर्थकृच्छ्रेस्तुव श्रिये ॥

Closing : पथायोग प्रदीपोऽस्ति पूर्वयोगा शत तथा ।
तथैवाय विजयता योगचिन्तामणिश्चिरम् ॥
नागपूरि यतयो गणराज श्रीहर्षकीर्ति सकलिते ।
वैद्यकसारोद्धारे सप्तमोमिशकाध्याय. ॥

Colophon : इति श्रीमन्नागपुरि पतपातया गच्छाय श्रीहर्षकीर्ति सकलिते वैद्यकसारसग्रहे योगचिन्तामणौ मिशकाध्यायः समाप्त । इति योगचिन्तामणि सपूर्ण ।

देखें, जि. र. को., पृ. ३६५ ।

५९६. वैद्यकसार संग्रह

Opening : यत्र चित्रा समयाति तेजासिजतमासिच
मटीयस्तोदय वद चिदानदमयमह ॥१॥

Closing : नागपूरियतयो गणराज श्रीहर्षकीर्ति सकलिते ।
वैदकसारोद्धारे सप्तमकोमिश्रकाध्याय ॥३०॥

Colophon : इति श्रीमन्नागपुरियतपायतपागछाय श्री हर्षकीति सकलिते वैद्यकसारसग्रहे जोगचितामणौ मिश्रकाध्याय समाप्तम् ॥ यादृश पुस्तक दृष्टा तादृश लिखत मया । यदिशुद्ध अशुद्ध वा मम दोषो न दियते ॥ मिति भाद्रवा शुक्ल १० भोमवासरे: सवत् १८५० साके १७१५ शुभ भूयात् कल्याणमस्तु ॥

५९७. वैद्य विधान

Opening : मन्नारस सिंधुर विधि शुद्ध पारद षड्गुणोंक सुरभी जीर्णीतद्र मधुरसोंस नवमरक मणिशिला पचागक टकण वजु क्षारकलाश

र्कविमलित गद्यार्धभाग क्रमात् सर्वं खल्वतले विमर्द्य ममल योगादि-ऋक्षे शुभे कन्या भास्कर हस पादि मनल ।

Closing : स्यात्स्वेदन तदनुमर्दन मूर्छनेन, स्यादुत्थिता पतन रोद नियामनानि । सदीपन गगन भक्षण मानमात्रा सज्जारणा तदनुगर्भगता घृतिश्च ।। बाह्या धृति सूतक जारणस्याद्रागस्तथा सारण कर्म पश्चात् । सङ्क्रामणावेद विधिः शरीरा योग किलाष्टादश वेति कर्म ।।२।।

विशेष—वैसाख कृष्ण द्वितीयायां समाप्तश्च शाली वाहन शक् १८४८ ।।
सन् १९२६ ईस्वी ।

५९८. विद्याविनोदनम्

Opening : प्रप्रणम्य जिन देव सर्वज्ञ दोषवर्जितम् ।
सर्मवश्शीति चतुर वाराकल्पमकल्पकम् ।।

Closing : व्याध्युर्वीजकुठाररोगदण्ड णाति क्रूरदात्र
भूद्भ्वरूपम वावगाहनमिदं
भूपैरल सेव्यताम् ।।

Colophon : इति श्रीमदर्हत्परमेश्वर चारु चरणारविन्द गन्धगुणानन्दित मानसाशेषकला शास्त्र प्रवीण परमागमत्रयवेदि प्राणापायागमान्तर समुदित वेद्य शास्त्राम्बुनिधिपारगम सर्वं विद्यानन्द मानस श्रीमदकलङ्क स्वामि विरचित महावैद्यशास्त्रे विद्याविनोदाख्ये अवगाहन लक्षण समाप्तम् ।।

देखें, जि. र. को., पृ. ३५९ ।

५९९. योगचिन्ता मणि

Opening : यत्र विश्रामसमायांति, तेजांसि च तमांसि च ।
महीयस्तदह वदे, चिदानदमययहम् ।।

Closing : यथायोगप्रदायोस्ति पूर्वं योगसत यथा ।
तथैवायं विजयता योगश्चिंतामणिश्चिरम्

Colophon : इति श्री नागारावयो गणराज: । श्री हर्षकीर्ति सकलितेः वैद्यकसारो,द्वारे सप्तको मिश्रकाध्याय ७ । इति श्री योगचिताम-णिवैद्यकशास्त्र सपूर्ण मृ ।
सवत् १८६६ मिती ज्येष्ठ शुक्ल ३ शुक्रवार कु सम्पूर्णम् ।

देखें, जि० र० को०, पृ० ३२१ ।

६००. योगचिन्ता मणि

Opening : देखें—क्र० ५९९ ।

Closing : देखे—क्र० ५९९ ।

Colophon : इति श्री योगचिन्तामणिवैद्यकशास्त्र सपूर्णम् । सवत् १९८५ का साल जेष्ट शुक्लमासे एकादशी वृहस्पति । लेखक भुजबल-प्रसाद जैनी मुकाम आरा नगरे श्री मनेजर भुजवली शास्त्री के सप्र-दाय मे लिखा गया । इत्यल भवतु शुभ. ।

६०१. आचार्य भक्ति

Opening : सिद्धगुणस्तुतिनिरता उद्धूतरुषाग्निजालबहुलविशेषान् ।
गुप्तिभिरभिसंपूर्णान् मुक्तियुक्त सत्यवचनलक्षितभावान् ॥१॥

Closing : . . जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झ ।

इति आचार्यभक्ति ।

देखें—जि. र. को., पृ. २५ ।

६०२. अंकगर्भषडारचक्र

Opening : सिद्धिप्रियं प्रतिदिन प्रतिधाममानं.,
जन्मप्रबंधमथनं प्रतिभासमानं: ।
श्री नाभिराजतनुभूपदवीक्षणेन,
प्रायर्जनैर्विततनुभूपदवीक्षणेन ॥

Closing : तुष्टिः देशनया जनस्य मनसे येन स्थितिर्दिस्सता,
सर्वं वस्तुविजानता समवता ये नक्षता कुच्छ्रता ।
भव्यानदकरेण येन महता तत्वप्रणीति कृता,
ताप हतु जिन, समेशुभधिया तत सतामीशिता ॥

Colophon : इति देवनदि कृतिरित्यकगर्भषडारचक्र सम्पूर्णम् ।
देखे—जि० र० को०, पृ० १ ।

६०३. अष्टगायत्री टीका

Opening : ॐभूर्भुव स्वस्तत्सवितुर्वरेण्य ।
भर्गोदेवस्य धीमहि धीयो यो न प्रचोदयात् ।।१।।

Closing : श्री तीर्थराज पदपद्मसेवा हेवाकिदेवासुरकिन्नरेश ।
गम्भीरगीम्नारतण्वेरेण्य प्रभावदातादता शिव व' ।।१।।

Colophon : इति जैनगायत्री षट् दर्शन अष्टमतयेन वेदात रक्षस्येन तीर्थराजस्तुति समाप्ता ।। इति अष्ट गायत्री टीका समाप्त ।। श्रावणमासे कृष्णपक्षे तिथौ ६ भौमवासरे श्री सम्वत् १६६२ ।

६०४. आत्मतत्वाष्टक

Opening : अनुपमगुणकोष छिन्न लोभोरूपाशम् ।,
तनुभुवन समान केवलज्ञानभानुम् ।
विनमदमरवृ द सच्चिदानदकद,
जिनवलसमतत्व भावयाम्यात्मतत्वम् ।।

Closing : त्रिदशनुतमनिद्य मदभयमलदूरं,
शास्वतानदपूर चिदमलगुणमूर्ति
बालचद्रोरुकीर्ति विदित सकलतत्व:
भावयाम्यात्मतत्वम् ।।

Colophon : नही है ।

६०५. आत्मतत्वाष्टक

Opening : यद्वीतराग वरचिन्मय बोधरूपम्,
एस्स्वर्णटकसदृश घनसारभूतम् ।
यल्लोकमात्र कथित नय निश्चयेन,
तच्चिन्तयामि निजदेहगतात्मतत्वम् ।।

Closing : ये चिन्तयति पदपिंड स्वरूपभेदम्,
सालम्वन तदपित मुनयो वदन्ति ।
यन्निर्विकल्प कवलेन समाधिजातम्,
तच्चिन्तयामि निजदेहगतात्मतत्वम् ॥

Colophon : नहीं है ।

६०६. आत्मज्ञान प्रकरण स्तोत्र

Opening : नमोभि क्षीणपापाना शांताना वीतरागिणाम् ।
मुमुक्षुणामपेक्षायमात्मबोधो विधीयते ॥१॥

Closing : दिग्देशकाला .... .. अमृतो भवेत् ॥६८॥

Colophon : इति श्री गुरुपरमहस श्री दिगम्बराद्यामनायपद्मसूरिभिः कृते आत्मज्ञानमहाज्ञानप्रकरण स्तोत्र समाप्तम् ।

६०७. भक्तामर स्तोत्र

Opening . भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रमाणा-
मुद्योतिक दलितपाप तपोवितानम् ।
सम्यक्प्रणम्य जिनपादयुग युगदा
वाल वन भवजले पतताम् जनाना ।

Closing . स्तोत्रस्रज तवजिनेन्द्र गुणैर्निवद्धाम् :
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पा ।
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्त्र
त मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मी ॥

Colophon यह ग्रथ वीर स० २४४० मे लिखा गया ।
देखे—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२२ ।
(२) जि. र. को, पृ २८७ ।
(३) आ० सू०, पृ० १०६ ।
(४) रा० सू० ॥, पृ० ४६, ८९ ।
(५) रा० सू० ॥।, पृ० ११, ३५, १०५, २४१ ।
(६) प्र० जै० सा०, पृ० १६० ।
(7) Catg of Skt. & Pkt. Ms, P. 676.

६०८. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : देखें, क्र० ६०७ ।

इति श्री मानतु गाचार्यविरचिते भक्तामरस्तोत्र समाप्तम् ।
सवत् १८८२ श्रावण द्वितीक वदी ।

युग्म सिद्धि गजमेदनी, सवत्सर इह सार ।
द्वितीक मास नम तिथि, मुनि यक्ष रुक्मिण भरतार ॥१॥
सूर्य सुत शुभवार कहि प्रथम नक्षत्र घडी वाण ।
गड योग षटयत्र मैं, लिख्यौ स्तोत्र हित जाण ॥२॥
आदि ५ दोहे ।

६०९. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : देखें क्र० ६०७ ।

Colophon : इति भक्तमर स्तोत्र सपूर्णम् ।

६१०. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० ६०७ ।

Closing : देखे, क्र० ६०७ ।

Colophon : इति मानतु गाचार्यविरचित भक्तामरस्तोत्र समाप्तम् ।
सवत् १७६३ भादव वदी ४ दिने लिखत अमरगो नगरमध्ये ।

६११. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० ६०७ ।

Closing : देखें, क्र० ६०७ ।

Colophon : इति मानतु ङ्गाचार्यकृत भक्तामरस्तोत्र समाप्तम् ।

६१२. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : देखें, क्र० ६०७ ।

Colophon : इति श्री मानतुङ्गाचार्यविरचित भक्तामरस्तोत्र सपूर्णम् ।

६१३. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : ... ... मत्र का थोडा थोडा फल विध सुय लिखा ऐसा जानना ।

Colophon : इति श्री भक्तामरनामा श्री आदिनाथ स्वामी का स्तोत्र श्री मानतु गाचार्यविरचित समाप्तम् ।

६१४. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० ६०७ ।

Closing :
भाषा भक्तामर कियो हेमराज हितहेत ।
जे नर पढे सुभाव सो ते पावै सिवषेत ।।४६।।

Colophon : इति श्री भक्तामर सस्कृतभाषा समाप्तम् ।

६१५. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० ६०७

Closing : देखे, क्र० ६०७ ।

Colophon : इति मानतुङ्गाचार्यविरिचित भक्तामर आदिनाथस्तोत्र संपूर्णम् ।

६१६. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : देखे, क्र० ६०७ ।

Colophon : इति भक्तामरसस्कृतसमाप्तम् ।

६१७. भक्तामर स्तोत्र सटीक

Opening : देखें क्र० ६०७ ।

Closing : ....उस लक्ष्मी को विवश होकर इस स्तोत्र के पठन अध्ययन करने वाले पुरुष के पास आना ही पडता है ॥२८॥

Colophon : इति भक्तामरसमाप्त ।
हस्ताक्षर बालकृष्ण जैन पालम निवासी ।
मिती मार्गशीर्ष शुक्ला ९ गुरुवासरे सम्वत् विक्रम १९७१ इति शुभम् । मङ्गलमस्तु ।

६१८. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : देखे क्र० ६०७ ।
इति मानतुङ्गाचार्यकृत भक्तामरस्तोत्र समाप्तम् ।

१९. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखे क्र० ६०७ ।

Closing : देखें, क्र० ६०७ ।

Colophon : इति श्री मानतुङ्गाचार्यविरचित श्री भक्तामरस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

६२०. भक्तामर स्तोत्र टीका

Opening : देखे, क्र० ६०७ ।

Colsing : देखे क्र० ६२६ ।

Colophon : इति भक्तामरस्तोत्रस्य टीका पंडित हेमराजकृत सपूर्णम् । सवत् १९१९ तत्र माघकृष्ण ९ बुधवासरे लिखित अवाशंकर ।

६२१. भक्तामर स्तोत्र मंत्र

Opening : चदन अगर लवग वालछड शालीतिल अरलु
मिठाई दूध घृत इनकी आहुति दशांश होमेन

चक्रेश्वरी प्रसन्न भवति तत्काल सिद्धि'
चतुष्कोण कष्टे मध्ये ह्री पचदश द्वितीये
इर तृतीये नाकपाल चतुर्थे नवग्रहा पचमे ॥

Closing : अष्टदलकमलवत् गोलाकार कृत्वा मध्ये।
ॐह्री लक्ष्मी प्राप्त्यै नम' लिखेत् पुन चतुस्र कृत्वा।
षोडश श्री कारेणवेष्टि तत्रह्रिमत्रेण वेष्टयेत् ॥

Colophon : सवत् १९६७ फाल्गुन शुक्ला १२ रविवासरे लिपिकृत प० सीताराम शास्त्री ॥

६२२. भक्तामर ऋद्धि मत्र

Opening : य. सस्तुत' .... प्रथम जिनेन्द्र ॥२॥

Closing : अष्टदलकमल कृत्वा तन्मध्ये ॐह्रीं लक्ष्मी प्राप्ति नम. लिखित्वाय श्रवादसोडश श्रीकारेण वेष्टित तदुपरिमृद्धि मत्र वेष्टित अयत्र पूजावाथ की एकाव्यनृद्धि मत्रवार १०८ नित्य जपवाथी दिन ४८ सर्वसिद्धि मनोवाछित काय सिद्धि होय जिह नैव मिक.णो होय-तिको नाम चितिज मनोवाछित सिद्धि होय ॥ इति काव्य सपूर्णम्।

Colophon : इद पुस्तक लिखित नीलकठदासेन ऋषभदास नामधेय अस्य अर्थ लेखनीकृत ॥ सवत् १९३० मिति आश्विन शुक्ल अष्टम्या वात्सर शुभ भूयात्।

६२३. भक्तामर स्तोत्र मंत्र

Opening : देखें क्र० ६२२।

Closing : देखें क्र० ६२२।

Colophon : देखें क्र० ६२२।

६२४. भक्तामर स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ६०७।

Closing : देखे—क्र० ६०७।

Colophon : नही है।

विशेष—इसमे सभी काव्यो के मत्रचित्र (मंडल) बने हुए हैं।

६२५. भक्तामर स्तोत्र मंत्र

Opening · ॐ णमो अरिहंताण ।१। नमो जिणाण ।२। ॐ णमो तुहिजिणाण ।३। ॐ नमो परमोहि जिणाण ।४। ॐ णमो तु सव्वों हि जिणाण ।५।

Closing । अय मत्रो महामत्र सर्वपापविनाशक । अप्टोत्तरशत जप्तो धत्ते कार्याणि सर्वश ।।

Colophon : नही है ।

६२६ भक्तामर ऋद्धिमंत्र

Opening । देखें—क्र० ६०७ ।

Closing : देखें—क्र० ६०७ ।

Colophon : इति मानतुङ्गाचार्यविरचिते भक्तामरस्तोत्र सिद्धि मत्र यत्र विधि विधान सपूर्णम् ।

विशेष—इसमे सभी ऋद्धिमत्रचित्र रगीन हैं ।

६२७. भक्तामर ऋद्धिमंत्र

Opening : ॐ ह्री अर्हं णमो जिणाण ।

Closing : ईप्टार्थसपादिनी समापातु जिनेश्वरी भगवती पद्मावती देवता ।१२। इत्याशीर्वाद ।

Colophon : इति पद्मावती पूजा चारूकीर्तिकृत सपूर्णम् । मिती माघ-वदी ३० वार बुध सवत् १९६६ आरा नगरमध्ये लिखत भट्टारक मुनीन्द्रकीर्ति अगरेजी राजधानी मैं काष्ठासघे माथुरगच्छे पुस्करगणे लोहाचार्याम्नाये भट्टारक राजेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे भ० मुनीन्द्रकीर्ति समये ।

विशेष—इसमे पद्मावती पूजा भी है ।

६२८. भक्तामर ऋद्धिमंत्र

Opening : · ति जन सहसा ग्रहीतुं । अथ रिद्धि- ॐ ह्री अर्हं नमो हिति नान · · · ।

Closing : यह चौवालीसमा काव्य मंत्र जपै पढ़ै तै मनुष्य जिहाज न डूबै पारलगै आपदा मिटै काव्य उद्धृत ।

Colophon : अपूर्ण ।

६२६. भक्तामर टीका

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : भक्तामर टीका सदा, पढ़ै सुनै जो कोई ।
हैमराज शिवसुख लहै, तरामनवछित होई ।।

Colophon : इति श्री भक्तामरटीका समाप्ता ।।

देखें—दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२३ ।

६३०. भक्तामर टीका

Opening : श्री वर्द्धमानं प्रणिपत्य मूर्ध्ना दोषैर्व्ययेत ह्यविरुद्धवाचम् ।
वक्ष्ये फल तत् वृषभस्तवस्य सूरीश्वरैर्यत् कथित क्रमेण ।।

Closing : वर्णित: कूर्म्मान्म्मेसीनाम्न वचनात्मयकारि च ।।
भक्तामरस्य सद्वृति: रायमल्लेन वर्णिता ।।
त्रिभि: कुलकम् ।

Colophon : इति श्री ब्रह्म श्री रायमल्लविरचित भक्तामरस्तोत्रवृति: समाप्ता. ।।

६३१. भक्तामर स्तोत्र टीका

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : देखें, क्र० ६२६ ।

Colophon : इति श्री भक्तामर जी का टीका उक्त वार्तिक मया बालाबं हैमराजकृत सपूर्णम् । सवत् १६०८ माघसुदी १० बुधवार लि० ८ जमनादास दिल्ली मध्ये धर्मपुरा आरहमल का मंदिर मै ।

६३२. भक्तामर स्तोत्र वचनिका

Opening : देव जिनेसुर वंदिकरि, वाणी गुरु उरलाय ।
स्तोत्र भक्तामर तणी, करूं वचनिका भाय ।।

Closing : संवत्सर शतअष्टदश, सत्तरि विक्रमराय ।
कातिकवदिबुधद्वादशी, पूरण भई सुभाय ।।

Colophon : इति श्री मानतुंगाचार्य कृत भक्तामर स्तोत्र की देशभाषामय वचनिका समाप्ता । संवत् १६४४ मिति फागुण सुदी १० ।

६३३. भक्तामर स्तोत्र सार्थ

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : देखें क्र० ६२६ ।

Colophon : इति श्री भक्तामर जी की टीका संयुक्त समाप्तम् ।

६३४. भक्तामर स्तोत्र का मंत्र संग्रह

Opening : बुद्धया विनापि ··· ···· सहसा ग्रहीतुम् ।।

Closing : बहु भक्ता ···· ···· ।

६३५. भैरवाष्टक

Opening : अतितीक्ष्णमहाकाय ··· ··· मानमद्रतमोहर ।।१।।

Closing : अपुत्रो लभ्यते पुत्रं बधो मुञ्चति बधनात् ।
राजाग्नि हरिभयः भैरवाष्टककीर्तिनात् ।।११।।

Colophon : इति भैरवाष्टकम् ।

६३६. भैरवाष्टक स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६३५ ।

Closing : देखें क्र० ६३५ ।

Colophon : इति भैरवाष्टकस्तोत्रसम्पूर्णम् ।

६३७. भैरवपद्मावती कल्प

Opening : ॐकरिविष्टिसंयुक्तं छ्वर्ज यत्र सनामक
लिखित्वा परिवृक्षाणा वद्धमुच्चाटन रिपो. ॥१॥

Closing : यावद्वाग्धिभूधरतारागणगगनचन्द्रदिनपतय'
तिष्टतु भुवितावदयं भैरवपद्मावती कल्प ॥५६॥

Colophon इत्युभय भाषा कविशेखर श्री मल्लिषेण सूरि विरचितं भैरवपद्मावती कल्प समाप्ता' ॥ श्रीरस्तुवाचकाना मिति फाल्गुण कृष्ण चतुर्दश्यां १४ वृ्धवासरे श्री नीलकंठदास स्व पठनार्थम् सवत् १६५६ ।

६३८ भैरवपद्मावती कल्प

Opening । श्री मच्चातुर्निकायाऽमर ... वक्ष्यते मल्लिषेणं ॥१॥

Closing । जब तक समुद्रपर्वत तारागण आकाश चंद्र और
सूर्य रहे तब तक यह भैरव पद्मावती कल्प भी रहे ॥

Colophon : इति उभयभाषा कविशेखर श्री मल्लिषेणसूरि विरचिते भैरवपद्मावती कल्प की साहित्यतीर्थाचार्य प्राच्य विद्यावारिधि श्री चन्द्रशेखरशास्त्रीकृत भाषाटीका मे गारुडाधिकार नामका दशमपरिच्छेद समाप्तम् । इति सपूर्णम् । शुभमिति कार्तिकशुक्ला ४ वीरसंवत् २४६४ विक्रम सवत् १९९३ ।

देखें—(१) जि. र. को, पृ. २९९ ।
(2) Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 678.

६३९. भजन संग्रह

Opening । हो वो सिले मोहे तेरि सगरी ॥टेक॥

Closing । तुम सुमिरत वत रिधि निधि पसरी,
अजितहि व्रत कर धर पकरी ॥नि० ॥४॥

Colophon । इति सम्पूर्णम् ।

६४० भक्तिसंग्रह टीका

Opening · सिद्धानुद्धूतकर्म्मप्रकृतिसमुदयान् साधितात्मस्वभावान् ।
वंदे सिद्धिं प्रसिद्धयै तदनुपम गुणप्रग्रहाकृति तुष्ट· ॥

Closing : दुखकरकउ कम्मरकउ वोहिलाओ सुगइगमण समहिमरण
जिणगुण सपत्ति होउ मष्टम् ।

Colophon । इति नंदीश्वर भक्तिः । मूल श्लोक ४७० सख्या ।
इति दशभक्ति पाठ की अक्षरार्थ भाषा बालवबोधार्थ पडित
शिवचद्र कृत समाप्तम् । सवत् १६४८ मार्ग० वदी ६ शनौ शुभ
भूयात् ।

६४१. भाषापद संग्रह

Opening · दरसन भयो आज शिखिर जी के ।
बीस कोस पर गिरवर दीखे,
भाजे भरम सकल जी के ॥

Closing कुंदन ऐसी अनर्थ माया, विधिना जगमे विस्तारी ।
अजठारह नाते हुए, जहा एक नही जारी ।

Colophon : इति सपूर्णम् ।

६४२. भूपालचतुर्विशतिकामूल

Opening · श्री लीलायतन महीकुलगृह कीर्तिप्रमोदास्पदम्,
वाग्देवी रतिकेतन जयरमा क्रीडानिधान महत् ।
स स्यात्सर्व महोत्सवैकभयन यः प्रार्थतार्थप्रद,
प्रात पश्यति कल्पपादपद्म छाया जिनाघ्रिद्वयम् ॥

Closing : दृष्टस्त्व जिनराजचद्रविकचद्भूपेन्द्र नेत्रोत्पले,
स्नातत्वन्नुति चद्रिकांभसि भवद्विद्विच्चकारोत्सवे ।
नीतश्चाघ निदाघज. क्लमभर· शातिमया गम्यते,
देवत्वद्गत चेतसैव भवतो भूयात्पुनर्दर्शनम् ॥

Colophon । इति भूपाल चौबीसी स्तोत्र सम्पूर्णम् ।
देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२५ ।

(२) जि० र० को०, पृ० २९८ ।
(३) रा० सू० III, पृ० १०६, २४२ ।
(४) आ० सू० पृ १०९ ।
(५) जै० ग्र० प्र० स० I, पृ० ९ ।

६४३. भूपाल स्तोत्र

OPening : देखें—क्र० ६४२ ।

Closing : उपशम इति मूर्तिर्ललित चद्रान्मुनीन्द्रा
दजनि विनयचद्र सच्चकोरैकचन्द्र ।
जगदमृत सगर्भा शास्त्रसंदर्भ गर्भाः,
शुचि चरित चरिष्टमोर्यस्पधिन्वति वाच' ॥

Colophon : इति श्री भूपालस्तोत्र संपूर्णम् । मिति प्रथमभाद्रपद कृष्णा प्रतिपक्षभृगो सवत् १९४७ शुभ भवतु ।

सन्दर्भ के लिए देखें—क्र० ६४२ ।

Catg. of Skt & Pkt. Ms. 678

६४४. भूपालस्तोत्र टीका

Closing : देखें—क्र० ६४२ ।

Closing : .... ग्रीष्मभव प्रस्वेदभर' शांतिनीत समाप्ति प्रापितः भो देव मया त्वगद्‌तचेतसारावगम्यते भवत तवपुनर्दर्शन भूयात् अस्तु इत्येवस्तवनकत्रयि चित्र त्वय्येवगत चेतो यस्य स तेन ।

Colophon : इति भूपालस्तोत्र टीका सम्पूर्णम् ।

६४५. भावनाष्टक

Opening : मुनिस्तुत्य चिन्तत्वनीरेजभृंगम्,
परित्यक्त रागादिदोषानुसगम् ।
जगद्वस्तु विद्योतज्ञानरूपम्,
सदा पावन भावयामि स्वरूपम् ॥

Closing : स्वचिद्भावना सभवानन्तशक्ति,
निरास निरीस परिप्राप्यमुक्तिम् ।

त्रिलोकेश्वर निश्चल नित्यरूपम्
सदा पावन भावयामि स्वरूपम् ॥

Colophon : नही है ।

६४६. चन्द्रप्रभ स्तोत्र

Opening : शशाकशखगोक्षीरहारधवलगात्राय " ' ' इत्यादिना ।

Closing : ' ' घे घे आ क्रो क्षी क्षू क्षी क्षा ज्वालामालिनिज्ञापतये स्वाहा ।

Colophon : इति चद्रप्रभस्तोत्र ज्वालामालिनि स्तोत्र सम्पूर्णम् ।
देखें—जि० र० को०, पृ० १२० ।

६४७. चन्द्रप्रभशासनदेवी स्तोत्र (ज्वामामालिनी स्तोत्र)

Opening : देखें—क्र० ६४६ ।

Closing : घे घे, ख ख' ख ख ह्लां ह्लीं ह्ला-४ आ क्रो ह्लौ क्षा क्षी क्ष्वी क्ली क्लूँ ह्ली ह्ली क्ष्वी ज्वालामालिन्या ज्ञापयति स्वाहा ।

Colophon : इति श्री चद्रप्रभुशासनदेव्या स्तोत्र सम्पूर्णम् ।
देखे—(१) जि० र० को०, पृ० १२१ ।
(२) रा० सू० III, पृ० २३९ ।

६४८. चतुर्विंशति जिन स्तोत्र

Opening : आद्योवर्षसहस्त्रमौनमगमत्प्राप्तो जिनो द्वादश.,
द्विसप्तैव च सभवोष्ट च दश. श्री नदनो विशति ।
छद्मस्थो सुमतिश्चषण्ठजिनप षण्या समासत्रस्थिति,
वर्षाण्यत्रनवैव सप्तमजिनो मासत्रय चद्रभ ॥

Closing : एते सर्वजिना शतक्रतुसमभ्यर्च्यक्रमाभोरूहाः ।
तद्वाश्चविरूद्धवाच्यरहिता कुर्वन्तु मे मगलम् ॥

Colophon : इति श्री चतुर्विशतिस्तोत्र सपूर्णम् ।

६४९. चतुर्विंशति जिन स्तोत्र

Opening : आदिनाथ जगन्नाथ अरनाथ तथा नमि ।
अजित जितमोहारि पार्श्वं वन्दे गुणाकरम् ॥१॥

Closing : तद्गृहे कोटिकल्याणश्रीविलसति लालया ।
क्षुद्रोपद्रवभूतादि, नश्यति व्याधिवेदना ॥७॥

Colophon : इति चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र समाप्तम् ।

६५० चतुर्विंशति जिन स्तुति

Opening सद्भक्त्यानतमौलिनिर्जरवरभ्राजिष्णुमौलिप्रभा,
सम्मिश्रारुण दीप्ति शोभिचरणा भोजद्वय. सर्वदा ।
सर्वज्ञ पुरुषोत्तम सुचरिते धर्मार्थिना प्राणिना,
भूयाद्भूरिविभूतये मुनिपति श्री नाभिसूनुर्जिन ॥

Closing यस्या प्रसादात्परिपूर्णभाव भूत सुनिर्विघ्नतयास्तवोय ।
जगत्त्रयी ज गुहितैकनिष्टा वाग्देवतासाजयतादजस्त्र ॥

Colophon : इति श्री चतुर्विंशति जिनस्तुति. ।

६५१. चरित्र भक्ति

Opening : येनेन्द्रान् भुवनत्रयस्य ... .. रभ्यर्चनम् ॥१॥

Closing · ... .. समाहिम ण जिणगुणसंपत्तिहोउ मज्झ ।

Colophon · इति चारित्रभक्ति सम्पूर्णम् ।

६५२. चौबीस तीर्थङ्कर स्तोत्र

Opening : सिद्धप्रियैप्रतिदिन प्रतिभासमानै ... ... ।
... . प्रापेजनैर्विनुतनुपदवीक्षणेन ॥

Closing : तुष्टि देशनय।जनस्य मनसे येनस्थितिदत्तसिता ।
.... शुभधियातात सतामीशितः ।

Colophon : इति श्री देवनदयाचार्य कृत चौबीस महाराज जाजमक काव्यमई महास्तोत्र सम्पूर्णम् ।-

देखें—(१) दि० जि. ग्र र., पृ. १२८ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ११४ ।

६५३. चिन्तामणि अष्टक

Opening : वंदावत्रि सुरेन्द्रनृमौलिसुधामवदाभोनिधिमौक्तिकचारुमणि-
व्रजघृष्टपदम् ।
श्रीचिंतामणिमेस्यमहाभि सुराब्धिजलैफेनसुधाकरचद तदाप्त-
यशो विमलैः ॥

Closing : स्याद्वादामृताशिक्तफणि ... सुवाछितभावभृतैः ॥

Colophon इत्यष्टकम् ।

६५४. चिन्तामणि स्तोत्र

Opening : श्री सुगुरु चिंतामणि देवसदा मुडसकल मनोरथपूर्णमुदा ।
फुलकमला दूरण होयकदा जपता प्रभुपारस नाम यदा ॥

Closing : अमचीप्रभु पारस आसफलो भणतापसवासर वास भलो ।
मन मित्र सुकोमल होयमिलो कीरति प्रभु पारसनाथ किये ॥

Colophon : चिंतामणि स्तोत्र सपूर्णम् ।

६५५. चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र

Opening : जगद्गुरु जगद्देव जगदानददायक ।
जगद्द्य जगन्नाथ श्री पार्श्वसस्तुवे जिण ॥१॥

Closing : दर्भस्वस्तिकनैवेद्य ... अर्चयाम्यहम् ।
इति दिग्कालार्चनविधानम् ।

Colophon : इति चिंतामणिपूजाविधि सम्पूर्णम् ।
संवत् १८५३ वर्षे कार्तिककृष्णा एकादशी को सम्पूर्ण भवे ।
लिखत धाराजीत जैसवाल पठनपाठन निमित लिषी ।

६५६. दशभक्त्यादि महाशास्त्र

Opening : नम. श्री वर्द्धमानाय चिद्रूपाय स्वयम्भुवे ।
सहजात्मप्रकाशाय सप्तससार -भेदिने ।।

Closing : वर्द्धमानमुनीन्द्रेण विद्यानन्द्यार्यजन्मुना ।
लिखित दशभक्त्यादिदर्शन जननार्थं कृत् ।।

Colophon : इत्यय समाप्तो ग्रंथ । अस्तु ।

६५७. देवी स्तवन

Opening : श्री मद्देवपतिप्रणम्रमुकुट प्रद्योतरत्नप्रभा,
मालामानितपादपद्मपरमोत्कृष्टप्र भाभासुरा ।
या सा पातु सदा प्रसन्नवदना पद्मावतीभारती,
समरागमदोषविस्तरगत सेवानमीपस्थितम् ।।

Closing : इदमपि भगवतिवृत्तपुष्पालकारलकृतम् ।
स्तोत्र कण्ठ करोति यश्च दिव्य श्रीस्त समाश्रयैति ।।

Colophon : इति देव्य स्तवनम् ।

६५८. एकीभाव स्तोत्र

Opening : एकीभाव गत इव ... ... दुरन्तापहेतु ।।१।।

Closing : वादिराजमनु ... ... मनुभव्यसहाय ।।२६।।

Colophon : इति श्री वादिराजदेवविरचित एकीभाव महास्तवन समाप्त: ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३० ।
(२) जि० र० को०, पृ० ६२ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० ११० ।
(४) रा० सू० II, पृ० ४६, १०७, ११२, २७४ ।
(५) रा० सू III, पृ० १०१, १२३, २३८, ३०८ ।
(६) आ० सू०, पृ० १६ ।
(7) Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 630

६५९. एकीभावस्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ६५८ ।

Closing : देखें—क्र० ६५८ ।

Colophon : इति वदि (राज) मुनि कृत एकीभाव स्तोत्र सम्पूर्णम्।

६६०. एकीभाव स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ६५८ ।

Closing : देखें—क्र० ६५८ ।

Colophon : इति श्री वादिराजकृत एकीभावस्तोत्र मपूर्णम् ।

६६१. एकीभावस्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ६५८ ।

Closing : शब्दिकाना मध्ये तार्किकाना मध्ये कवीश्वराष्णां मध्ये भव्यसहाः याना मध्ये वादिराज प्रधान इत्यर्थ ।

Colophon : इति वादिराज कृत एकीभाव टीका नपूर्णम् ।

६६२. एकीभाव स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ६५८ ।

Closing : देखें—क्र० ६५८ ।

Colophon : इति श्री एकीभावस्तोत्र समाप्तम् ।

६६३. एकीभाव स्तोत्र सटीक

Opening : देखें—क्र० ६५८ ।

Closing : भव्यसहाय त वादिराजं अनुवर्तते भव्यानां सहाय सथात वादिराजा न्यून इत्यर्थः । वादिराज एव शब्दिक नान्य., वादिराज एव तार्किक नान्य, वादिराज एव काव्यकृत नान्य, वादिराज एव भव्यसहायः नान्यः इति तात्पर्यार्थ. अनुयोगे द्वितीया ।

Colophon : इति वादिराजसूरि विरचित एकीभावस्तोत्रटीका सम्पूर्णम् । भूयात् ।

६६४. गौतम स्वामी स्तोत्र

Opening : श्रीमद्देवेन्द्रवृंदा ... पार्श्वनाथोत्रनित्यम् ॥१॥

Closing : इति श्री गौतमस्तोत्रमत्रं ते सारतोन्हवम् ।
श्री जिनप्रभसूरिस्त्व भवसर्थिसिद्धये ॥६॥

Colophon : इति श्री गौतमस्वामी स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

६६५. गीतवीत राग

Opening : विद्याव्याप्तसमस्तवस्तुविसरो विश्वैर्गुणैर्भासुरो,
दिव्यश्रव्यवच. प्रतुष्टनूसुर सद्ध्यानरत्नाकर ।
य संसारविपाब्धिपारसुतरो निर्वाणसौख्यादर
स श्रीमान वृषभेश्वरो जिनवरो भक्त्यादारान् पातु न ॥१॥

Closing : गगेयवशाम्बुधिपूर्णचन्द्रो यो देवराजोऽजनि राजपुत्र ।
तस्यानुरोधेन च गीतवीतराग-प्रबन्ध मुनिपश्चकार ॥१॥
द्राविडदेशविशिष्टे सिंहपुरे लब्धशस्तजन्मासौ ।
वेलगोलपण्डितवर्यश्चकार श्रीवृषभनाथवरचरितम् ॥२॥
स्वस्तिश्रीवेलगुले दोर्वलिजिननिकटे कुन्दकुन्दान्वये
गीऽभूत्स्तुत्य पुस्तकाङ्कश्रुतगुणाभरण. ख्यातदेशीगणार्य
विस्तीर्णशिपरीतिप्रगुणरसभृ त गीतयुग्वीतरागम्,
शस्तादोशप्रबन्ध बुधनुतमतनोत् पण्डिताचार्यवर्य ॥

Colophon : इति श्रीमद्रायराजगुरुभूमण्डलाचार्यवर्यमहावादवादीश्वरराय-वादिपितामहसकलविद्वज्जनचक्रवर्तिवल्लालरायजीवरक्षापाल (?) कृत्या-द्यनेकविरुदावलिविराजच्छ्रीमद्वेलगोलसिद्धसिंहासनाधीश्वर श्रीमद-भिनवचारुकीर्त्तिपण्डिताचार्यवर्यप्रणीतगीतवीतरागाभिधानाष्टपदी समाप्ता।

६६६. गोम्मटाष्टक

Opening : तुभ्य नमोऽस्तु शिवशंकरशंकराय,
तुभ्य नमोऽस्तु कृतकृत्यमहोन्नताय ।
तुभ्य नमोस्तु घनघातिविनाशकाय,
तुभ्य नमोस्तु विभवे जिनगुम्मटाय ॥

Closing : तुभ्य नमो निखिललोकविलोकनाय,
तुभ्य नमोऽस्तु परमार्थगुणाष्टकाय ।
तुभ्य नमो वेनुगुलाधिसाधनाय,
तुभ्य नमोस्तु विभवे जिन गुम्मटाय ।।

Colophon : नही है ।

६६७ गुरुदेव की विनती

Opening : जयवत दयावंत सुगुरुदेव हमारे ।
समार विषमसार ते जिन भक्त उद्धारे ।।टेक।।

Closing : इहलोक का सुख भोग सुरलोक मे जावे,
नरलोक मे फिर आयकै निर्वान को पावै ।।
जयवत दयावत ।।३२।।

Colophon : इति गुरावली सपूर्ण ।

६६८. जिनचैत्य स्तव

Opening : वदौं श्रीजिन जगतगुरु, उपदेशक शिवपथ ।
सम श्रुतिशासन ते रचू , जिन चैत्यस्तव ग्रन्थ ।।

Closing : अठारै मै के ऊपरै, लग्यौ वियासीसाल ।
गुरु कातिग वदि अष्टमी, पूरण कियौ सुकाल ।।

Colophon : इति श्रीजिनचैत्यस्तव ग्रन्थ दिवान चपाराम कृतौ समाप्ता शुभमस्तु । सवत् १८८३ मिति कार्तिक कृष्ण अष्टमी गुरुवार लिखतम् खरगराय श्री वृदावन मध्ये लिखाइत श्री दिवान चपाराम जी ।

६६९. जिनदर्शननाष्टक

Opening : अद्याखिल कर्मजित मयाद्यमोक्षो न भूनो ननुभूतपूर्व ।
तीर्णोनवार्णोनिधिरद्यघोरो जिनेन्द्रपादाब्जदर्शनेन ।।

Closing : अद्याष्टक निर्मितमुक्तसारैः,
कीर्तिम्वनातैरमनैर्मुनीन्द्रै ।

यो धीयते नित्यमिदं प्रकीर्त्तं,
पद्मामवो ते परमालभंते ॥

Colophon : इति जिनदर्शाष्टक समाप्तम् ।

६७०. जिनेन्द्र दर्शन पाठी

Opening : णमो अरिहंताणं .... णमो लोए सव्वसाहूणं ॥

Closing : जन्मजन्मकृतं पापं जन्मकोटिमुपार्जितम् ।
जन्मरोगं जरातकं हन्यते जिनदर्शनात् ॥

Colophon : इति दर्शन समाप्तः ।

६७१. जिनेन्द्र स्तोत्र

Opening : दृष्टं जिनेन्द्रभवनं . ... विराजमानम ॥१॥

Closing : श्रेयः पद ... . प्रनानुवं ॥११॥

Colophon : इति दृष्ट जिनेन्द्रस्तोत्र सपूर्णम् ।

६७२. जिनवाणी स्तुति

Opening : माधुरी जिनेसुर वानी, गुरु गनधर करतं बखानी हो ॥

Closing : चारो जोग प्रयोग करौं, औ पुरान परमान ।
अब नमत नरिंद्रप्रीतनित, सदा सत्य सरधान ॥

Colophon : इति संपूर्णम् । माघशुक्ल १ स० १६६३ सोमवार शुभं ।
हुरीदास प्यारा ।

६७३. जिनगुण स्तवन

Opening : तवगतभवतापादौ प्रणम्य सम्यग्जिनेन्द्रवरपादौ ।
भक्तागुणमण्युदधेः विमतिरपिरपि स्तुतिमहं विदधे ॥१॥

Closing : इत्यर्हन्तं स्तुत्वा स्वानालोचयतिय. सुधी दोषान्
तद्भवमेनस्तस्मिन्वधनोपैति रज इवास्मिन्घैः ॥

Colophon : इति जिनगुणस्तवनपूर्विकालोचना समाप्तम् ।

६७४. जिनगुण सम्पत्ति

Opening : विबुधपति खगपनरपति धनदोरगभूतयक्षपति महितम् ।
अतुलसुखविमलनिरुपमशिवमचलमनामयम् ॥

Closing : इक्षो विकाररसप्राप्त गुणंन लोके,
पिष्टादिक मधुरतानुपयाति यद्वत् ।
तद्वच्च पुन्यपुरपैरुषित'नि नित्यम्,
जातानि तानि जगतामिह पावनानि ॥
इत्यर्हताम भवता च महामुनीनां,
प्रोक्ता मयात्र परिनिर्वृति भूमिदेशा' ।
ते मे जिनाजित भया मुनयश्च शान्ता,
दिश्या सुरासुगति निवधसौख्यम् ॥

Colophon : नहीं है ।

६७५. जिनस्तोत्र

Opening : उपकनेमुनेश्चैस भवप्रयमान्वितः ।
विरतो विपयासगे प्रविष्ट. कंकसीसुत. ॥

Closing : मासमात्रदशास्योपि स्थित्वाकैलाशमर्हत्ते ।
प्रणिवसतिनदेश प्रपपावमि वांछितम् ॥

Colophong : नहीं है ।

६७६. जिनपंजर स्तोत्र

Opening : परमेष्ठिनमस्कारं सार नवपदात्मकम् ।
आत्मरक्षाकर वज्र पंजराभ स्मराम्यहम् ॥

Closing : श्री हस्तनीय वरेण्य गण्ये देवप्रभाचार्य पद्माजह मः।
वादीन्द्रचूडामणिराप जैनी जीयाद श्री कमल प्रभाख्य ॥

Colophon : इति श्री जिनपंजरस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

६७७. जिनपंजर स्तोत्र

Opening : ॐ ह्रीं श्री अर्हं अर्हं द्भ्यो नमो नम ॥

Closing : यस्मिन्गृहे महाभक्त्या यन्त्रोय पूजते बुध ।
भूतप्रे ... ॥

Colophon : Missing

६७८. जिनपंजर स्तोत्र

Opening : ॐ ह्रां श्री ह्रू अर्हद्भ्यो नमो नम. ।

Closing : प्रात्समपुच्छांय लक्ष्मीमनोवछितपूरानाय ॥२४॥

Colophon . इति जिनपजर सपूर्णम् ।

६७९. ज्वालामालिनी स्तोत्र

Opening : ॐ नमो भगवते श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय शशांकशखगोक्षीर-
हारधवलगात्राय घातिकर्मनिर्मूलछेदनकराय ।

Closing : ... हुरु हुरु स्फुत स्फुट घे घे आं क्रो क्षी क्षूं क्षूं क्षी क्षी
ज्वालामालिनि ज्ञापयते स्वाहा ।

Colophon : इति श्री ज्वालामालिनि स्तोत्र सपूर्णम् । शुभमस्तु ।

६८०. ज्वालामालिनी देवी स्तुति

Opening : —देखे—क्र० ६७९

Closing · देखे—क्र० ६७९ ।

Colophon इति श्री चन्द्रप्रभती भट्टारक की ज्वालामालिनि शासनदेवी सकल-
दु दहर मगलकर विजयकरस्त स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

६८१. ज्वालामालिनी कल्प

Opening : चद्रप्रभजिननाथं चद्रप्रभमिंद्रनदिमहिमानम् ।
ज्वालामालिन्यर्चितचरणसरोरुहद्वय वदे ॥१॥

Closing : उरगक्रूरग्रहशाति कुरु—अनेन मत्रेण पुष्पान् क्षिपेत् ।

Colophon : सपूर्णो ।
देखे—Catg of Skt & Pkt. Ms., P. 647.

६८२. कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि,
भीताभयप्रदमनिंदिमङ्घ्रिपद्म ।
ससारसागरनिमज्जदशेषजतु ।
पोतयमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥

Closing : जननयनकुमुदचन्द्रप्रभासुरा स्वर्गसपदो भुक्त्वा ।
ते विगलितमलनिचया अचिरात् मोक्ष प्रपद्य ते ॥

Colophon : इति श्री कल्याणमदिरस्तोत्रम्
देखें –(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३७ ।
(२) जि० र० को, पृ० ८० ।
(३) रा० सू० II, पृ० ४६, ६७, १०६ ।
(४) रा० सू० III, पृ० १०१, ११२ ।
(५) आ० सू०, पृ० २४ ।
(६) प्र० जै० सा०, पृ० ११३ ।
(7) Catg. of Skt & Pkt Ms, P. 633

६८३. कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखे क० ६८२ ।

Closing : देखे क० ६८२ ।

Colophon : इति कल्याणमदिरजीसस्कृतसमाप्त म् ।

६८४. कल्याणमदिर स्तोत्र

Opening : देखे, क० ६८२ ।

Closing : देखें, क्र० ६८२ ।

Colophon : इति कल्याणमंदिर स्तोत्रं संपूर्णम् । संवत् १७११ वर्ष मार्गशीर्षमासे कृष्ण चतुर्दशा(श्यां) चंद्रवासरे लिपिकृता केशवसागरेण ।

६८५. कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।

Closing : देखें, क्र० ६८२ ।

Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर स्तवनं संपूर्णम् । प० हेमकमल-गणियोग्य चंद्रजय गणिना लिखितम् ।

६८६. कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।

Closing : देखें, क्र० ६८२ ।

Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर स्तोत्र समाप्तम् । लिखत जमनादास सुश्रावककुले हसार नगरे स्थान संवत् १८८७ मगशिर सुदी १२ सोमवारे ।

६८७ कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।

Closing : देखें, क्र० ६८२ ।

Colophon इति श्री कुमुदचन्द्राचार्य कृत श्री कल्याणमंदिर स्तोत्रम् ।

६८८. कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।

Closing : .... पुनः किं भूता भव्या विगलितमलनिचयाः स्फुटितपापसमूहा ।

Colophon इति श्री कल्याणमंदिर टीका समाप्ता सम्वत् १९२१ ।

६८६. कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखे, क० ६८२ ।

Closing : देखे, क० ६८२ ।

Colophon : इति कल्याणमदिर स्तोत्र सपूर्णम् ।

६६०. कल्याणमदिर स्तोत्र

Opening : देखे, क० ६८२ ।

Closing : देखें, क० ६८२ ।

Colophon इति कल्याणमदिर स्तोत्र समाप्तम् ।

६६१ भल्याणमदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क० ६८२ ।

Closing : इह कल्याणमदिर कियो कुमुदचन्द्र की बुद्धि ।
भाषा करत बनारसी कारणसमकित सुद्धि ॥

Colophon : इति श्री कल्याणमदिर स्तोत्र भाषा समाप्तम् ।

६६२ कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क० ६८२ ।

Closing : देखे क० ६८२ ।

Colophon : इति कल्याणमदिरस्तोत्रसपूर्णम् ।

६६३ कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, क० ६८२ ।

Closing : देखे, क० ६८२ ।

Colophon : इति श्री कुमुदचद्रमुनि विरचित कल्याणमदिर सम्पूर्णम् ।

६६४ कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : परम जोति परमात्मा परम ज्ञान परवीन ।
वंदू परमानंदमय घट घट अतरलीन ॥१॥

Closing : प्रगटरलगिन तै ... ... ।

Clophon : अनुपलब्ध ।

६९५. कल्याणमंदिर वचनिका

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।

Closing : ... . मल कहिये पाप के निचयाः समूहं ही तें भव्ये अैसे हैं ।

Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर स्तौत्र भाषाटीका समाप्ता ।

६९६. कल्याण मन्दिर सार्थ

Opening : देखें, क्र० ६८२ ।

Closing : देखे, क्र० ६९५ ।

Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर जी की टीका सहित समाप्तम् ।

६९७. क्षमावणी आरती

Opening : उनतीस अंग की आरती, सुनौ भविक चितलाय ।
मन वच तन सरधा करौ, उत्तम नर भो (भव) पाय ।।

Closing : दोष न कहियौ कोई, गुणग्राही पढे भावसौ ।
भूल चूक जो होइ, अरथ विचारि कैं सोधियो ।।२३।।

Colophon : इति क्षमावणी की आरती भाषा सम्पूर्णम् ।

६९८. क्षेत्रपाल स्तुति

Opening : जिनेन्द्र धर्म के सदैव रक्षपाल जी ।
बडे दयाल भक्तपाल क्षेत्रपाल जी ।।टेक।।

Closing : जिनेन्द्र द्वार रक्षपाल क्षेत्रपाल जी,
तुम्हे नमे सदैव भव्यवृ द भाल जी ।
कृपा कटाक्ष हेरिए अहो कृपाल जी
हमे समस्त रिद्धि सिद्धि द्यो दयाल जी ।

Colophon : इति क्षेत्रपाल जी की सेर पूर्ण ।

६९९ काष्ठासंघ गुर्वावली

Opening : सम्प्राप्तससारसमुद्रतीरं, जिनेन्द्रचन्द्र प्रणिपत्य
वीरम् ।
समीहिताद्यै सुमनस्तरूणा, नामावलिं वक्ष्मित
मा गुरुणाम् ॥

Closing : ....ससदि विचिंत्यार्त्रैवस्त्र महिमातटिमारोपि निपु-
णम् ।

Colophon . नही है ।

७००. लघु सहस्त्र नाम

Opening . नम. त्रैलोक्यनाथाय सर्वज्ञाय महात्मने ।
वक्ष्ये तस्य नामानी मोक्षसौख्याभिलाषया। ।१॥

Closing : नामाष्टसहस्राणि जे पठंति पुन पुनः ।
ते निर्वाणपद यान्ति मुच्यते नात्रसंसय· ॥४०॥

Colophon : इति लघुसहस्रनाम सपूर्णम् ।

७०१. लघु सहस्त्र नाम स्तोत्र

Opening । देखें, क्र० ७०० ।

Closing । देखें, क्र० ७०० ।

Colophon । इति श्री वीतराग सहस्रनामस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

७०२. लक्ष्मी आराधन विधि

Opening । ॐ रो श्री ह्री क्ली महालक्ष्मी सर्वसिद्धि कुरू कुरू स्वाहा ।

Colsing । इस मत्र सो चावल अक्षत मत्रिके जिस्मैं राखैं सरे वस्तु घटै नही।

७०३. महालक्ष्मी स्तोत्र

Opening । आद्यं प्रणवततश्रीमायाकामाक्षरं तथा ।
महालक्ष्मी नमश्चांते मत्रोऽय दशवर्णक ॥१॥

Closing : वाराराशिरसो प्रसूय भवती···· ···मन्येमहत्व सस्थित ।।१२।।

Colophon : इति श्री महालक्ष्मीस्तोत्रसपूर्णम् ।

७०४. महालक्ष्मी स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७०३ ।

Closing : न कस्यापि हि मत्रोय कथनीय विपश्चिता ।
यशोधर्मधनप्राप्त्यै. सौभाग्य भूतिमिच्छिता ।।

Colophon : इति श्री महालक्ष्मीस्तोत्रसपूर्णम् ।

७०५. मगलाष्टक

Opening : श्री मन्नम्रसुरासुरेन्द्र — ··· कुर्वन्तु ते मगलम ।।१।।

Closing : जीर्ण-शीर्ण ।

७०६. मंगल आरती

Opening : मगल आरती कीजै भोर । विघन हरन सुखकरण किसोर ।।
अरहंतसिद्ध सूरि उवझाय । साधु नाम जपिय सुखदाय ।।

Closing : मगलदान शील तपभाव, मगल मुक्तवधू को चाव ।
द्यानत मगल आठो जाम, मगल महा भक्ति जिन साम ।।

Colophon : इति आरती सम्पूर्णम् ।

७०७. मणि भद्राष्टक

Opening : अपठनीय ।

Closing : — — — —

धर्मकामार्थ लक्ष्मीस्तुष्टदेवोस्त्यवश्य,
धरणिधरकवेर्भारती वक्ति सत्यम् ।।

Colophon : इति श्री मणिभद्र यक्ष्यादि राज स्तोत्रमत्रयुत महाप्रभावीक सम्मत्तम् ।

विशेष— अन्त मे दिया गया मत्र अपूर्ण है ।

७०८. नंदीश्वर भक्ति

Opening : [illegible] ... [illegible] ॥

Closing : ... [illegible] ।

Colophon : इति नंदीश्वर[illegible] ।

७०९. [illegible] स्तोत्र

Opening : [illegible] ।
[illegible] ।

Closing : [illegible] ।
[illegible] ॥

Colophon : इति [illegible] स्तोत्रम् ।

७१०. नवकार भावना स्तोत्र

Opening : [illegible] नजीवन [illegible] ॥१॥

Closing : [illegible] स्तोत्र [illegible] ॥११॥

Colophon : इति नवकार [illegible] स्तोत्र समाप्त । मिति पूसवदी १० दिन रवि संवत् १६५४ [illegible] ।

विशेष—३०१२ संख्या ग्रन्थ एक गुटका है, जिसमे ५३ पूजास्तोत्र आदि संकलित हैं । इसका लेखनकाल विक्रम सं० १६५४ है ।

७१५. नेमिजिन स्तोत्र

Opening : कश्चितकांता विरहगुरुणा स्वाधिकारप्रमत्तः,
स्नोतापार सहगपितवेयादगुणाब्धेर्जनोत्र ।
प्राप्त्योदन्वत्ममधिकतरस्येति तुष्टावमोदात्,
सुम्नामाय दिशतु सशिव श्री शिवानदनो वः ॥

Closing : इति स्तुत श्रीमुनिराज दीर्घदर्शिताम् ॥८॥

Colophon : इति रघुनाथकृत श्रीमन्नेमिजिनस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

विशेष—इसके ३-४ श्लोक कालिदास एव भारवी के श्लोको का आश्रय लेकर बनाये गए हैं । प्रथम चरण यथावत मिलता है ।

७१२. निजात्माष्टक

Opening : णिच्चन्तेलोकचक्काहिव सयणमिया जोजिणिन्दाय सिद्धा ।
अण्णेगन्यन्थसन्था गमगमियमण उव्वज्झा क्षया ।
सूरि साहू सव्वे सुद्धण्णियाद अनुसरण ग्रणामोखसम्म ।
ति तम्हासोऽहज्झायेमिणिञ्चपरमपयगओ णिविषप्पोणियप्पो ।१।

Closing ; रूवे पिंडेपयत्थेण कलपरिचये जोयिविदेण णादे ।
अत्थे गन्थे ण सत्येण करण किरि या णावरे भगचारे ।
साणन्दाणन्द रूओ अणुमह सुसुमवयेणा भावप्पन्वो ।
सोहझाये मिणिञ्च परमपयगओ णिविपम्पोणियप्पो ।।

Colophon : इति योगीन्द्रदेवविरचित निजात्माष्टक समाप्त शुभ भूयात्।

७१३. निर्वाण कण्ड

Opening : वर्द्धमानमह स्तोष्ये वर्द्धमानमहोदयम् ।
कल्याणैपंचभिर्देव मुक्तिलक्ष्मीस्वयवरम् ।।१।।

Closing : इत्यर्हता शमवत्ता ' " निरवद्यसौख्यम् ।।१२।।

Colophon : इति निर्वाणकाड सम्पूर्णम् ।

७१४. निर्वाण काण्ड

Opening : अट्ठावयम्मि उसहो — महावीरो ।।१।।

Closing : जोयट्ठ इतियाल " लहइ णिव्वाण ।।२८।।

Colophon : इति निर्वाण काड समाप्तम् ।

७१५. निर्वाण काण्ड

Opening : वीतराग वदौं सदा, भाव सहित सिरनाय ।
कहू काड निर्वाण की भाषा विविध बनाय ।।

Closing : सवत् सत्रह सै तैताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल ।
भैया वदन करै त्रिकाल जय निर्वाण कांड गुनमाल ।।२२।।

Colophon : इति निर्वाण काड भाषा समाप्तम् ।

७१६· निर्वाण काण्ड

Opening : देखें—क्र० ७१५ ।

Closing : देखें—क्र० ७१५ ।

Colophon : इति निर्वाण कांड समाप्तम् । संवत् १८७१ ज्येष्ठ वदि ८ लि(खा) आनमचन्द्रेण ।

७१७· निर्वाण भक्ति

Opening : त्रिभुवनपति नरपनरपति ·· मनामय प्राप्तम् ॥

Closing : · · · · जिनगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

Colophon : इति निर्वाणभक्तिसंपूर्णम् ।

७१८. पद्मावती कवच

Opening : श्रीमद्गीर्वाणचक्र स्फुटमुकुट तटीदिव्यमाणिक्य माला ।
ज्योतिर्ज्वाला करान्ता स्फुरित मुकुरिका घृष्टपादारविंदे ॥
व्याघ्रोल्लकासहस्रज्वलदनल शिखा लोक पाशांकुशाद्य ॥
आंक्रोंह्रीं मंत्ररूपे क्षपितदलमल रक्ष मां देविपद्मे ॥१॥

Colsing : इद कवच ज्ञात्वा पद्मायास्तौति ये नर· ॥
कल्पकोटिशतेनापि न भवेत् सिद्धिदायिनी ।१८।

देखें, जि० र० को०, पृ० २३५ ।

७१९. पद्मावती कल्प

Opening : कमठोपसर्गदलन त्रिभुवननाथं प्रणम्यपार्श्वं जिनम् ॥
वक्षेभीष्टफलप्रद भैरवपद्मावतीकल्पम् ।१।

Closing : यावद्वारिधिभूधरतारागणगगनचन्द्रदिनपतय ॥
तिष्ठतु भुवि तावदय भैरवपद्मावती कल्प· ।५६।

Colophon : इत्युभयभाषाकविशेखर श्री मल्लिषेणसूरिविरचिते भैरव-पद्मावतीकल्पे गरुडाधिकारो नाम दशम परिच्छेद ॥

देखें, जि० र० को०, पृ० २३५ ।

७२०. पद्मावती बृहत्कल्प

Opening : देखें क्र० ७१८ ।

Closing : जगभक्त्यामुकृत्ये को भक्त्या मा कुरुते सदा ।
वाञ्छित फलमाप्नोति तस्य पद्मावती स्वय ।।

Colophon : इति पद्मावत्या बृहत्कल्प समाप्तम् ।

७२१. पद्मामाता स्तुति

Opening : जिनसासनी हसासनी पद्मासनी माता ।
भुज चार ते फल चार दे पद्मावती माता ।

Closing : जिनधर्म से डिगने का कहु आपरे कारन ।
तो लीजियो उबार मुझे भक्त उद्धारन ।।
निज कर्म के सयोग से जिस यौन म जाओ ।
तहा ही जियो सम्यक्त जो सिवधाम को पावो ।।

Colophon : जिनशासनी इति पूर्ण ।

७२२. पद्मावती स्तोत्र

Opening : श्री पार्श्वनाथजिननायकरत्नचूडापाशांकुशोगयफलांकित-
दोश्चतुष्का ।।
पद्मावतीत्रिनयना त्रिफलावतसा पद्मावती जयति शासन-
पुण्यलक्ष्मी. ।।

Closing : पठित भणित गुणितं जयविजयरमानिबधन परमम्
सर्वाधिव्याधिहर त्रिजगति पद्मावतीस्तोत्रम् ।।
आह्वान नैव जानामि नैव जानामि पूजनम्
विसर्जन न जानामि क्षमस्व परमेश्वरी ।।२८।।

विशेष — आरा मे पद्मावतीमदिर बढ़ायो आरा नाना गुनाम चद जी दु-
नाम जी ।।

देखें—(१) जि० र० को०, पृ० २३५ ।
(2) Catg. of Skt.& pkt. Ms., 665.

७२३. पद्मावती स्तोत्र

Opening : देखें क्र० ७१८ ।

Closing : ॐ ह्री श्री क्ली पद्मावती सकल चराचर त्रैलोक्यव्यापी ह्री क्ली ब्लूं ह्रां ह्री ह्रो ह्रौ ह्रौं ह्रः ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा । इस मत्र को १२०००० जपे तो सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त होय ।

Colophon : षड्विंशति श्लोक विधानम् सम्पूर्णम् । समाप्तम् ।

७२४. पद्मावती स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७१८ ।

Closing : देखें, क्र० ७२२ ।

Colophon : इति श्री पद्मावती स्तोत्रं समाप्तम् ।

७२५. पद्मावती स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७१८ ।

Closing : देखें, क्र० ७२२ ।

Colophon : इति पद्मावती स्तोत्र सपूर्णम् ।

७२६. पद्मावती स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७१८ ।

Closing : ॐ णमो गोयमस्स सिद्धस्स आनय आनय पूरय पूरय मम कुरु कुरु वृद्धि कुरू कुरु ह्री भास्करी नमः ।

Colophon : नही है ।

७२७. पद्मावती सहस्त्रनाम

Opening : प्रणम्य परमा भक्त्या देव्या पादांवुज त्रिधा ।
नामान्यष्टसहस्राणि वक्ष्ये तद्भक्तिसिद्धये ॥

Closing : भो देवि भीमा । — क्षम्यतिमीतितत्तापनें कि ॥

Colophon : इति पद्मावती स्तोत्र समाप्तम् ।

देखें—(१) दि. जि ग्र र., पृ. १४२ ।
(२) जि. र. को., पृ. २३५ ।

७२८. परमानंदस्तोत्र

Opening : परमानंदसंयुक्त निर्विकार निरामयम् ।
ध्यानहीना तु नश्यति निजदेहे व्यवस्थितम् ॥१॥

Closing : पाषाणेषु यथा ... .. ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

७२९. परमानन्दस्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ७२८ ।

Closing : काष्टमध्ये ...... जानाति स पण्डित: ॥२४॥

Colophon : इति परमानंदस्तोत्रसमाप्तम् ।

(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १४४ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २३८ ।
(३) रा० सू० III, पृ० ११२, १३३, १५७, २८८ ।
(4) Catg. of Skt & Pkt. Ms., 665.

७३०. परमानन्द चतुर्विंशतिका

Opening : देखे, क्र० ७२८ ।

Closing : स एव परमानंद: स एव सुखदायक: ।
स एव परचिद्रूप: स एव गुणसागर: ॥

Colophon : परमानंद चतुर्विंशति(का) समाप्ता ।
देखे—जि० र० को०, पृ० २३७ । (पञ्चविंशतिका)

७३१. पार्श्व जिनस्तवन

Opening : देवेन्द्रा. शतश: स्तुवंति — .... स्तौमि भक्त्या जिनम् ॥

Closing : इति पार्श्वजिनेश्वर ... — सौख्यकरम् ॥

Colophon : इति यमकबद्ध श्री पार्श्वनाथ स्तवन सम्पूर्णम् ।

७३२. पार्श्वनाथ स्तवन

Opening : नमिऊण पणयसुरगण चूडामणिकिरणरंजिय मुणिणो ।
चलणजुयल महाभयं पणासणं संथुव वुच्छं ॥

Closing : जो अठइ जो अनिसुणइ ताण, कइणो अमांणतु गस्स ।
पासो पाव समेऊ सयलभुवणच्चिअचलं ॥२१॥

Colophon : इति पार्श्वनाथस्तवन सम्पूर्णम् ।

७३३. पार्श्वनाथ स्तोत्र

Opening : धरणोरगसुरपतिविद्याधरपूजित नत्वा ।
क्षुद्रोपद्रवसमन तस्यैव महास्तवन वक्ष्ये ॥

Closing : भक्तिर्जिनेश्वरे यस्य गद्यमाल्याभिलेपनैः ।
सपूजयति यश्चैन तस्यैतत् सकलं भवेत् ॥

७३४. पार्श्वनाथ स्तोत्र

Opening : य श्री पादतवेश श्रयति सपदि स श्रीपुर सश्रयेत् ।
स्वामिन् पार्श्वप्रभोत्वत्प्रवचनवचनोद्दीप्रदीपप्रभावैं ॥
लब्ध्वामार्ग निरस्ताखिलविपदमतो यत्यधीशैस्तु ॥
धीभिर्वन्द्य स्तुत्यो महास्त्व विभुरसिजगतामेक
एवाप्ततायः ॥१॥

Closing : एभिः श्रीपुरपार्श्वनाथ विलन्माहात्म्य पुस्यत्सुधा ।
कूपागेहिनिर्दशित प्रविसरद्धामर्गिचतुर्यंत. ॥
तस्मात्स्तोत्रमिद सुरत्नमिवयद्यत्नाद्गृही ॥
स मया विद्यानन्द महोदयाय नियत धीमद्भिरासे-
व्यताम् ॥३०॥

Colophon : इति श्रीमदमरकीर्ति यतीश्वर प्रियशिष्य श्रीमद्विद्यानन्द स्वामी विरचित श्री पुरपार्श्वनाथ स्तोत्र समाप्तमभूत् ।

७३५. पार्श्वनाथ स्तोत्र (सटीक)

Opening : लक्ष्मीर्महस्तुल्यसतीसतीसती प्रवृद्धकालो विरतोरतोरतो॥
जरारुजाजन्महृताहताहंता पार्श्व फणे रामगिरौ गिरौगिरौ ॥१॥

Closing : — — कोशनेप्रवीणचतुरे अत. कारणात् ॥

Colophon : इति पद्मनंदीमुनिविरचितं श्री पार्श्वनाथस्तोत्रटीकासहित सम्पूर्णम् ।१।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र० पृ० १४० ।
(२) जि० र०, को०, पृ० २४७ ।

७३६. पार्श्वनाथ स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ७३५ ।

Closing : त्रिसंध्यं य पठेन्नित्य नित्यमाप्नोति सश्रियम् ।
श्रीपार्श्वपरमात्मेः ससेवध्व भो बुधा सुकृत् ॥

Colophon : इति श्रीपार्श्वनाथस्तोत्र समाप्तम् ।

७३७. पार्श्वनाथ स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ७३५

Closing : तर्कव्याकरणे च नाटकचये काव्याकुले कौशले,
विख्यातो भुवि पद्मनंदमुनयः तत्वस्य कोशं निधि' ।
गंभीर यमकाष्टक भणितय सस्तूय सा लभ्यते,
श्री पद्मप्रभदेवनिर्मितमिद स्तोत्र जगन्मगलम् ॥६॥

Colophon : इति श्री लक्ष्मीपतिपार्श्वनाथस्तोत्रसमाप्तम् ।

७३८. पंचस्तोत्र सटीक

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : दृष्टस्तत्व जिनराजचंद्रविकसद्भूवेन्द्र नेत्रोत्पले ।
स्नात त्वन्नुति चद्रिकाभसिभवद्विद्वच्चकारोत्सवे ॥
नीतश्चाद्य निदाघज क्लमभर शातिमयागम्यते ।
देवत्वद्गतचेतसैव भवतो भूयात्पुनर्दर्शनम् ॥२६॥

Colophon : संवत् १९६७ फाल्गुण शुक्ला १२ रविवासरे लिपिकृतं प० सीताराम शास्त्री ।

७३९. पंचासिकाशिक्षा

Opening : करि करि आतम हित रे प्राणी ।
जिन परिणामनि तजि बध होत है ।
सो परिणति तजि दुखदानी ।। करि० ।।

Closing : यह शिक्षापचासिका, कीनी द्यानतराय ।
पढ़ै सुनै जो मनधरै, जन जन कौं सुखदाय ।।

Colophon : इति श्री पचसिका शिक्षा सम्पूर्णम् । मिती भाद्रपद सुदी ६ शुभवार गुरु सम्वत् १९४७ ।

७४०. पंचपदाम्नाय

Opening : भक्तिभरामरप्रणत प्रणम्य परमेष्ठी पचकम् ।
शीर्षेण नमस्कारसारस्तवन भणामि भव्याना भयहरणम् ।।

Closing : .... ` ` अनेन ध्यानेन पायोच्चाट्टनताडननिपुणा साधवः सदा स्मरतः ।

Colophon : इति पचपदाम्नाय. ।

७४१. प्रभावती कल्प

Opening : हरिद्रानिंबपत्राणि पिप्पली मरिचानि च ।
भद्रामुस्ता विभगानि सप्तम विश्व भेषजम् ।।

Closing : ॐ अदेवी स्वाहा गुटिका प्रयुञ्जनमत्र ।

Colophon : इति प्रभावती कल्पः । श्रीरस्तु ।

देखें—जि० र० को०, पृ० २६६ ।

७४२. प्रार्थना स्तोत्र

Opening : त्रिभुवनगुरो जिनेश्वरपरमानंदैककारणम् ।
कुरुष्वमपि किंकरेत्रकरूणा तथा यथा जायते मुक्ति ।।१।।

Closing : जगदेकशरण भगवन्नसमश्रीपद्मनंदितगुणौघ किं ।
बहुना कुरु करुणामत्रजने शरणमापन्ने ॥८॥

Colophon : इति प्रार्थनास्तोत्र सम्पूर्णम् ।

७४३. रक्त पद्मावती कल्प

Opening : · ··· सन्निधापयेत् विसर्जना विसर्जयेत् । गधादि-ग्रहणानतर पटमचल कृत्वा ततो जाप कुर्यात् ··· – ।

Closing : – ··· भवतोऽस्माभिर्दत्तो मत्रोऽय परपरायात. साक्षिणो-रव्यादिदेवता ।

Colophon : इति रक्तपद्मावती कल्प समाप्तम् । सवत् १७३८ वर्षे कार्तिकसुदी १३ रवौ श्री औरगाबाद नगरे श्री षरतर श्री वेगमुगवै भट्टारक श्री जिनसमुद्रसूरिविजयराज्ये तत् शिष्यसौभाग्यसमुद्रेण एषा प्रतिलिपि कृता; ।

७४४. ऋषभस्तवन

Opening : सिद्धाचल श्रीललनाललाम, महीमहीयो महिमाभिराम ।
असारससार पथोपराम नवामि नाभेय जिन निकामम् ॥

Closing : एव श्रुतो यमकभेद परंपराभि,
राभिर्मयाविमल शैलपति पराभि· ।
आदीश्वरो दिशतु मे कुशल विलासम्,
वाचा विचक्षण चकोरसुधाशु भारम् ॥

Colophon : इति श्री शत्रुजयालकरण श्री ऋषभस्तवनमेकादशयमकभेदैः समर्थितम् श्री जिनकुशलसूरिभि; सम्पूर्णम ।

७४५. ऋषिमंडलस्तोत्र

Opening : प्रणम्य श्रीजिनाधीशं लब्धिसामस्तसयुत ॥
ऋषिमडलयत्रस्य वक्ष्ये पूज्यादिमल्यमम् ॥१॥

Closing नि शेषामरशेषरर्चितपद छद्मोल्लसत्सख ॥
श्रातस्रोद्धतकाति सहतिहतप्रव्यक्त भवत यासव

निर्वाण समहोत्समागमुकत प्रस्फुर्तम त्रुपराष्ट्रद्धि
वृद्धिमनारन्न जिनरत: जिनयरा कुर्वन्तु प:सर्वदा ॥

७४६. ऋषिमंडल स्तोत्र

Opening : शान्तनाक्षर ... ... नमस्थितम् ॥१॥

Closing : शतमष्टोत्तर प्रातर्ये पठन्ति दिने दिने ।
नेषा न व्याधयो देहे प्रभवं ... .. ॥

Colophon : नहीं है ।
देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८७ ।
(7) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 629.

७४७. ऋषिमंडल स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० नं० ७४६ ।

Closing : य यधिन .. — रक्षतु मर्वत ॥६३॥

Colophon : नहीं है ।

७४८. त्रिकालजैन सन्ध्यावंदन

Opening : ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्मा ठ ठ. उपवेशनभूमिशुद्धि करोमि स्वाहा ।

Closing : .. .. मत्र श्री जैनमत्र जपजपजपित जन्मनिर्वाणमत्रम् ॥

Colophon : इति त्रिकालजैनसन्ध्यावदन सम्पूर्णम् ।

७४९. सहस्रनामाराधना

Opening : सुरासपूजित पूज्य सिद्धं शुद्ध निरजनम् ।
जन्मदाहविनाशाय नौमि प्रारब्ध सिद्धये ।१।
तद्वक्रजा नमस्कुर्वे शारदां विश्वशारदाम् ।
गौतमादि गुरुन् सम्यक् दर्शनज्ञानमडितान् ।२।

Closing : विशालकीर्तिर्वरपुण्यमूर्तिः शतेंद्रैश्चर्चितपादपद्म ।
श्रीमज्जिनेंसुद्रैसहस्रनामा जिनेश्वरः पातु सा भव्यलोकान्।

इत्थ पुरोत्थ पुरुदेवयत्र सभाव्यमध्ये जिनमर्चयामि ।
सिद्धादिधर्मादि जिनालयाता पत्रेषु नामाकित तत्पदेषु ॥

विशेष—प्रशस्ति सग्रह (श्री जैन सिद्धान्त भवन) द्वारा प्रकाशित पृ० ६४ मे सम्पादक भुजबली शास्त्री ने ग्रन्थ कर्त्ता के बारे मे लिखा है । इसके कर्त्ता देवेन्द्रकीर्ति हैं और इन्होने जिनेन्द्र भगवान के विशेष रूप मे अपना, अपने गुरु का एव प्रगुरु का क्रमश'—धर्मचन्द्र, धर्मभूषण, देवेन्द्रकीर्ति इन नामो से उल्लेख किया है । देवेन्द्रकीर्ति के नाम से कई व्यक्ति हुए है, इसलिये नही कहा जा सकता कि अमुक देवेन्द्रकीर्ति ही इसके प्रणेता है ।

७५०. सहस्त्रनामस्तोत्र टीका

Opening : ध्यात्वा विद्यानद समन्तभद्र मुनीन्द्रमर्हन्तम् ।
श्रीमत्सहस्त्रनाम्ना विवरणमाबस्मि ससिद्धौ ॥

Closing : अस्ति स्वम्तिसमस्तसघ तिलक श्रीमूलसघोनघम्,
वृत्त यत्र मुमुक्षुवर्गशिवद ससेवित साधुभि: ॥
विद्यानदिगुरुस्त्विह गुणवद्गच्छे गिर: साप्रतम्,
तच्छिष्यश्रुतसागरेण रचिता टीका चिर नदतु ॥

Colophon : इत्याचार्य श्री श्रुतसागरविरचिताया जिनसहस्त्रनामटीकायामतकृत्वतविवरणो नाम दशमोध्याय समाप्त. । इति जिनसहस्त्रनामस्तवन समाप्तम् । सवत् १७७५ वर्षे वैशाख सुदी ५ गुरौ श्री मूलसघे भट्टारक श्री विश्वभूषणदेवास्तदेतेवासिन: ब्रह्म श्री विनयसागर तदतेवासिन पडित श्री हरिकृष्ण तदतेवासिन (पजीवनि) गगारामेन लिखित भेंदग्रामे आदिनाथचैत्यालये लिखितमिद पुस्तकम् ।

७५१. सहस्त्रनाम स्तोत्र

Opening : स्वयभुवे नमस्तुभ्यं ········ चित्तवृत्तये ॥१॥

Closing : अमोघवाघमोघज्ञो निर्मलोमोघशासन ।
···· ···· — ··· ॥

Colophon : Missing

देखें, Catg. of Skt. & Pkt Ms., P. 707.

७५२. सहस्रनाम

Opening : देखें, क्र० ७५० ।

Closing : देखें, क्र० ७५० ।

Colophon : इत्याचार्य श्री श्रुतसागर विरचिताया जिनसहस्रनामटीकायां दशमोध्याय समाप्त ।

सवत् -१९८५ वर्षे आषाढमासे सुदी ३ गुरौ श्री मूलसघे भट्टारक श्री विश्वभूषणदेवा, तदतेवासिन: ब्रह्म जी ,विनयसागर तदतेवासिन भुजवल प्रसाद जैनी लिखितम् । श्री मैनेजर भुजवली जी शास्त्री की सम्मति आदेशानुसार आरा स्थाने ।

७५३. सहस्रनाम टीका

Opening : श्रुतिवचनविरचितचित्तचमत्कार स्वर्गाय-वर्गमार्गस्यदन चारुचारित्रचमत्कृतसत्कदन. .. ।

Closing : .. नाम्नामष्टसहस्रेण स्मृतिमात्रेण स्मरणमात्रेण प्रमाणेन सेवां कर्तुं इच्छाम प्रमाणेयँद्वयसदघ्नच् मात्रट् प्रत्यया भवति । इत्यार्षे भगवज्जिनसेनाचार्यप्रणीते श्रीमहापुराणे श्री वृषभस्तुतेस्टीका सम्पूर्णा कृता सूरिश्रीमदमरकीर्तिना ।

Colophon : इति श्री जिनसहस्रनामटीका । इद त्रुटित प० चिमनरामेण लिपि कृतम फतेपुरमध्ये स० १८८७ अश्विन शुक्ल तृतीयाया शुभ भूयात् ।

७५४. सत अष्टोत्तरी स्तोत्र

Opening : ओकार गुनि अति अगम, पच प्रमिष्ट निवास ।
प्रथम तासु वदन किये, लहिये ब्रह्म विलास ।।

Closing : यह श्री सत्य अठोतरी, कीनी निजहित काज ।
जे नर पढै विवेक सो, ते पावहि मुनिराज ।।

Colophon : इति श्री सत अठोतरी कवित्त बंध सम्पूर्णम् ।

७५५. शक्रस्तवन

Opening : ॐ नमो अर्हते परमात्मने, परमज्योतिषे परमपरमेष्ठिने परमवेधसे परमयोगिने ... ... ।

Closing : ... ... तथाय सिद्धसेनेन लिलिखे सपदा पदम् ।

Clolophon : इति शक्रस्तव समाप्तः । संवत् १७७४ वर्षे पौष वदि ८ दिने लिखत श्री कास्माबाजारमध्ये ।

७५६. सत्तरिसय स्तवन

Opening : तिजयपहुत्तपयासय अट्ठमहापाडिहारजुत्ताणं
समयखितविधाणं सरेमि चक्कजिणदाणं ॥

Closing : इय सत्तरिसय जंत समम तं दुवारिपडि निहिय ।
दुरियारि विजयत तं निजात्मान निच्चमचेह ॥१४॥

Colophon : इति सत्तरिसयस्तवन सम्पूर्णम् ।

७५७. सम्मेदाष्टक

Opening : एकैक सिद्धकूट .... राजते स्पृष्टराजकं ॥१॥

Closing : आधिव्याधिःप्रवाधिः .... जगद्भूषणानाम् ॥६॥

Colophon : इति श्री जगद्भूषणकृत सम्मेदाष्टक सम्पूर्णम् ।

७५८. समवशरण स्तोत्र

Opening : वृषभादयानभिवंद्यान्वंदित्वा वीरपश्चिमजिनेंद्रान् ।
भक्त्या नतोत्तमागः स्तौष्टोतरसमवशरणानि ॥

Closing : अनघ्युगुणनिबद्धामर्हतां मागधर्णदि,
प्रतिरचित सुवर्णानिकपुष्पप्रजानाम् ।
स भवति नुति माला यो विधत्ते स्वकंठे,
प्रियपतिरमश्री मोक्षलक्ष्मीवधूनाम् ॥

Colophon : इति श्री लघुसमंतभद्र स्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

७५९. सङ्कटहरण विनती

Opening : सारद दीजे ग्यान अपार । मुझ भरमन छूटे ससार ।।
वर्द्धमान स्वामी जिनराय । करो वीनती मनचित लाय ।।

Closing : इह वीनती नित भणे प्रागी, सिवधाम पावै वरै ।
सुभ भावधर मन सदा गुणियै, सुद्ध चेतन सो तरै ।।३७।।

Colophon : इति सकटहरण वीनती सम्पूर्णम् ।

७६०. शान्तिनाथ आरती

Opening : शांत जिनेसरं स्वामि वीनती अवधार प्रभु ।
सेवक जनसाधार, पापपनासन शाति जिनो ।।

Closing : पाटन नगर मझार, शातकरण स्वामी शात जिनो ।।

Colophon : इति शातिनाथ वीनती (विनती) ।

७६१. शान्तिनाथ स्तोत्र

Opening : नानाविचित्र भवदु खराशि नानाप्रकार मोहादियणशिः
पापानि दोषानि हरति देवा इह जन्मशरण तुवशान्ति-
नाथम् ।

Closing : जपति पठति नित्य शान्तिनाथादिशुद्धम्,
स्तवनमधुगिराया पावतापापहारम् ।
शिवसुखनिधिपोतं सर्वसत्वानुकपम्,
कृतमुनिगुणभद्र भद्रकार्येषु नित्यम् ।।९।।

Colophon : इति श्री शान्तिनाथस्तोत्रगुणभद्राचार्यकृत समाप्तम् ।

७६२. शान्तिनाथ प्रभातिक स्तवन

Opening : सुरेन्द्रं सदासक्षरद्दानतोय वरं हारचन्द्रोज्वल सोरभेयम् ।
ददातुञ्ज्वल शातिनाथो जिनो नो मदं वैक्षताल सदा
सुप्रभातम् ।।१।।

Closing : श्री शान्तिनाथस्य जिनेश्वरस्य प्रभातिकं स्तोत्रमिदं पवित्रम् ।
पुमानधीते भवती हृयोपि श्री भूषणस्याद्वरचंद्र ॥६॥

Colophon : इति श्री शान्तिनाथप्रभातिकस्तवन समाप्तम् ।

७६३. शान्तिनाथ स्तवन

Opening : ॐ शांतिशांति · शांतये स्तौमि ॥१॥

Closing : यश्चैन पठति सदा श्रृणोति भावयति वा यथायोगं ।
शिवशांतिपदं जयात् सूरिश्रीमानदेवस्य ॥१७॥

Colophon : इतिशांतिस्तवनं समाप्तम् ।
देखें—वि० जि, ग्र, र., पृ. १५० ।

७६४. शान्तिनाथ स्तवन

Opening : अथशान्च गृहस्थास्य मध्ये परमसुन्दरम् ॥
भवन शांतिनाथस्य युक्तविस्तारतुंगतम् ॥

Closing : कृत्वा स्तुतिं प्रणाम च भूयोभूयः सुचेतस. ।
यथासुख समासीना प्रश्रणे जिनवेश्मनं. ॥

Colophon : नहीं है ।

७६५. सरस्वती कल्प

Opening : जगदीशं जिनं देवमभिवंद्याभि नन्दनम् ।
वक्ष्ये सरस्वतीकल्प समासादल्पमेधसाम् ॥

Closing : कृतिना मल्लिषेणेन श्रीषेणस्य सूनुना ।
रचितो भारतीकल्प. शिष्टलोकमनोहर ॥
सूर्यचन्द्रमसा यावत् मेदिनीभूधरार्णवः ।
तावत्सरस्वतीकल्प. स्थेयाच्चेतसि धीमताम् ॥

Colophon इत्युभयभाषाकविशेखर श्री मल्लिषेणसूरिविरचितो भारतीकल्प समाप्तोऽभूत् ।

७६६. सरस्वती स्तोत्र

Opening : ॐ ऐं ह्रीं श्री मन्त्ररूपे विबुधजननुते देवदेवेन्द्रवंद्ये,
चञ्चच्चंद्रावदाते क्षपतिकलिमले हारश्रृंगारगौरे ।
भीमे भीमाट्टहास्ये भवभयहरणे भैरवे भैरुधारे,
ह्रां ह्रूं कारनादे मम मनसि सदा सारदे तिष्ठ देवी ॥

Closing : करबदनसदृशमखिलं भुवनतलं यत्प्रसादतः कवयः ।
पश्यन्ति सूक्ष्ममतयः सा जयतु सरस्वती देवी ॥

Colophon : इति सरस्वती स्तुतिः ।

विशेष—अन्त में सरस्वती मन्त्र भी लिखा है ।

देखें— **Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 706.**

७६७. सरस्वती स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ६६८ ।

Closing : देखें—क्र० ६६८ ।

Colophon : इति सरस्वती स्तोत्र समाप्तम् ।

७६८. सरस्वती स्तोत्र

Opening : नमस्ते शारदादेवी जिनस्याबुजवासनी ।
त्वामहं प्रार्थये नाथे विद्यादान प्रदेहमे ॥

Closing : सरस्वती महाभागे यादृष्टा देवी कमललोचना,
हंसस्कंधसमारूढा वीणापुस्तकधारणी ।
सरस्वती महाभागे वरदे कामरूपनी,
हंसरूपी विशालाक्षी विद्यादे परमेश्वरी ॥

Colophon : इति सपूर्णम् ।

७६९. सरस्वती स्तोत्र

Opening : ॐ ह्रीं श्री अर्हंवाग्वादिनी नमः । ह्रां ह्रीं एकैकवीक्षेश-
शिक्षिचिकमले कल्पविस्पष्ट शोभे — — ।

Closing : अनुपलब्ध ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

७७०. सिद्धभक्ति

Opening : सिद्धानुद्धृतकर्मप्रकृति .... यथा हेमभावोपलब्धि ।

Closing : ... बोहिलाहो इसुगइगमण समाहिमरण
जिणगुण संपत्ति होउमुक्क ॥

Colophon : इति सिद्धभक्ति ।

७७१. सिद्धप्रिय स्तोत्र टीका

Opening : सिद्धिप्रियैं प्रतिदिन .... भूप ेक्षणेन ॥ ॥

Closing तुष्टि देशनया सतोमीशितम् ॥२५॥

Colophon: इति श्री सिद्धिप्रियैं स्तोत्र टीका सम्पूर्णम् ।

विशेष—२४ श्लोको की सस्कृत टीका है, २५ वे श्लोक की टीका नहीं है ।

देखे—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १५१ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ४३८ ।
(३) रा० सू० II, पृ० ४६, ५३, ११२, ३३२ आदि
(४) रा० सू० III, पृ० १०६, १४१, १५६, २४४ ।
(५) प्र० जै० सा०, पृ० २४६ ।

७७२. सिद्ध परमेष्टी स्तवन

Opening : अनन्तवीर्यो योगिन्द्रः सप्रणस्यपुण्मुना ।
एवषोनात्मनो मृत्यु परिपृष्टः समादिशत् ॥१॥

Closing : परिवार्यमहावीर्यैं रामलक्ष्मणसंगतम् ।
किष्किधनगरं प्रापु विविस्पृस्त्रैमहद्धया ॥३५॥

Colophon : इति श्री रविषेणाचार्यकृत पद्मपुराण सस्कृत ग्रन्थ लक्ष्मणजी कृत सिद्धपरमेष्ठी स्तवन समाप्तम् ।

७७३. श्रुतभक्ति

Opening : स्तोष्ये सज्ञानानि परोक्षप्रत्यक्षभेदभिन्नानि ।
लोकालोकविलोकन-लोलितसल्लोकलोचनानि सदा ॥१॥

Closing : " दुक्खखओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमण समाहिमरण जिणगुणसपत्ति होउमुज्झ ।

Colophon : इति श्रुतज्ञानभक्ति सम्पूर्णम् ।

७७४. स्तोत्र संग्रह

Opening : अस्यानुग्रहतो दूराग्राहपरित्यक्तात्मरूपात्मन.
सद्द्रव्य चिदचित्त्रिकालविषय स्वै स्वैरभिक्ष गुणै. ॥ ॥
सार्थ व्यजनपर्ययैस्समवयज्जानातिबोधस्सम
तत्सम्यक्त्मशेषकर्मभिदुर सिद्धा पर नौमि वः ॥१॥

Closing : तुभ्य नमो बेलगुलाधिपपावनाय ।
तुभ्य नमोस्तु विभवे जिनगुंमटाय ॥८॥

७७५. स्तोत्रावली

Opening : नही है ।

Closing : .... सुप्रसन्नचित्तनी चिताटली श्री सार जीनगुणगावता हिव सकलमन आस्या फली ।

Colophon : इति श्री रोहिणी स्तवन सपूर्णः ।

७७६. स्तोत्रावली

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : जहए एसं भावाओ, कम्माण विजाण तह भावा ॥
.........अपूर्ण ।

Colophon : नही है ।

७७७. स्तोत्र संग्रह गुटका

Opening : देखें, क्र० ६०७ ।

Closing : दरसन कीजै देवको आदिमध्यअवसान ॥
सुरगन के सुखभुगत के पावै पद निर्वाण ॥२०॥

Colophon : इति विनै सपूर्ण ॥

७७८. स्तोत्र संग्रह

Opening : देखें—क्र० ७८५ ।

Closing : भाषा भक्तामर कियो हेमराज हित हेत ।
जे नर पढै सुभावसो ते पावै शिवखेत ॥

Colophon : इति भक्तामर स्तवन सम्पूर्णम् ।

विशेष—लगभग एक सौ स्तोत्र, पाठ, पूजा आदि का संग्रह इस गुटका में है ।

७७९. स्तोत्र संग्रह

Opening : प्रणम्य परयाभक्त्या देव्याः पादाम्बुज त्रिधा ।
नामान्यष्टसहस्राणि वक्षे तद्भक्ति सिद्धये ॥१॥

Closing : — इति पुन मंत्र ॐ ह्रीं क्लीं क्लूं श्रीं ह्रीं नम. । लक्ष
जापतै सिद्ध होय ।

Colophon : इति शारदा स्तुति सम्पूर्णम् ।

विशेष—इस ग्रन्थ मे ३७ स्तोत्र मन्त्रादि का सग्रह है ।

७८०. स्तोत्र

Opening : श्री नाभिराजतनुजः सदयाविहारी,
देवोजितो जयतु कौसदयाविहारः ।
श्री शभवो हृतभयोदितसारसार,
श्री शोभिनदनजिनोदितसारसार. ॥१॥

Closing : विद्यानक विदितवधरसावतारम् ।
ससारयासन्निरल हृतकाण्डभूतम् ।
वंदे नव वदनक जधुताकसाधम्,
भिन्न जिनमिदजिर भवहारभावम् ।।

Colophon : अस्पष्ट ।

७८१. सुप्रभात स्तोत्र

Opening : विद्याधरामर नरोरगयातुधान-
सिद्धासुरादिपति नस्तुत पादपद्मम् ।
हेमद्युते वृषभनाथ युगादिदेव-
श्रीमज्जिनेन्द्र विमल तव सुप्रभातम् ।।

Closing : दिव्या प्रभातमणिका वलिका स्वरूप-,
कठेन शुद्धगुणसग्रथिता क्रमेण ।
ये धारयन्ति मनुजा जिननाथभक्त्या,
निर्वाणपादपफल खलु ते लभते ।।

Colophon : इति सुप्रभातस्तोत्र समाप्तम् ।

७८२. स्वयंभू स्तोत्र

Opening : देखें—क्र० ७८५ ।

Closing : — इह प्रार्थना हमारी सफल करो ।

Colophon : इति श्री स्वामीसमन्तभद्राचार्य विरचित वृहत्स्वयम्भूस्तोत्रसम्पूर्णम् ।

७८३. स्वयंभू स्तोत्र

Opening : येन स्वयबोधमयेन लोका,
आस्वासिता केचन वित्तकार्ये ।
प्रबोधता केचन मोक्षमार्गे,
तमादिनाथ प्रणमामि नित्यम् ।।१।।

Closing : यो धर्मं दसधा करोति ··· स्वर्गापवर्गास्थितम् ॥२५॥

Colophon : इति स्वयम्भूस्तोत्र समाप्तम् ।

७८४. वृहत्स्वयंभू स्तोत्र

Opening : मानस्तभा सरासि ; पीठिकाग्रे स्वयभू: ॥१॥

Closing : तथ्याख्यानमदो यथावगमत किंचित्कृत लेशत
स्थेयाच्चद्रदिवाकरावधिवुधप्रह्लादिचेतस्यलम् ॥

Colophon : इति श्री पडित प्रभाचद्रविरचितायां क्रियाकलापटीकाया समतभद्रकृतवृहत्स्वयभू स्तोत्रस्यटीका समाप्ता । सवत्सरे आषाढशुक्लपूर्णिमाया स० १६१६ लिपिकृतम् ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १५३ ।
(2) Catg. of Skt. & Pkt Ms., P. 714.

७८५ विषापहार स्तोत्र

Opening : स्वात्मस्थित· सर्वगत· समस्त-
व्यापारवेदीविनिवृत्तसग ।
प्रवृद्धकालोप्यजरोवरेण्य.,
पायादपायात्पुरुष: पुराण ॥

Closing : वितिरति विहिता यथाकथंचिद्-
जिनविनतायमनीषितानि भक्ति. ।
त्वयि नुति विषया पुनर्विशेषा-
दिशतु सुखनियसो धनजय च ॥

Colophon : इति युगादिजिन विषापहारस्तोत्रम् ।

देखें —(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १५४ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ३६१ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० २१७ ।
(४) आ० सू०, पृ० १२७ ।
(५) रा० सू० II, पृ० ५१, ६६, १०७, ११२, ३०२ ।
(६) रा० सू० III, पृ० १०६, १०७, १५७, २३४, २७८ ।
(7) Catg. of Skt. & Pkt. Ms, P. 693.

७८६. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।

Closing : देखे, क्र० ७८५ ।
Colophon : इति श्री विषापहारस्तोत्रसमाप्तः ।

७८७. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० ७८५ ।
Closing : देखे, क्र० ७८५ ।
Colophon : इति विषापहारस्तोत्र समाप्तम् ।

७८८. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।
Closing : देखे, क्र० ७८५ ।
Colophon : इति धनञ्जयकृत विषापहारस्तोत्र समाप्तम् ।

७८९. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० ७८५ ।
Closing : देखें, क्र० ७८५ ।
Colophon : इति विषापहारस्तवनसमाप्तम् ।

७९०. विशापहार स्तोत्र (टीका)

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।
Closing : ··· विष निर्विषीकृत्य पुनरनतसौख्यरूप लक्ष्मी वशीकरोति इति तात्पर्यर्थम् ।
Colophon : इति श्री नागचन्द्रकवि विरचिताया श्री श्रेष्ठी धनजय प्रणीत जिनेन्द्रस्तोत्रपजिकाया विषापहारनामातिराय दिव्य मत्र समाप्ता ।

७९१. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।
Closing : देखें, क्र० ७८५ ।

Colophon : इति श्री धनजय कृत विषापहार स्तोत्र सपूर्णम् ।

७६२. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० ७८५ ।

Closing : स्तोत्र जु विषापहार, भूलचूक कछु वाक्य ही ।
ज्ञाता लेहु सँवार, अखैराज अरजैत हम ।।

Colophon : इति श्री विषापहार स्तोत्रमूल कर्त्ता श्री धनञ्जय तस्य उपरि भाषा वचनिका करी शाह अखैराज श्रीमालनैं अपनी बुद्धिअनुसारे ।

७९३. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।

Closing : देखे, क्र० ७८५ ।

Colophon : इति विषापहार स्तवन. समाप्त । सवत् १६७२ वर्षे जेष्ट (ज्येष्ठ) वदी ७ शुभदिने भट्टारक श्री हेमचद तत्पट्टे भ० श्री पदमनद तत्पट्टे भट्टारक जसकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री गुणचद्र तत्पट्टे-भट्टारक श्री सकलचद्र तत्शिष्य पडित मानसिघ (ह)लिखापित आत्मपठनार्थम् । लिखित कायस्थ माथुरमेवरिया दयालदास तत्पुत्र सुदर्शनेन शुभ भवतु लेखक पाठकयो ।

७६४. विषापहार स्तोत्र मूल

Opening : देखें, क्र० ७८५ ।

Closing : देखें, क्र० ७८५ ।

Colophon : इति विषापहारस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

७६५. विनती संग्रह

Opening : मत्र जप्यो भवसागर तिरियो, पाई मुकति पियारी ।
ज्याका० ।।

Closing : देवा ब्रह्ममुकुत्या पद पावै, तो दरसण ग्यान घटावै हीनै रै ।
वाणी बोलै केवल ग्यानी ।।८।।

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

७९६. विनती

Opening : [illegible] श्री जिनराज [illegible] जी ।
तुम माता तुम तात तुमही [illegible] जी ।

Closing : [illegible] श्रीजिण [illegible] रचो जी ।
[illegible] जी ॥

Colophon : इति विनती सम्पूर्णम् ।
संवत् १८५२ [illegible] ।

७९७. वीतराग स्तोत्र

Opening : [illegible] ...... [illegible] ॥०॥

Closing : [illegible] ॥

विशेष—[illegible] भी बनाया गया है ।

देखें--Catg of Skt & pkt. Ms., P. 693

७९८. बृहत् सहस्रनाम

Opening : [illegible] ।
[illegible] ॥

Closing : [illegible] '' ।

७९९ यमकाष्टक स्तोत्र

Opening : [illegible] पद पद पदम्,
[illegible] पर परम् ।
[illegible] बुध बुधम् ,
[illegible] विश्वहित हित हितम् ॥१॥

[illegible] : भट्टारकै. कृत स्तोत्र य. पठेद्यमकाष्टकम् ।
सर्वदा स [illegible] भारतीमुखदर्पण ॥१०॥

Colophon : इति भट्टारक श्री अमरकीर्ति कृत यमकाष्टकस्तोत्र समाप्तम् ।

८०० योगभक्ति

Opening : थोस्सामि गणधराण अणयाराण गुणेहि तच्चेहि ।
अंजलि मउलिय हत्थो अभिवदंतो सविभवेण ॥१॥

Closing : ·· जिणगुणसपत्ति होउ मज्झ ।

Colophon : इति योगभक्ति सम्पूर्ण ।

८०१. अभिषेक पाठ

Opening : श्री मन्मन्दिरसुन्दरे ··· ··· जैनाभिषेकोत्सवे ॥

Closing : पुष्प जयकर भगवान के ऊपर चढावने गधोदक कीये पश्चात् ।

Colophon : इति शान्तिधारा समाप्त ।
भाद्रपदमासे कृष्णपक्षे तिथौ ४ रविवासरे सवत् १९६५ ।

८०२. अभिषक समय का पद

Opening : प्रभुवर इन्द्रकलश कर लायो,
शैलराज पर सजिसमाज सब जनम समय नहवायो ॥

Closing : प्रभु केवय प्रमान ···· जनकल्याणक गायो ॥

Colophon : इति पद पूर्णम् ।

८०३. आकृत्रिमचैत्यालय पूजा

Opening : ॐ ह्रीं असुरकुमारार्च्चितपकमार्गेषु दक्षिणदिगचतु
त्रिसतलक्षाकृत्रिम जिनालय जिनेभ्यो ॥१॥

Closing : अस्पष्ट ।

Colophong : नही है ।

८०४. अनन्तव्रत विधि

Opening : एकादशी के दिन पूरतन करै भगवान की तब व्रत स्थापन है। एक करै तया आचाम्ल पाणी भात करै तथा द्वादशी को भी अैसे ही करै ··· ··· ।

Closing : अनन्त व्रत के मादक करन के कारने वाधै अनत वनायसो नीके धारने स्वर्णरजत पटसूत्र भर्दव नवाई जी
पुजिभक्ति वहुत ठानि पुण्य उपजाय जी ।

Colophon : चतुर्दश पदार्थ चितवन की व्यौरा जीव समास १४ अजीव १४ गुणस्थान १४ मार्गणा १४ । भूत । १५ ।
इति अनन्तव्रत विधि सम्पूर्णम् ।

८०५. अनन्तव्रतोद्यापन पूजा

Opening : श्री सर्वज्ञ नमस्कृत्य सिद्धं साधू स्त्रिधा पुन. ।
अनतव्रतमुख्यस्य पूजा कुर्वे यथाक्रमम् ।।१।।

Closing : ताच्छिष्योगुणचन्द्रसूरिरभवच्चारित्रचेतो हर,
स्तेनेद वरपूजन जिनवरानतस्य युक्त्यारचि ।
येत्रज्ञथानविकारिणो यतिवरास्तैः सोघ्यमेतदबुधम्,
गधादारविचद्रमक्षयतर सघस्य मागल्यकृत् ।।५।।

Colophon : इत्याचार्य श्री गुणचन्द्रविरचिता श्री अनतनाथ पूजन व्रत-पूजा उद्यापन सहिता समाप्ता ।।
ली० व्रा० गगाष्टकसपु ~ ? ।।
देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६० ।
(२) जि० र० को०, पृ० ७ ।
(३) आ० सू०, पृ० १६६ ।
(४) रा० सू० III, पृ० २०५ ।
(५) जै० ग्र० प्र० स० I, पृ० ३४ ।

८०६. अंकुर रोपणविधि एवं वास्तुपूजा

Opening : अथ जवारा विधिलिख्यते । जवारा किइदिन दातारघरि देव गुरु शास्त्र पूजा · · ।

Closing : कोट प्रवेशादपि वास्तुदेवः,
चैत्यालय रक्षतु सर्वकालम् ।।

Colophon : इति वास्तु पूजा विधि ।

८०७. अर्हद्देवबृहद शान्तिविधान

Opening : जय जय जय नमोस्तु नमोस्तु ···· ·— ।
···· — — लोर सठपसाहूण ।

Closing : एतद्देशीया महाभिषेक नवृर्वन्ति तस्मान्मया न लिखितम् ।

Colophon : इत्यर्हद्देवबृहद्शान्ति विधि· समाप्त ।

८०८. अर्हदेव शांतिकाभिषेकविधि

Opening : देखें क्र० ७५७ ।

Closing : अनेन विधिना यथा विभवमर्हत स्नापन विधाय महमन्वह सृजति य शिवाशाधर स चक्रिर्हारतीर्थंकृताभिपेक सूरै. समर्चितपद' सदासुखसुधा बुधो मज्जति । इति पूजाफलम् ।

Colophon : एव समुदायाक. ३६० इत्यर्हदेव शांतिकाभिपेक विधिः समाप्ता ।
विशेष—यह ग्रन्थ करीब १८०० वि० स० का है ।

८०६. अथ प्रकारी पूजा विधान

Opening : जलधारा चदन पुहप, अक्षत अरु नैवेद ।
दीपधूप फल अर्घजुत, जिन पूजा वसुभेद ॥

Closing : यह जिनपूजा अष्टविधि, कीजै कर सुचि अग ।
प्रति पूजा जलधारसूं, दीजै अरघ अभग ॥

Colophon : इत्यष्टप्रकारी पूजा विधानम् ।

८१०. अतीतचतुर्विंशति पूजा

Opening : १-श्री निर्वाण जी, २-सागर जी, ३-महासाधुजी, ४-विमल प्रभ जी ··· ~ ।

Closing : सागर जन्माभिषेकसमये गर्भावतारे भवे,

मागन्य य. तपश्चरेण चरता ज्ञान च निर्वाणकैः ।
मागल्य य. सदा भवति भवता श्री नाभिराजो गृहे,
मागल्य यत्सदा भवतु भवता श्री आदिनाथैः ॥

Colophon : इति जन्मपूजा सपूर्णम् । स० १९६६ का ॥

८११. बारसीचौबीसी पूजा वा उद्यापन

Opening : बारसि चुत्रीसातुवेरू । चतुर्दश जीवसमासा ।

Closing : कीर्तिस्फूर्ति ··· ··· सेवाफलात् ॥

Colophon : इति श्री भट्टारक श्री शुभचन्द्र विरचित बारसि चुत्रीसा नू उद्यापन मत्रपाठ सम्पूर्णम् । श्री सूरतिजिदिरे लिखापितम् ।
··· ··· लालचन्द गुणवत सथरैमनकर वाचियै भल भावै भगवत । स० १९४६ ।

८१२. भावना बत्तीसी

Opening : अतुलसुखनिधान सर्वकल्याणबीज,
जननजलधिपोत भव्यसत्वैकपात्रम् ।
दुरिततरूकुट्ठार पुण्यतीर्थप्रधान,
पिवतु जितविपक्ष दर्शनाक्ष सुधावु ॥१॥

Closing : इति द्वात्रिंशतावृतैः परमात्मातमीक्षये ।
योनन्यगतचेतस्कैयात्पसो परमव्ययम् ॥३३॥

Colopon : इति भावना वतीसी समाप्तम् ।

८१३. बीस भगवान पूजा

Opening : श्रीमज्जवूधातकी ··· ··· नित्य यजामि ॥

Closing : तुमको पूजा वन्दना करै धन्य नर जोय ।
सरदा हिरदै जोधरै सो भी धरमी होय ॥

Colopon : इति श्री वीसविहरमानपूजा जी समाप्तम् ।

८१४. वृहत्सिद्धचक्र पाठ

Opening : प्रणम्य श्री जिनाधीश लब्धिसामस्त्यसयुतम् ।
श्री सिद्धचक्रयत्रस्यार्च्चासहस्त्रगुण स्तुवे ।।

Closing : श्री काष्ठासघे ललितादिकीर्तिना भट्टारकेणैव विनिर्मित वरा
नामावलीपद्यनिवद्धरूपिका भूयात्सता मुक्तिपदाप्तिकारणम ।।

Colopon: इति श्री वृहत्सिद्धचक्रपाठ समाप्तम् । सवत् १९६१ चद्रनाङ्क
चद्रेब्दे माधवे सितगेमुनौ स्वनिमित्त लिखेत्सीतारामनामकरेणश ।

८१५. वृहत्सिद्धचक्रविधान

Opening : उर्ध्वाधोरयुत सविंदुसपरं ब्रह्मस्वरावेष्ठितम्
वर्गा पूरितदिग्गताबुजदस मृतत्वधितत्त्वान्वितम् ।
अन्त पत्र तटेष्वनाहतयुल ह्रीकार सवेष्टितम्
देव ध्यायति यः स्वमुक्तिशुभगो वैरिभकठण्ठे ख ।।

Closing : निरवशेपनिरसनाय दिव्यमहार्घ्यम् निर्वपामि
स्वाहा पूर्णार्घ्यम् । एव शातिधारादि । पुष्पाञ्जलिः ।।

Colophon : इति सर्वदोषपरिहार पूजा ।।

८१६. वृहत्शान्ति पाठ

Opening : भो भो भव्या श्रृणुत वचन प्रस्तुत सर्वमेतत् ।
ये यात्राया त्रिभुवनगुरोराहंता भक्तिभाजः ।।

Closing : अह तित्थयरमाया देशिवावी तुह्म नयरनिवासिनी अह्म
शिब तुह्मशिव अशिवोपशांम शिवभवतु स्वाहा ।

Colophon : इति वृहद् शाति समाप्तम् । सकल पडित शिरोमणि पडित
श्री दानकुशलमणि गणिराज कुशल शिष्य गुमानकुशल लिखितम् ।

८१७. चन्द्रशतक

Opening : अनुभव अभ्यास मे निवास शुद्ध चेतन को,
अनुभव सरूप शुद्धवोध को प्रकाश है ।

अनुभव अनूप ऊपरइत अनत (ज्ञान) ग्यान,
अनुभव अतीत त्याग ग्यान सुखराम है ।

Closing : सपत सेप गुनथान थैं छूटे एक गत देवकी ।
यौं कहौ अरथ गुरु ग्रन्थ मैं सति वचन जिनसेवकी ॥

Colophon : इति श्री चन्द्रशतक सपूर्णम् । मितीमाघशुक्ल द्वितीया सोमवासरे सम्वत् १८६० साल मध्ये । लिखापित श्री धर्ममूरति बाबू अच्छेलाल जी जातिअग्रवाल, वसैया आराके । लिपिकृतं नदलाल पाडे छपरा के दौलतगंज मध्ये । श्रीजिन भजेत् ।

८१८. चैत्यालय प्रतिष्टाविधि

Opening : सुकनासस्य पर्यन्त वेदिकास्तरत्तरे ।
गर्भे प्रनरक कृत्वा वेदिकां तत्र विन्यसेत् ॥

Closing : शांतिकपौष्टिकं इति षटकर्मविधि — ... ।
... . मुक्तिकातापिवश्या ॥

Colophon : इति यन्त्रार्चन विधि समाप्ता: ।

८१९. चतुर्विंशति पूजा

Opening : ऋषभ अजित .... , — पुष्प चढाय ॥

Closing : भुक्ति मुक्ति दातार ... ... सिव लहै ॥

Colophon : इति श्री समुच्चय चौबीसी पूजा सपूर्णम् ।
इह पूजन जी की पोथी चढाया व्रत के उद्यापन मे बाबू परमेसरी सहाय की भार्या वनसीकुंवर ने । गोत्र गागिल । मिती फागुन वदी २२ । सन २२८३ साल ।
विशेष—इसकी १४ प्रतियां है ।

८२०. चतुर्विंशतितीर्थङ्कर पूजा

Opening : प्रणम्य श्री जिनाधीशं लब्धिसामस्तिसयुतम् ।
चतुर्विशति तीर्थेश वक्ष्ये पूजा क्रमागताम् ॥

Closing : — पश्चात् चतुर्विशति जिनमातृकास्थापनम् ।

Colophon : मिति भाद्रवा कृष्णपक्षे तिथौ च आज १३ तेरस शनिचरवासरे सवत् १२९२ का । शाके १७५७ का प्रवर्त्तमाने लिप्यकृत मथेन राधा की सनवासरूपनग्रममध्ये पोथी लिखी । श्रीरस्तु मगल क्रियात् । श्री गुरुभ्यो नम· ।। पोथी चोइम महाराज की पूजा सपूर्णं समाप्ता ।

देखे—Catg. of Skt. & Pkt. Ms, P 640.

८२१. चतुर्विंशति जिन पूजा

Opening : देखे, क्र० ८१९ ।

Closing : देखे, क्र० ८१९ ।

Colophon : इति श्री चतुर्विशतिजिनपूजा सम्पूर्णम् ।

८२२. चौबीसी पूजा

Opening : अलख लखत सब जगत् के, रखवारे ऋषिनाथ ।
नाभिनद पदपद्म छवि, तिनहिं नवाऊँ माथ ।।

Closing : — भव रूज मैं ठन वैद्यराज शिवतिय के भर्त्ता,
तिनचरण त्रिकाल त्रिशुद्ध है, नमितमिनित आनद धरते ।
जिन वर्तमान, पूजन शुभगमनरग संपूरन करते ।।

Colophon : सवत् विक्रम द्विक सहस, तामें अडतीस ऊन ।
पाँच कृष्ण वैशाख की, चद्रवार रिषमूलन ।।१।।
नगर सहारनपुर विषै, सीताराम लिखंत ।
भविजन वाची भावसो, पाठक पाठ, पढंत ।।२।।
सवत् १९६२ शक १८२७ वैशाख कृष्णा ५ सोमदिने शुभम् ।

८२३. चौबीसी पूजा

Opening : वदौं पाचौं परमगुरु, सुरगुरु वंदित जास ।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकास ।।

Closing : कामीजीनो कासीनाथ नऊवी अनंतरान मूलचद आठत सुराम आदि जानियो ।
सजन अनेक तिहा धर्मचद जी को नद वृंदावन अग्रवाल गोलगोती वानियो ॥
तातैं रच्यो पाय मनालाल को सहाय वालबुद्धि अनुसार-सुनौ सरधानियौ ।
तामैं भूलचूक होय ताहि सोधि सुद्धकीज्यो मोहि अल्पबुद्धि जानि क्षमा उर आनियो ॥

Colophon : नहीं है ।

८२४. चौबीस तीर्थङ्करपूजा

Opening : देखे क्र० ८२३ ।

Closing : जय त्रिसलानदन हरि कृत वदन जगदानदन चाद वर ।
भवताप निकन्दन तनकन मदन रहित सवदन नयन धर ॥

Colophon : नहीं हैं ।

८२५. चौवीसी पूजा

Opening : देखें, क्र० ८२३ ।

Closing : चौवीसो जिनराज को जजो अकसुनाय ।
इच्छा पूरन कर प्रभू, हे त्रिभुवन के राय ॥

Colophon : इति श्री वर्तमान चौवीसी पाठ सम्पूर्णम् । कार्तिक कृष्ण ९ स० १९६५ वार शनि ।

८२६. चिन्तामणि पार्श्वनाथपूजा

Opening : इन्द्रः चैत्यालय गत्वा वीक्ष्य यज्ञागसज्जिनान् ।
यागमडलपूजार्थं कर्माचरेदिद ॥१॥

Closing : धूपश्रीखण्डदेवदारोय गुग्गुल रगरंसिला ।
घृतरालश्च भाषाज्य व्यूलघपसग्रहादिकम् ॥

Colophon : इति चितामणिपार्श्वनाथ पूजा समाप्ता ।

देखें—Catg. of Skt & Pkt. Ms. P 641.

८२७. चिन्तामणि पार्श्वनाथपूजा

Opening : जगद्गुरुञ्जगद्देवं जगदानन्ददायकम् ।
जगद्वंद्य जगन्नाथ श्रीपार्श्वं संस्तुवे जिनम् ।

Closing : जित्वा दाराति भवान्तरश्रेष्ठ
कर्मापर्वत ॥

Colophon : :—

८२८. चिंतामणि पार्श्वनाथ पूजा

Opening : शान्त — ... ।
जायते पुजयेद्य: १ ॥

Closing : आपद विविधहारी संपदा सौख्यकारी,
त्रिभुवन पदधारी सिद्धलोकाग्रसूरी ।
जल वहुविध पूरै गधमाल्यादि साहे,
जिनवर मुख बिम्ब पूजित भावभक्त्या ॥

Colophon : इति पूर्ण ।

८२९. चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा

Opening : देखे, क० ८२७ ।

Closing : दीर्घायु शुभगोत्रपुत्रवनिता — .... ॥
मांगल्यमोक्षोद्यता. ॥

Colophon : इति श्री चिंतामणिपार्श्वनाथवृहत्पूजा समाप्ता ।

८३०. दसलाक्षण उद्यापन

Opening : विमल गुणसमृद्धं ज्ञान विज्ञान शुद्धम्,
अभयवन प्रचड चिन्मयूख प्रचडम् ।
दृन दमविधमार मजते श्री विपार,

प्रथम जिन विदक्ष श्रीघृताद्य जिनेशम् ॥

Closing : दशधर्म प्रजा पूजा सुमतिसागरोदितम् ।
स्वर्गमोक्षप्रदा लोके, विश्वजीवहितप्रदाम् ॥

Colophon : इति दसलाक्षणोद्यापन समाप्तम् ।

देखें—(१) दि जि. ग्र. र., पृ. १२६ ।
(२) जि. र को., पृ. १६८ ।
(३) रा० सू० II, पृ० ६०।
(४) रा० सू० III, पृ० ५४
(५) रा० सू० IV, पृ० ७६५ ।
(६) भ० स०, पृ० १६३, २०० ।
(७) जै० ग्र० प्र० स० I, पृ० ८७ ।

८३१/१. दशलक्षण उद्यापन

Opening : देखें, क्र० ८३० ।

Closing : देखे, क्र० ८३० ।

Colophon : इति श्रीदशलक्षणोद्यापनपाठ सम्पूर्णम् ।

८३१।२. दशलाक्षणीक व्रतोद्यापन

Opening : देखें, क्र० ८३० ।

Closing : उपवासपरोजातो ... विश्वजीवहितप्रदम् ।

Colophon : इति श्री दसलाक्षणी उद्यापन जी सपूर्णं जेष्ठ कृष्ण ११ एकादश्यां भोमवार १ वजे दोपहर को सवत् १९५५ आरामपुर निजग्रह मे बावू हरीदास पूज्यदादा वृदावन जी के पोते वो पुज बावू अजितदास के पुत्र ने लिखा ।

८३२. दसलक्षण पूजा

Opening : उत्तम छिमा मारदव आर्जव भाव है,
सत्य शौच सजम तप त्याग उपाव हैं ।

आकिंचन ब्रह्मचर्य धर्मदस सार हैं,
चहुगति दु:ख तैं काढि मुकति करतार है ।।

Closing : करै कर्म की निर्जरा, भवपीजरा विनाश ।
अजर अमर पद कूं लहै, द्यानत सुख की राश ।।

Colophon : इति दशलाक्षणी पूजा सपूर्णम् ।

८३३. दसलाक्षण पूजा

Opening : उत्तमादि क्षमाद्यंते ब्रह्मचर्य सुलक्षणम् ।
स्थापयद्दशधा धर्ममुत्तम जिनभाषितम् ।।

Closing : कोहानल चक्कउ होइ गुरुक्कउ, जाइरिसिद सिद्धइ ।
जगताइ सुहकरू धम्ममहातरू देइ फलाइ सुमिट्ठइ ।।

Colophon : इति दशलाक्षणी पूजा आरती सपूर्णम् ।

देखे—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६५ ।

८३४. दसलाक्षण पूजा

Opening : देखे—क्र० ८३३ ।

Closing : देखें—क्र० ८३२ ।

Colophon : इति श्री दशलाक्षणी पूजा सम्पूर्णम् ।

श्री सवत् १६५१ मिती वैशाखकृष्ण परिवा को सितलप्रसादके पुत्र विमलदास ने चढ़ाया ।

८३५. दशलाक्षण पूजा

Opening : देखें, क्र० ८३३ ।

Closing : देखें, क्र० ८३२ ।

Colophon : इति श्री दशलाक्षणी पूजा जी समाप्तम् ।

८३६. दर्शन सामायिक पाठ संग्रह

Opening : चतुर्विंशति तीर्थङ्करेभ्यो नम: श्रीसरस्वतिभ्यो नम: ...।।

विशेष—अनेक पाठों का सग्रह किया गया है ।

८३७. देवपूजा

Opening : सुरपति — ... पूजा रचो ।।

Closing : फोजै सकत समान विन मकते सरधा धरो ।
द्यानत मरधावान अजर-अमर सुख भोगवे ।।

Colophon : इति ।

८३८. देवपूजा

Opening : ॐ अपवित्रपवित्रो वा सुस्थितो दुस्थितोपि वा ।
ध्यायेत् पचनमस्कारं सर्वपापै. प्रमुच्यते ।।

Closing : श्रीसंधानविचित्रकाव्यरचनामुच्चारयतो नरा,
पुन्याढ्या मुनिराजकीर्तिसहिता भूतातपो भूषणा.-
ते भव्या सकला विवोधरूचिर सिद्धि लभते पराम्।। "।

Colophon : इतिदेवपूजा समाप्तम् ।

विशेष -नेमिनाथ का वारहमासा भी इसके बाद मे दिया हुआ है ।

८३९. देवपूजा

Opening : जय जय जय णमोस्तु ... — ।
... सव्वसाहूण ।।१।।

Closing : हरीवशमम्मुद्भूतो गरिष्टनेमिर्जिनेश्वर ।
ध्वस्तोपसर्गदैत्यारि पार्श्वनागेन्द्रपूजित. ।।४।।

Colophon : — अनुपलब्ध

८४०. देवपूजन

Opening : देखे—क्र० ८३९ ।

Closing . दु.ख का छय होहु । कर्म का छय होहु ।
भली गति विषै गमन होहु । ... ।

Colophon : इति शातिधारा सम्पूर्णम् ।

८४१. देवशास्त्रगुरु पूजा

Opening : देखें, क्र० ८३९ ।

Closing : जे तपसूरा संयमधीरा सिद्धिवधूअणुराइया ।
रयनत्तयरंजिय कम्महगंजिय ते रिसिवर मम झाइया ॥

Colophon : इति देवशास्त्रगुरुपूजा जी समाप्तम् ।
देखे—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १९९ ।

८४२. देवपूजा

Opening : ॐ ह्रीं क्ष्वीं स्नान स्थान भू शुद्धयतु स्वाहा ।

Closing : तुष्टिं पुष्टिमनाकुलत्वमखिल सौख्यश्रिय सपदौ ।
दद्यात्पुत्रकलित्रमित्रसहितेभ्यः श्रावकेभ्यः सदा ॥

Colophon : इति न्हवण विधि सपूर्णम् ।
देखे (१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १९७ ।

८४३. धर्मचक्रपाठ

Opening : आपदागम परारधो के, स्वामी सर्वज्ञ आप हौ ।
सुरिंद वृंद सेवैं है, आपही को इसलोक मे ॥१॥

Colsing : वर्षत्वानद मोघा' प्रशरतु सतत भद्रमाला विशाला,
... ... भोजयुग्मप्रसुते ॥

Colophon : इत्या'चार्यवर्य्य धर्म्मभूपणपदाभोजदिवाकरायमानं श्री यशोनं-दीसुरिभि' प्रणीत धर्म्मचक्रपाठ आश्विन शुक्ल प्रतिपदा बुद्धवार सवत् १९६२ आरामपुर में हरिदास ने लिखकर पूर्ण किया ।

८४४. धर्मचक्रपाठ

Opening : ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शना नम स्वाहा, ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नम. ।

Closing : ॐ ह्रीं मिश्रमिथ्यात प्रकृत श्री सिद्धदेवेभ्यो नम. स्वाहा ।

Colophon : अनुपलब्ध

८४५. धर्मचक्र पूजा

Opening : ह्रींकारेणदृतोर्हन् त्रिदलरसदल तद्बहिः,
बीजयुग्म तद्वच्चैवातराले सकलशशिमिव लेखयेत्परमेष्ठीनं ॥

पूर्वं रत्नत्रयार्कं त्रिगुणवरयुता धर्म्मपंचद्विकेन
तद्दत्यिघाष्टक यद्दधिकगुणयुत पूजयेद्भक्तिनम्र: ।।१।।

Closing : ॐ ह्रीं श्री वीरनाथाय नमः ।।२४।।

Colophon : इति धर्मचक्रपूजा विधि. समाप्ता । शुभ भवतु ।

८४६. गणधरवलय पूजा

Opening : जिनान् जितारातिगणान् गरिष्टान,
देशावधीन् सर्वपरावधीश्च ।
सत्कोष्ठवीजादिपदानुसारीन्,
स्तुवेगनेसानपि सद्गुणादौ ।।१।।

Closing : वरिगणिदसमर तहु फिट्टइवाहि असेसलऊ ।
वऊ पावय थासई होइ लगि महामुण सबिसदजणण ।।

Clophon : इति ।

८४७. गणधरवलय पूजा

Opening : प्रणम्य शिरसाहृत पवित्रिस्तीर्थवारिभि: ।
गणीन्द्रवलयस्याग्रे पूर्णकुंभ न्यासाम्यहम् ।।

Closing : ... संपूजकानां इत्यादि शांतिधारा ।

Colophon : इति श्री गणधरवलय पूजा समाप्त:

८४८. ग्रहशान्तिपूजा

Opening : जन्मलगन गोचर समैं, रवि सुत पीडा देई ।
तब मुनिसुव्रत पूजये, पातक नास करेय ।।

Closing : सगुन अधिकारी दुख हरभारी रोगादिक हरनम् ।
भृगु सुत दष जाई पाप मिटा (ई) पुष्पदंत पूजत चरनम् ।।

Colophon : इति शुक्रारिष्ट निवारक पुष्पदंत पूजा सम्पूर्णम् ।

८४९. होमविधान

Opening : श्री शांतिनाथ ममरासुर मर्त्यनाथ:,
शाश्वति रीढमणि दीधित पादपद्मम ।

त्रैलोक्य शांतिकरण प्रणव प्रणम्य:
होमोत्सवाय कुसुमांजलिमुक्षपामी ।।

Closing : तिनने लिखदिनो होम को विधान जान,
पंडित सु लक्ष्मीचंद नाम जु वखान है ।
भूल चूक होय जो भाई तुव सुधारि लिज्यौ,
हमपर छिमाभाव मेरी यह आन है ।।

Colophon : इति सम्वत् १९३० मिती चैत्रवदी १० राति आधी गई रोज सोमवार ।

८५०. होमविधान

Opening : शांतिनाथ जिनाधीश वंदित त्रिदशेश्वरै ।
नत्वा शांतिकमावक्ष्ये सर्वविघ्नोपशांतये ।।१।।

Closing : ॐ ह्रीं क्रो प्रशस्ततर. सर्वदेवा ममाभिलषित
सिद्धि कृत्वा निज-निज स्थान गच्छतु ॐ स्वाहा ।

Colophon : इत्याशाधर विरचित शांत्यर्थ होम विधान सम्पूर्णम् ।

८५१. इन्द्रध्वजपूजा

Opening : सकलकेवलज्ञानप्रकाशक, सकलकर्मविपाटन सद्भवम् ।
सकलचिन्मय ज्योतिनिवासक, सकलधर्मध्वजांकित सद्वयम् ।

Closing पद्मपुरुषपद्मसमानमति, पद्मालयासजमुक्तिभागी ।
तन्मंगल भव्यजनाय कुर्यात् सुरोजचिन्तांकितविश्व-
दृष्टि. ।।

Colophon : इति रुचिकगिरिउत्तरदिक्, चैत्यालयपूजा समाप्ता । इति श्रीविशालकीर्तित्यात्मज विश्वभूषणभट्टारक विरचिताया इन्द्रध्वजपूजा समाप्ता । मिति माघ कृष्णपक्षे ६ म्या शुक्रवासरे सवत् १९१० ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र० पृ० १७३ ।
(२) जि० र०, को०, पृ० ४० ।
(३) रा० सू० II, पृ० ५७, ३०६ ।
(४) रा० सू० III, पृ० ५०, १६८ ।
(५) आ० सू०, पृ० १७१ ।

८५२. इन्द्रध्वजपूजा

Opening : देखें, क्र० ८५१ ।

Closing : देखे, क्र० ८५१ ।

Colophon : देखे, क्र० ८५१ ।
श्रीसवत् १६५१ मी० वैशाख कृष्ण परिवा को सितलप्रसाद के पुत्र विमलदास ने चडाया पचायती मदिर जी मे १६५३ ।

८५३ इन्द्रध्वजपूजा

Opening : सकलमेत्र कथामृततर्प्यक, सकलचारूचरित्रप्रभासतम् ।
सकलमोहमहातमघातक सकलकलासप्रवासकम् ।।

Closing : देखें, क्र० ८५१ ।

Colophon : इति श्री विशालकीर्त्यात्मज विश्वभूषणभट्टारक विरचिताया इन्द्रध्वज पूजा समाप्ता । सम्वत् १८७० ज्येष्ठ शुक्ल एकादस्या बुधवासरे पुस्तकमिद रघुनाथ शर्म्मने लेखि पट्टनपुर मध्ये । शुभमस्तु । पुस्तक सख्या ३६०० । लाला शकर लाल रतन चद के माथे के ।

८५४. जन्मकल्याणक अभिषेक जयमाला

Opening : श्रीमत श्री जिनराज '' पूजा च मेरौ कृतम् ।।

Closing : जिनवर वरमाला ''' लभते विमुक्ति ।।

Colophon : इति श्री जन्मकल्याणक अभिषेक की जयमाला सम्पूर्णम् ।

८५५. जापविधि

Opening : ॐ क्षां क्षी क्षूं क्षौ क्ष स्वाहा ।

Closing : दर्शन दे चाहै तौ एक लाक्ष जाप करै दिन तीनि उपवास के पारने चरमोवाह लाल वस्त्र लाल माला कनैर के फूल करणा तेज प्रताप अपि करै ।

Colophon : इति जाप विधि सम्पूर्णम् ।

८५६. जिनपचकल्याणक जयमाला

Opening : जिनेन्द्रपदाब्जयुग प्रणम्य स्वर्गापवर्गार्थकर कराणा ।
सुरासुरेद्रादिभिरच्चनीय तस्यैवभक्त्यास्तवन करिष्ये ।।

Closing : विद्याभूषणसूरिपादयुगल नत्वाकृत सार्थक,
स्तोत्र श्री सुषदायक मुनिनुतैः सगभित सुंदरम् ।
पञ्चारुचरित्रपचकयुत श्री भूषणै भूंषणै,
तीर्थेशैर्गुणगुफित कृतकर प्रण्य सदाशकरमं ।।

Colophon : इति जिन पंचकल्याणक जयमाला सम्पूर्णम् ।

८५७. जिनेन्द्रकल्याणाभ्युदय (विद्यानुवादाग)

Opening : लक्ष्मी दिशतु वो यस्य ज्ञानादर्शे जगत्रयम् ।
भ्यदीपि स जिन श्रीमान्नाभेयो नौरिवाम्बुधौ ।।१।।
माङ्गल्यमुत्तम जीयाच्छरण्य यद्रजोहरम् ।
निरहस्यमरिघ्न तत्पञ्चब्रह्मात्मक मह ।।२।।

Closing : तिथिरेकगुणा प्रोक्ता नक्षत्र द्विगुण भवेत् ।
लग्नन्तु त्रिगुण तेषा शुभाशुभफल भवेत् ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

८५८. जिनयज्ञफलोदय

Opening : सर्वज्ञं सर्वविद्याना विधातार जिनाधिपम् ।
हिरण्यगर्भं नाभेय वन्देऽहं विबुधार्चितम् ।।१।।
अन्यानपि जिनान्नत्वा तथागणधरादिकान् ।
कथ्यते मुक्तिसम्प्राप्त्यै जिनयज्ञफलोदय. ।।२।।

Closing : द्विसहस्रमिद प्रोक्त शास्त्र ग्रन्थप्रमाणत: ।
पञ्चाशदुत्तरै सप्तशतश्लोकैश्च सगतम् ।।४२७।।
पञ्चाशत्तिशतीयुक्तसहस्रशकवत्सरे ।
प्लवंगे श्रुतपञ्चम्याज्येष्ठेमासि प्रतिष्ठितम् ।।४२८।।

Colophon : इत्यार्षे श्रीमत्कल्याणकीर्तिमुनीन्द्रविरचिते जिनयज्ञफलोदये विप्रभट्टहेमप्रभादिकृत जिनयज्ञाष्टविधानाख्यवर्णन नाम नवमो लम्ब: समाप्त: । अस्मिन् ग्रथे स्थितानि श्लोकानि ।।२७५०।। करकृतमपराध क्षतुमर्हंति सत इति प्रार्थयामि ।

अथ जिनयज्ञफलोदयो नाम ग्रथ' वेणुपुर (जैन मूडविन्द्री) निवासिना नेमिराजाख्येन लिखित' । रक्ताक्षिसवत्सरे फाल्गुनशुद्धाष्टम्या समाप्तिमगमत् ।

८५६. जिनप्रतिमा स्थापन प्रबन्ध

Opening : श्रीजिन वदउ चौवीस, सविगणधर नइ नामु सीस ।
श्री सदगुरुना चरण नमेवि, प्रनि समरु शारद देवि ॥

Closing : सवत् सोलसतोतरइ कातिक सुदि तेरसि वारइ गुरइ ।
भणता गुणता अणद करइ, नदउजा जिन धर्म
विस्तरइ ॥६१॥

Colophon : इति श्रीप्रद्युम्नविरचिते जिनप्रतिमास्थापनप्रबंधे सम्पूर्णम् ।

८६०. जिनपुरदरव्रतोद्यापन

Opening : श्री मदादिजिनं नौमि पचकल्याणनायक ।
इंद्रादिभिर्देवगणै पूजितं अष्टधाश्च तं ॥

Closing : धर्मवृद्धि जयमगलमानराज ऋद्धिप्रददाति समाज जपापताप दुःखरोगविनाश कुर्वंते जिनपुरदरखास: । इत्याशीर्वाद, ।

Colophon : इति श्रीजिनपुरदरपूजा उद्यापन समाप्तम् । मिति मार्गशिर (शीर्ष) वदी ४ भौमवासरे सम्वत् १९३२ लिखत रामगोपाल ब्राह्मण ।

८६१. कलिकुंड पार्श्वनाथ पूजा

Opening : हूंकार ब्रह्मरुद्र ... ... ।
... ... विद्याविनासे प्रयुक्तम् ॥१॥

Closing : तरलतरे ... ... ।
राजहसोवाताह ॥

olophon : इति कलिकुड स्वामी पूजन सम्पूर्णम् ।

८६२. कलिकुंडल पूजा

Opening : ॐकार ब्रह्मरुद्र स्वरपरिकलित वज्ररेखाष्टभिन्न,
वज्रस्याग्रातराले प्रणवमनुपमानाहत ससृणि च ।
वर्णा ताद्यानसपिंडान् ... ...
... दुष्टविद्याविनाशी ॥१॥

Closing : इति परमजिनेन्द्र विनुतमहिद यहः कलिकुंडमखण्ड खडद्वय ।
पूजयति सजयति स्तुतिकृतिमयति प्रतिसिव मुक्तभुदयं ।।

Colophon : इति कलिकुंडल पूजा समाप्तम् ।

८६३. कलिण्डाराधना विधान

Opening : सत्पुष्पधाम्ना प्रविराजितेन पुष्पेण पूर्णेन सुपल्लवेन ।
सम्मगलार्थं कलिकुंडदेवम् उपाग्रभूमौ समलकरोमि ।।

शुद्धेन शुद्धह्रदकूपवापीगगातटाकादिनामावृतेन ।
शीतेन तोयेन सुगंधिनाहं भक्त्याभिषिञ्चे कलिकुण्डयन्त्रम् ।

Closing : कलिलदहनदक्ष योगियोगोपलक्षम्
ह्याविकुलकलिकुंडो दडपार्श्वप्रचडम्
शिवसुखमभवद्धा वासवल्ली वसन्तम्
प्रतिदिनमहमीडे वर्द्धमानस्य सिद्धयै ।।

विशेष—प्रशस्ति संग्रह (श्री जैनसिद्धान्तभवन) द्वारा प्रकाशित पृ० ६६ मे संपादकभूजवली शास्त्री ने ग्रन्थ के वारे लिखा है—इस कलिकुण्डाराधना' के आदि मे कलिकुण्डयन्त एव श्री पार्श्वनाथ की प्रतिमा का अभिषेक, भूमिशुद्धि, पञ्चगुरुपूजा और चत्तारि अर्घ्य निर्दिष्ट हैं । बाद पार्श्वनाथ पजा एव इन्ही की मन्त्रस्तुति धरणेन्द्र यक्ष और पद्मावती यक्षी की पूजा तथा इनके मन्त्र स्तोत्र दिये गये हैं । इसके उपरान्त मत्र लिखने की विधि और फल इत्यादि का निर्देश करते हुए प्रस्तुत मन्त्र की पूजा बतलाई गयी है । अन्तमे यन्त्रीय मंत्र की स्तुति, मंत्रस्थ पिण्डाक्षरोका अर्घ्य, अष्टमातृका की पूजा, मन्त्रपुष्प और जयमाला लिखी गयी है । इसके कर्ता भी अभी तक अज्ञात ही है ।

८६४. कर्मदहन पाठ भाषा

Opening : लोक-शिखर तन छाडि अमूरति ह्वै रहै ।
चेतन ज्ञान सुभाव गेहतैं भिन्न भये ।।
लोकालोक सुकाल तीन सव विधिधनी ।
जानैं सो सिद्धदेव जजों वहु थुति ठनी ।।

Closing : भयकर्म ताकी होय उदै सुनि भाई रे।
तत्र जिय उरकपाय चेत मन भा

Colophon : नही है।

८६५. कर्मदहन पूजा

Opening : देखें—क्र० ८६४।

Closing : प्रमो सिद्ध सिद्ध कारनें, भक्ति महा मनलाय।
पूजौं सो शिवसुख लहैं, और कहा अधिकाय॥

Colophon : इति श्री कर्मदहन पूजा पाठ समाप्तम्। श्री सम्वत् १९५१ मिती वैशाख कृष्ण परिवा (प्रतिपदा) को शीतलप्रसाद के पुत्र विमलदास ने चढाया।

८६६. कर्मदहन पुजा

Opening : सकलकर्मविमुक्ताय सिद्धाय परमेष्ठिने।
नमोनेकातरूपाय सिद्धायशिवसर्मणे॥

Closing : आनंदाद्भुतधन्यधामनगरी मा पद्मपद्माकरी।
चर्चा मा भवता शिवभवतु श्रेयस्करी शकरी॥

Colophon : इति श्री कर्मदहनपूजा समाप्ता॥

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १७६, १७७।
(२) जि० र० को०, पृ० ७१।
(३) आ० सू०, पृ० २२।
(४) Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 631.

८६७. कर्मदहन पूजा

Opening : ॐ उर्द्ध घोरयुत ॥

Closing : विशेष—अपूर्ण

८६८. कर्मदहन पूजा

Opening : देखें—क्र० ८१५ ।

Closing : देखें—क्र० ८६६ ।

Colophon : इति कर्मदहनपूजा सपूर्णम् ।

इदं कर्मदहनपूजाव्रजपालदासतस्यात्मज जिनगरदासेन लिखपिता ॥

स्वय पठनाय ॥

८६९. कर्मदहन पूजा

Opening : देखे क्र० १५ ।

Closing : देखें, क्र० ८६६ ।

Colophon : आशीर्वाद । इति कर्मदहनपूजा समाप्ता । ग्रथ सख्या १३५ । शुभ भवतु ।

८७०. कर्मदहन पूजा

Opening : देखें—क्र० ८१५ ।

Closing : देखें—क्र० ८६८ ।

इति कर्म दहन पूजा सपूर्णम् ।

Colophon : शुभमस्तु ।

८७१. कर्मदहन पूजा

Opening : देखें—क्र० ८१५ ।

Closing : या धर्मैकनिबन्धनं ... पूजेयमानन्दवा ॥

Colophon : इति सूरि श्री वादिचन्द्रकृता श्री कर्मदहनपूजा समाप्ता ।

८७२. क्षेत्रपाल पूजा

८७२

Opening : श्री काष्ठासंघे वरपूर्णचन्द सर्वज्ञवयं प्रणिपत्य पूर्वम् ।

श्री क्षेत्रपालोत्तमपूजनस्य, विचिपूर्वक्ये विधि मार्गमत: ॥

Closing : पुत्राश्च मित्राणि कलत्रबन्धून्, सच्चद्रकीर्तिरमणी सरूपाः ।
श्री क्षेत्रपालोग्रतरप्रभावा दायांतु ते सर्व समी हितानि ॥

Colophon : इति क्षेत्रपालपूजा समाप्तम् । शुभ सवत् १८३६ पौषशुक्ल चौथचंद्रवासरे लि० चैनसुखेन । शुभ भूयात् ।

विशेष—सबसे अन्त मे एक स्तुति भी लिखी गई है ।

८७३. लघु सामायिक पाठ

Opening : पडिकमामि भतेइरियाए विराहणाए अणगुत्ते अइगमणे णिगमणे चक्कमणे पाणगमणे ··· ··· · ।

Closing : गुरव यांतु वो नित्यं, ज्ञानदर्शननायका ।
चारित्रार्णव गंभीरा: मोक्षमार्गोपदेशका: ॥

Colophon : इति सामायिक स्तवन समाप्तम् ।

८७४. महाभिषेक विधान

Opening : श्रीमद्भिर्जिनराजजन्मसमये स्नानक्रमप्रक्रिया,
मेरोर्मू र्ध्निपयः पयोविनिपयः पूर्णे. सुवर्णात्मके. ।
काम याममितप्रियाभदशतैः शक्रादयश्चक्रिरे,
स्वामन्नार्यजनानुरागजननी जातोत्सवप्रस्तुवे ॥

Closing : पायोभि.पातयामस्तदनुतजगता शांतये शांतिधाराम् ।

Colophon : एव चाह क्रमेणपरिसमापित महाभिषवण कल्याणमहामह विधानः समाप्तः ।

८७५. महावीर जयमाल

Opening : अमृतसरसिहंसो सुकृतध्वांतहंसो,
भवकदनुजहंसो मुक्तिमार्गेणहंस ।
करणविजयहंसो भावबस्प्रहंसो,
जयतुभूवीसुवीरो भव्यलेखासुखाय ॥१॥

Closing : अखिलनृसुरामती पंचकल्याणकर्त्ता,
त्रिदशाचरणधर्त्ता दुःखसंदोहहर्त्ता ।
भवजलनिधितर्त्ता सिद्धिकांताविवर्त्ता,
भवतु जगतिवीरो नेनीश मंगलाय ॥१०॥

Colophon : इति श्री महावीर जयमाल समाप्तम् ।

८७६. मंदिरप्रतिष्ठा विधान

Opening : श्री मद्वीरजिनेशानं प्रणिपत्य महोदयम् ।
अर्हत्सव्यविधानस्य शुद्धि वक्ष्ये यथागमम् ।।

Closing : तिर्यक्प्रचारादशनिप्रयाता,
द्वीजप्ररोहा च मखातयातात्
कीटप्रवेशादपि वास्तुदेवा,
चैत्यालय रक्षतु सर्वकालम् ॥
अथाग्रे शांतिधारा कुर्यात् ।

Colophon : नहीं है ।

८७७. मृत्युंजयाराधना विधान

Opening : चंद्रपुरावुधिचंद्र चंद्रार्क चंद्रकातसंकाशम् ।
चंद्रप्रभजिनमचे कुंदेंदुस्वारकीर्तिकाताशातम् ॥

Closing : अत्यंतभवयानंतदेवचंद्रसूर्याभिवद्याग्रजिनेन्द्र भक्ता ।
ब्रह्माणिकाद्या उंररीकृताघ्यी सर्वविमृत्यु विनिवारियंतेम् ।
अणिमादिगुणैश्यर्यशालिन्येत्यष्टमातर ।
याजकानां सुशात्यर्थं सुप्रसन्ना भवंतु ते ॥

Colophon : नहीं है ।

८७८. मूलसंघकाष्टा संघी

Opening : श्रीमज्जमन्दिर मस्तके .... — — ।
... . जैनाभिषेकोत्सवे ॥

Closing : ... ... विंतरनिल्पाय पट्टपटह वज्जिय कहत .... .. ।

Colophon : Missing ।

८७६. नन्दीश्वर विधान

Opening : नदीश्वर पूरब दिशा, तेरह श्री जिनगेह ।
आह्वानन तिनको करौ, मन वच तनधरिनेह ॥

Closing : मध्यलोक जिनभवन अकीर्तिम ताको पाठ पढ़ै मन लाइ ।
जाके पुन्न तनी अति महिमा बरनन को कवि सकै बनाई ॥
ताके पुत्र पौत्र अरू सपति वाढै अधिक सरस सुखदाइ ।
इह भव यश परभव सुखदाई, सुरनर पदलहि शिवपुर जाई ॥

Colophon : इति श्री नदीश्वर दीप की उत्तर दिशि सम्बन्धी एक अजन गिरि चार दधिमुख गिरि आठ रतिकर गिरि पर त्रयोदश सिद्धकूट विंब विराजमान तिनकी पूजा सम्पूर्ण ।

८८०. नन्दीश्वर विधान

Oenping : अष्टमद्वीप नदीश्वर बहु विस्तार है ।
ताके चवं (हु) दिसि बावन गिरि सनिधारि है ॥

Closing : सामान (सामान्य) भाव ऐसे जानि लेना और विशेष भाव अन्य शास्त्र तैं जानि लेना । इस मडल की नकल शुभा-आकारकारणी ।

Colopohn: इति समुच्चय जयमाल, श्री नदीश्वर पूजा चार दिस सबधी द्वयपचासजिनालय टेक चद कृत सपूर्णम् ।
पौष सुदी आठै विमल वार भृगो पहिचान ।
सवत्सर (उन्नीस) सै अधिक इक्यावन मान ॥
संवत् १६५१ लिखत प० चौथे चतुरभुज चदेरी वारन की । (वालेकी)

८८१. नवग्रह अरिष्ट निवारणक पूजा

Opening : अर्कश्चंद्रकुज सौम्यगुरुशुक्रशनीश्चर ।
राहुकेतुग्रहारिष्टनाशनं जिनपूजनात् ॥१॥

Closing : चौबीसो जिनदेव प्रभु ग्रह बधो विचार।
फुनि पूजों प्रत्येक तुम जो पावो सुखसार ॥८॥

Colophon : इति नवग्रह पूजा सम्पूर्णम्।

८८२. नवकार पच्चीसी

Opening : ... मुषकू ढके बोलइ था परधन के हरइ यो करूना न जाके हिये है।

Closing : यह नवकार सु पच पद जपो सुमनवचकाय।
सकलकर्मनासकरि पचमगति को जाय ॥२६॥

Colophon : इति श्री नवकारपचीसी समाप्त.। मिति ज्येष्ठ शुक्ल चउदश्या सवंत् १६१३ साल।

८८३. नादी मंगल विधान

Opening : तनूदरीनिर्मितमगलादिके नादीविधान क्रियतेत्रशोभनम्।
पृथग्विनिर्वाप्य जिनार्च्चनततो जलादिभिर्ग धविशेष-कर्मुदा ॥

Closing : ॐ कपिल वटुकपिंगलाय क्लौ ब्लौ स्वा लां ह्रीं पुष्पवत सवौषट्।

Colophon : इति नादीविधान सपूर्ण।

८८४ नान्दीमंगवविधान

Opening : यातु श्रीपादपद्मानि पचानांपरमेष्ठिनां।
ललितानि सुराधीश चूडामणि मरीचिभिः॥

Closing : ओं ह्रीं भद्रासनश्रियै स्वाहा पट्टस्थापनम्।

Colophon : इति नादी मगलविधान समाप्तम्। शुभभूयादिति च।

८८५. नित्यनियम पूजा

Opening : सौगन्ध्यसंगतमधुव्रत ... ... जिनींसमानाम्॥

Closing : सुखदेवो दुखमेटिवो ... ... पार्श्वपद निर्वाण॥

Colophon : इति विनय सपूर्ण ।

विशेष—नित्य करने वाली पूजाएँ इसमे सकलित हैं ।

८८६. नित्यनियम पूजा

विशेष—प्रारम्भ के पत्र जीर्ण है तथा अन्तिम पत्र अनुपलब्ध है ।

८८७. नित्यनियम पूजा संग्रह

Opening : ॐ जय जय जय णमोऽस्तु णमोऽस्तु ... ।

Closing : कीजे सकत समान ...... सुख भोगवै ॥

Colophon : इति भाषा आरती सम्पूर्णम् ।

८८८. निर्वाण पूजा

Opening : ॐ नम सिद्धेभ्यः इत्यादि स्थापना ।

Closing : जे पठतियाल णिव्वुईकंठ भावसुद्धीये ।
भु जीवि णरसुरसुक्ख वाच्छा सो लहई णिव्वाण ॥

Colophon : इति श्री निर्वाणकाड सम्पूर्णम् । कार्तिकशुक्ल २ सवत् १६६५ भोम-शुभम् ।

८८९. पंचमंगल

Opening : पनविविपच परमगुरु गुरु जिन शासन ।
सकल सिद्धि दातार सुविघनविनाशन ॥
सारद अरुगुरु गौतम सुमति प्रकाशन ।
मगल करि चउ सगहि पाप प्रनासन ॥

Closing : पावे तो आठो सिद्धि ... सिवमये ॥

Colophon : इति पंचमगल सम्पूर्णम् ।

८९०. पंचमीव्रतोद्यापन

Opening : श्रीमच्छनाभ्ररसनार्च्चितपाद पद्मं,
पद्मासनं हृदि निधाय पद स्वभावाम् ।

यस्तावान् शिवपदे क्रशमाकृतोयं,
सस्थापयं विविधिवर्णयुतेच्युततम् ।

Closing : जगति विदति कीर्तेरामकीर्तेसुमप्पो,
जिनपतिपदभवतो हर्षनामोसुधीर ।
क्वचित उदयसुनुनेन कल्लाणभूमो
विधिरयमेवर्नामाम.क्षसानसौख्य ददातु ।।

Colophon : इति श्री आशीर्वाद । इति पचमी व्रत उधापन समाप्ता ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८६ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २२७ ।
(३) रा० सू० II, पृ० ६४ ।

८९१. पंचमेरु पूजा

Opening : मध्येत्रडाहूय — ··· प्रतिमा समस्ता ।।

Closing : पचमेरु की आरती ··· ···· सुख होई ।।

Colophon : इति श्री पचमेरु की पूजा जी सम्पूर्ण ।

विशेष—साथ मे नदीश्वर पूजा भी है ।

८९२. पचपरमेष्ठी पूजा

Opening : कल्याणकीर्त्तिकमला — ··· प्रवक्ष्ये ।।१।।

Closing : सिद्धि वृद्धि समृद्धि प्रथयंतु तरणिस्फूर्यदुच्चै प्रताप ।
कांति शांति समधि वितरंतु भवतामुत्तमासाधु भक्ति:।।१६।।

Colophon : पचपरमेष्टि पूजाविधान संपूर्णम् ।।६।। (१८७५) अब्देवाण नगाहिशीत किरणे सख्यामिते कार्तिकस्येतोर्वांधराकन्यका सुततिथौ शीतांशूपुत्राहनि । पूर्णाकारि जिनेन्द्र भूषणपते शिष्येण संपालिपि-गोपक्ष्माभृतिरत्नसागर इति ख्याति गतेनाख्यया ।।१।।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८७ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २२५ ।
(३) रा० सू० II, पृ० ६४ ३१४ ।
(४) रा० सू० III, पृ० ५७ ।

५) प्र० जै० सा०, पृ० १७२ ।
(६) भा० म०, पृ० १३२ ।
(7) Catg of Skt. & Pkt Ms, P. 662.

८९३. पंचपरमेष्ठी पूजा

Opening : देखे, क्र० ८७२ ।

Closing : स्फूर्यन् मनापतपनःप्रकटीकृतार्थान् श्रीधर्मभूषणपदाबुज-
चु विताले
कर्त्तव्यमिदुदयता सुयशोभिनदि सूरे सदतरूदयी करणैक-।
हेतु ॥४॥

Colophon : इति श्री च तोनदिकृता पचपरमेष्ठि पूजाविधि समाप्ता ॥

८९४. पंचपरमेष्ठी पूजा

Opening : मगलमय मंगलकरन, पच परम पद सार ।
असरन को एही सरन, उत्तम लोक मझार ॥

Closing: मार्गशीर्ष वदि षष्टमी, कुज दिन पूरण भाय ।
सवत्सर सत अष्टदश, साठ दोय अधिकाय ॥

Colophon : इति श्री पचपरमेष्ठि भाषा पूजा सम्पूर्णम् । लिखत सुगनचद श्रावक पालमग्राम मध्ये जेष्ठ शुक्ल २ बुधवार सवत् १९२७ ।

८९५. पंचपरमेष्ठी विधान

Opening : मन रजन भजन करम, पंच परमगुरु सार ।
पूजित पद सुरनर खगा, पावत है भवपार ॥

Closing : चौवीसो जिनदेव के, कल्यानक हितदाय ।
पूजै सो मगल लहै परभव शिवपुर पाय ॥

Colophon : इति पचा कल्यानक पूजा पाठ सपूर्ण सवत् १९९३ —पौष-मासे कृष्ण पक्षे गुरुवासरे पुस्तक लिख्यत आरामपुर मध्ये पडित हीरालाल जी। लिखापित श्राविका बुटो बी ी ने । शुभमस्तु ।

८९६. पंचपरमेष्ठी पाठ

Opening : देखें, क्र० ८९२ ।

Closing : देखें, क्र० ८९३ ।

Colophon : इति श्री पञ्चपरमेष्ठी पाठ संस्कृत श्री यशोनंदि आचार्य कृत संपूर्ण ॥ श्री शुभ सवत् १९३५ शाके ॥१८००॥ चैत्रशुक्ल चतुर्थ्यां उपरि पचम्या रविवासरे मवरात्र शुभ दिन ॥ सात वजै दिन को लिखकरे तैयार भया ॥

सन्दर्भके लिए देखें, क्र० ८९२ ।

८९७. पंचकल्याणक पूजा

Opening : सिद्धं कल्याणवीज कलमलहरण पंचकल्याणयुक्तम् ।
स्फूर्जद्देवेन्द्रवीर्ज्यैर्मुकुटमणिगणैदिप्रियादारविदम् ॥
भक्त्या नत्वा जिनेन्द्रं सकलसुखकर कर्मवल्लीकुठारम् ।
संवेहं पूजनं वै प्रवलभवभयं शान्तिये श्री जिनानाम् ॥

Closing : त्रैलोक्येषु महोपरोद्भवसुखं संसारकंवाद्भुतम् ॥
मोक्षचापिदिशेतु वै जिनवरा सर्वा स्तमनो सर्वदा ॥१॥

Colophon : इति श्री पंचकल्याणकपूजा संपूर्णम् ॥ वाडग्रामे शुभस्थानेगगातटनिवासित लिखितत्वाशिवप्रसादेन, विप्रवशेन धीमता ॥

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८४ ।
(२) Catg of Skt. & Pkt. Ms., P. 662.

८९८. पंचकल्याणक पूजा

Opening : देखें, क्र० ८९७ ।

Closing : देखें, क्र० ८९७ ।

Colophon : इति श्री पंचकल्याणक पूजा जी सम्पूर्णम् । श्रावणमासे कृष्णपक्षे तिथौ १३ । संवत् १९५३ ।

८९९. पंचकल्याणक-उद्यापन

Opening : श्री श्री वीरनाथप्रणपत्यमूर्द्धविक्ष्ये जिनाना भुविपचकच।
कल्याणकाना खलु कर्महान्यै गर्भावतारादिदिनादिकैश्च ॥

Closing : Missing.

९००. पंचकल्याणक पूजा

Opening : श्री वरमातम कूं नमूं, नमूं शारदा माय।
श्री गुरु कूं परणाम करि, रचूं पाठसुखदाय ॥

Closing : पढै सुनै जे नर अरू नारी,
पाठ लिखावै जे परवीन।
तिनके घर नित मगल व्यापै,
अष्ट करम दुख होवे छीन ॥

Colophon : इति पंचकल्याणक भाषा पूजा सम्पूर्णम्।

९०१. पंचकल्याणक पूजा

Opening : विश्वाशमंमृव विश्वं चिदादर्शेददर्शय।
भुवनां भोजभास्वत त जिनन्तोष्टुवीम्यह ॥१॥

Closing : गच्छे सारस्वतेयो भवददमयशा ...
— ... कृतमिदमपर पूज्यनतेनमन्यम् ॥

Colophong : इति श्री पचकल्याणकपूजन समाप्तम्। सवत् १८७९
शा-१७४४ का० वु० ११ शनीवार।

९०२. पंचकल्याणक पाठ

Opening : देखें, क्र० ८९७।

Closing : अनेकतर्क संकर्ष हर्षातितचुधोत्तमा ॥
स्वर्द्धि मीचवयस्फूर्ति जीवात्श्री प्रतिवरधनम् ॥१३॥

Colophon : इति श्री पंचकल्याणकपाठसंस्कृत सपूर्णम् ॥ चैत्र कृष्ण अष्टमी शुक्रवासरे संवत् १९३१ दोपहर पक ॥ शुभ ॥

१०३. पंचकल्याणक पाठ

Opening : ध्यानस्थित मोहविकारदूरं श्रीवीतरागम्
शिव मोक्षहेतुं कठोरकर्मेघनवह्निरूपम् ॥७॥

(पृष्ठ ४६) जय जय केवलज्ञानसंतर्पण ॥

Closing : जयजय मुक्तिवधूमवतर्पण ॥८॥

१०४. पंचकल्याणक पाठ

Opening : देखें, क्र० ८९७ ।

Closing : देखें, क्र० ८९७ ।

Colopon : इति श्री पंचकल्याणकपाठ सम्पूर्णम् ।

१०५. पंचकल्याणकादि मंडल

Opening : श्रुतस्कन्ध मण्डलचित्र ।

Closing : सोलहकारण मंडल ।

विशेष— ३० मण्डलचित्र संग्रहीत हैं ।

१०६. पद्मावती पूजा

Opening : श्रीमत्पार्श्वेशमानस्य मोक्षसौख्यप्रदायिकम् ।
वक्ष्ये पद्मावती पूजां हस्तायूधर्मपूर्विका ॥

Closing : लक्ष्मीसौम्यकरा. ... — पद्मावती पातु: व ॥

Colophon : इति श्री पद्मावतीपूजा सम्पूर्णम् । ज्येष्ठ कृष्ण ११ बुधवार सं० १९५५ बारह बजे दिन को लिखकर आम्पुर (आरामपुर) निजगृह जन्मभूमि का पर हरिदास ने पूर्ण करी । सो जयवंतहोई

विशेष— इसमे पार्श्वनाथ पूजा भी संगृहीत है ।

९०७. पद्मावती देवी पूजा

Opening : जगकुसुम कुंकुम ·· ·· पद्मावती ।।
Closing : गंभीरमधुरमनोहर ··· ··· कुर्वन्तु मंगलम् ।।
Colophon : इतिपद्मावती देवी पूजा सम्पूर्णम् ।

९०८. पद्मावतीदेवी पूजन

Opening : देखें, क्र० ९०७ ।
Closing : सनीरगंध सालिपुंज — ।
······ वृद्धि क्षेत्रपाल अर्चनम् ।।
Colophon : श्री ।

९०९. पल्य विधान पूजा

Opening : नत्वा सगौतम वीरं वांछितार्थप्रदायकम् ।
ब्रुवे पल्यविधानस्य यथा सूत्र हि पूजनम् ।।
Closing : हिएस्ति पाप भविना कृतार पूजेयमाप्तागमगोचरा च ।
धत्ते सुसौभाग्यपद सलील तनोति सर्वत्र यशोभिरामम् ।।
Colophon : नहो है ।

९१०. प्रतिष्ठा कल्प

Opening : विज्ञान विमल यस्य विशद विश्वगोचरम् ।
नमस्तस्मै जिनेंद्राय सुरेन्द्राभ्यचिताघ्रये ।।
Closing : इति प्रतिष्ठाद्वतीय कार्तीय दिवसक्रियाम्,
य. करोति हि भव्यात्मा स. स्यात्कल्याणभाजनम् ।
Colophon : इत्यार्षे श्रीमद्भट्टाकलंकदेव संगृहीते प्रतिष्ठाकल्प नाम्नि ग्रंथे सूत्रस्थाने प्रतिष्ठा द्वितीय तृतीय दिवस विधि निरूपणीयो नामैकोनविंश परिच्छेद इत्यय ग्रंथो भाद्रपद शुक्लदशम्या तिथौ रात नेमिराजाह्वयेन समालिख्य परिसमाप्तोऽभूद् भद्र भूयाद्दति । महावीर शक २४५२, १९२१ ईस्वी ।

९११. प्रतिष्ठाकल्प टिप्पण (जिनसंहिता)

Opening : श्रीमाघनन्दिसिद्धान्तचक्रवर्त्तितनूभव ।
कुमुदेन्दुरहं वच्मि प्रतिष्ठाकल्पटिप्पणम् ॥१॥

Closing : इति नियतमिदं यद्देवता अर्चनं ये खलु विदधति तेषां
भूतरो गापशांति ।
जगदखिलमहीप मित्रभाव प्रयातिस्वयममित गुणाढ्या
मुक्तिकाताविवश्या ॥

Colophon : इति श्रीमाघनन्दिसिद्धांतचक्रवर्त्तिसुतचतुर्विधपाण्डत्यचक्रवर्ति श्रीवादिकुमुदचन्द्र पण्डितदेवविरचिते प्रतिष्ठाकल्पटिप्पणे यन्त्रार्चनविधिः समाप्त. ।

अय च श्रावणशुद्धाष्टम्यां लिखित्वा समाप्तोऽभूत् ॥ रानू० नेमिराजठय ॥ महावीर शक २४५१ क्रोधन संवत्सरः ॥

९१२. प्रतिष्ठा पाठ

Opening : स्फूर्ज्जत्केवलिनेत्र सिन्धु विसरेयद्बिन्दुवद्भासते,
यस्य श्रीपरमेष्ठिनो जिनपतेर्निमेयसूनोस्त्रयम् ।
लोकाना सकलासुभृतकरुणया धर्मो द्विधोद्योतिनः, ।
स्तस्मै श्री मदनंतचिन्मय कलासविभ्रतेस्तान्नमः ॥

Closing : वसुविदुरिति – ... ... तन्नमोस्तुहितैषिणाम् ॥

Clolophon : इति श्रीमत् कुंदाद्योदय भूधरविवामणि श्री जयसेनाचार्य विरचितः प्रतिष्ठासार सम्पूर्णम् ।

देखें—(१) दि. जि. ग्र र., पृ. १८८ ।
(२) जि. र. को., पृ. २६१ ।
(३) प्र० जै० सा०, पृ० १७६ ।

९१३. प्रतिष्ठा पाठ

Opening : प्रणम्य स्वस्ति ऋद्धि श्रीज्ञानकांतिप्रदायिने ... – ।
निहां प्रथम मुहूर्तकामा सलिषीये नै – –

Closing : वस्त्रापनयन ॐ श्री वः व वः स्वाहा .... ।
.... तीष्ठ २ स्वाहाः ॥

Colophon : इति प्रतिष्ठाविधि सम्पूर्णम् ।

९१४. प्रतिष्ठा सारोद्धार

Opening : जिनाधीशमहं वंदे विध्वस्ताशेषदोषकम् ।
सर्वज्ञं सर्वशास्त्रस्य कर्त्तारं त्रिजगत्प्रभुम् ॥

Closing : इति प्रतिष्ठातिलकोदिनक्रमात्करोति यो भव्यजनप्रमोदताम्।
जिनप्रतिष्ठां परमार्थनिष्ठा सद्ब्रह्मय स्यत्यचिरात्
सुसौख्यम् ।

Colophon : समाप्तोऽयं ग्रन्थ । अषाढ शुक्ल द्वितीयाया तिथौ रानू नेमिराजनामधेयेन सलिख्य समाप्त. । महावीरशक २४५२ ।

९१५. प्रतिष्ठासार संग्रह (६ परिच्छेद)

Opening : सिद्ध सिद्धात्म सद्भाव, विशुद्धज्ञानदर्शनम् ।
सिद्धशुद्धप्रमाणास्त्र, निरस्त परदर्शनम् ॥

Closing : छद्मस्थत्वात्प्रमादाद्वा, यदत्र स्खलित मम ।
समोध्य तत्सुशास्त्रज्ञा कथयन्तु महर्षय ॥

Colophon : इति श्री वसुनदि सैद्धान्तिक विरचिते प्रतिष्ठासग्रहे षष्ठः परिच्छेदः । स्वस्ति श्री काष्ठासघे माथुरगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्याम्नाये भट्टारक दिल्लीपट्टाधीशा श्री १०८ राजेन्द्रकीर्तिदेवा स्तेष शिष्य पंडित परमानन्देन रचितमिद शुभसवत्सरे १९४७ मिति फाल्गुण कृष्ण तृतीयाया गुरुवासरे पूर्वदिशायां सारनदेशे छपरा नगरे पार्श्वजिन चैत्यालये सध्याया गतसप्तघटता रात्रौ । स्व ज्ञानावर्णीकर्मक्षयार्थम् ।

शुभमस्तु लेखकपाठकयोः कल्याणमस्तु विजयमस्तु सिद्धिरस्तु कीर्तिरस्तु तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु शान्तिरस्तु ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १७० ।
(२) जि० र० को०, पृ० २६१ ।
(३) रा० सू० II, पृ० २०१, ३८६ ।

(४) रा० सू० III, पृ० ५७ ।
(५)आ० सू० पृ० १६३ ।

६१६. प्रतिष्ठा विधान

Opening : नमोऽर्हते सदाभ्युदरिघातार्घजोऽर्हते ।
रहस्यभावतो लोकत्रयपूजार्हभावत, ।।
नम्रेन्द्रनन्दिमुकुटोरुसर प्रतिष्ठाप्राग्भाविकृत्यमजितजिनदिव्यमूर्तें।
तोयैर्भुव शुभतमैरभितो विशोध्य पात्राणि तत्र सलिलाद्यपि
शोधयित्वा ।।

Closing : स्वस्तिश्रीसुखसिद्धिऋद्धिविभव प्रख्यातय. पूज्यता,
कीर्ति क्षेममगण्यपुण्यमहिमा दीर्घायुरारोग्यवत् ।
सौभाग्य धनधान्यमम्बदमय भद्र शुम मगलम्,
भूयाद्भव्यजनस्य भास्वति जिनाधीशे प्रतिष्ठापिते ।।

विशेष–प्रशस्ति सग्रह (श्री जैन सिद्धान्त भवन द्वारा प्रकाशित) पृ० १०४ में सम्पादक भुजबलीशास्त्री ने ग्रन्थ के बारे में लिखा है--यह हस्तिमल्ल प्रतिष्ठा विधान मूडबिद्री से प्रतिलिपि कराकर आया है। इसमे कही भी ग्रन्थ कर्त्ताका परिचय नही मिलता। परन्तु ग्रन्थ के आदि और अन्त मे हस्तिमल्ल लिखा मिलता अवश्य है। इसी से इस प्रतिष्ठा ग्रन्थ का कर्त्ता हस्तिमल्ल माना गया है।
"वीराचार्य सुपूज्यपाद जिनसेनाचार्य सभाषितो,
यः पूर्वं गुणभद्रसूरिवसुनन्दीन्द्रादिनन्द्युज्जित ।
यश्चाशाधर हस्तिमल्लकथितो यश्चैकसन्धीरित-
स्तेभ्यस्स्वाहृतसारमार्यरचित स्याज्जैनपूजाक्रम. ।
इस श्लोक से यह बात सिद्ध हो जाती है कि हस्तिमल्ल ने भी एक प्रतिष्ठा पाठ रचा है।

६१७. प्रतिष्ठा विधि

Opening : प्रणम्य स्वस्ति ऋद्धि श्री ज्ञानकाति प्रदायिने ।
महावीरस्य विंबस्य प्रवेश विधि लिख्यते ।।

Closing : इन्द्रावेत्येश्वतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।

Colophon : इति प्रतिष्ठाविधि सपूर्णम् । सवत् १६०६ का मि० चैत ब० ६ शनि । श्री ।

६१८. प्राकृतन्हवण

Opening : जो इह गगा पाणी ण, सुद्धेण वि विमलेण ।
जिण न्हाविह आनन्द जु, सुह पावेइ अचिरेण ॥

Closing : मत्यगतुरगहण सरह रहधरचामरिपरि
चेयालिग्रयकलसैयल मंहिलोल रहिणराहि उणीयरयो ।
पत्तोसि समवसरणे असुइ हरण वियकालवारणम्,
मयराण ण विणत्ते मुक्ताहल मालालुलेय तोरणम् ॥

Colophon : इति सपूर्णम् ।

६१६. पुण्याहवाचन

Opening : श्री शातिनाथममरासुरमूर्त्तिनाथ,
भास्वत्किरीटमणिदीधति पादपद्मम् ।
त्रैलोक्यशातिकरणं प्रणम्य,
होमोत्सवाय कुममांजलिमुत्क्षिपामि ॥

Closing : श्री शातिरस्तु शिवमस्तु जयोस्तु नित्यमारोग्यमस्तु तवपुष्टि-समृद्धिरस्तु कल्याणमस्तु सुखमस्तु सतानाभिवृद्धिरस्तु दीर्घायुरस्तु कुल गोत्र धनं तथास्तु ।

Colophon इति पुण्याहवाचन सम्पूर्णम् ।

६२०. पुण्याहवाचन

Opening : देखें, क्र० ६१६ ।

Closing : — कुलगोत्र धन तथास्तु ।

Colophon : इति पुण्याहवाचन सपूर्णम् । समाप्ता: ॥ श्री संवत् १८६६ शाकि १७३२ प्रमोद नामसंब्वरे श्रावणमासे शुक्लपक्षेषष्टम्यां तद्दिने लिखितं कारंजानगरे द देवमनः राय स्वपठनार्थ

ज्ञानावर्णि कर्म्म क्षयार्थम् ।

९२१. पुष्पाञ्जलि पूजा

Closing : जिन सस्थापयाम्यत्राह्वनादिविधानतः ।
सुदर्शनभवं पुष्पांजलिव्रतविशुद्धये ॥

Closing : पुत्रपौत्रादिकवृद्धिधनधान्यादिकं ··· ।
··· ···· प्राप्नुयान्तरः ॥

Colophon : इति मेघमाला व्रतपूजा जयमाला सम्पूर्णम् ।

देखें, (१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६१ ।
(२) जि० र० को०, पृ० २५४ ।

९२२. पूजा संग्रह

Opening : ॐ जय जय जय नमोऽस्तु, नमोऽस्तु, नमोऽस्तु । णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

Closing : आरत्तिय जीवइ कम्मइ धोवइ सग्गापवग्गह लहुलहइ ।
जं ज मण भावइ सुह यावई, दीणु वि कासु ण भासुई ॥

Colophon : अष्टान्हिकाया पूजा समाप्तम् । संवत् १६४७ मिति आषाढ़ शुक्ल ६ चन्द्रवासरे लिखतं धनीराम पूज इंद्रप्रस्थ नगरे । शुभ भूयात् ।

९२३. रत्नत्रय पूजा

Opening : श्री मंतं सन्मति नत्वा, श्रीमतः सुगुरुनपि ।
श्रीमदागमतः श्रीमान्, वक्ष्ये रत्नत्रयार्चनम् ॥

Closing विरमविरमसंगान्मु च मुंच प्रपंचं,
विसृज विसृज मोहं विद्धि विद्धि स्वतत्वम् ।
कलय कलय वृत्त पश्य पश्य स्वरूपम्,

कुरु कुरु पुरुषार्थं निवृतानंदहेतो· ॥

Colophon : इति श्री पंडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेनविरचिते चारित्र पूजा समाप्ता ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६२ ।

६२४. रत्नत्रय पूजा

Opening : देखें क्र० ६२३ ।

Closing : देखें, क्र० ६२३ ।

Colophon : इति श्री पंडिताचार्य श्रीजिनेंद्रसेन विरचिते रत्नत्रय पूजा श्री समाप्तम् । श्री श्री ।

६२५. रत्नत्रय पूजा

Opening : देखें, क्र० ६२३ ।

Closing : यामें मणि माणिक भंडार, पद-पद मंगल जयकार ।
श्रीभूषण गुरुपद आधार, ब्रह्मज्ञान बोलें सु विचार ॥

Colophon : इति रत्नत्रय व्रत कथा समाप्ता ।

६२६. रत्नत्रय पूजा

Opening : देखें, क्र० ६२१ ।

Closing : एक सरूपप्रकाश निज वचन कह्यो नहि जाय ।
तीन भेद व्यौहार सब, द्यानत कौं सुखदाय ॥

Colophon : इति रत्नत्रयपूजा समाप्तम् ।

६२७. रत्नत्रय पूजा

Opening : चहुंगति फनि विषहरनमन, दुख पावक जलधार ।
शिवसुख सुधा सरोवरी, सम्यक् त्रया निहार ॥

Closing : देखें, क्र० ६२६ ।

Colophon : इति श्री रत्नत्रयपूजा सम्पूर्णम् ।

९२८. रत्नत्रय पूजा उद्यापन

Opening : श्रीवर्द्धमानमानम्य गौतमादींश्च सद्गुरून् ।
रत्नत्रयविधि-वक्ष्ये यथाम्नाय विमुक्तये ।

Closing : इत्थं चारित्रमाला वैः कंठे यो विदधाति च ।
शोभाविनितरा नूनं शीघ्रं मुक्तिःरमापतिः ॥

Colophon : इति विशालकीर्त्यात्मजो-भट्टारक श्री विश्वभूषण विरचिते रत्नत्रयपाठोद्यापन पूजा समाप्ता । शुभम् ।

देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६२ ।
(२) जि० र० को०, पृ० ३२७ ।
(३) आ० सू०, पृ० १२१ ।
(४) रा० सू० III, पृ० १५६, २०६, ३०८ ।

९२९. रत्नत्रय पूजा

Opening : देखे, क्र० ९२८ ।

Closing : इय णंदउ सुरगिरि ससि रविहिं जावतारणरकतरं ।
रयणत्तय जतसघ सयल विरु सगल होऊ पवतइ ॥

Colophon : इति श्री रत्नत्रयपूजा जयमाल सपूर्णम् ।

विशेष—सवत् १९४० मे पंचायती मदिर आरा मे चढाया गया ।

९३०. रत्नत्रय पूजा

Opening : देखें, क्र० ९२८ ।

Closing : तद्दिसर्जनद्वार प्रक्षालनांत. पुष्पादिक मनुष्ठातृभ्यः
तदनुमोदकेभ्यश्च वितीर्य्य शातीमामघीयान्
समतात्पुष्पाक्षत विकरेत् ॥

Colophon : इति श्री चरित्र पूजा संपूर्णम् समाप्ता ।

९३१. रत्नत्रय जयमाल

Opening : पार्णवे प्पिणु भावें विमलसहावें वीर जिणि दुगुणींह णिहिं ।
गुरु मणहर भाविउं विवुह पयासिउ रयँणत्तय
सुविहाणं विहि ॥६॥

भव्वमाणिनेय वाननि दिणिएहाद विसेयहुपहरे वितणि ।
भुन सरि जिणहरि जाण्पिणु पोसह सत्तिपमाणु लए-
प्पिणु ॥

Closing : स्वणतय सान्ड अणिउत्तारउवउपयहइ जो आयरइ ।
सो सुर नर सुक्ख महइ अमंदइसिद्धि विलासिणि अणु-
सरइ ॥

Colophon : नहीं है।

९३२. रत्नत्रय जयमाल

Opening : जय जय सद्दर्शन भव भय निग्गन मोहमहातम तम्वारण ।
उपसम कमलदिवाकर सकलगुणाकर परमसुक्ति सुखकारण ।

Closing : इद चारित्ररत्नं य सततोमिव पवित्रधी ॥
अभिप्रेतामिदं शर्मं न प्राप्नोति चिर नर ॥

Colophon : इति सम्यक्चारित्रजयमाल सपूर्णम् ।

९३३. ऋषिमंडल पूजा

Opening : कर जुग जोरी शारदा, प्रनमि देवगुरुचर्न ।
ऋषिमंडल पूजा रचो, श्री जिनवर पद सर्न ॥

Closing : भवत् सम सत अंक भू, मणगिर चानव असेत ।
अर्द्धरात्र पूरन कियो, चद्रनाथ सकेत ॥

Colophon : इति श्री ऋषिमडल पूजा सम्पूर्णम् । शुभ सवत्
१९०१ मिति सावन सुदी सप्तमी पुस्तक लिखी गोरखपुर
नगरे श्री पार्श्वनाथ जिन चैत्यालये पठन हेतु भव्य जीवन
के लिखायो लाला मानिकचद ।

९३४. ऋषिमंडल पूजा

Opening : देखें, क्र० ८३३ ।

Closing : देखें, क्र० ८३३ ।

Colophon इति श्री रिषमडल जत्र सबन्धी पूजासम्पूर्णम् । शुभ सम्वत्

१६६० मिती जेष्ठ कृष्ण ६ वार रविवार।
सुत श्रीवीरनलाल के, लेखक दुरगालाल।
जैनी आरा मे रहे, काशीलगोत्र अग्रवाल॥
अंग्रेजी सरकार बहादुर ११ मई सन् १६०३।

६३५. ऋषिमंडल पूजा

Opening : आद्य ताक्षरसलक्षमक्षर वाप्ययस्थितम्।
अग्निज्वालासमानाद् विदुरेखासमन्वितम् ॥१॥

Closing : यावन्मेरुमहीशशांक ... ...।
— — ऋषिमडलस्य तु महापूजा विधिनदतु ॥

Clophon : इति श्री ऋषिमडल पूजाविधि समापिता.।
देखे—Catg. of Skt & Pkt. Ms., P. 629.

६३६. रूपचंद्र शतक

Opening : अपनी पद न विचारहु, अहो जगत के राय।
भव वन क्षायक हार है, शिवपुर सुधि बिसराय॥

Closing : रूपचद सद् गुरुनकी जनु बलिहारी जाइ।
आपुन वे शिवपुरि गए, भव्यनु पथ दिखाइ ॥१००॥

Colophon : इति श्री पाडे रूपचद कृत शतक सपूर्णम्।

६३७. सकलीकरण विधान

Opening : देखें, क्र० ८२६।

Closing : श्रीमद्रमस्तुमलवर्जितशामनाय,
निर्नासितासमवसाधकुशामनाय।
धर्मांशुवृष्टिपरिषिक्त य गत्रयाय,
देवादिदेवपरमेश्वरमोजिनाय ॥६॥

Colophon : इति स्तवनम्।
देखे, (१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६४।

६३८. सकलीकरण विधान

Opening : देखें, क्र० ८२६।

Closing : अनेन सिद्धार्थनिभिम असर्वविघ्नोपशमनार्थं सर्वदिक् क्षिपेत् ।

Colophon : इति श्री सकलीकरण विधानम् ।

विशेष—अन्त में दिग्पाल एवं क्षेत्रपाल की अर्चना तेल, चंदन, गुण आदि से करना लिखा है । अन्त मे छह् यन्त्र-चित्र भी अंकित है ।

६३६. समवसरण पूजा

Opening : प्रणमामि महावीरं, पंचकल्याणनायकम् ।
केवलज्ञानसाम्राज्यं लोकालोकप्रकाशकम् ॥१॥

Closing : श्रीमत्सर्वज्ञ · ·· ।
·· ·· विबुधारत्नरचितम् ॥५॥

Colophon : इति श्री समवसरण पूजा वृहत्पाठ सम्पूर्णम् ।

देखें—दि० जि ग्र. र., पृ. १६५ ।
जि. र. को., पृ. ४१६ ।

६४०. समवश्रुति पूजा

Opening : देखें क्र० ६३६ ।

Closing : श्रीमत्सर्वज्ञसेवा ? सर्वन्दिसति मत ॥
? :—मृदुश्वमं सुधाराशिः विबुधारत्नरजितम् ॥५॥

Colophon : इति श्री समवश्रुतपूजावृहत्पीठ सपूर्णम् ॥

६४१. सम्मेदशिखर माहात्म्य

Opening : पंच परम गुरु को नमो, दो कर शीश नवाय ।
श्री जिन भाषित भारती, ताको लागो पाय ॥

Closing : ऐवाशहर मनोग, वसे श्रावक भव्य सब ।
आदित्य आश्चर्य-योग तृतीय पहर पूरणभयो ॥

Colophon इति सम्मेद शिखर महात्म्ये लोहाचार्यानुसारेण भट्टारक श्री जगत्कीर्ति लालचद विरचिते सूवर कूट वर्णनो नाम एकविंशमो सर्ग ॥ इति श्री सम्मेदशिखर माहात्म्य जी सपूर्णम् । मिति चैत्र शुक्ल ८ रवीवार दस्तखत दुरगादास सवत् १६३७ साल । शुभमस्तु ।

६४२. सम्मेदशिखर पूजा

Opening : सिद्धक्षेत्र तीरथ परम, है उत्कृष्ट सुथान ।
सिखसम्मेद सदा नमो, होय पाप की हानि ॥

Closing : सिखिर सु पूजै सदा जो मनवचतन चितलाइ ।
दास जवाहिर यो कही, जो शिवपुर को जाइ ॥

Colophon : इति श्री सम्मेदशिखरपूजा भाषा सपूर्णम् ।

६४३. सम्मेदशिखर पूजा

Opening : परमपूज्य जिन वीस जहाँ ते शिव लये ।
औरहु वहुत मुनीश शिवाले सुखमये ॥

Closing : इत्यादि घनी महिमा अपार ।
प्रणमो सीसधार ॥

Colophon : इति ।

६४४. सरस्वती पूजा

Opening : मायातीत मयक मम, हरन ताप भमार ।
ऐसे जिन पद कमलप्रति, नमूं टरन भवभार ।

Closing : देखें, क्र० ६४५ ।

Colophon : इति सरस्वती पूजन समाप्तम् ।

६४५. सरस्वती पूजा

Opening : देखें, क्र० ६४४ ।

Closing : मगलकारक श्री अरहत । सिद्ध चिदातम सूरिभनंत ।
पाठक सर्वे साधु गुणवत । सुमरि भव्य शिव सौख्य लहत ॥

Colophon : इति सरस्वती पूजा समाप्तम् । सवत् १९६२ शक १८२७ वैशाख कृष्ण ५ चद्रदिने । लि० प० सीताराम स्वकरेण ।

६४६. सप्तर्षि पूजा

Opening : विंशतीर्थंकर वदे जिनेशं मुनिसुव्रतम् ।
सप्तचार्षिमुनीन्द्राणा पूजवक्ष्ये सुशातये ॥

Closing : श्री गच्छे मूलसघे जतियतितिलको जो भवत् कुंदकुंदा-, तत्पट्टे ज्ञानभूयाश्रुतजलधिरिव श्री जगत्भूषनाख्य. । तत्पट्टे भूरिभागी कविरसरसिक विश्वभूषणकवेन्द्रः, तेनेद पाठपूर्वं रचित सुललित भव्यकल्याणकारी ॥

Colophon : इति सप्तऋषिको पाठ विश्वभूषणकृतसमाप्त

९४७. सप्तर्षि पूजा

Opening : देखें, क्र० ६४६ ।

Closing : देखें, क्र० ६४६ ।

Colophon : इति श्री भट्टारकविश्वभूपणकृत सप्तर्षि पूजाविधान समाप्तम् ।

सवत् १६५१ मिति वैशाख कृष्ण परिवा को शीतलप्रसाद के पुत्र विमलदास ने चढाया ।

९४८. सप्तर्षि पूजा

Opening : देखे, क्र० ६४६ ।

Closing : देखें क्र० ६४६ ।

Colophon : इति श्री भट्टारक विश्वभूषण कृत सप्तर्षिविपूजन विधान समाप्तम् । चैत्रमासे कृष्णपक्षे तिथौ १४, सवत् १६५६ । श्रीरस्तु ।

९४९. षट्चतुर्थजिनार्च्चन

Opening : नमोनेकातरचनाविधायिनो जिनेद्राय नमः । अथ षट्चतुर्थ-वर्तमानजिनार्च्चन समुदीरयामः यश. समानदति विष्टयत्रय •• ।

Closing : शिवाभिरामायशिवाभिराम, शिवाभिरामात्रशिवाभि- रामैः । शिवाभिरामप्रदक भजत्व, मुहुर्मुहुः भेविद किं वदामि ॥

Colophon : इति श्री षट्चतुर्थवर्तमानार्च्चाशिवाभिरामावनिपसुनुकृता-ङ्कुततरेय समाप्त । सवत् १६३८ साल मिति कार्तिक वदी ११ वुधवार के दिन समाप्त हुआ ।

६५०. षण्णवतिक्षत्रपाल पूजा

Opening : वंदेहं सन्मतिं देवं सन्मतिं मतिदायकम् ।।
क्षेत्रपाला विधिं वक्ष्ये भव्याना विघ्नहानये ।।१।।

Closing : श्रीमच्छ्रीकाष्ठसंघे यतिपतितिलके रामसेनस्य संघे
गच्छेनदीतटाख्येतागदिनिहमुखे तुच्छकर्म्मामुनीन्द्र ।।
ख्यातोसौ विश्वसेनोविमलतरमतिर्य नगज चकार्षीत्
सोऽयं सुग्रामत्रासे भविजनकलिते क्षेत्रपाना शिवाय ।२७।

Colophon : इति श्री विश्वसेनकृतापण्णवतिक्षेत्रपाल पूजा संपूर्ण ।।

६५१. सार्द्धद्वयदीप पूजा

Opening : देखे, क्र० ६५२ ।

Closing : देखे, क्र० ६५२ ।

Colophon : इति श्री सार्द्धद्वयदीपस्थजिनाना पूजा संपूर्ण ।।
मंगलम् लेखकाना च पाठकाना च मंगलम् ।।
मंगल सर्वलोकाना भूमिभूपति मंगलम् ।।
अग्रवालवंशोद्भवेन लाला वृजपालदास तस्य पुत्र जिनवर
सतु रविचक्षण गुण वानतस्य पुत्रः स्वाध्यायहेतवे लिखापितम् ।

६५२. सार्द्धद्वय द्वीपस्थजिन पूजा

Opening : ऋषभाद्वर्द्धमानां, तान् जिनान् नत्वा स्वभक्तित. ।
सार्द्धद्वयद्वीपजिनपूजा विरचयाम्यहम् ।।

Closing : षष्टिर्णद्योविभंगा विषयविरचिताश्चाद्रिवक्षारनामा,
श्चाशीतिंशमितास्युः कुनरजलधिगोद्वीपभूषन्नवश्च ।
क्षाराब्धिकालकाब्धिद्वयमपि जलधिर्लक्षपञ्चाकतुर्यं,
सद्यासख्योजनानामिति नरधरनीस दिश त्वर्द्धकाना ।।

Colophon : इति सार्द्धद्वयद्वीपस्थजिनाना पूजा सम्पूर्णम् । संवत् १८६८ माघमासे कृष्णपक्षे १३ रविवासरे समाप्तम् । लेखकपाठकयोश्चिरंजीवती । लिख्यंत श्रीकाशीमध्ये राजमदिर शीतलाघाट ब्राह्मणशिवलाल जाति गौड । लीखाईत लाला शकरलाल लाला मनुलाल पठनार्थं परोपकारार्थंम् ।

९५३. सामयिक पाठ

Opening : देखें—क्र० ८७३ ।

Closing : देखें—क्र० ८७३ ।

Colophon : नहीं है ।

९५४. शान्त्यष्टक

Opening : स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन्पादद्वयन्ते प्रजा
हेतुस्तत्रविचित्रदु ख निलय मसारघोराम्बुधिः ।
अत्यन्तस्फुरदुग्ररश्मिनिकरव्याकीर्ण भूमडलो
ग्रैष्म काल इतिन्दुपादसलिच्छायानुलाग रविः ॥१॥

Closing : उत्तम नवमागल्य मध्यम सप्तमगल ।
जघन्या पचमागल्य यत्र मगल लक्षणम् ॥

विशेष—यह ग्रथ वीर निर्वाण सवत् २४४० मे लिखा ।

९५५. शान्तिमंत्राभिषेक

Opening : ॐ नमो अर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थकराया: द्वादशाणोपर-
मेष्ठिताया: ... ... पवित्राय सर्वज्ञानाय स्वयभुवे:
सिद्धाय परमात्मने ... ... ।

Closing : एकमत्रस्थित सिद्ध ... ... एकग्रहपरीक्षा ।

Colophon : नहीं है ।

९५६. शान्तिपाठ

Opening : शातिजिन शशिनिर्मल वस्त्र । शीलगुणव्रतसंयमपात्रम् ।
अष्टसतार्चितलक्षणगात्रं । नौमिजिनोत्तमम्बुजनेत्र ॥१॥

Closing : मत्रहीनो क्रियाहीनो द्रव्यहीनो तथैव च ।
त्वद्भक्ति न जानामि त्वा क्षमस्वपरमेश्वर ॥

Colophon : वीर सवत् २४३८ या पुस्तक आरावाले जगमोहन बा(भा)इ

मैं पालीटाणा जैन दिगम्बर कार्यालय का मुनीम धरमचंद हस्तक लिखवाया।

६५७. शान्ति विधान

Opening : सारासारविचार करि तजि संसृति को भार।
धाराधर निजध्यान की, भये सिन्धु भवपार।

Closing : सम्वत् शत उगणीस दश श्रावण मत्तमि सेत।
सरूपचंद मुनि भक्ति वसि रची स्वपर हित हेत।।

Colophon : इति वृहत् गुरावली पूजा शांतिक विधान सम्पूर्णम्।

६५८. शान्ति विधान

Opening : देखें, क्र० ६१६।

Closing : चैत्यादि भक्तित्रय चतुर्विशतिजिनेन्द्रस्तवनं पठित्वा पञ्चांग प्रणम्य न स्नेहाच्चरणमित्यादि शान्त्यष्टकं पठेत् स्वीकार च गोकगो॰ गबुधं।

Colophon : इति हवन विधानमासीत्। शुभमस्तु।

९५९. शांति पाठ

Opening : उ ह्रीं श्रीं क्लीं ...।

Closing : सर्वशांति तुष्टि पुष्टि कुरु-कुरु स्वाहा।।

Colophon : इति लघु शांतिमंत्र जाप्य १०८ नित्यजपे संवत् १९४७। मास वैशाखे शुक्लपक्षे तेरस्याम् ।।१।।

९६०. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० ८१५।

Closing : अममसमयसारं ... मौध्येति मुक्ति।।

Colophon : इति श्री सिद्धपूजा जी संपूर्णम्।
देखे, (१) दि. जि. ग्र. र., पृ २००।

९६१. सिद्ध पूजा

Opening : सिद्ध अनन्त सगुणमयी शुद्ध सरूपी देव।
सुरनर नृप नित ध्यान धरि प्रणमो करि बहु सेव।।

Closing : काल अनत एक समराजे ।
सुरनर नृप प्रणमे निज काजे ॥

Colophon : नही हैं ।

९६२. सिद्धचक्रव्रताख्यान

Opening सिद्धार्थं सिद्धये नत्वा सिद्धं सिद्धार्थनदनम् ।
सिद्धचक्रव्रताख्यान, ब्रुवे सूत्रानुसारत ॥

Closing : परवादी भविदारणके, मरिहरि गैत्रनस्तुतो ।
जय ... ॥

Colophon : नहीं है ।

९६३. शिखर माहात्म्य

Opening : देखे क्र० ९४१ ।

Closing : देखें, क्र० ९४१ ।

Colophon : देखें, क्र० ९४१ ।
बैशाखमासे कृष्ण पक्षे तिथौ ६ भौमवासरे संवत् १९५५ ।

९६४. सिंहासन प्रतिष्ठा

Opening : श्री महावीरजिनेशानं प्रणिपत्य महोदयम् ।
मध्यज्ञानस्य सूत्रेण शुद्धि वक्ष्ये यथागमम् ॥

Closing : मलक्षय लुनिकोटिरोगविषमग्रहक्षयं कुर्वते ।
श्री मत्पार्श्वजिनेंद्रपादयुगल ध्यानस्य गन्धोदकम् ॥

Colophon : इति शांतिधारा सपूर्णम् । इति सिंहासनप्रतिष्ठा सम्पूर्णम् ।
शुभमस्तु । पंडितपरमानन्देन रचितमिदम् । श्री
अथ पुण्याह कलश स्थापनम् ।
श्वतेन पीतेन च लोहितेन, धर्मानुरागात् प्रविकम्पितेन ।
जिनस्य मन्त्रेण पवित्रितेन, सूत्रेण कुंभ प्रतिवेष्टयामि ॥
ॐ नमो भगवते अमितज्ञानाय ह्रीं ह्रां ह्रौं स मनोपद्
त्रिवर्ण सूत्रेण शांति कुंभ वेष्टयामि ।

९६५. सोलह कारण जयमाला

Opening : जम्मवुहिनारण कुगइ णिवारण सोलहकारण शिवकरण
पणविवि थुई भास मिसत्तिपयासमितिच्छयरतुलद्धिघरण ॥

Closing : सोलहमउअ गुणइ य थुणविअरवु तारइ ।
जो जिण प्पाइ विदसणु आयरवि, तवहो इयुणुविशो-
तिथयरू ॥

Colophon : इति श्री सोलाकारण जीकी सोला जयमालसपूर्णम् । मिती
कार (कार्तिक) शुक्ला ३ सवत् १९५२ हस्ताक्षर गोविंद सिंह वर्मा ।
शुभ भूयात् ।

९६६. सोलहकारण उद्यापन

Opening : अनन्तसौख्य पदद विशाल पर गुणौघ जिनदेव्यमेव्यम् ।
अनादिकाल प्रभव व्रतेश त्रिधाह्वाये षोडषकारण वै ॥

Closing : कतेपिरोधपूजायामूलसघविदाग्रणी ।
सुमतिसागरदेवश्रद्धाषोडशकारणे ।

Colophon : इति श्री षोडशकारणोद्यापनपाठः ।

९६७. सुदर्शन पूजा

Opening : जबूदीप मझार राजत भरतराज अपार है ।
मैं देशपाटलिपुत्र प्रणमी पुण्य पूजागार है ॥
मोक्ष मालागरहि डारला सेठ सुदर्शन है बली,
ममहृदयसरिता समनसागर दुःखदारन को चली ॥

Closing : छन्दशास्त्र जानो नहीं, क्षमै सुकविवर जान ।
भावभक्ति पूजन रच्यौ आरा शुभ स्थान ॥
शुभ सम्वत् रचना रची, शत उन्नीस पचाल ।
मलोमास तिथि पचमी अषाढ कृष्ण सुखरास ॥

Colophon : इति श्री सेठ सुदर्शनपूजा सम्पूर्णम् ।

९६८ सुदर्शन पूजा

Opening : देखें, क्र० ९६७ ।
Closing : देखें, क्र० ९६७ ।
Colophon : इति श्री मेरु सुदर्शन पूजा सम्पूर्णम् ।

९६९. श्रुतस्कंध विधान

Opening : प्रथम नगण वाचक अनुष्टुप छंद जाति ।
ॐ नमो वीतरागाय गुरवे च नमो नमः ।
पुनर्नमामि भारत्यैः यस्मात् भवति मंगलम् ॥१॥

Closing : स्तुवेति बहुधाम्तोदैर्बहुभक्तिपरायणैः ।
नाना भव्यै सन्तोमानघं चारि समुद्धरेत् ॥१०॥

Colophon : इति श्री श्रुतज्ञान श्रुतस्कंध पूजा जयमाल संपूर्ण । ॥श्री॥

९७० श्रुतस्कंध पूजा

Opening : ॐ ह्रीं वद वद वाग्वादिनि भगवतिसरस्वति ह्रीं नमः ।
Closing : सम्यक्त्वसुरत्न सद्व्रतयत्न सकलजन्तुकरुणाकरणम् ।
श्रुतसागरमेत भजतममेत निखिलजने परितः शरणम ।
Colophon : इति श्री श्रुतस्कध पूजाविधिः समाप्तम् ।

९७१. स्वस्ति विधान

Opening : सौख्यालयाश्चाष्टगुणैर्गरिष्टाः,
युक्ता स्वबोधेन विनिर्मलेन ।
सिद्धा प्रणष्टाखिलकर्मबंध,
स्वस्तिप्रदा केवलिनो भवतु ॥
Closing : महापुंडरीक ... ... परिपूरतम् ॥
Colophon : नहीं है ।

६७२. स्वाध्याय पाठ

Opening : शुद्धज्ञानप्रकाशाय लोकालोकैकभावने ।
नम श्री वर्द्धमानाय वर्द्धमान जिनेशिने ।।

Closing : उज्जोवणमुज्जवण णिव्वहण साहण च णिट्ठवण ।
दसणणाणचरित्त तवाणमाराहणा भणिया ।।

Colophon : इतिस्वाध्यायपाठ· सम्पूर्णम् ।

६७३. तेरह द्वीप विधान

Opening : दश जनमत पूरन भइ, अब केवलदशसार ।
तिनको मुनि समुझे सुधी, परम शुद्धता धारि ।।

Closing : उत्तरदिशि, सुविशाल, रुचिक नाम गिरिवर ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

६७४. तीस चोबीसी पाठ

Opening : श्रीमत सर्वविद्येशं नत्वा नयविशारदम् ।
कुर्वेह श्रेयमा नित्य कारण दु खवारणम् ।।१।।

Closing : जयकारवि जिणवर ·· ···· भोरकहो ढाणगुणदुहर ।।

Colophon : इति श्री तीस चौबीसी पाठ सम्पूर्णम् ।

६७५. तीस चतुर्विशति पूजा

Opening : ससारतापतप्तोह स्वामिन् शरणमागत· ।
विज्ञापया भोगेषु निस्पृहो भगवद्वत: ।।

Closing : देखे, क्र० ८११ ।

Colophon : इति आचार्य श्री शुभचन्द्र विरचिता त्रिशत्चतुर्विंशतिका पूजा सम्पूर्णम् ।

देखें—(१) दि जि ग्र र., पृ. २०३ ।

६७६. तीस चौबीसी पूजा

Opening : श्री अरिहंत नमं मत इद गुमिद्ध वरै सिवपेत सदाही,
सूरकरैं शिवशासन उन्नत जानो मिथ्यातम दूरी नसाही ।
द्वादस अंग पढैं श्रुत केवलि साध सवैं त्रयरत्न धराही,
पंच इतै परमेष्ठि महाभवि जीवनको नित मंगल दाही ॥

Closing : छंद अरथ गन अगन कौ, भेद न जानो सार ।
पंडित गुनो सुधारियो, छिमा भाव उरधार ॥

Colophon : इति श्री तीसचौबीसी का पाठ सम्पूर्णम् । मासे उत्तममासे माघमासे कृष्णपक्षे शुक्रवासरे संवत् १६१३ मे लिपी जुगी मल्ल, श्रावगइक्ष्वाकुवंसी काश्यप गोत्री पल्लीवार नवाबगंज के वासी ने लिखी .... नेमिनाथ चैत्यालये परिपूर्ण करी लखनापुरी मे ।

६७७. त्रिकाल चतुर्विशति पूजा

Opening : भूतादिका लोहित भव्यपुण्यदाराधितायेत्रसुरेन्द्र वृंदैः ॥
तान् पंचकल्याणविभूतिभाजस्तीर्थंकरान् सांप्रतमर्चयामि ॥१॥

Closing : अंतिसमाहि दिणति पहुजिणधम्मरत्तह ॥
गुरुपडिमत्तह भाविय हसति करेहु लहु ॥ ॥

Colophon : इति त्रिकाल पूजाविधि समाप्ता ॥६०॥

६७८. त्रिलोकसार पूजा

Opening : बंदौं पांचो परमगुरु नमि जिनवाणी पाय ।
तीनलोक जिनवन को पूज रचौं सुखदाय ॥

Closing : जो यह पाठ विचारि अकृत्रिम कृत्रिम गेहन को सुखदाई ।
तीनहुं लोकजिनेन्द्र जजै अतिप्रीति करैं बहु भक्ति बढ़ाई ॥
सो नर लोकहि देव सुलोक-महीसुख भोगि अनुक्रम थाई ।
मुक्ति तिया पति जानि इमैं निति पूज करो जिन राजसु भाई ॥

Colophon : इत्याशीर्वादः । इति श्री त्रिलोकसारपूजा पंडित महाचंद्र विरचिता समाप्तः । फाल्गुन मासे शुक्लपक्षे तिथौ १२ भृगुवासरे संवत् १६५४ । श्री ।

९७९. त्रिलोकसार विधान

Opening : करजुग जोरो जिन प्रथम और मुनीन्द्र मनाय ।
द्वादशांगमय जिनवचन नमो सीस निजनाय ॥

Closing : एक शहस्त्र अरु नव शतक ऊपर सार संवत्सर कहा ।
शुभमास फाल्गुण शुक्ल तेरस दीप नंदीश्वर लहा ॥
अष्टम सुदीप सुरेशपूजा नृत्यधुनि जै जै करथौ ।
सो हरष लहि वह दिवस पावन पूर्ण करि निज हिय धरयो ।

Colophon : इति श्री त्रैलोकसार पाठ भाषा पूजन जवाहिरलाल विरचितम् समाप्तम् । शुभम् संवत् १९६४ माघ शुक्ल ५ लिखितमिदम् ।

९८०. वज्रपंजराधना विधान

Opening : चन्द्रनाथस्याभिषेक भूमिशुद्धि पंचगुरुपूजा चतार्यंर्घ्या-

चंद्रपुरावुधि चंद्र चंद्रार्क चंद्रकांतमकाशम् ।
चंद्रप्रभाजिनमचे कुंदेदुस्फार कीर्तिकाताशांरा ॥

Closing : यस्यार्थं क्रियते पूजा सुप्रीतो नित्यमास्तुते । ओं ह्रीं र र र र ज्वालामालिनि ह्रां आ क्रो क्षी ह्रीं क्लीं ब्लूं श्रा द्रीं ह्मलवर्यूं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ज्वल ज्वल प्रज्वल = धग = धूं = धूमांध-कारिणि शीघ्रं यंत्राधिपतये देवदत्तस्य स्वंग्रहोच्चाटन कुरू हूं फटनमः स्वाहा ।

Colophon ; इति वज्रपंजराराधना समाप्तीभूत । प्रशस्ति संग्रह (श्री जैन सिद्धान्त भवन) द्वारा प्रकाशित पृ० ८६ में सपादक भुजवली शास्त्री ने ग्रंथकर्ता के बारे मे लिखा है—इस में ग्रथ कर्त्ता का कोई स्पष्ठ उल्लेख नहीं है । किन्तु मध्यमाग गत श्लोक से ज्ञात होता है कि इसके रचयिता श्री पद्मनंदी है । मगर पता नहीं कि यह पद्मनदी कौन है । क्योकि इस नाम के अनेक ग्रन्थकार हुए हैं । दिगम्बर

जैन ग्रन्थकर्त्ता और उनके ग्रन्थ नामक ग्रन्थ तालिका मे एक पद्मनंदी (भट्टारक) वि० सवत् १३६२ का उल्लेख मिलता है, साथ ही साथ उनकी कृतियो मे आराधनासंग्रह नामक एक आराधना ग्रथ का जिक्र भी उपलब्ध होता है। बहुत कुछ सभव है कि यही पद्मनंदी भट्टारक इमा वज्रपजर राधनाविधान के रचयिता हो। मल्लिषेण और इन्द्रनन्दि के नाम से भी 'वज्रपञ्जराराधना पूजा' प्राप्त होती है।

९८१. वासुपूज्य पूजा

Opening : वासुपूज्य जिन नमौं रत्नत्रय शेषर धारयो।
द्वादश तप शृंगार वधूशिव दृष्टि निहारी ॥

Closing : चंपापुर थान पचकल्यान सुरनरखग वदते सवही।
हूं पूजू ध्यावू गुणगण गावू वासुपूज्य दे शिव अबही ॥

Colophon : इति वासुपूज्य पूजा सम्पूर्णम्।

९८२. वास्तुपूजा विधान

Opening : अथहिदीशप्रतिमाप्रतिष्ठा-व्विधाननिर्विबयसमाप्तिसिध्यै।
ततोकुराचादिक्षसांर्वपूर्वे दिने वपाया विदधीत नांदी ॥
तत्रापि पूर्वं विददीत वास्तु दिवौकसा मेकपदे स्थिताना।
ततः परे वा विधिवत्सपर्यां क्रमेण सामान्य विशेष कल्पाम् ॥१॥

Closing : सस्थात्य मध्येसुदिशासु बाह्ये जलप्रपूर्णसहिरण्यभागत्।
सुवस्त्रमाल्याध्वजदर्ढयंणार्प कुंभं यते वास्तु समृद्धिसिध्यै. ॥

Colophon : इति वास्तुपूजा विधानं समाप्तम् ॥ मगलमस्तु ॥ एन० एन० राजा०।

देखे—Catg. of Skt. & pkt. Ms., P. 691.

९८३. विद्यमानचतुर्विंशतिजिनपूजा

Opening : ...पोते समारूढ्य, ससारार्णवपारगा।
स्युस्तेषां तुर्लभानूनं सुलभाः सुखप्राणयः ॥

Closing : एते विंशतितीर्थपाअघहरा: कर्मारिविध्वंसका:,
संसारार्णवतारणैक चतुरा इन्द्रादिदेवैर्मिता ।
अतातीतगुणाकरा सुखकरा मोहांधकारापहा,
मुक्ति श्री ललना विलास ललिता रक्षतु वो भक्तिकान् ॥

Colophon : इति विंशति विद्यमान तीर्थङ्कर पूजा सम्पूर्णम् ।
विशेष—चतुर्विंशति के बाद विंशति विद्यमान तीर्थङ्कर पूजा (समुच्चय) भी लिखी गई है ।

९८४. विंशतिविद्यमानजिनपूजा

Opening : देखें, क्र० ८९३ ।

Closing : इह जिणवाणि विसुद्धमइ जो भीयण णियम धरई ।
सो सुरिंद सपपतह विकेवारणाण वितुत्तरई ॥

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

९८५. विंशतिविद्यमानजिनपूजा

Opening : वंदौं श्रीजिन बीसकौं वरतमान सुखखान ।
द्वीप अढाई खेत मैं श्री विदेह सुमथान ॥

Closing : सम्मतसर विक्रमविगत वसु जुग ग्रह ससिकंद ।
जेठ सुद्ध प्रतिपद सुदिन पूरन भयो सुछंद ।

Colophon : इति श्री सीमधरादि बीसा विहरमान जिन पूजा सिखिर चन्द्र-अग्रवाल गोईल गोत्री काशी वासी कृत समाप्त । संवत् १९२८ जेष्ठ शुद्ध (सदी) प्रतिपदा को समाप्तम् । लिखा सिखिर चंद यह प्रति लिखि मिती चैत्रशुक्ल प्रतिपदा शुक्रवार सम्वत् १९४१ को सो जयवंत प्रवर्तों राजा प्रजा सर्व आनंद होउ । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु शुभमस्तु ।

९८६. विमानशुद्धि विधान

Opening : अथ नव्य विमान चैत्यस्य संप्रोक्षण क्रिया ।
कार्यायंपतिमा पूर्वमाचार्येण यथा भवेत् ॥

अष्टदिक्षु विमानस्य न्यस्येत्र घटान् पृथक् ।
ततः पुष्पांजलि कुर्यात् वाद्यघोषे समुद्यति ॥

Closing : तपोधनानामपिचार्यकाणा सघेन पुण्येन निरीक्षणीय. ।
देवाधिदेवो भुवनैकसौम्य. सकीर्तनीयश्च तथा प्रणम्य ॥
सयता दिदर्शनम् ॥
उपासकैश्चापि तत समस्तैरभ्यर्चनीयो भुवनाधिनाथः ।
तथा महेन्द्रो विदधीत शेषा पुण्याक्षतक्षेपण माशिष च ॥
सर्वभव्यजनोपदर्शनं ॥

Colophon : इति समाप्तोय ग्रन्थ. ।

९८७. व्रतोद्योतन

Opening : प्रणम्य परमब्रह्मातीन्द्रियज्ञानगोचरम् ।
वक्ष्येऽहं सर्वसामान्य व्रतोद्योतनमुत्तमम् ॥१॥

Closing : कारापित प्रवरसेनमुनीश्वरेण ग्रन्थ चाकार जिनभक्तबुद्धा-भ्रदेव:
यस्ते शृणोति स्वहितप्रतिमैकबुद्धया प्राप्नोति सोऽक्षयपद परमं पवित्रम् ॥

Colophon : इति श्री व्रतोद्योतन सागारधर्म्मानिरूपण अभ्रदेवकृत समाप्तम् मिति आषाढ शुक्ले १० शुक्रवासरे सम्वत् १९८७ विक्रमोऽब्दे समाप्तमिदम् ।

९८८. वृहद्न्हवण

Opening : श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवद्यजगत्रयेशं
स्याद्वादनायकमनंतचतुष्टयार्हं ।
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतु,
जैनेन्द्र यज्ञविधिरेषमयाभ्यधायि

Closing : प्रध्वस्तघातिकर्माण. केवलज्ञानभास्करा ।
कुर्वन्तु जगतश्शांति वृषभाद्याजिनोत्तमा ॥८॥

Colophon : इति वृहदन्ह्वण विधि समाप्तम् ।

९८९. वृहत्शान्तिपाठ

Opening : प्रणिपत्य जिनान् सिद्धान् आचार्यान्पाठकान् यतीन् ।
सर्वशान्त्यर्थमाम्नाय-पूर्वक शांति कि ब्रुवे ॥

Closing : यावन्मेरु महिमीवन्, यावच्चन्द्रार्कतारका ॥
तावद्भद्राणि यच्छन्तु, शान्तिक स्नानमुत्तमा ॥

Colophon : इति श्री पंडिताचार्य विरचिते श्री धर्मदेवकृत शांतिक पाठ समाप्तम् । माघकृष्णपक्ष १० संवत् लिपिकृत ब्राह्मणगगात्र हस-पुष्कर्ण ॥ श्री ॥

९९०. बिम्बनिर्माण विधि

Opening : प्रथम नमो अरहन्त को नमों सिद्ध अरु साध ।
कथन केवली वृष नमो हरो सकल भवव्याध ॥

Closing : ... अथवा जे कृत्रिम होय ते अरहंत प्रतिमा अकृत्रिम होय ते सिद्ध प्रतिमा कहिये । इति ।

Colophon : श्री शुभ मिति पौष शुक्ल २ शुक्रवार वीर सं० २४६२ विक्रम संवत् १९९२ । जैन सिद्धान्त भवन आरा के लिए लिखा ।
ह० रोशनलाल जैन ।

९९१. चौबीस दण्डक

Opening : अथ चौबीसदडक चौपाई बंध दौलतरामकृत है ताका अर्थ अनेक ग्रन्थनिका आशय लेय विशेषरूप लिखिए है—

Coloing : ऐसें चौबीसदण्डकनि का कथन लिख्या सो त्रिलोकसार-मूलाचार आदि ग्रन्थनितें सोधि शुद्ध करिलेवे ।

Colophon : नहीं है ।

६६२. द्विजवदनचपेट

Opening : वेदा प्रमाण स्मृतय प्रमाण धमार्थयुक्त वचान प्रमाणम् ।
नैतत्त्रय यस्य भवेत्प्रमाण कस्तस्यकुर्याद्वचन प्रमाणम् ॥

Closing : स्नान च वेदेव गृहाश्रिताना सर्गा ।

Colophon : नही है ।

९९३. लोकानुयोग

Opening : नमस्कृत्य महावीर सर्ववस्तूपदेशम् ।
अधोमध्योर्ध्वलोकाना स्वरूप किंचिदुच्यते ॥

Closing : धर्मध्यान धवलमुदित मोक्षहेतुजिनेन्द्रे
आज्ञापायप्रभृतिविचयाश्चिवृत्तेर्निरोध ।
यत्कार्यासनितकरणैर्लोकसस्थानचिता,
मदान्तान्ता स्वहृदयमहेर्भेद्रयाश्चाविधेया: ॥

Colophon : इति लाकानुयोगे जिनसेनाचार्यकृत हरिवसपुराणाद्दहिनिकामिते उर्ध्वलोकवर्णनो नाम तृतीय सर्ग समाप्त: ।

सम्वत् १६८६ ज्येष्ठ शुक्ल श्रुत ५ गुरुवासरे श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा के लिए प० भुजवली शास्त्री की अध्यक्षता मे श्री काशी निवासी वटुक प्रसाद लेखक ने लिखा ।

विशेष—प्रशस्ति के अनुसार यह ग्रन्थ हरिवश पुराण का अग है ।

देखें—(१)Catg. of Skt. & Pkt. Ms., P. 688.

९६४. मडल चिन्तामणि

मडल का चित्र ।

६९५. मुनिवंशाभ्युदय

Opening . श्रीमुनिवद्य दिव्यध्वनिगधिप महामहिमाकरनिरष ।
प्रेमदोलेम्न-तरगदोलिह महास्वामि परज्योतिरूप ॥

Closing : परमजिनेन्द्रपदाम्बुजमधुकरवरचिदानन्द विरचित ।
सुरुचिरमुनिवशाभ्युदयदोलितु करमेसद्वुसधि रोदु ॥

Colophon : अतु सधि ५ वक पद ६२५ वर्क मगलमहा । रोदनेय सधि मुगिदुदु ।

९९६. त्रैलोक्य प्रदीप

Opening : वन्दे देवेन्द्र वृन्दार्च्य नाभेय जिन भास्करम् ।
येन ज्ञानाशुभिर्नित्य लोकालोकौ प्रकाशितौ ॥

Closing : यावन्मेरुसुधासिन्धुर्यविच्चन्द्रार्कमडलम् ।
तावन्नित्यमहोद्योतै वर्द्धता जैनशासननम् ॥

Colophon : इतीन्द्रवामदेव विरचिते पुरवाडवशविशेषकश्री न. ८ यश: प्रकाशत्रैलोक्यदीपके उर्ध्वलोकव्यावर्णनो नाम तृतीयोधि । समाप्तं । मिती वैशाखवदी नौमि ६ गुरुवारे सवत् १८०७ साल पडित खुस्यालचद मालपुरा मे लिखि । तस्मादिद पुस्तक सवत्सरे १९९० विक्रमाब्दे ज्येष्ठकृष्णपक्षे पचम्या रविवासरे आर नगरे ··· ···प्रतिलिपि कृतम् ।

देखें—(१) जि० र० को०, पृ० १६५ ।

९९७. यंत्रद्वारा विविधचर्चा

विशेष—यत्रो (विवरणात्मक चार्टस) द्वारा ४१ विषयो पर चर्चाकी गई